श्रीजिनाय नमः

श्रीविनयविजयजी महाराजविरचित

॥ सुबोधिका नामक कल्पसूत्रनी टीकानुं गुजराती भाषांतर ॥

कल्पसूत्र सुबोधिका टीकानुं गुजरातीमां

भाषांतर करावी

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्रावक भीमसिंह माणेक

जैन पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार

मांडवी, शाकगल्ली, मुंबइ.

वीर संवत् २४४१

विक्रम संवत् १९७१

श्रावण पूर्णिमा.

॥ प्रस्तावना ॥

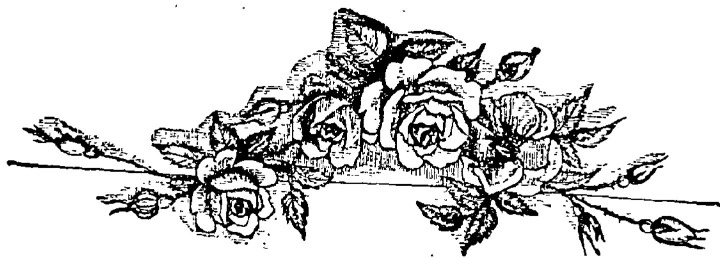
संसाररूप नाट्यालयनी अंदर प्रमाद, विकथा, दुर्ध्यान तथा ईर्ष्या आदि कारणोने लइने जीवो अनादि कालथी नवा नवा वेष धारण करे छे अने तदनुरूप चेष्टाओ पण करे छे. यद्यपि कोइक वार शुभ कर्मोदयना प्रभावथी देव, गुरु, धर्मनी पूजा भक्ति तेमज आराधना करता देखाय छे, परंतु आंतरिक दोषो शांत नहीं थवाथी बिचारा पुनः तेवा ने तेवा थइ संसारचक्रमां गोथां मारे छे. जे जीवो एक वखत देव, गुरु, धर्मनी आराधना अने स्तुति करता तेज जीवो देव, गुरु, धर्मनी निंदा करवा लागी जाय छे, नहीं करवानां कृत्यो करे छे, नहीं बोलवानुं बोले छे अने छेवटे प्रायः नास्तिक बनी जाय छे. आ प्रताप पोतपोतानां कर्मनो छे, एटले तेमां आश्चर्य पामवा जेवुं नथी, अथवा तो अन्यनां कृत्यो पर ध्यान दइ आपणे अमूल्य समय नष्ट करवो जोइतो नथी. कर्मना नचाव्या दरेक जीवने नाचवुं पडे छे, माटे शुभ निमित्तोनो आश्रय लइ कर्म राजाने हराववा अने धर्म महाराजानो विजय करवा माटे हमेशां प्रयत्नशील रहेवुं जोइए.

दरेक धर्मनी अंदर प्रायः केटलाक पर्वदिवसो मुकरर थयेला छे ते एटलाज माटे के ते दिवसोमां भव्य जीवो विशेषे करीने धर्मध्यान करी कर्म राजाने परास्त करे. कोइ पण धर्म एवो नहीं होय के जेमां अमुक दिवस पापना प्रायश्चित्त माटे मुकरर थयेल न होय. आवी रीते सर्वोत्तम, पवित्र जैन धर्मनी अंदर पण तेवा केटलाएक दिवस निर्णीत छे, जे पैकी पर्युषणा पर्वना दिवस घणाज मनोहर अने शुभ कार्य संपादक आत्मशुद्धिनुं असाधारण कारण छे. आ पर्वनी अंदर लोकप्रधान देवो पण तमाम प्रकारनां दिव्य सुखो छोडी दइने नंदीश्वर आदि द्वीपमां जइ भगवाननी पूजा भक्ति आठ दिवस सुधी करे छे.

कल्पसूत्र सुबोधिकाना भाषांतरनी आ चोथी आवृत्ति अमारा तरफथी बहार पाडवामां आवेल छे. आ (चोथी) आवृत्तिनां थोडां फारमो आगलनी आवृत्ति मुजब छपाया पछी अमने मालूम पड्युं के आगलनी आवृत्तिमां भाषांतर करनारे केटलोएक भाग पडतो मूकी दीधो छे तेमज तेना हस्तक केटलीक जग्योए अशुद्धि रही गयेल छे, तेथी पडतो मूकेलो भाग दाखल करावी, अशुद्धिनुं बनी शक्या मुजब संशोधन करावी तथा छेवटना भागनुं फरीथी भाषांतर करावी आ आवृत्ति बहार पाडवामां आवी छे. तेनी अंदर दृष्टिदोषथी तेमज मतिमंदताने लीधे कांइ पण भूलो रही गइ होय तो मुनि महाराजाउ तेमज सुज्ञ श्रावकबंधुउ सुधारीने वांचशे तथा ते भूलो लखी जणावी अमने उपकृत करशे तो हवे पछीनी आवृत्तिमां शरुआतनो भाग जे संशोधन करावीने सुधारवानो छे तेनी साथे आ भूलो पण सुधारी शकाशे. इत्यलं विस्तरेण.

घर नं. २२५ थी २३१
शाकगल्ली, मांडवी, मुंबइ,
वीर संवत् २४४१
विक्रम संवत् १९७१
श्रावण पूर्णिमा

ली.
श्रावक भीमसिंह माणेकना
कार्यप्रवर्तक
शा. भाणजी माया.



अनुक्रमणिका.



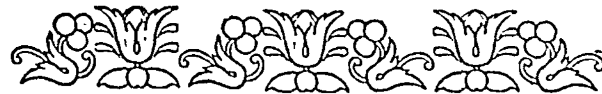


सप्तमं व्याख्यानं.

(पार्श्व प्रभुनुं चरित्र)

(नेमिनाथ प्रभुनुं चरित्र)

इति अनुक्रमणिका समाप्त.



॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ कल्पसूत्र सुबोधिकानुं गुजराती भाषांतर ॥

टीकाकार श्रीविनयविजयजी महाराज मंगलाचरण करे छे.

परम कल्याणने करनारा श्रीजगदीश्वर अर्हंत प्रभुने प्रणाम करी हुं बाल अभ्यासीओने उपकार करनारी सुबोधिका नामे कल्पसूत्रनी टीका करुं छुं. १ आ कल्पसूत्र उपर निपुण बुद्धिवाला पुरुषोने गम्य एवी जो के घणी टीकाओ छे, तथापि अल्पबुद्धिवाला पुरुषोने बोध थाय तेवा हेतुथी आ टीका करवा विषे मारो प्रयत्न सफल छे. २ जोके सूर्यनी घणी कांतिओ सर्व लोकोने वस्तुनो बोध करनारी होय छे, तथापि भूमिगृह (भोंयरा)मां रहेला माणसोने तो तत्काल दीपिकाज उपकार करे छे. ३ आ टीकामां विशेष अर्थ कर्या नथी, युक्तिओ बतावी नथी, अने पद्यपांडित्य दर्शाव्युं नथी पण मात्र बाल बुद्धि अभ्यासीओने बोध थवाने अर्थनी व्याख्याज आपेली छे. ४ जो के हुं अल्पबुद्धिवालो थइ आ टीका रचुं छुं पण सत्पुरुषोने उपहास्य नहीं थाउं, कारण के ते सत्पुरुषो एवो उपदेश करे छे के, "सर्व माणसोए कल्याणमां यथाशक्ति यत्न करवो जोइए." ५

अहींआ पूर्व काले नवकल्प विहार करवाना क्रम वडे प्राप्त थयेला योग्य क्षेत्रमां अने सांप्रत काले परंपराथी गुरुए आदेश करेला क्षेत्रमां चतुर्मास रहेला साधुओ कल्याण निमित्ते आनंदपुरमां सभा समक्ष वांच्या पछी संघनी समक्ष पांच दिवस अने नव क्षणे श्रीकल्पसूत्रने वांचे छे.ते कल्पसूत्रमां कल्प शब्द वडे साधुओनो आचार कहेवाय छे. ते कल्प—आचारना दश भेद छे ते आ प्रमाणेः—१ आचेलक्य, २ औद्देशिक, ३ शय्यातर, ४ राजपिंड, ५ कृतिकर्म, ६ व्रत, ७ ज्येष्ठ, ८ प्रतिक्रमण, ९ मास कल्प, १० पर्युषणा. ते दश कल्पनी व्याख्या आ प्रमाणे छे.

अने वावीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां तो जे साधु विगेरेने आश्रीने करेलुं होय ते तेनेज कल्पतुं नथी अने वीजाने कल्पे छे एवी रीते बीजो औद्देशिक कल्प छे. २

३ शय्यातर कल्प.

त्रीजो कल्प शय्यातर एटले जे उपाश्रयनो स्वामी होय ते, तेनो पिंड जे १ अशन, २ पान, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कांबल, ८ रजोहरण, ९ सोय, १० अस्तरो, ११ नख तथा दांत सुधारवानुं अस्त्र अने १२ कर्णने सुधारवानुं साधन, ए बार प्रकारनो छे, ते वधा तीर्थंकरोनां तीर्थोमां सर्व साधुउने कल्पे नहीं, कारण के तेथी अनेषणीय वस्तुनो प्रसंग, अने उपाश्रय मलवो दुर्लभ थाय इत्यादि घणा दोष लागवानो संभव छे. जो साधुउ वधी रात्रि जागे अने प्रातःकाले प्रतिक्रमण बीजे जइ करे तो ते मूल उपाश्रयनो स्वामी शय्यातर थतो नथी, अने जो साधुउ त्यां निद्रा करे अने प्रतिक्रमण बीजे ठेकाणे करे तो ते बंनेना स्वामी शय्यातर थाय छे.

तेमज चारित्रनी इछावाला उपधि सहित शिष्यने शय्यातरना घरनी तृण, डगल, भस्म (राख), मल्लक, पाटलो, वाजोठ, शय्या, संस्तारो अने लेप विगेरे वस्तुउ ग्रहण करवी कल्पती नथी. ए त्रीजो शय्यातर कल्प जाणवो. ३

४ राजपिंड कल्प.

राजपिंड एटले सेनापति, पुरोहित, नगरशेठ, मंत्री अने सार्थवाह ए पांचेनी साथे राज्यनुं पालन करनार मूर्धाभिषिक्त जे राजा तेनो पिंड जे अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कांबल अने रजोहरण ए आठ प्रकारनो कहेवाय छे. ते पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना साधुउने राजा पासे जतां आवतां सामंत विगेरेथी स्वाध्यायनो नाश थवानो संभव छे, वली साधुउना अपशुकन गणाय तेथी शरीरने व्याघात थवानो संभव छे तेमज खाद्यनो लोभ, लघुता अने निंदा विगेरे दोष थवानो पण संभव छे, तेथी ते राजपिंडनो निषेध करेलो छे. बावीश तीर्थंकरोना साधु हमेशां सरल अने प्राज्ञ छे तेथी तेमने उ-

पर कहेला दोषनो अभाव छे माटे तेमने राजपिंड कल्पे छे. आ चोथो राजपिंड कल्प जाणवो. ४

५ कृतिकर्म कल्प.

कृतिकर्म एटले वंदना, ते बे प्रकारनी छे. अभ्युत्थान अने द्वादशावर्त्त. ते वंदना सर्व तीर्थंकरोनां तीर्थमां साधुउंए परस्पर दीक्षापर्यायथी करवी. साध्वी कदि चिरकालनी दीक्षित होय तोपण तेनाथी नवो दीक्षित साधु वंद्य छे, कारण के धर्म पुरुषप्रधान छे. ए पांचमो कृतिकर्म कल्प जाणवो. ५

६ व्रत कल्प.

व्रत एटले महाव्रतो ते बावीश तीर्थंकरोना साधुउंने चार होय छे, कारण के तेउं एम जाणे छे के अपरिगृहीत एवी स्त्री साथे भोग थवानो असंभव छे तेथी स्त्री पण परिग्रह छे एटले परिग्रहनुं पच्चरकाण करवाथी स्त्रीनुं पच्चरकाण थइ चुक्युंज. पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना साधुउंने तो तेवा ज्ञाननो अभाव छे तेथी तेउंने पांच महाव्रतो छे. ए छठो व्रत कल्प. ६

७ ज्येष्ठ कल्प.

ज्येष्ठ एटले मोटानो कल्प, अर्थात् वृद्ध अने लघुनो व्यवहार. तेमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना साधुउंने स्थापनाथी आरंभी दीक्षापर्याय गणाय छे अने बाकीना तीर्थंकरोना साधुउंने अतिचार वगरनुं चारित्र होवाथी दीक्षाना दिवसथीज पिता अने पुत्र, माता अने दुहिता, राजा अने मंत्री, शेठ अने वणिकपुत्र विगेरे जो साथे दीक्षा ले तो तेउंए वृद्ध लघुपणे केम वर्त्तवुं? ते कहे छे. जो पिता विगेरे वृद्धो अने पुत्र विगेरे लघुउं षट् जीवनिकाय, अध्ययन अने योगोद्वहन–योग वहेवा विगेरे क्रियाथी जो साथे योग्यताने प्राप्त थया होय तो तेउंने अनुक्रमथीज स्थापित करवा. जो कदि तेमां थोडुं अंतर होय तो जरा विलंबथी पण पिता विगेरेने प्रथम स्थापित करवा. जो तेम न करे तो पिता विगेरेने वृद्धपणाने लीधे पुत्रादिकनी उपर अप्रीति थाय. जो कदि पुत्रादिक बुद्धिवाला होय अने पितादिक बुद्धिवगरना होय अने तेथी तेउंमां मोटुं अंतर (तफावत) होय तो ते वृद्ध पितादिकने आ

प्रमाणे प्रतिबोधवा– "हे महाभाग, तमारो पुत्र बुद्धिवान् छतां पण बीजा घणा साधुओथी लघु थइ जशे अने तमारो पुत्र ज्येष्ठ वृद्ध गणाय तेमां तमारुं पण गौरव छे". आ प्रमाणे विज्ञप्ति करवाथी जो ते पितादि अनुज्ञा आपे तो पुत्रादिने प्रथम स्थापवा, अने जो अनुज्ञा न आपे तो स्थापवा नहीं. ए सातमो ज्येष्ठ कल्प जाणवो. ७

८ प्रतिक्रमण कल्प.

अतिचार लागे वा न लागे पण श्रीऋषभ अने वीर प्रभुना साधुओने बंने काल प्रतिक्रमण अवश्य करवुं जोइए, अने बाकीना तीर्थंकरोना मुनिओने दोष–अतिचार लागे त्यारेज प्रतिक्रमण करवुं जोइए, ते सिवाय नहीं. तेमां पण मध्यम तीर्थंकरोना यतिओने कारण होय तोज दैवसिक (देवसी) अने रात्रिक (राइ) प्रतिक्रमण प्राये करीने करवां. ते सिवाय बीजां पाक्षिक, चातुर्मासिक अने सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करवानी जरूर नथी. एवी रीते आठमो प्रतिक्रमण कल्प जाणवो. ८

९ मास कल्प.

पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना मुनिओने मास कल्पनी मर्यादा नियमथी छे. ते दुकाल, अशक्ति अने रोग विगेरे कारणो होय तो शहेरना परामां, बीजा पाडामां अने ते वसति बीजा खुणामां परावर्त्त–फेरवणी करीने पण सत्य करवी जोइए; परंतु शेष काले एक मासथी अधिक रहेवुं नहीं, कारण के तेथी प्रतिबंध, लघुता विगेरे घणा दोष लागवानो संभव छे, पण मध्यम तीर्थंकरोना मुनिओ सरल अने प्राज्ञ होवाथी तेमनामां उपर कहेला दोषोनो अभाव छे तेथी तेओने मास कल्प नियमथी नथी. ते यतिओ तो पूर्व कोटि सुधी एक स्थले रहे छे अने कोइ कारणने लइने मासनी अंदर पण विहार करे छे. एवी रीते आ नवमो मास कल्प जाणवो. ९

१० पर्युषणा कल्प.

पर्युषणा एटले परि नामे समस्तपणे उषणा एटले रहेवुं, ते पर्युषणा कहेवाय. तेमां पर्युषणा शब्द

वडे करीने समस्तपणे रहेवुं ते अने वार्षिक पर्व बंने पण कहेवाय छे. तेमां ते वार्षिक पर्व भाद्रपद मासनी शुक्ल पंचमीए अने कालकसूरि थया पछी भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीएज थाय छे. समस्तपणाथी रहेवा-रूप जे पर्युषणा कल्प छे ते बे प्रकारनो छे. सालंबन अने निरालंबन. तेमां जे निरालंबन एटले कारण-ना अभाववालो पर्युषणा कल्प ते जघन्य उत्कृष्ट एवा बे भेदवालो छे. तेमां जघन्य सांवत्सरिक प्रतिक्रम-णथी मांडीने कार्तिक चतुर्मासना प्रतिक्रमण सुधी सीत्तेर दिवसना परिमाणनो छे, अने उत्कृष्ट प-र्युषणा काल चार मासनो छे. आ बे प्रकारनो निरालंबन पर्युषणा काल स्थविरकल्पिउनो छे अने जि-नकल्पिउने तो एक निरालंबन चातुर्मासिकज कल्प छे. अर्थात् कोइ कारणने लइने सालंबन थाय. हवे जे क्षेत्रमां मास कल्प कर्यो होय, तेज क्षेत्रमां चतुर्मास करवाथी अथवा चतुर्मास कर्या पछी मास कल्प करवाथी छ मासनो कल्प थाय ते पण स्थविरकल्पिउनेज उचित छे अने पांच पांच दिवसोनो वधा-रो करी गृहस्थोने जणाववा न जणाववानो अधिकार विस्तारथी अहीं लख्यो नथी, कारण के संघनी आ-ज्ञाथी ते विधि हाल उछेद थइ गयो छे, तेमज ग्रंथविस्तारना भयथी अत्रे कहेलो नथी. जो ते विषे विशेष जाणवुं होय तो कल्पकिरणावली विगेरे टीकाउमां जोइ लेवुं. एवी रीते सर्व ठेकाणे जाणी लेवुं. एवी रीते जेनुं स्वरूप वर्णव्युं छे एवो पर्युषणा कल्प प्रथम अने चरम तीर्थंकरोनां तीर्थमां नियत छे अने बाकीना बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां अनियत छे, कारण के तेउना साधुउ तो दोषनो अभाव होय तो एक क्षेत्रमां देश उणी पूर्व कोटि सुधी रहे छे, अने जो दोष जोवामां आवे तो एक मास कल्प सुधी पण रहेता नथी. एवी रीते महाविदेह क्षेत्रमां पण बावीश तीर्थंकरोनी जेम सर्व तीर्थंकरोना कल्पनी व्य-वस्था जाणी लेवी. एवी रीते दशमो कल्प जाणवो ॥१०॥ उपर कहेला ए दश कल्पो श्रीऋषभ प्रभु तथा श्रीवर्द्धमान स्वामीनां तीर्थमां नियत छे अने बीजा बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थमां अचेलक, ओद्दे-शिक, प्रतिक्रमण, राजपिंड, मास अने पर्युषणा ए छ कल्पो अनियत छे. बाकीना शय्यातर, चतुर्व्रत, पुरुषज्येष्ठ, कृतिकर्म ए चार कल्पो नियतज छे. एवी रीते ते दश कल्पोनो नियत अने अनियत वि-

न्नाग जाणवो. अहीं कोइ शंका करे के सर्वेने साधवा योग्य मोक्षमार्ग एकज छे, तो तेमां पहेला, छेल्ला अने वाकीना वावीश तीर्थंकरोना साधुउमां आचारनो न्नेद केम छे ? तेना समाधानमां कहे छे के ते न्नेद थवानुं कारण जीवविशेष छे, ते कहे छे–श्रीरुषन्न प्रन्नुना तीर्थना जीवो सरल स्वन्नावी अने जम छे, तेथी तेउने धर्मनो बोध थवो फुर्लन्न छे, कारण के तेमनामां जडपणुं छे, अने श्रीवीर प्रन्नुना तीर्थना जीवो (साधुउ) वक्र अने जम छे, तेथी तेमने धर्मनुं पालन फुष्कर छे, अने अजितनाथ विगेरे वावीश तीर्थंकरोना साधुउने धर्मनो बोध अने तेनुं पालवुं आ वंने पण सुकर (सहेलां) छे, कारण के तेउ सरल अने प्राज्ञ स्वन्नावी छे, तेथी तेमना आचारना वे न्नेद थया छे. अहीं तेना दृष्टांतो वतावे छे–

पहेला तीर्थंकरना केटलाएक मुनिउ वहारनी न्नूमिथी गुरु पासे आव्या, त्यारे गुरुए पूछ्युं के, हे मुनिउ, तमो आटली वधी वेला क्यां रोकाया ? मुनिउए कह्युं, हे स्वामी, अमो एक नृत्य करता नटने जोवामां रोकाया हता, त्यारे गुरुए कह्युं के, नटना नृत्यने जोवुं, ते साधुउने कल्पे नहीं, त्यारे तेउए (वहु सारुं) एम कही ते वात अंगीकार करी. वली एक वखते तेज साधुउ चिरकाले उपाश्रयमां आव्या, त्यारे गुरुए पण पूर्वनी जेम पूछ्युं, एटले तेउ बोल्या के, हे प्रन्नु, अमो एक नृत्य करती नटीने जोवाने उन्ना हता, त्यारे गुरुमहाराज बोल्या, हे महान्नाग, ते वखते में तमने नट जोवानो निषेध कर्यो हतो. ज्यारे नटनो निषेध थयो तो पछी नटी जोवानो निषेध थइ चुक्योज. पछी तेउए गुरुने विज्ञप्ति करी के, स्वामी, ए वात अमोए जाणी नहीं, हवेथी पुनः तेम नहीं करीए. अहीं ते प्रथम तीर्थंकरना साधुउ जम होवाथी नटनो निषेध करवाथी नटीनो निषेध थइ चुक्यो एम तेउ जाणी शक्या नहीं अने रुजु स्वन्नावी होवाथी तेमणे गुरुने सरल उत्तर आपी दीधो. एवी रीते आ प्रथम दृष्टांत जाणवो.

अहीं वीजो पण दृष्टांत छे, कोइ कुंकण देशना वणिके वृद्धावस्थामां दीक्षा लीधी हती. एक वखते ते वणिक इर्यापथिकी कायोत्सर्ग करी चिरकाल रोकाइ रह्यो. ज्यारे कायोत्सर्ग पारी आव्यो एटले

गुरुए पूछ्युं के, आटलो बधो दीर्घ कालनो कायोत्सर्ग करी तें शुं चिंतव्युं ? ते बोल्यो, स्वामी ! जीवदया चिंतवी. गुरुए पूछ्युं, शी रीते ? त्यारे तेणे कह्युं के, पूर्वे गृहस्थावस्थामां क्षेत्रमां वृक्ष उंभेली वावेलां घणां धान्य थयां हतां. हमणां मारा पुत्रो जो निश्चिंत थइने प्रथम वृक्षोने उंभेलशे नहीं तो पछी धान्य नहीं थवाथी ते बीचारानुं शुं थशे ! आ प्रमाणे सरलपणाथी पोतानो अभिप्राय यथार्थपणे निवेदन कर्यो एटले गुरुए कह्युं, "महाभाग, तें ए दुष्ट ध्यान कर्युं, मुनिओने एम चिंतववुं अयुक्त छे." गुरुए आ प्रमाणे कहेवाथी ते शिष्ये मिथ्या दुष्कृत आप्युं. ए बीजो दृष्टांत. तेवी रीते श्रीवीर प्रभुना मुनिओ विषे बे दृष्टांतो छे. जेमके, केटलाएक वीर प्रभुना मुनिओ कोइ एक नटने नृत्य करतो जोइ गुरु पासे आव्या त्यारे गुरुए पूछ्युं अने पछी नट जोवानो निषेध कर्यो. पुनः एक वार तेओ कोइ नटीनुं नृत्य जोइने आव्या त्यारे गुरुए पूछ्युं एटले तेओ वक्रपणे जुदा जुदा उत्तर आपवा लाग्या. ज्यारे गुरुए चोक्कसपणे पूछ्युं त्यारे तेओए साचे साचुं जणाव्युं. पछी गुरुए ठपको आप्यो एटले तेओ गुरुने सामो उपालंभ करवा लाग्या के, ज्यारे तमोए अमने नट जोवानो निषेध कर्यो ते समये नटी जोवानो निषेध केम न कर्यो ? आ दोष तमारोज छे, अमो शुं जाणीए ? ए प्रथम दृष्टांत.

कोइ व्यापारीनो पुत्र हतो. तेनो पिता तेने घणीवार एवी शिक्षा आपतो के, 'पिता विगेरे वडिलोनी सामे बोलवुं नहीं.' पितानी आ शिक्षा तेणे वक्रताथी मनमां धारण करी राखी. एक वखते घरना सर्वे स्वजन बहार गया हता, ते लाग जोइ ते पुत्रे विचार्युं के, वारंवार शिक्षा आपनार पिताने आज हुं शिक्षा आपुं. आवुं चिंतवी ते कमाड बंध करी अंदर रह्यो. ज्यारे पिता विगेरे पाछा आव्या त्यारे कमाड उघाडवाने घणा पोकार कर्या तोपण ते पुत्रे जवाब आप्यो नहीं तेमज कमाड उघाड्यां नहीं. पछी पिता भित उलंगी गृहमां पेठो एटले ते पुत्रने हसतो जोयो. ज्यारे उपालंभ आप्यो एटले तेणे कह्युं के, तमेज शिखव्युं छे के वृद्ध वडिलोनी सामे उत्तर न आपवो. आ बीजो दृष्टांत २. हवे अजित विगेरे बावीश तीर्थंकरोना मुनिओ ऋजु अने प्राज्ञ होय छे तेनो दृष्टांत आपे छे. जेम केटलाएक

अजितनाथ प्रभुना मुनिओ कोइ नटने जोइ चिरकाले आव्या. गुरुए पूछ्युं एटले तेओए यथार्थ कह्युं. पछी गुरुए तेम करवाने निषेध कर्यो. कोइवार पाछा तेज मुनिओ बहार गया, त्यां ते नटीने नृत्य करती जोइ प्राज्ञ होवाथी विचार करवा लाग्या के, आपणने गुरुए राग थवामां हेतुरूप जाणी नट जोवानुं निषेध्युं छे तो आ नटी तो स्त्री होवाने लीधे राग थवानुं अत्यंत कारणरूप छे, तो तेथी तेनो सर्वथा निषेधज होवो जोइए. एवुं विचारीने तेओए नटीना नृत्यनुं अवलोकन कर्युं नहीं. अहीं शंका करे के, त्यारे तो ऋजु अने प्राज्ञ एवा बावीश तीर्थंकरोना यतिओनेज धर्म हो, ऋजु अने जड एवा प्रथम तीर्थंकरना मुनिओने क्यांथी धर्म होय? कारण के तेओने बोध नथी, तेमां वली वक्र अने जड एवा श्रीवीर प्रभुना मुनिओने तो सर्वथा धर्मनोज अभाव छे, एवी शंका करवी नहीं, कारण के प्रथम तीर्थंकरना यतिओने जो के जडपणाने लीधे स्खलना पामवानो संभव छे तथापि तेओनो भाव शुद्ध होवाथी धर्म प्राप्त थाय छे. तेमज वीर प्रभुना मुनिओ वक्र अने जड होवाथी तेमनो भाव ऋजु प्राज्ञनी अपेक्षाए शुद्ध न होय तथापि सर्वथा धर्मज नथी एम कहेवाय नहीं, कारण तेम कहेवामां महान् दोष लागे छे. ते विषे कह्युं छे के, धर्म नथी, सामायिक नथी अने व्रत नथी तेवा पुरुषने श्रमणसंघे संघनी बहार करवो. १ जे पर्युषणा कल्प नियतपणे रहेवानो सीत्तेर दिवसना प्रमाणनो कह्यो छे, ते पण कारणने अभावेज जाणवो. जो कोइ कारण होय तो चतुर्मासमां पण विहार करवो कल्पे छे. ते विषे कह्युं छे के, " अशिव थाय तेम होय, आहार मलतो न होय अने राजाथी के रोगथी पराभव थतो होय, तो चतुर्मासमां पण बीजे विहार करवो कल्पे छे. " स्थंडिल स्थान सारुं न होय, उपाश्रयमां जीवात बहु होय, कुंथवा थया होय, अग्नि लाग्यो होय अने सर्प रहेतो होय तो त्यांथी बीजे विहार करवो कल्पे छे. २ वली जो आवां कारणो होय तो चतुर्मास वीत्या पछी पण रहेवुं कल्पे छे. ते आ प्रमाणे—"वर्षाद रहेतो न होय अने मार्ग कादवथी भरेलो होय तेथी कार्त्तिकी पूर्णिमानो अतिक्रम थाय तोपण उत्तम मुनिओ रहे छे. " ३ वली उपर कहेला

अशिव विगेरे दोष न होय तोपण संयमनो निर्वाह करवाने क्षेत्रना गुणोनी अन्वेषणा करवी. क्षेत्र जघन्य, उत्कृष्ट अने मध्यम एवा त्रण प्रकारनुं छे. तेमां जे चार गुणोथी युक्त होय ते जघन्य कहेवाय. ते चार गुणो आ प्रमाणे छे—ज्यां विहारभूमि एटले १ जिनप्रासाद होय, २ ज्यां स्थंडिल (ठल्ले जवानुं) शुद्ध, निर्जीव अने कोइ जोवे नहीं तेवुं होय, ३ ज्यां स्वाध्याय—सज्झाय करवानी भूमि सुलभ एटले अस्वाध्यायथी रहित होय, अने ४ ज्यां साधुओने आहार मलवो सुलभ होय. जे तेर गुणोथी युक्त होय ते उत्कृष्ट कहेवाय. ते गुणो आ प्रमाणे छे—१ ज्यां घणो कादव न होय, २ ज्यां घणा संमूर्छिम जीवो उद्भव थता न होय, ३ ज्यां ठल्लानुं स्थान निर्दोष होय, ४ ज्यां रहेवानो उपाश्रय स्त्रीना संसर्ग विगेरेथी रहित होय, ५ ज्यां गोरस घणो मले तेम होय, ६ ज्यां लोकसमूह महान् अने भद्रिक होय, ७ ज्यां वैद्यो भद्रिक होय, ८ ज्यां औषधो सुलभ होय, ए ज्यां गृहस्थोनां घर कुटुंबवालां अने धन धान्यादिकथी पूर्ण होय, १० ज्यां राजा भद्रिक होय, ११ ज्यां ब्राह्मणादिकथी मुनिओनुं अपमान न थतुं होय, १२ ज्यां भिक्षा स्हेलाइथी मलती होय, अने १३ ज्यां स्वाध्याय शुद्ध रीते थतो होय. ते तेर गुणोथी युक्त उत्कृष्ट क्षेत्र छे. पूर्वे कहेला चार गुणोथी अधिक, पांचथी भधा गुणोए युक्त अने तेरमा गुणथी ऊणुं एटले बारमा गुण पर्यंत एवुं मध्यम क्षेत्र छे. तेथी प्रथम उत्कृष्टा क्षेत्रमां, त्यां जो तेवुं न होय तो मध्यम क्षेत्रमां, त्यां पण तेवुं न होय तो जघन्य क्षेत्रमां अने हालमां तो गुरुए आज्ञा करेला क्षेत्रमां साधुओए पर्युषणा कल्प करवो. उपर दर्शावेलो आ दश प्रकारनो कल्प जो दोषना अभावे कर्यो होय तो त्रीजा वैद्यना औषधनी जेम हितकारक थाय छे. ते विषे आ प्रमाणे कथा छे—कोइ राजाए पोताना पुत्रने भविष्यमां रोग न थाय तेवी चिकित्सा करवाने त्रण वैद्योने बोलाव्या. तेमां प्रथम वैद्य बोल्यो—मारुं औषध जो रोग होय तो तेने हणे छे अने जो रोग न होय तो दोष प्रकट करे छे. राजाए कह्युं, सुतेला सर्पने उठाडवा जेवा आवा औषधथी सर्युं. बीजो वैद्य बोल्यो—मारुं औषध जो रोग होय तो तेने हणे छे अने रोग न होय तो गुण के दोष करतुं नथी. राजाए

तपस्या, पूजा अने प्रनावना विगेरे धर्मनां कार्योमां आलस्य करवुं न जोइए, कारण के उपर कहेली तपस्यादि सर्व सामग्रीए युक्त एवुंज कल्पसूत्रनुं श्रवण वांछित फलने आपनारुं छे. जेम बीज पण जो तेनी साथे वृष्टि, वायु विगेरेनी सामग्री होय तोज फलनी सिद्धि करवामां समर्थ थाय छे, ते सिवाय थतुं नथी. एवी रीते आ श्रीकल्पसूत्र पण देव गुरुनी पूजा, प्रनावना अने साधर्मिकनी नक्ति प्रमुख सामग्री साथे श्रवण करवाथीज यथार्थ फलना हेतुरूप थाय छे. नहीं तो "सर्व जिनवरोमां श्रेष्ठ एवा श्रीवर्द्धमान स्वामीने करेलो एक पण नमस्कार पुरुष अथवा स्त्रीने आ संसारसागरमांथी तारे छे." आवुं वचन सांनली प्रयासथी साध्य एवा कल्पसूत्रना श्रवणमां पण आलस्य थइ जाय.

हवे ग्रंथकर्त्ता पुरुषना विश्वास उपरथी तेनां वचननो विश्वास आवे एवो नियम छे तेथी आ कल्पसूत्रकर्त्ताने अहीं जणाववा जोइए. ते चौद पूर्वने जाणनारा युगप्रधान श्रीनद्रबाहु स्वामी छे, तेउए दशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययनपणाथी प्रसिद्ध प्रत्याख्यानप्रवाद नामना नवमा पूर्वमांथी उद्धार करी आ कल्पसूत्र रचेलुं छे. ते चौद पूर्वोनुं प्रमाण आ प्रमाणे छे–प्रथम पूर्व एक हस्तिना प्रमाणवाला मषीना पुंजथी लखाय तेवुं छे. बीजुं पूर्व बे हस्तिना प्रमाणना मषीना ढगलाथी लखाय तेवुं छे. त्रीजुं चार हस्तिप्रमाण मषीना पुंजथी लखाय तेवुं छे. चोथुं आठ हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. पांचमुं सोल हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. छठुं बत्रीश हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. सातमुं चोसठ हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. आठमुं बसो ने अठ्ठावीश हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. नवमुं बसो ने छप्पन हस्तिप्रमाणनुं छे. दशमुं पांचसो बार हस्तिउना प्रमाणनुं छे. अग्यारमुं एक हजार ने चोवीश हस्तिउना प्रमाणनुं छे. बारमुं बे हजार ने अरुतालीश हस्तिउना प्रमाणनुं छे. तेरमुं चार हजार ने छन्नुं हस्तिउना प्रमाणनुं छे. चौदमुं आठ हजार एक सो ने बाणुं हस्तिउना प्रमाणनुं छे. एकंदर सर्वे मली चौद पूर्वो सोल हजार त्रणसो ने त्र्याशी हस्तिउना

प्रमाणवाला मषीपुंजोथी लखी शकाय तेटलां छे. तेनी स्थापनानु यत्र आ प्रमाणे छे, तेथी ए महापुरुषोए रचित होवाथी मानवा योग्य छे अने तेमां गंभीर अर्थ रहेलो छे.

कह्युं छे के " जो सर्व नदीओनी रेती एकठी करीए अने सर्व समुद्रोनुं जल एकत्र करीए तेथी अनंतगणो एक सूत्रनो अर्थ थाय छे. " १ मुखमां सहस्र जिह्वा होय अने जो हृदयमां केवलज्ञान होय तोपण मनुष्योथी आ कल्पसूत्रनुं माहात्म्य कही शकाय तेम नथी.२ ते कल्पसूत्रने वांचवामां अने सांभलवामां मुख्य रीते साधु अने साध्वीओ अधिकारी छे. तेमां पण कालथी रात्रिने विषे कालगणनादि विधिने करनारा साधुओने वाचन अने श्रवण बंने योग्य छे अने साध्वीओने तो निशीथ चूर्णी विगेरेमां कहेला विधि वडे दिवसे पण योग्य छे.श्रीवीर प्रभुना निर्वाण पछी नवसो ने एंशी वर्ष अतिक्रम थतां बीजा मत प्रमाणे नवसो ने त्राणुं वर्ष अतिक्रम थतां आनंदपुरमां पुत्रना मृत्युथी दुःखी थयेला ध्रुवसेन राजाना मनने समाधान करवाने आ कल्पसूत्र मोटा महोत्सव साथे सभानी समक्ष वांचवा आरंभ्युं हतुं, त्यारथी मांडीने चतुर्विध संघ तेना श्रवणनो अधिकारी थयो छे पण वांचवाने अधिकारी तो मात्रयोग वहेनार साधु छे. आ वार्षिक पर्वमां कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम आ पांच कार्य पण अवश्य करवा योग्य छे. ते आ प्रमाणे—पहेलुं कार्य चैत्यपरिपाटी एटले प्रत्येक चैत्ये वंदना अर्थे फरवुं,बीजुं कार्य सर्व साधुओने वंदना करवी, त्रीजुं कार्य सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करवुं,चोथुं कार्य परस्पर साधर्मी भाइओने खमाववुं अने पांचमुं कार्य अष्टम तप करवुं, ए पांच कार्यो पण कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम इच्छित पदार्थने आपनारां छे, तेमज अवश्य कर्त्तव्य छे; वली श्रीजिन भगवंते ते करवानी आज्ञा करी छे एम जाणवुं. तेमां जे अठम तप छे ते त्रण उपवासथी बने छे, ते तप महा फलनुं कारण, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप त्रण रत्नने आपनार, त्रण शल्यने उन्मूलन करनार, त्रण जन्मने पवित्र करनार, मन, वचन अने कायाना दोषने शोषण करनार अने त्रण जगत्मां श्रेष्ठ पदने पमाडनार छे तेथी मोक्षपदना अभिलाषी एवा भविप्राणीओए ते अष्टम तप अवश्य करवा योग्य छे.ते उपर नागकेतुनो दृष्टांत छेः—चंद्रकांता नामे नगरी


चित्र १
इंद्र महाराज.
नाग केतु.
ब्राह्मणना
रूपें इंद्र.
राजा.
राजाना माणसो

यथाशक्ति तप करवाने तैयार थयो. एक वखते 'हुं आवता पर्युषणा पर्वमां अष्टम तप करीश' एवो मनमां निश्चय करी ते तृणनी झुंपडीमां सुइ गयो हतो. ते अवसर मेलवी तेनी अपर माताए नजीक रहेला अग्निनो एक तणखो तेमां नाख्यो. एटले ते झुंपडी बली जतां साथे ते पण बलीने मृत्यु पाम्यो. अष्टम तपना ध्यानथी ते आ श्रीकांत श्रेष्ठीनो पुत्र थयो छे. तेथी करीने एणे पूर्वभवे चिंतवेलुं अष्टम तप हमणां बाल्यवयमां कर्युं छे. आ महापुरुष लघुकर्मी होइ आ भवमांज मुक्तिगामी थशे. तेथी ते यत्नथी पालन करवा योग्य छे. एथी तमने मोटो उपकार थशे. आ प्रमाणे कही धरणेंद्र तेना कंठमां पोतानो हार नाखी स्वस्थाने चाल्यो गयो.

पछी स्वजनोए आवी श्रीकांत शेठनुं मृतकार्य—उत्तरकार्युं कर्युं अने तेना पुत्रनुं नागकेतु एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते बाल्यवयथी जितेंद्रिय अने परम श्रावक थयो. एक वखते विजयसेन राजाए कोइ चोर न हतो ते छतां तेने चोरनुं कलंक लगाडी मारी नाख्यो, आथी ते व्यंतर थयो. ते व्यंतरे बधा नगरनो विघात करवाने एक मोटी शिला रची. वली राजाने पगना प्रहारथी रुधिरनुं वमन करावी सिंहासन उपरथी पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो. आ जोइ नागकेतुए विचार्युं के, हुं जीवतां आ संघ तथा प्रासादनो विनाश थाय ते केम जोयुं जाय ? आवुं विचारी प्रासादना शिखर उपर चढी तेणे ते शिलाने हाथमां धरी राखी. ते पछी ते व्यंतर पण तेना तपनी शक्ति सहन करी शक्यो नहीं एटले ते शिलाने संहारी नागकेतुने नमी पड्यो. तेना वचनथी राजाने पण उपद्रव रहित कर्यो. एक वखते ते नागकेतु जिनेंद्रपूजा करतो हतो तेवामां पुष्पनी अंदर रहेलो सर्प तेने डस्यो, तथापि ते अव्यग्रपणे भावनारूढ थयो तेथी केवलज्ञानने प्राप्त थयो. पछी शासनदेवताए तेने मुनिनो वेष अर्पण कर्यो अने ते चिरकाल विहार करवा लाग्यो. आ प्रमाणे नागकेतुनी कथा सांभली बीजाओए पण अष्टम तप करवामां यत्न करवो जोइए. इति नागकेतु कथा.

हवे आ कल्पसूत्रमां त्रण बाबत मुख्यपणे वांचवानी छे.ते विषे पुरिमचरिमा० ए गाथा छे तेनी व्याख्या

आ प्रमाणे छे—पुरिमचरिमाणत्ति एटले श्रीऋषभ अने वीर प्रभुनो आ कल्प एटले आचार छे के, वृष्टि थाओ के न थाओ पण अवश्य करीने पर्युषणा पर्व करवुं. उपलक्षणथी जाणी लेवुं के ते पर्युषणा पर्वमां कल्पसूत्र पण वांचवुं. एक तो ए आचार छे अने बीजुं ते वर्द्धमानतीर्थमां मंगलना कारणरूप छे.

कदि शंका थाय के, श्रीवर्द्धमानतीर्थमां शामाटे कह्युं? तो कहे छे के, जे कारण माटे अहीं श्री जिन भगवंतनां चरित्रो कहेलां छे, तेमज गणधरादि स्थविरावलीनां चरित्रो कहेलां छे, वली ते सामाचारी कहेवाय छे. तेमां प्रथम अधिकारमां सर्व जिनचरित्रोमां नजीक उपकारीपणाने लीधे प्रथम श्रीवीर प्रभुनुं चरित्र वर्णन करतां श्रीभद्रबाहु स्वामी जघन्य तथा मध्यम वाचनारूप प्रथम सूत्र रचे छे—

तेणं कालेणं ए वाक्यथी ते परिनिव्वुए भयवं त्यांसुधी संबंध छे. तेणं कालेणं केतां ते काले एटले अवसर्पिणी कालना चोथा आरा पर्यंत. मूलमां सर्व ठेकाणे जे 'णं' अक्षर छे ते वाक्यालंकारने अर्थे छे. तेणं समएणं केतां विशिष्ट एवो जे कालनो विभाग ते समय कहेवाय छे, ते समयमां के जे समय श्रीवर्द्धमान स्वामी चववुं इत्यादि छ वस्तुओना कारण थया हता, ते समयमां 'समणे भगवं महावीरे' श्रमण एटले तपस्या करवामां तत्पर एवा, भगवान् केतां सूर्य अने योनि सिवाय भगना बार अर्थवाला, जेने माटे कहे छे के, "सूर्य, ज्ञान, माहात्म्य, यश, वैराग्य, मुक्ति, रूप, वीर्य, प्रयत्न, इच्छा, लक्ष्मी, धर्म, ऐश्वर्य अने योनि—ए चौद अर्थमां भग शब्द प्रवर्त्ते छे. आमां प्रथम सूर्य अने छेवटनो योनि ए बे अर्थ वर्जवा. अहीं शंका थाय के, जे भग शब्दनो अर्थ योनि थाय ते कदि वर्जवायोग्य होय पण सूर्यवाचक भग शब्द शी रीते वर्जवो? ते सत्य छे. अहीं उपमापणाथी सूर्य थाय पण वत् प्रत्ययांत होवाथी भगवान् एटले सूर्यवान् एवो अर्थ लागतो नथी, तेथी ते वर्जित कर्यो छे, महावीर एटले कर्मरूपी वैरीने पराभव करवाने समर्थ अर्थात् श्रीवर्द्धमान स्वामी, ते वर्द्धमान स्वामी पंचहत्थुत्तरे होत्थत्ति एटले हस्तनक्षत्र उत्तर एवुं नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र छे, कारण के गणत्रीमां तेनाथी हस्त उत्तरमां छे, ते उत्तराफाल्गुनी छे पांच स्थानोमां जेने ते पंचहस्तोत्तर एवा भगवंत वीर प्रभु छे.

होइत्ति एटले होता हवा. अहीं षट् कल्याणकवादी कहे छे के, "पंचहत्थुत्तरे साइणा परिनिव्वुए" ए वचन उपरथी श्रीमहावीर प्रभुने छ कल्याणक संपन्न थाय, आ कहेवुं योग्य नथी, कारण जो एम कहेशो तो "उसभेणं अरहाकोसलिए" इत्यादि जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिनुं वचन छे, तेथी श्रीऋषभ प्रभुने पण छ कल्याणक कही शकाशे. तमारे पण ते कल्याणकोने माटे तेम कहेवुं नहीं. तेथी जेम "पंच उत्तरा- पाढे" ए वाक्यमां नक्षत्रना साम्यथी राज्याभिषेक तेमां गणेलो छे, पण कल्याणक तो "अभीइ छट्ठे" एवी रीते एनी साथे पांचज छे. तेम अहीं पण पंचहत्थुत्तरे ए नक्षत्रनी तुल्यताथी ते मध्ये गर्भनो अ- पहार गणेलो छे, अने कल्याणक तो साइणा परिनिव्वुए एनी साथे पांचज लीधां छे. वली श्री आचारां- गटीका विगेरेमां पंचहत्थुत्तरे ए वाक्यमां पांच वस्तुओज व्याख्यान करी छे, कल्याणकनी व्याख्या करी नथी. श्रीहरिभद्रसूरिकृत यात्रा पंचाशक उपर श्री अभयदेवसूरिए करेली वृत्तिमां श्रीवीर प्रभुनां पंच कल्याणक आ प्रमाणे कहेलां छे. आषाढ मासनी शुक्ल छठ गर्भसंक्रम १, चैत्र मासनी शुक्ल तेरसे जन्म २, मागशर मासनी शुक्ल दशमीए दीक्षा ३, वैशाख शुक्ल दशमीए केवलज्ञान ४ अने कार्तिक मासनी अमासे मोक्ष ५. एवी रीते श्रीवीर प्रभुनां पंच कल्याणक कह्यां छे. हवे जो छठ्ठुं कल्याणक गणातुं होत तो तेमां तेनो दिवस पण कह्यो होत. वली बीजुं एम पण छे के, छठ्ठुं कल्याणक जो गर्भापहार गणाय तो ते नीचा गोत्रना विपाकरूप, अतिनिंदवा योग्य अने आश्चर्यरूप छे तेने कल्याणक कहेवुं ते अनु- चित छे. कदि अहीं शंका करशो के, पंचहत्थुत्तरे ए ठेकाणे गर्भापहार केम कह्यो ? तो ते सत्य छे, पण तेना समाधानमां कहेवानुं के, ज्यारे भगवंत वीर प्रभु श्रीदेवानंदानी कुक्षिमां अवतर्या अने माता त्रिशलाने प्रसव थयो ए असंगत छे तेने निवारवाने माटेज पंचहत्थुत्तरे ए वचनथी गर्भनो अपहार सूचव्यो छे. ते विषे हवे विशेष कहेवानी जरूर नथी.

एथी एम सिद्ध थयुं के, कल्याणक पांचज छे. ते आ प्रमाणे भगवंतने पंचहस्तोत्तरपणुं मध्यम वा- चनाथी दर्शावे छे. हत्थुत्तराहिं चुए त्ति एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां प्राणत नामना दशमा देवलोक-

मांथी श्रीभगवंत चवेला छे. चइत्ता गब्भं वक्कंते एटले त्यांथी चवीने गर्भमां उत्पन्न थयेला छे. हत्थुत्तराहिं० एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गर्भमांथी गर्भमां संहार थयेला अर्थात् देवानंदाना गर्भथी त्रिशलाना गर्भमां मुक्त थयेला.

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयेला; हत्थुत्तराहिं मुंडे० एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां मुंड थयेला. ते द्रव्य अने भावथी मुंड थयेला. द्रव्यथी मुंड केशनो लोच करवाथी अने भावथी मुंड राग द्वेषना अभावथी. अगार एटले घरमांथी नीकलीने अनगारिपणाने—साधुपणाने पवइ० कहेतां प्राप्त थयेला छे. तेम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत कहेतां अनंतवस्तुना विषयरूप, अणुत्तर कहेतां अनुपम एवुं, निव्वाघा० कहेतां व्याघातरहित, एटले भींत, छादडी विगेरेनी स्खलना रहित एवुं, निरावरण० कहेतां समस्त आवरणथी रहित एवुं, कसिण० कहेतां सर्व पर्यायथी युक्त एवुं अर्थात् सर्व वस्तुउने जणावनारुं, पडिपुण्ण कहेतां परिपूर्ण—सर्व अवयवोथी संपूर्ण—एवा प्रकारनुं वरं कहेतां प्रधान एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन जेने समुपन्न० कहेतां उत्पन्न थयेल छे. वली उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां तेने प्राप्त थया छे अने साइणा परिनिव्वु० कहेतां स्वाति नक्षत्रमां भगवान् श्रीवीर प्रभु मोक्षे गया छे. हवे विस्तारवाली वाचनाथी श्रीवीर प्रभुनुं चरित्र कहे छे—तेणं समएणं इत्यादिनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो.

जे से गिम्हा० कहेतां जे ग्रीष्मऋतुना समयनो, चउछे मासे कहेतां चोथो मास, अठमे पक्खे कहेतां आठमो पक्ष अर्थात् आषाढ मासनो शुक्लपक्ष. तस्सणं आषाढ० कहेतां ते आषाढ मासना शुक्ल पक्षनी छठी पक्खेणं० कहेतां छठी रात्रिए. रात्रि अर्थ लेवानुं कारण ए छे के दिवस अने रात्रि वडे अहोरात्रिना बंने पक्ष गणाय छे. पुव्वरत्तावरत्त० कहेतां पूर्वरात्र अने अपररात्रनो समय, ते आगल कहेवामां आवशे. अहीं पक्ष शब्द वडे रात्रि अर्थ लेवो. महाविजय० कहेतां—जेमां महान्—मोटो विजय छे ते महाविजय कहेवाय. वली ते केवुं छे के पुप्फुत्तर० कहेतां पुष्पोत्तर नामे छे. ते पवर पुंडरीया० कहेतां बीजां श्रेष्ठ विमानोमां पुंडरीक कहेतां श्वेत कमलना जेवुं अर्थात् अति श्रेष्ठ छे. ते महाविमाणा० कहेतां महाविमान

केवुं छे ? वीसंसागरोवम० कहेतां वीश सागरोपम स्थितिवालुं छे. तेमां देवताउनी उत्कृष्ट स्थिति वीश सागरोपमनी रहे छे. जगवंत श्रीवीर प्रजुनी स्थिति पण एटलीज हती. हवे ते विमानथी आउख० कहेतां आयुष्यना क्षय वडे, जवखयेणं कहेतां देवगति नामकर्मना क्षय वडे, ठिइखयेणं कहेतां स्थिति एटले वैक्रिय शरीरमां रहेवुं तेना क्षय वडे, कहेतां पूर्ण करवा वडे, अणंतरं कहेतां अंतर रहित एवुं चयं चइत्ता कहेतां च्यवन करीने इहेव जंबू० कहेतां आज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे, जारहे वासे० कहेतां जरत क्षेत्रना दक्षिणार्ध जरतने विषे अवसर्पिणी काल एटले जेमां समये समये रूप रस विगेरेनी हानि थती जाय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय, ते कालने विषे सुषमसुषमा नामनो चार कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो पहेलो आरो उल्लंघन थया पछी सुषमा नामनो त्रण कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो बीजो आरो आवे, ते उल्लंघन थया पछी सुषमदुःषमा नामनो बे कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो त्रीजो आरो आवे. ते उल्लंघन थया पछी दुःषमसुषमा नामे चोथो आरो आवे, ते घणो उल्लंघन थयेलो छे, कांइक ऊणो छे. ते कहे छे—

बेंतालीश हजार वर्षोथी ऊणी एक सागर कोटाकोटि चोथा आरानुं प्रमाण छे. तेमां चोथा आरानां पंचोतेर वर्ष अने साडाआठ मास शेष रहेतां श्रीवीर प्रजुनो अवतार थयो छे. श्रीवीर प्रजुनुं आयुष्य बोंतेर वर्षनुं छे. श्रीवीर प्रजुना निर्वाणथी त्रण वर्ष अने साडाआठ मास जतां चोथा आरानी समाप्ति थाय छे तेथी प्रथम जे बेंतालीश हजार वर्ष कह्यां ते एकवीश एकवीश हजारना प्रमाणवाला पांचमा अने छठा आरा संबंधी जाणवां.

एकवीश तीर्थंकरो इक्ष्वाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने काश्यपगोत्री छे अने बावीशमा मुनिसुव्रत अने त्रेवीशमां नेमि जगवंत ते हरिवंश कुलमां उत्पन्न थयेला अने गौतमगोत्री छे. एवी रीते ते त्रेवीश तीर्थंकरो अतीत थया पछी श्रमण जगवंत श्रीमहावीर थया छे जे प्रजु चरम-छेल्ला तीर्थंकर छे अने जे पूर्वेना तीर्थंकरोए निर्देश करेला छे एटले श्रीवीर प्रजु उत्पन्न थशे एम कहेलुं छे. वली जे जगवंत

ब्राह्मणकुंडग्राम नामना नगरमां कोडालगोत्री एवा रुषजदत्त ब्राह्मणनी स्त्री देवानंदा ब्राह्मणी के जे जालंधरसगोत्री बे तेनी कुक्षिमां गर्जपणाथी उत्पन्न थया हता. ते क्यारे उत्पन्न थया हता के, पूर्वरात्र अने अपर रात्रना समयमां अर्थात् मध्यरात्रे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र चंद्रना योगने प्राप्त थतां. दिव्य आहार, दिव्य जव अने दिव्य शरीरनो त्याग करवाथी ज्यारे जगवंत गर्जमां उत्पन्न थया त्यारे ते त्रण ज्ञानथी युक्त हता. 'हुं च्यवीश' एवुं जाणता अर्थात् पोताना च्यववानो जविष्यकाल जाणता हता.

पोते चवे बे ते वखते जाणता नथी, कारण के ते एक समये थाय बे अने 'हुं चव्यो' एम जाणे बे. जे रात्रे श्रमण जगवंत श्रीमहावीर प्रजु जालंधरसगोत्री देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां गर्जपणे उत्पन्न थया ते रात्रिए ते देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी शय्यामां अति निद्रा लेती नहती तेम अतिशे जाग्रत पण नहती एटले ते अल्प निद्रा करती हती. ते वखते तेणीए आवा प्रकारनां एटले जेमनुं स्वरूप हवे कहेवामां आवशे एवां, वली ते स्वप्नां केवां बे, उदार-श्रेष्ठ बे, कल्याणना हेतु बे, उपद्रवने हरनारां बे, धनना हेतु बे, मंगलिक बे, अने शोजाए युक्त बे एवां चौद महास्वप्नोने जोइ ते देवानंदा ब्राह्मणी जागी गयां. ते कयां कयां स्वप्नो बे ते विषे गय वसह इत्यादि गाथा बे. आ गाथा सेहेली बे, तेमां विशेष कहेवानुं आ प्रमाणे बे. अजिषेक एटले लक्ष्मी संबंधी अजिषेक जाणवो. पद्म-कमलथी उपलक्षित एवुं सरोवर. विमान एटले देव संबंधी जवन एटले घर—अहीं जे प्रजुनो जीव स्वर्गथी अवतरे तेनी माता विमान जुवे बे अने जे प्रजुनो जीव नरकमांथी आवे तेनी माता जवन एटले घरने जुवे बे. ते बंनेमांथी एकनुं दर्शन होय तेथी चौदज स्वप्न थाय बे. शिखी एटले धूमाडा वगरनो अग्नि लेवो. एवी रीते ते देवानंदा ब्राह्मणी यथोक्त चौद स्वप्नोने जोइ जाग्रत थयां.

ते पबी ते देवानंदा ब्राह्मणी हर्ष तथा विस्मय पाम्यां अने परम संतोषने प्राप्त थयां. वली चित्तमां आनंद पाम्यां. तेमना हृदयमां प्रीति थइ, मनमां परम तुष्टि थइ. हर्षना वशथी तेमनुं हृदय विस्तार पामी गयुं. मेघना जलनी धाराथी सिंचन थयेलुं कदंबनुं* पुष्प जेम प्रफुल्लित थाय तेम तेना रोमकूप

* कदंबनुं वृक्ष मेघनी धाराथी प्रफुल्लित थाय बे.

चित्र. २





प्रफुल्लित थया. आवी रीते थयेलां महानंदा ब्राह्मणी ते स्वप्नोनुं स्मरण करवा लाग्यां. ते स्मरण करीने शय्यामांथी बेठा थयां. पछी ते अत्वरित एटले मानसिक उत्कंठाथी रहित एवी, अचपल एटले कायानी चपलताथी वर्जित एवी, असंभ्रांत एटले स्खलना वगरनी, अविलंबित एटले विलंब रहित एवी अने राजहंसना जेवी गति वडे ज्यां ऋषभदत्त ब्राह्मण हता, त्यां ते आव्यां. त्यां आवीने ऋषभदत्त ब्राह्मणने जय अने विजयथी वधावे छे एटले आशिष आपे छे. तेमां स्वदेशमां जय अने परदेशमां विजय समजवो. ते वधावीने भद्रासन उपर बेठां, ते पछी श्रमने टाली आश्वासनने अने क्षोभना अभावथी विश्वासने प्राप्त कर्यो तेथीज सुखे करी उत्तम आसनने प्राप्त थयां.

पछी जे अंजलि बे हाथ वडे करेली हती, जेमां दश नख उदय पाम्या हता अने जेनुं प्रदक्षिण भ्रमण मस्तक उपर करेलुं हतुं एवी अंजलि ते देवानंदाए पोताना मस्तक उपर करी आ प्रमाणे कह्युं, हे देवानुप्रिय, आज रात्रे हुं अल्प निद्रा करती हती ते वखते हुं आ आगल कहुं छुं एवां चौद उत्तम स्वप्नोने (गज, वृषभ विगेरे) जोइने जागी गइ, ते चौद स्वप्नोनुं कल्याणकारी शुं फल तथा वृत्तिविशेष थशे ते हुं विचारुं छुं. अहीं फल एटले पुत्रादि अने वृत्ति एटले जीवननो उपाय प्रमुख, तेमांथी शुं थशे? ते पछी ते ऋषभदत्त ब्राह्मणे देवानंदा पासेथी ए अर्थ सांभली, मनमां अवधारी, हर्षादि प्राप्त करी, मेघनी धारा वडे सिंचन थयेला कदंब वृक्षनां पुष्पनी पेठे शरीरना छिद्ररूप कुवाने विषे उंचां थयां छे रोमांच जेने एवो थयो छे तेणे स्वप्नांनी धारणा करी, धारणा करीने अर्थविचारणा करी, अर्थविचारणा करीने पोतानुं स्वाभाविक मतिपूर्वक एवुं जे बुद्धिविज्ञान ते वडे करीने अहीं जे अनागत कालनो विषय थाय ते मति अने वर्त्तमान कालनो विषय थाय ते बुद्धि कहेवाय छे.

"विषयने प्राप्त न करे ते मति कहेवाय अने सांप्रतकालने दर्शावनारी ते बुद्धि कहेवाय. जे भूतार्थने बतावे ते स्मृति जाणवी अने त्रणे कालने दर्शावे ते प्रज्ञा कहेवाय." १ अतीत–भूत अने अनागत– भविष्यकालनी वस्तुउना विषयमां आवे ते विज्ञान कहेवाय. ते पछी ते स्वप्नांना अर्थनो निश्चय

करे छे, ते निश्चय करीने तेउं देवानंदा ब्राह्मणी प्रत्ये बोल्या—ते शुं बोल्या ते कहे छे—हे देवानुप्रिये, तमे उदार, कल्याणकारी, धनदायक, मांगल्यरूप अने शोभायुक्त स्वप्न जोयां छे. ते स्वप्नां आरोग्य, संतोष, दीर्घ आयुष्य, कल्याण एटले उपद्रवनो अभाव, मंगल एटले वांछित फलनी प्राप्ति ए सर्व वस्तुउने करनारां स्वप्नो तमे जोयां छे. ते आ प्रमाणे—हे देवानुप्रिये, तेथी तमने अर्थलाभ, भोगलाभ, पुत्रलाभ अने सुखलाभ थशे. तमने नव मास पूरा अने साडासात दिवस गया पछी तमे एक पुत्रने जन्म आपशो. ते पुत्र केवो थशे ते कहे छे.

जेना हाथ अने पग कोमल छे अने जेना शरीरमां लक्षणवाली अने स्वरूपथी परिपूर्ण एवी पांच इंद्रियो छे तेमज लक्षण अने व्यंजनना गुणे करीने युक्त एवो पुत्र थशे. अहीं लक्षण एटले छत्र चामरादि जाणवां. ते चक्रवर्त्ती अने तीर्थंकरोने एक हजार ने आठ होय छे. बलदेव अने वासुदेवने एकसो आठ होय छे अने बीजा भाग्यवानने बत्रीश लक्षणो होय छे— ते बत्रीश लक्षणो आ प्रमाणे छे—

"छत्र, कमल, धनुष्य, रथ, वज्र, काचबो, अंकुश, वापिका, स्वस्तिक (साथीउं), तोरण, सरोवर, केशरीसिंह, वृक्ष, चक्र, शंख, हस्ती, समुद्र, कलश, मेहेल, मत्स्य, जव, यज्ञस्तंभ, स्तूप (चोतरो), कमंडल, पर्वत, चामर, दर्पण, बलद, पताका, लक्ष्मीनो अभिषेक, उत्तम माला अने मयूर ए बत्रीश लक्षणो पुण्यवंत जीवोने होय छे." ए लक्षणवाला पुरुषनां सात लक्षण रातां, छ उंचां, पांच सूक्ष्म अने लांबां, त्रण विशाल, त्रण लघु अने त्रण गंभीर—एवी रीते बत्रीश लक्षणो पुरुष कहेवाय छे. तेमां ते नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालवुं अने नेत्रना खूणा, ए सात रातां श्रेष्ठ छे. कांख, हृदय, डोक, नासिका, नख अने मुख, ए छ उन्नत— उंचां श्रेष्ठ छे. दांत, चामडी, केश, आंगलीना पर्व अने नख, ए पांच सूक्ष्म श्रेष्ठ छे. नेत्र, हृदय, नासिका, हडपची अने भुजा, ए पांच लांबां श्रेष्ठ छे. ललाट, छाती, अने मुख, ए त्रण विस्तारवालां उत्तम छे. डोक, जंघा अने लिंग—इंद्रिय, ए त्रण लघु सारां छे. सत्त्व, स्वर अने नाभि, ए त्रण गंभीर सारां छे—ए बत्रीश लक्षणो थयां. शरीरनो अर्ध भाग मुख छे अथ-

वा सर्व शरीर मुख कहेवाय छे, तेनाथी नासिका श्रेष्ठ छे अने नासिकाथी लोचन श्रेष्ठ छे. १ जेवां लोचन होय तेवुं शील समजवुं. जेवी नासिका तेवी सरलता समजवी. जेवुं रूप तेवुं द्रव्य जाणवुं अने जेवुं शील तेवा गुण जाणी लेवा. २ जे पुरुष अति ठींगणो होय, अति लांबो होय, अति जाडो होय, अति दुबलो होय, अतिशे कालो होय अने अतिशे गोरो होय, ते छ जातना पुरुषोमां सत्त्व रहेलुं होय छे. ३ सद्धर्मी, स्वरूपवान्, नीरोगी, सारा स्वभाववालो, सारी नीतिवालो अजे कवि थयेलो पुरुष पोते स्वर्गमांथी आव्यो छे अने पोताने पाछुं स्वर्गमां जवानुं सूचवे छे. ४ दंभवगरनो, दयालु, दानी, इंद्रियोने दमन करनार, डाह्यो अने हमेशां सरल एवो पुरुष मनुष्य योनिमांथी आवी पाछो मनुष्य योनिमां जाय छे. ५ माया, लोभ, क्षुधा, आलस्य अने घणो आहार इत्यादि चेष्टाउथी पुरुष पोते तिर्यंच योनिमांथी आवेलो छे एम सूचवे छे. ६ जे पुरुष रागी, स्वजननो द्वेषी, दुर्भाषा बोलनार अने मूर्खनो संग करनार होय ते पोते नरकमांथी आवेलो सूचवे छे. ७ पुरुषोने दक्षिण भागमां जो आवर्त्त होय तो ते शुभ फल आपे छे. वाम भागमां होय तो ते अतिनिंदवा योग्य छे अने ते सिवायना भागमां होय तो मध्यम फल आपे छे. ८ जे पुरुषोना हाथमां रेखा थोडी होय अथवा घणी होय तो तेउ अल्प आयुष्यवाला, निर्धन अने दुःखी थाय, तेमां कांइपण संशय नथी. ९ जे पुरुषनी अनामिका (टचली आंगलीनी पासेनी) आंगलीनी अंत्यरेखाथी कनिष्ठा आंगली जो अधिक होय तो ते पुरुषने धननी वृद्धि थाय अने मोशाल पक्ष घणो होय. १० मणिबंधथी जे रेखा चाले छे ते पितानी रेखा छे अने करभ (टचली आंगलीनी नीचेना भाग) थी जे बे रेखा चाले छे ते वैभव अने आयुष्यनी रेखाउ छे, ते त्रण रेखाउ तर्जनी (अंगोठा पासेनी आंगली) अने अंगोठानी वचे जइ मले छे. ११ जेउने ते त्रण रेखाउ संपूर्ण अने दोष वगरनी होय तेउने गोत्र—कुल, धन अने आयुष्यनुं संपूर्ण सुख मले छे, जो तेवुं न होय तो न्यून सुख मले छे. १२ आयुष्यनी रेखा जेटली आंगलीउने उल्लंघन करी आगल जाय तेटलां पचवीश वर्षनी आयुष्य विद्वानोए जाणी लेवी. १३ जो जमणा हाथना अंगो-

ठाना मध्यमां जव रेखा होय तो विद्या, प्रख्याति अने वैभव प्राप्त थाय छे अने ते पुरुषनो जन्म शुक्ल पक्षमां समजवो. १४ जे पुरुषनी आंखो राती होय तेने स्त्री त्यजी शकती नथी, जेनी आंखो सुवर्णना जेवी पीली होय तेने द्रव्य त्यजतुं नथी, जेना हाथ लांबा होय तेने ऐश्वर्य छोडतुं नथी अने जेना शरीरमां मांसनी पुष्टि होय तेने सुख छोडतुं नथी. १५ जो नेत्रमां स्नेह (चीकाश) होय तो सौभाग्य होय, जो दांतमां स्नेह होय तो सारां भोजनो मले अने जो शरीरमां स्नेह होय तो सुख मले अने जो पगमां स्नेह होय तो वाहन प्राप्त थाय. जेनी उर (छाती) विशाल होय ते धन धान्यनो भोगी थाय, जेनुं मस्तक विशाल होय ते उत्तम राजा थाय, जेनी कटीनो भाग विशाल होय तेने स्त्री अने पुत्रो घणा थाय अने जेना पग विशाल होय ते हमेशां सुखी थाय. १६ आ प्रमाणे लक्षणो जाणवां.

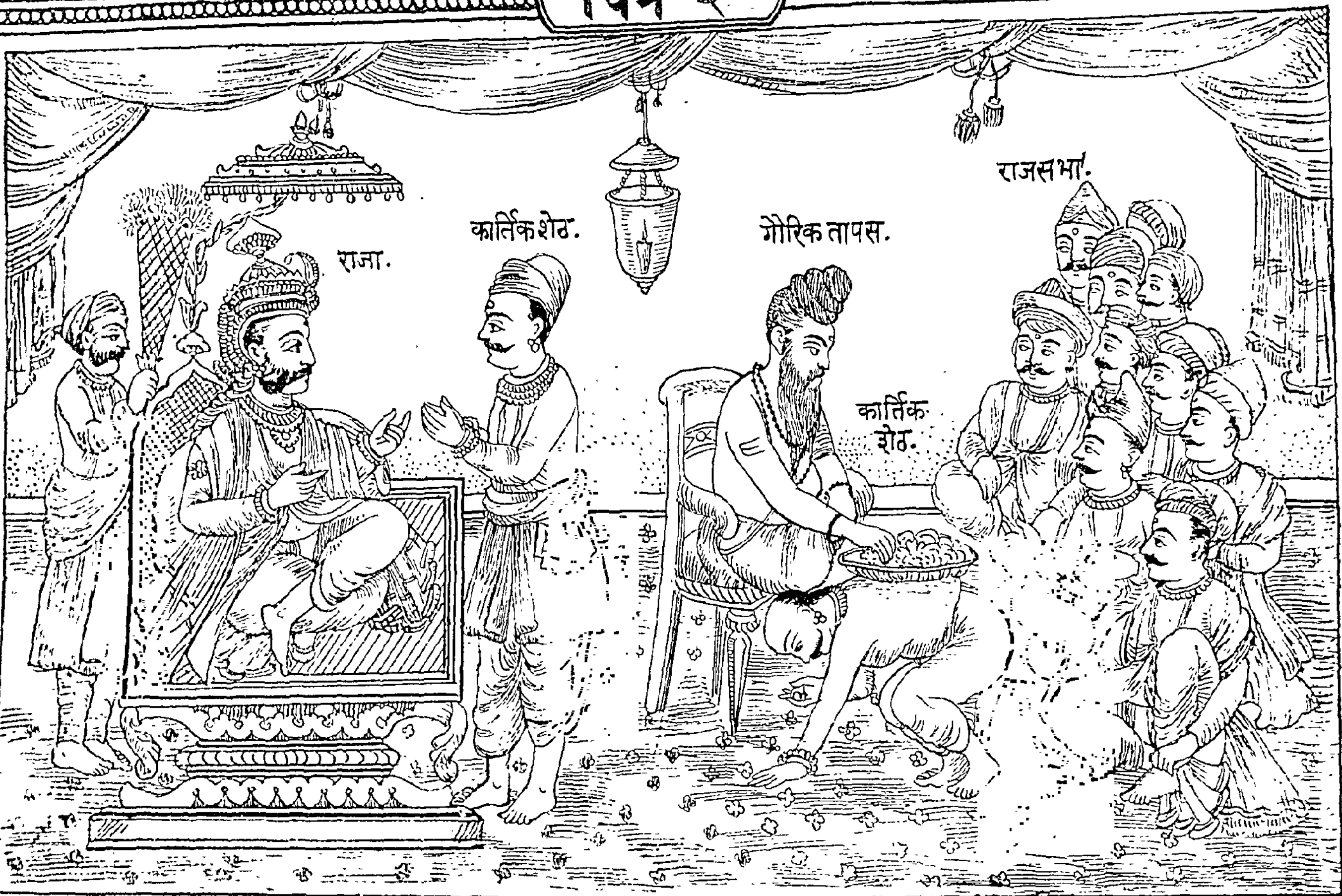
हवे व्यंजन कहे छे, व्यंजन एटले शरीर उपर जे मसा अने तिलक विगेरे होय छे ते, लक्षण तथा व्यंजनना गुणोथी युक्त एवो ते कुमार हतो. वली ते मान तथा उन्मानना प्रमाणने प्राप्त थयो हतो. तेमां जलना भरेला कुंडनी अंदर एक पुरुषने प्रवेश करावे, पछी जे जल बहार नीकली जाय तेटलुं जल द्रोणमान थाय त्यारे ते पुरुष मानप्राप्त कहेवाय अने जो त्राजवा उपर अर्धभारना मानवालो थाय तो ते उन्मानप्राप्त कहेवाय. हवे जे भार कह्यो तेनुं मान आ प्रमाणे छे, "छ सर्षवना दाणानो एक जव थाय, त्रण जवनी एक चणोठी थाय, त्रण चणोठीनो एक वाल थाय अने सोल वालनो एक गदीआणो थाय. १ दश गदीआणानो एक पल थाय अने दोढसो गदीआणानो एक मण थाय, दश मणनी एक घटिका थाय एम विद्वानो कहे छे, दश घटिकानो एक भार थाय. प्रथम जे कह्युं के ते दोढसोनो एक मण थाय त्यां गदीआणा लेवा पल लेवा नहीं, जो दोढसो पलनो मण थाय एम लइए तो भारना अठ्योतेर मण थइ जाय अने तेना अर्धभागे उगणचालीश मण थाय, एथी एटलुं शरीरनुं मान संभवे नहीं. जो दोढसो गदीआणानो मण लइए तो भारना चालीश शेरना मान वडे कांइक अधिक एवा पोणा आठ मण थाय अने तेनुं अर्धुं मान एटले पोणाचार मण अने पांच शेरथी वधारे शरीरनुं प्रमाण संभवे छे,

अने तेथी दोढसो गदीआणानो मण पण संजवे.कोइ देशमां कांइक ऊणा त्रण शेरने पण मण कहेवानो व्यवहार वे. हवे प्रमाण विषे कहे वे. पोताना अंगुल वडे एकसो आठ अंगुलनी उंचाइवालो उत्तम पुरुष कहेवाय वे, मध्यम अने हीन पुरुष बन्नुं तथा चोराशी आंगलनी उंचाइवाला होय वे. अहीं जे उत्तम पुरुष कह्यो ते तीर्थंकरथी अन्य लेवो, कारण के जे तीर्थंकर होय ते बार आंगलनी मस्तकनी पाघडी सुधां गणीए तो एकसो ने वीश आंगल उंचा होय वे. हवे तेवी रीतनां मान, उन्मान अने प्रमाणथी परिपूर्ण एवां मस्तक प्रमुख सर्व अंगो जेमां उत्पन्न थयां वे, एवा प्रकारनुं सुंदर जेनुं शरीर वे एवो, वली ते केवो बालक के जेनी आकृति चंद्रना जेवी रमणीय वे, जे मनोहर वे, जेनुं दर्शन प्रिय वे अने जेनुं स्वरूप सुंदर वे एवा बालकने हे देवानुप्रिये, तमे जन्म आपशो. ए

हवे ते बालक आवो थशे. केवो थशे ते कहे वे– ज्यारे ते बालजावने वोडी देशे अर्थात् आठ वर्षनो थशे, त्यारे ते एवो थशे के जेनामां सर्व विज्ञान परिणाम पामशे. अनुक्रमे ज्यारे यौवन वयने प्राप्त थशे त्यारे ते ऋग्वेद विगेरेनो स्मारक थशे.अहीं मूलमां धातु आत्मनेपदी वे ते वतां जे आ प्रयोग कर्यो वे ते विचारवा जेवो वे. ऋग्वेद ए पदमां वही विजक्तिना बहुवचननो लोप थयेलो वे. ते ऋग्वेद, यजुर्वेद,सामवेद अने अथर्ववेद केवा वे के जेमां इतिहास एटले पुराण पांचमो वे अने निघंटु कहेतां नामसंग्रह कोश जेमां वहो वे. ते वेद केवा के जे अंग तथा उपांगोए सहित वे. तेमां शिक्षा, कल्प, व्याकरण, वंद, ज्योतिष अने निरुक्ति– ए व अंग कहेवाय वे, उपांग एटले अंगना अर्थने विस्तार करनारा. वली ते वेद केवा वे, तात्पर्यथी युक्त वे, एवा पूर्वे कहेला चार वेदना जे स्मारक एटले बीजाउने विस्मरण थयेल तेमने स्मरण करावनार वे, वली ते बालक वारक वे एटले बीजाउं अशुद्ध पाठ जणे तेमने निषेध करनार वे, तेमज ते बालक ते वेदोनो धारक वे, एटले धारण करवाने समर्थ वे. हे देवानुप्रिये, ते बालक एवो थशे. वली ते बालक केवो थशे के पूर्वे कहेलां व अंगनो विचार करनार थशे, अहीं विद् धातुनो अर्थ जाणवुं लइए तो पुनरुक्ति दोष आवे वे. वली ते षष्टितंत्र एटले कपिल संबंधी (सांख्यना) शास्त्रमां पं-

क्ति थशे, तेमज गणितशास्त्रमां निपुण थशे. गणितशास्त्र एटले गणितविद्या जेमके, " एक स्तंभ एवो छे के जे अर्धो पाणीमां छे, तेनो बारमो भाग कादवमां छे, छठो भाग रेतीमां दबायो छे अने ते दोढ हाथ बहार देखाय छे. ते स्तंभनुं मान केटलुं होवुं जोइए ते विचारीने कहो ? तेना जवाबमां गणित उपरथी सिद्ध थाय के, ते स्तंभ छ हाथनो छे. अहीं मूलमां कोइ ठेकाणे 'सिक्खाण' एवो पण पाठ छे. सिक्खाण शब्द वडे आचारग्रंथ जाणवो. शिक्षा एटले अक्षरोनी मर्यादानो ग्रंथ. कल्प एटले यज्ञादिविधिनुं शास्त्र तेमां ते निपुण थशे. व्याकरण एटले शब्दशास्त्र ते वीश व्याकरणो छे ते आ प्रमाणे– ऐंद्र व्याकरण, जैनेंद्र व्याकरण, सिद्धहेमचंद्र व्याकरण, चांद्र व्याकरण, पाणिनीय व्याकरण, सारस्वत व्याकरण, शाकायन व्याकरण, वामन व्याकरण, विश्रांत व्याकरण, बुद्धिसागर व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण व्याकरण, विद्याधर व्याकरण, कलापक व्याकरण, भीमसेन व्याकरण, शैव व्याकरण, गौड व्याकरण, नंदि व्याकरण, जयोत्पल व्याकरण, मुष्टि व्याकरण अने जयदेव व्याकरण–ए वीश व्याकरणो छे. ते व्याकरणोमां, छंदशास्त्रमां, निरुक्त एटले पदनी व्युत्पत्तिवाली टीका विगेरेमां, ज्योतिषशास्त्रमां अने बीजां ब्राह्मणोने हितकारी एवां घणां शास्त्रोमां तेमज परिव्राजक–संन्यास संबंधी नय एटले आचारशास्त्रोमां ते घणो निपुण थशे. हे देवानुप्रिये, तमे तेवां उदार स्वप्नां दीठां छे.

एम करीने ते स्वप्नांनी वारंवार अनुमोदना करे छे. ते पछी ते देवानंदा ब्राह्मणी मस्तक उपर अंजलि करीने ऋषभदत्त ब्राह्मणने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यां–हे देवानुप्रिय, तमे कह्युं ते एमज छे, हे देवानुप्रिय, ते यथार्थ छे अने ते संदेहवगरनुं छे. ते इच्छेलुं छे, ते प्रतीष्ट एटले तमारा मुखमांथी पडतां ज में ग्रहण कर्युं छे. ते उभय धर्म एटले इच्छित अने प्रतीष्ट छे. आ तमे कहेलो अर्थ सत्य छे. तमे जे कहो छो ते तेमज छे–एम कहीने ते देवानंदा ते स्वप्नांने सारी रीते अंगीकार करे छे. पछी


चित्र ३
राजा.
कार्तिक शेठ.
गैरिक तापस.
कार्तिक शेठ.
राजसभा.

रूपभदत्त ब्राह्मणनी साथे उदार एवा मनुष्य संबंधी भोगववा योग्य भोगने भोगवता थकां विहार करे छे. १३ ते समये ते शक्र नामे इंद्र विहार करवाने तत्पर थयो ए संबंध जाणवो. ते इंद्र केवो छे ते कहे छे; ते शक्र नामना सिंहासननो अधिष्ठाता छे. ते देवताउनो स्वामी छे. ते देवताउने विषे राजा एटले कांति प्रमुख गुणोथी विराजमान छे. ते वज्रपाणि एटले हाथमां वज्रने धारण करनार छे. ते पुरंदर एटले दैत्योनां नगरोने विदारण करनार छे. वली ते शतक्रतु छे एटले श्रावकनी पांचमी प्रतिमा वहेवारूपी सो क्रतु—यज्ञ जेणे करेला छे. कार्तिक श्रेष्ठीना भवनी अपेक्षाए आ कहेल छे. ते कथा आ प्रमाणे छे— पृथिवीभूषण नगरमां प्रजापाल नामे राजा छे अने कार्तिक नामे श्रेष्ठी छे. तेणे श्रावकनी सो पडिमा वही हती तेथी ते शतक्रतु एवा नामथी विख्यात थयो हतो. एक वखते गैरिक नामे एक संन्यासी एक मासनो उपवासी त्यां आवी चड्यो. एक कार्तिक श्रेष्ठी विना सर्वे लोको तेना भक्त थया.ते जाणी पेलो गैरिक संन्यासी कार्तिक श्रेष्ठीनी उपर रोष पाम्यो. एक वखते राजाए ते संन्यासीने भोजन माटे निमंत्रण कर्युं त्यारे तेणे कह्युं के, जो कार्तिक श्रेष्ठी पीरसे तो हुं तारे घेर पारणुं करुं. राजाए ते प्रमाणे अंगीकार करी कार्तिक श्रेष्ठीने कह्युं के, तुं मारे घेर आवी ते गैरिक संन्यासीने भोजन कराव. कार्तिक श्रेष्ठीए कह्युं, हे राजा, तमारी आज्ञाथी हुं भोजन करावीश. पछी ते कार्तिक शेठे गैरिकने भोजन कराववा मांड्युं. भोजन करतां गैरिके(तुं निर्लज छुं)एम जणाववा नासिकानो आंगलीथी स्पर्श करी चेष्टा करी, ते वखते कार्तिक श्रेष्ठीए विचार्युं के, 'जो में प्रथमथी दीक्षा लीधी होत तो आ संन्यासी मारो पराभव न करत.' आ प्रमाणे चिंतवी ते श्रेष्ठीए एक हजार ने आठ वणिकपुत्रोनी साथे श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासे चारित्र लीधुं. पछी द्वादशांगी भणीने बार वर्षने पर्याये ते सौधर्म इंद्र थयो. जे गैरिक संन्यासी हतो ते पण पोताना धर्ममां तत्पर रही ते इंद्रनुं वाहन ऐरावण नामे थयो. ते ऐरावण आ कार्तिक श्रेष्ठी छे एवुं जाणी नासवा लाग्यो एटले शक्रेंद्र तेने पकडी तेना मस्तक उपर आरूढ थइ गयो. ऐरावणे तेने भय पमाडवाने बे रूप कर्यां. इंद्रे पण बे रूप कर्यां. पछी तेणे चार रूप

कर्यां एटले इंद्रे पण चार रूप कर्यां. पछी अवधिज्ञानथी तेनुं स्वरूप जाणी लइ तेणे तेनो तिरस्कार कर्यो. ज्यारे तिरस्कार कर्यो, एटले तेणे पोतानुं स्वाजाविक रूप करी दीधुं. एवी रीते कार्तिक श्रेष्ठीनी कथा छे.

सहस्राक्ष एटले तेने पांचसो मंत्रीरूपे देवताउ छे तेउनां नेत्रो इंद्रनुं कार्य करे छे तेथी ते पण इंद्र संबंधीज समजवां, तेथी इंद्र सहस्राक्ष (हजार नेत्रवालो) कहेवाय छे. वली ते मघवान् छे एटले मघ कहेतां मोटा मेघ जेने वश छे तेवो छे.

वली ते पाक नामना दैत्यने शिक्षा करनारो छे. ते मेरुथी दक्षिणमां आवेला लोकार्धनो अधिपति छे, उत्तर लोकार्धनो स्वामी इशान छे तेथी. ते ऐरावणना वाहनवालो छे. ते सुर– देवताउने आनंद आपनार छे. ते बत्रीश लाख विमाननो अधिपति छे. रज वगरनां अने स्वछपणाथी आकाश जेवां वारीक वस्त्रने धारण करनारो छे. तेणे घटता स्थान उपर माला अने मुकुट धारण कर्यां छे, नवीन सुवर्णना मनोहर, आश्चर्य करनारां अने आम तेम कंपतां एवां बे कुंरूलो तेना गाल उपर अथडाय छे. वली ते केवो छे के जेने छत्रादि राजचिह्नरूप मोटी समृद्धि छे, वली जेनी शरीरादिकनी कांति मोटी छे, जे महाबलवान् छे, जे मोटो यशवालो छे, जेनो महिमा मोटो छे, जे महासुखी छे, जेनुं शरीर देदीप्यमान छे, जे पग सुधी लटकती पंचवर्णी पुष्पनी मालाने धारण करे छे.

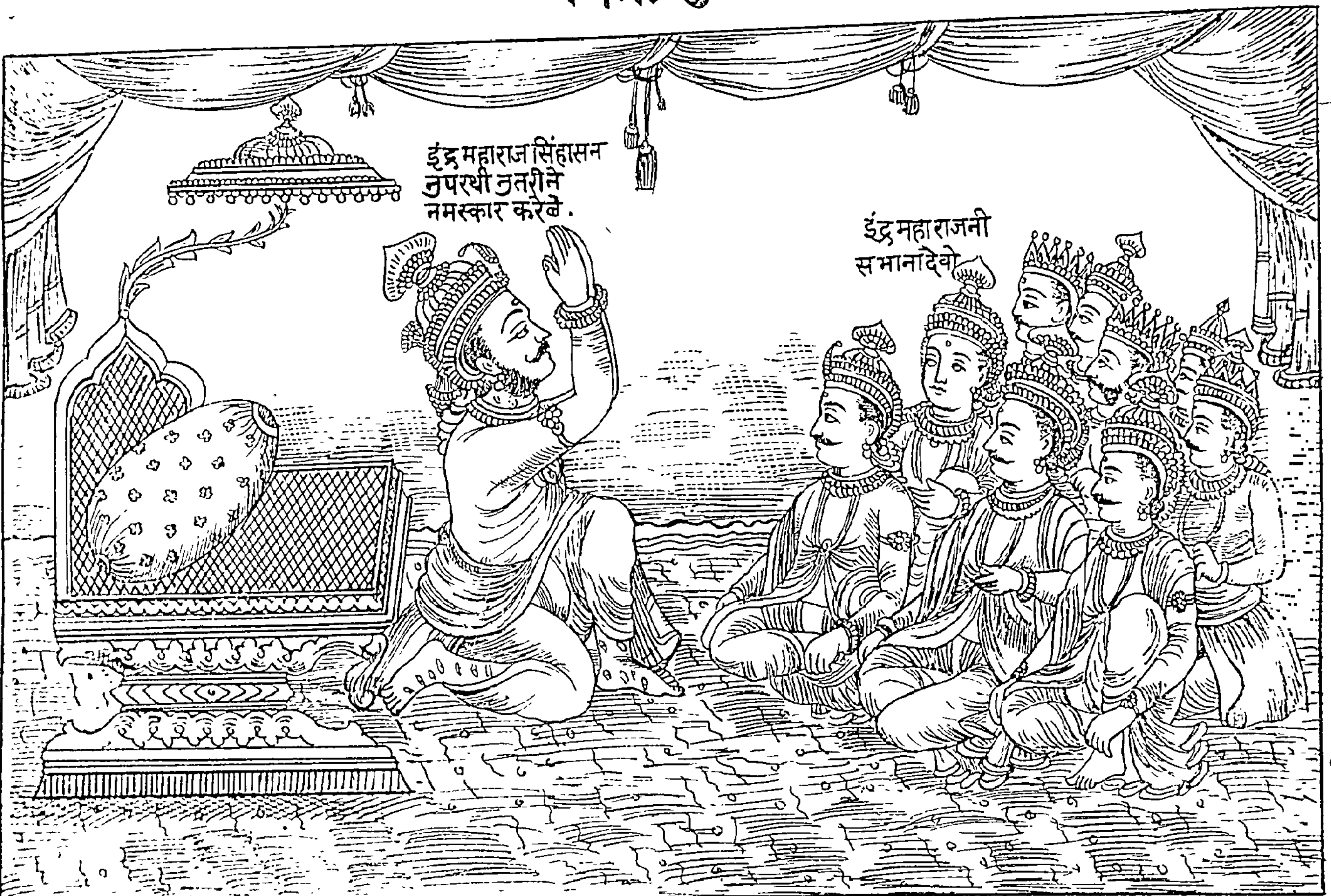
ते हाल क्यां रहे छे ते कहे छे. ते सौधर्म कल्पने विषे छे, ते सौधर्म देवलोकना आजूपणरूप विमानमां छे, त्यां सुधर्मा नामनी सजामां शक्र नामना सिंहासनने विषे रहे छे. त्यां रही ते इंद्र शुं करी विहार करे छे ते कहे छे. ते इंद्र त्यां बत्रीश लाख विमाननो अधिपति छे, तेमज चोराशी हजार सामानिक देवतानो अधिपति छे. ते सामानिक देवतानी समृद्धि इंद्रना जेवी छे.

तेत्रीश त्रायस्त्रिंशक देवता जे पूज्य अथवा मंत्री तुल्य देव छे तेमनो जे अधिपति छे. चार लोकपाल के जेमनां नाम सोम, यम, वरुण अने कुबेर छे तेमनो जे अधिपति छे. पद्मा, शिवा, शची, अंजू, अमला, अप्सरा, नवमिका अने रोहिणी एवां नामे आठ अग्रमहिषी (पटराणी) के जे

प्रत्येक सोल हजार देवीउंना परिवारवाली छे तेमनो जे स्वामी छे. बाह्य,मध्यम अने आभ्यंतर एवी त्रण पर्षदानो जे अधिपति छे. गंधर्व, नाटक, अश्व, हाथी, रथ, सुभट अने ध्वज एवां नामनां सात सैन्यनो जे स्वामी छे. भवनपति विगेरे वृषभने स्थाने महिष लेवा. तेमज सात सेनापतिउंनो अने चारे दिशाउंमां प्रत्येक चोराशी हजार आत्मरक्षक देवता एकंदर संख्याए त्रण लाख अने छत्रीश हजार थाय तेमनो जे अधिपति छे. ते सिवाय बीजा घणा सौधर्म कल्पना निवासी वैमानिक देव अने देवीउंनुं आधिपत्य एटले अधिपतिनुं कर्म अर्थात् रक्षाने, अग्रेसरपणाने,नायकपणाने,पोषकपणाने, अत्यंत मोटापणाने,आज्ञाए करीने ईश्वर जे सेनापति तेनी पोताना सैन्य प्रत्ये अद्भुत आज्ञाना प्रधानपणाने नीमेला पुरुषोनी पासे जे करावे छे,वली पोते तेमनुं पालन करे छे.वली ते शुं करे छे के अविछिन्न एवां नाटक, गीत अने वाजित्रो,तेमां वीणा,करताल,बीजां वाद्यने तोके तेवा मेघध्वनिवाला मादल अने मोटा ढोल, तेमना मोटा शब्द वडे देवताने योग्य एवा भोगववा लायक भोगने भोगवतो विहार करे छे. १४ वली ते आ संपूर्ण जंबूद्वीपने विशाल एवा अवधिज्ञान वडे अवलोकन करतो विहार करे छे. ते इंद्र भगवंत महावीर प्रभुनो जन्म जाणी हर्ष पामेलो छे,संतोष पामेलो छे तेमज चित्तथी आनंद पामेलो छे,मनमां प्रसन्न थयेलो छे, घणा चित्तसंतोषने पामेलो छे,हर्षना वशथी प्रसरेला हृदयवालो छे,मेघनी धाराथी सिंचायेला कदंबवृक्षनां सुगंधी पुष्पनी जेम रोमांचित थयेल छे तेथी जेना रोमकूप उंचा थया छे, वली जेनुं मुख अने नेत्रो विकास पामेलां उत्तम कमलना जेवां छे, कारण के ते हर्षथी परिपूर्ण छे.तेम श्रीभगवंतना दर्शनथी अधिक संभ्रम थवाने लीधे तेनां उत्तम कंकण कंपी चालतां हतां.बहेरखा अने बाजुबंध तुटी जता हता. मुकुट अने कुंडल जे लोकमां प्रसिद्ध छे, ए सर्व आभूषणो जेनां प्रचलित थयेलां छे एवो छे, वली जेनुं हृदय हार वडे विराजमान छे. जे लंबायमान झुमणां ने हींचका खातां आभूषणोने धारण करे छे. एवो इंद्र अकस्मात् संभ्रम--आदरथी, उत्सुकपणाथी अने कायानी चपलताथी एकदम सिंहासन उपरथी बेठो थयो.बेठो थइने पादपीठ एटले पग मूकवाना बाजोठ उपरथी नीचे

उतर्यों अने नीचे उतरीने मरकत मणि तथा रिष्ट अने अंजन नामनां रत्नो वडे निपुण एवा कारीगरे रचेली अने देदीप्यमान एवा चंद्रकांत विगेरे मणिर्ड अने कर्केतन विगेरे रत्नोथी मंकृत एवी ते पाडुकाने उतारी नाखी अने उतारीने ते इंद्र एक पट उत्तरासंग करे छे. ते कर्या पछी अंजलि करवाने वंने हाथ योजे छे, तेवो थइ ते इंद्र प्रभुनी सन्मुख सात आठ पगलां सामो जाय छे, पछी डावा ढींचणने उपाडे छे एटले पृथ्वीने लग्न (अरूकेलो) न थाय तेम स्थापे अने दक्षिण जानुने पृथ्वी उपर मूके, पछी त्रण वार पृथ्वी उपर मस्तक नमावे, नमावीने जरा उत्तरार्ध अंगथी उंचो थाय, तेम करी कंकण अने बेरखाथी स्तंभन करेली भुजाउने वाले, ते वालीने हाथना संपुटमां रचेली दश नख सहित दक्षिणावर्त्तपणे मस्तक पर भमावाती एवी अंजलि मस्तक पर करीने आ प्रमाणे बोल्यो. ते शुं बोल्यो.ते कहे छे,मूलमां 'णं'ए अक्षर सर्व ठेकाणे वाक्यालंकारने माटे छे. त्रण भुवनने पूजवा योग्य एवा अर्हंत प्रभुने नमस्कार हो.कर्मरूप वैरीने हणवाथी अरिहंताणं एवो पण पाठ छे अथवा अरुहंताणं एवो पाठ लइए तो रागद्वेषरूपकर्मबीजनो अभाव करनार एवो अर्थ थाय एटले भवक्षेत्रमां ते बीज उगवानोज अभाव थाय छे. वली ते प्रभु भगवंत एटले ज्ञानादिवाला छे तेमज ते आदिकर एटले पोतपोताना तीर्थनी अपेक्षाए धर्मना आदिकर्त्ता छे. वली जे तीर्थ एटले संघ अथवा प्रथम गणधर तेने स्थापन करनारा छे. जे स्वयंबुद्ध छे एटले परोपदेशथी बोध पामेला नथी, पोतानी मेळे बोध पामेला छे. जे अनंत गुणोना निधानरूप होवाथीपुरुषोमां उत्तम छे. जे कर्मरूपी वैरीउमां निर्दय शूरवीर होवाथी पुरुषसिंह छे. वली जे पुरुषोमां प्रधान एवा पुंडरीक–श्वेत कमलनी जेवा छे. जेम पुंडरीक–कमल कादवमां थाय छे अने जल वडे वधे छे, पछी ते जल तथा कादवने छोडी उपर रहे छे. एवी रीते भगवंत पण कर्मरूपी कादवमां उत्पन्न थया छे अने भोगरूपी जलथी वृद्धि पाम्या छे. तेउ कर्म अने भोगनो त्याग करी पछी जुदा रहे छे. वली ते उत्तम पुरुषोमां गंधहस्ती एटले मदगंधी हस्ती जेवा छे. जेम गंधहस्तीना गंधथी बीजा हाथीउ पलायन करी जाय छे तेम भगवंतना प्रभावथी बीजा दुकाल विगेरे उपद्रवो

चित्र. ४



पण नाश पामी जाय छे. तेमज जे लोक एटले भव्य प्राणीओना समूहमां चोत्रीश अतिशयोए
युक्त होवाथी उत्तम छे. वली भव्य प्राणीओना नाथ छे अर्थात् योग क्षेम करनारा छे. तेमां योग
एटले अप्राप्त एवा ज्ञानादिनी प्राप्ति अने क्षेम एटले प्राप्त थयेल ज्ञानादिकनुं रक्षण, तेनें करनारा.
लोक एटले सर्व जीवोना हितकारी, कारण के दया स्वरूपी छे. वली ते मिथ्यात्वरूप अंधकारने नाश
करनार होवाथी लोकमां प्रदीपरूप छे. वली सूर्यनी जेम सर्व वस्तुओना प्रकाशक होवाथी लोकमां
उद्योत करनारा छे. तेम वली अभय एटले भयनो अभाव तेने आपनारा छे.

ते भय सात प्रकारना छे ते आ प्रमाणे—जे मनुष्य थकी भय ते पहेलो इहलोकभय कहेवाय
छे. मनुष्यने देवादिकनो भय ते बीजो परलोकभय. धन विगेरे लइ लेवानो भय ते त्रीजो आदा-
नभय. बहारना कोइ निमित्तनी अपेक्षा वगर उत्पन्न थयेल भय ते चोथो अकस्मात्भय कहेवाय छे.
पांचमो आजीविकानो भय, छठो मरणभय अने सातमो अपकीर्त्तिनोभय. एम सात प्रकारना भय छे, तेवा
भयमांथी निर्भय करनारा छे. वली तेने नेत्र समान श्रुत ज्ञानने आपनारा छे. तेमज मार्ग एटले सम्यग्
दर्शन विगेरे मोक्षमार्गने आपनारा छे अर्थात् बतावनारा छे—जेम कोइ लोको मुसाफरीए जता हता,
तेमनुं द्रव्य चोरोए लुंटी लीधुं अने पछी तेमने आंखे पाटा बांधीने अवले मार्गे चडावी दीधा. तेवा-
मां कोइ आवी तेमनां नेत्र उपरथी पाटा छोडी लइ, धन आपी, मार्ग बतावी उपकारी थाय तेम भग-
वंत पण कामक्रोधादि कषायोए जेमनुं धर्मरूप धन लुंटी लीधुं छे अने मिथ्यात्वरूप पाटाथी जेओनां
विवेकरूपी नेत्र बंध कर्यां छे एवा प्राणीओने श्रुतज्ञान, सद्धर्म तथा मुक्तिमार्गने बतावी उपकारी थाय
छे. वली ते प्रभु केवा छे के जे आ संसारथी भय पाम्या छे तेमने शरण आपनारा छे. वली जीव एट-
ले मृत्युनो अभाव—जीवन तेने आपनारा छे. कोइ ठेकाणें बोहिदयाणं एवो पाठ छे एटले बोधि एट-
ले समकित तेने आपनारा. वली ते चारित्ररूप धर्मने आपनारा छे. धर्मनो उपदेश आपनारा छे. अहीं ध-
र्मनं उपदेशकपणुं तेओने धर्मना स्वामीपणाने लीधे कह्युं छे, नटनी जेम फोगट नथी ते दर्शाववाने कहे छे

के ते धर्मना नायक छे. वली धर्मना सारथी छे. जेम सारथी उन्मार्गे जता एवा रथने पाछो मार्गमां लावे छे तेम भगवंत पण मार्गभ्रष्ट थयेला माणसने पाछो मार्गे लावे छे, ते उपर मेघकुमारनुं दृष्टांत छे— एक वखते श्रीवीर प्रभु राजगृह नगरीमां समोसर्या हता. तेमनी देशना सांभली श्रेणिक राजा अने धारिणी राणीनो पुत्र मेघकुमार प्रतिबोध पाम्यो. तेणे मातापितानी मांड मांड रजा लइ पोतानी आठ प्रियानो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करी. प्रभुए शिक्षा आपवाने तेने स्थविर साधुओने सोंप्यो. एक वखते उपाश्रयमां अनुक्रमे साधुओना संस्तारा करतां मेघकुमारनो संस्तारो द्वारभागनी पासे छेल्लो आव्यो. त्यां मात्रु करवाने जता आवता साधुओना चरणनी रजथी भराइ गयेला मेघकुमारने आखी रात क्षणवार पण निद्रा न आवी. त्यारे तेणे चिंतव्युं के, मारे घेर सुखशय्या क्यां ! अने आवी रीते भूमि उपर आलोटवुं क्यां ! अरे ! आवुं दुःख मारे क्यां सुधी सहन करवुं ? माटे प्रातःकाले प्रभुनी रजा लइ पाछो घेर जइश. आवुं चिंतवी प्रभातकाले प्रभुनी पासे आव्यो. प्रभुए मधुर वचनथी बोलाव्यो. हे वत्स ! तें रात्रे एवुं दुर्ध्यान कर्युं पण ते विचार्या वगर करेलुं छे. नरकादिकनां दुःखनी आगल ए दुःख कोण मात्र छे. अनेक सागरोपम तेवां दुःख प्राणीओए घणी वार सहन कर्यां छे. वली कह्युं छे के, "अग्निमां प्रवेश करवो सारो अने शुद्ध कर्मथी मृत्यु पामवुं ते सारुं, पण ग्रहण करेला व्रतनो भंग अने शीलनी स्खलना करवी ते सारुं नहीं."१ तेम आ चारित्रादि कष्टनुं आचरण मोटा फलने आपे छे, तें पोतेज पूर्व भवे धर्मने अर्थे कष्ट अनुभव्युं हतुं, तेनुं आ फल प्राप्त थयेलुं छे. तारा पूर्व भवने सांभल—आथी त्रीजे भवे वैताढ्य पर्वतनी भूमि उपर तुं सुमेरुप्रभ नामे हाथी थयो हतो. ते छ दांतवालो, धोलो अने एक हजार हाथिणीओनो स्वामी थयो. एक वखते दावानलथी भय पामी नासी जतां तृषा लागवाथी एक घणा कादववाला सरोवरमां आवी पड्यो. मार्गनो अजाण होइ ते कादवमां खुंची जइ जल अने तीर बंनेमांथी भ्रष्ट थयो. पछी तारा पूर्वना वैरवाला हाथीओए आवी तने दंतोशलनो मार मार्यो. तेनी वेदना सात दिवस सुधी भोगवी अंते एकसो वीश वर्षनी आयुष्य पूरी करी (मृत्यु पामी) विंध्याचल उपर पाछो

... चार दांतवालो अने सातसो हाथिणीना स्वामी थयो. अ-
हाथी थइ अवतर्यो. ते वखते तुं राता वर्णनो, चार दांतवालो अने सातसो हाथिणीना स्वामी थयो. अ-
नुक्रमे एक वार दावानलने जोइ तने जातिस्मरण थयुं, एटले पूर्व भवनुं स्मरण थयुं. पछी तें दावान-
लना पराभवमांथी बचवाने एक योजनना प्रमाणवालुं मंडल कर्युं. तेमां वर्षने आरंभे, मध्ये अने अंते
जे कांइ तृण वेल विगेरे थाय ते सर्व उखेडी नाखे. एक वखते दावानलथी भय पामेला वनना प्राणी-
ओ ते हाथीना मंडलमां व्यापी रह्या, ते वखते तुं पण सत्वर आवीने ते मंडलमां आवी रह्यो. कोइवार
देहने खुजली करवानी इच्छाथी तें एक पग उपाड्यो, ते पग उपाडतांज कोइ ससलो संकडामणथी पीडा-
इने तेनी नीचे भरायो. शरीरने खंजवाली ते पग नीचे मूकतां ते ससलो तारा जोवामां आव्यो. तेनी
उपर दया लावी बे दिवस सुधी तुं उंचो पग राखी उभो रह्यो. ज्यारे दावानल शांत थयो अने सर्व
जीवो पोतपोतानां स्थानमां चाल्या गया त्यारे ते हस्ती पोतानो पग गली पडवाथी पृथ्वी उपर पडी
गयो. पछी त्रण दिवस सुधी क्षुधा अने तृषाथी पीडित थइ ते कृपालु हाथी सो वर्षनी आयुष्य पूरी
करी अहीं तुं आ श्रेणिक राजा अने धारिणी राणीनो पुत्र थयो छे. हे मेघकुमार, ते वखते तिर्यंचना
भवमां पण तें धर्मने अर्थे तेवुं कष्ट सहन कर्युं हतुं तो आ जगतने वंदन करवा योग्य साधुओना चर-
णथी अथडातां तुं केम दुःख धरे छे? आवो उपदेश आपी भगवंते तेने धर्ममां स्थिर कर्यो. पछी जेने
जातिस्मरण ज्ञान थयेलुं छे एवा मेघकुमारे 'एक नेत्रो सिवाय बीजुं बधुं शरीर हुं वोसरावुं छुं' एवो
अभिग्रह कर्यो. अनुक्रमे अतिचार रहित चारित्रने आराधी अंते महिनानी संलेखना करी ते श्री वि-
जय विमानमां देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे. इति मेघकुमार कथा ॥

महामहोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजय गणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेला कल्प-
सूत्रनी सुबोधिका टीकानो आ प्रथम क्षण समाप्त थयो. १

॥ अथ द्वितीयं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

त्रण समुद्र अने चोथो हिमालय ए चार अंत (छेडा) मां प्रभुपणे थयेला धर्मना श्रेष्ठ चक्रवर्त्ती

एवा अर्थात् धर्मना नायक एवा, समुद्रमां डुबता एवा प्राणीओने द्वीप जेवा एटले संसारसागरमां आधाररूप एवा; वली ताण एटले अनर्थनो नाश करवाना हेतुरूप एवा, वली कर्मना उपद्रवथी भय पामेला प्राणीओने शरणरूप एवा, गतिरूप एवा, स्वस्थताने माटे जेने दुःखी माणसो आश्रित थाय ते गति कहेवाय. वली आ संसाररूपी कूवामां पडता एवा प्राणीओने अवलंबनरूप एवा, मूलमां दीवो ताणं इत्यादि पद प्रथमांत छे ते छतां पण ते चतुर्थीना अर्थमां छठ्ठी विभक्ति छे हे होय तेम व्याख्या करवी. वली जे अप्रतिहत एटले छादकी के भींत विगेरेथी अस्खलित एवा उत्तम प्रधान ज्ञान दर्शनने धारण करनारा, वली छद्म एटले घातिकर्म जेनाथी निवृत्त थयां छे एवा, वली राग द्वेषने जीतनारा छे. वली ते उपदेश दान विगेरे आपी भव्य प्राणीओने जीवाडनारा छे. आ संसारसमुद्रने तरेला छे अने सेवकोने तारनारा छे. वली तेओ तत्त्वना बोधवाला छे अजे वीजाओने तत्त्वना बोधक छे. पोते कर्मना पांजरामांथी मुक्त छे अने सेवकोने मूकावनारा छे. वली पोते सर्वज्ञ तथा सर्व वस्तुने जोनारा छे. तेमज उपद्रव रहित, अचल, रोगरहित, अनंत वस्तुविषयनुं ज्ञानस्वरूप, आदि अंत रहितपणाथी क्षयरहित एवुं, तेमां अंत एटले सर्वथी नाश अने क्षय देशथी नाश तेणे रहित एवुं, वली बाधारहित, तथा पुनरावृत्ति, पुनरागमन तेणे रहित एवुं सिद्धिगति नामनुं स्थान छे, ते स्थानने प्राप्त थयेला, भयने जीतनारा श्रीजिन भगवंतने नमस्कार छे. आवी रीते सर्व जिनोने नमस्कार करी शक्र इंद्र श्रीवीर प्रभुने नमस्कार करे छे.

ते श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभु के जे पूर्वना तीर्थंकरोए कहेला अने सिद्धिगति नामना स्थान प्रत्ये जवानी इच्छावाला छे, तेमने नमस्कार हो. श्रीवीर प्रभु हवे मुक्तिए जवाना छे तेथी आ विशेषण आप्युं छे. आ सर्व विशेषणो छठ्ठीना एक वचनांत छे ते छतां पण ते चतुर्थीना अर्थमां लेवां. इंद्र कहे छे, ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां रहेला ते वीर प्रभुने हुं वंदना करुं छुं. हुं अहीं रह्यो छुं अने प्रभु ते कुक्षिमां रह्या छे. ते मने अहीं रहेलाने जुवे एम धारी इंद्र ते प्रभुने वंदना करे छे अने नमस्कार करे छे.

ते करीने इंद्र पूर्वाभिमुखे सिंहासन उपर बेठो. ते पछी देवोना इंद्र अने देवोना राजा एवा ते इंद्रने आवो आत्मविषय संकल्प उत्पन्न थयो, जे चिंतात्मक, अभिलाषरूप अने मनोगत एटले वचनथी प्रकाशित नहीं करेलो संकल्प हतो. ते केवो संकल्प थयो ते कहे छे.

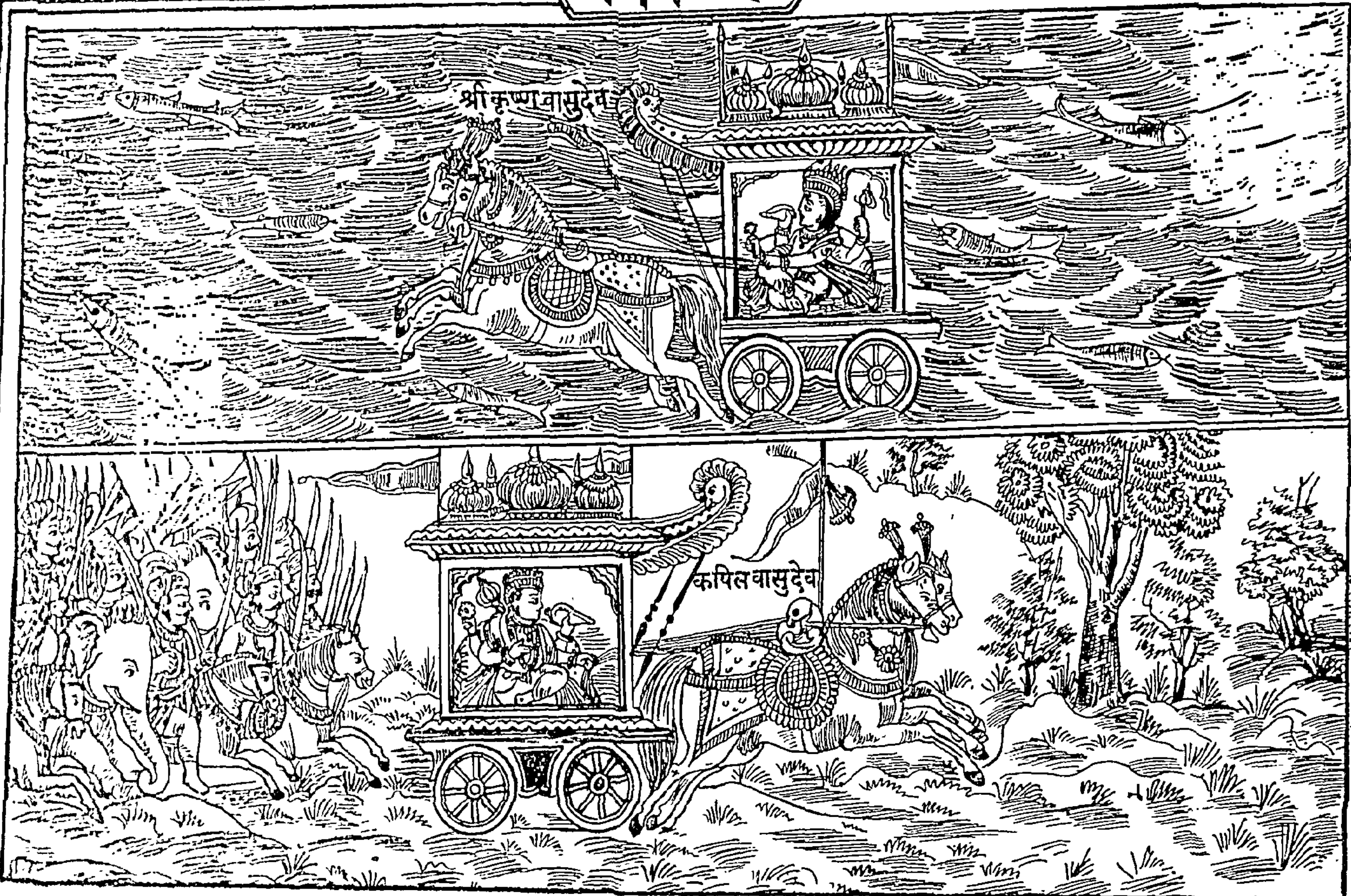
आ वनाव कोइ दिवस भूतकालमां थयो नथी, वर्त्तमानकालमां थतो नथी अने भविष्यकालमां थशे नहीं, के जे अर्हंत, चक्रवर्त्ती, वलदेव, अथवा वासुदेव अंत्य एटले शूद्रकुलमां, अधम कुलमां, तुछ—अल्प कुलमां, निर्धन कुलमां, कृपण एटले लोभी कुलमां, भिक्षुकोना कुलमां, अथवा ब्राह्मणना कुलमां आव्या होय, अथवा आवता होय, अथवा हवे पछी आवनारा होय एम थयुं नथी त्यारे ते केवा कुलमां उत्पन्न थाय छे ते कहे छे. ते आ प्रकारे निश्चये करीने उग्र एटले श्रीआदिनाथ प्रभुए रक्षकपणे स्थापन करेला लोको तेओना कुलमां, भोग एटले गुरुपणे स्थापन करेला तेओना कुलमां, राजन्य एटले श्रीऋषभदेव प्रभुए मित्र तरीके स्थापन करेला तेओना कुलमां, इक्ष्वाक एटले श्रीऋषभदेवना वंशमां उत्पन्न थयेला तेओना कुलमां, क्षत्रिय एटले श्रीआदिनाथे प्रजाना दर्शन तरीके स्थापन करेला तेओना कुलमां, हरि एटले पूर्व भवना वैरी देवताए आणेल हरिवर्ष क्षेत्रनुं युगल तेना वंशजना कुलमां, ते सिवाय वीजा शुद्ध जाति अने कुलवाला वंशमां, (अहीं जाति एटले मातानो पक्ष अने कुल एटले पितानो पक्ष समजवो.) एवा कुलमां आवेला छे, आवे छे अने आवशे—ते सिवाय पूर्वे कहेला नीचादि कुलमां ते अर्हंतादि अवतरता नथी. त्यारे ते प्रभु अहीं केम उत्पन्न थया ते कहे छे— भवितव्यता नामे एक लोकमां आश्चर्यकारी भाव—वनाव रहेलो छे. अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल उल्लंघन थतां जे एवो कोइ पदार्थ उत्पन्न थाय छे. तेमां आ चालता अवसर्पिणी कालमां आवां दश आश्चर्य थयेलां छे. ते आ प्रमाणे—

उपसर्ग १, गर्भनुं हरण २, स्त्री तीर्थंकर ३, अभावित पर्षदा ४, कृष्णनुं अपरकंकामां जवुं ५, चंद्र सूर्यनुं उतरवुं ६, हरिवंश कुलनी उत्पत्ति ७, चमरेंद्रनो उत्पात ८, एकसो आठनुं सिद्ध थवुं ९, तथा असंयतिनी पूजा १०, ए दश आश्चर्य थयेलां छे. तेनी व्याख्या आ प्रमाणे छे—

उपसर्ग एटले उपद्रव ते श्रीवीर प्रभुने छद्मस्थावस्थामां घणा थयेला छे ते आगल कहेवामां आवशे. वली ए भगवंतनी केवलीअवस्था के जेमां प्रभावथीज सर्व उपद्रव शमी जाय तेमां पण पोताना शिष्याभास एटले अधम शिष्य गोशाले उपद्रव कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे वृत्तांत छे. एक वखते श्रीवीर प्रभु विहार करता श्रावस्ती नगरीमां समोसर्या. तेवामां गोशालो 'हुं जिन भगवंत छुं' एम लोकोमां ख्याति करतो त्यां आव्यो. तेथी 'श्रावस्ती नगरीमां बे जिन भगवंत आव्या छे' एवी लोकोमां प्रसिद्धि थइ. ते सांभली गौतमे भगवान् वीर प्रभुने पूछ्युं—स्वामी, 'हुं जिन भगवंत छुं' एम पोताने विख्यात करनार आ बीजो कोण छे? भगवंते कह्युं, ते जिन नथी, पण शरवण गामनो रहेवासी मंखली अने सुभद्रा थकी घणी गायोवाली ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थवाथी गोशाल एवा नामने धारण करनार एक मारो शिष्य छे. ते मारी पासेथीज जरा बहुश्रुत थइ पोतानुं जिन नाम व्यर्थपणे विख्यात करे छे. ते पछी आ वात सर्व ठेकाणे प्रसिद्ध थयेली सांभलीने ते गोशालो अति रोष पाम्यो. तेवामां गोचरीए गयेला आनंद नामना भगवंतना शिष्यने कह्युं, हे आनंद! एक दृष्टांत सांभल, केटलाएक वणिक लोको धन मेलववाने जात जातनां करीआणां गाडामां भरी परदेश जवा नीकल्या. तेओ कोइ अरण्यमां पेठा. त्यां जल न मलवाथी तृषातुर थइ जलनी गवेषणा करवा लाग्या. तेवामां चार राफडाना शिखर जोवामां आव्यां. तेमणे एक शिखर फोड्युं त्यां तेमांथी घणुं जल नीकल्युं. ते जलथी तृषा रहित थइ बाकीना जलथी पात्र भरी लीधां. पछी एक वृद्ध वणिके कह्युं के आपणुं धारेलुं कार्य सिद्ध थयुं. हवे बीजुं शिखर फोडशो नहीं. तेम वार्या तोपण तेओए बीजुं शिखर तोडी पाड्युं. तेमांथी सुवर्ण प्राप्त थयुं. पछी वृद्धे तेवी रीते वार्या तोपण तेओए त्रीजुं शिखर फोड्युं. तेमांथी रत्न प्राप्त थयां. पछी घणा वार्या तोपण ते लोभांध व्यापारीओए चोथा शिखरने फोड्युं. तेमांथी दृष्टिविष सर्प प्रगट थयो. तेणे पोतानी दृष्टिनो पात करी सर्वने पंचत्व पमाडी दीधा. जे पेलो वृद्ध हितोपदेशक हतो ते न्यायी होवाथी नजीक रहेल देवताए तेने स्वस्थानमां मूकी दीधो. हे आनंद, आ प्रमाणे तारो

धर्माचार्य आटली संपत्ति प्राप्त थइ तोपण तेथी संतोष न पामी जेवां तेवां नाषण करी मने कोपावे छे, तेथी हुं मारा तपना तेजथी तेने नस्म करी नाखीश; माटे तुं सत्वर जइ आ खबर तेने निवेदन कर. पेला वृद्ध वणिकनी जेम तने हितोपदेशक जाणी तारी रक्षा करीश. आ सांनली आनंद साधुए नय पामी ते सर्व वृत्तांत नगवंतनी आगल कह्यो. नगवंते कह्युं, हे आनंद, तुं सत्वर जइ गौतमादि मुनिउने जणाव के आ गोशालो अहीं आवे छे, तो तेनी साथे कोइए कांइ नाषण करवुं नहीं. सर्वने आज्ञा अवला चाल्या जवुं. पछी तेमणे तेम कर्युं एटलामां गोशाले आवी नगवंतने कह्युं, हे काश्यप गोत्री, आम केम बोले छे? के आ मंखलीनो पुत्र गोशालो छे. ते तारो शिष्य मंखलीपुत्र तो मृत्यु पामी गयो छे. हुं तो जुदोज छुं. परीषहोने सहन करवामां समर्थ एवुं तेनुं शरीर जाणी तेमां अधिष्ठान करी रह्यो छुं. आ प्रमाणे गोशाले करेला नगवंतना तिरस्कारने नहीं सहन करता सुनक्षत्र अने सर्वानुनूति नामे बे मुनि वचमां उत्तर आपवा लाग्या एटले गोशाले तेजोलेश्याथी तेमने बाली नाख्या, तेउ दग्ध थइने स्वर्गे गया. पछी नगवंते कह्युं, हे गोशाला, तुं तेज गोशालो छो, बीजो नथी. शामाटे वृथा आत्माने गोपवे छे? आ प्रमाणे आत्मा गोपवी शकातो नथी. जेम कोइ चोर रक्षकोना जोवामां आव्यो, पछी ते तृणथी के आंगलीथी पोताना देहने आछादन करे तेथी शुं ते आछादित थाय छे? आवी रीते प्रनुए यथार्थ कह्युं एटले ते डुरात्माए नगवंतनी उपर तेजोलेश्या मूकी. ते लेश्या नगवंतने त्रण प्रदक्षिणा करी ते गोशालानाज शरीरमां पेठी. तेनाथी शरीर दग्ध थइ गयुं अने विविध वेदना अनुनवी ते सातमी रात्रे मृत्यु पामी गयो. नगवंते पण तेना तापथी छ मास सुधी राती चोल कांति धरी वाधाने अनुनवी. आ प्रमाणे जेना नामना स्मरणथी सर्व डुःख शमी जाय तेवा वीर नगवंतने पण जे आ उपसर्ग थयो ते प्रथम आश्चर्य छे. १ गर्ननुं हरण एटले बीजा उदरमां मूकी देवुं ते पण कोइ जिनने पूर्वे थयुं नथी, श्रीवीर प्रनुने थयुं छे ए बीजुं आश्चर्य छे. २ तीर्थंकरो हमेशां उत्तम पुरुषोज थाय छे, स्त्री थता नथी. आ अवसर्पिणीमां मिथिला नगरीना पति कुंनराजनां पुत्री मल्लि नामे नंगणी-

शमा तीर्थंकर थइ तीर्थने प्रवर्त्ताव्युं हतुं, ए त्रीजुं आश्चर्य छे. ३ अभाविता पर्षदा एटले भगवंतनी दे-
शना कदि पण निष्फल थती नथी, पण ज्यारे श्रीवर्द्धमान स्वामीने केवलज्ञान थयुं त्यारे तेमणे प्रथ-
मना समोवसरणमां देशना आपी हती, पण तेथी कोइने विरतिनां परिणाम थयां नहीं. ए चोथुं आ-
श्चर्य. ४ नवमा वासुदेव कृष्णने द्रौपदी निमित्ते अपरकंकामां जवुं पड्युं ते पण आश्चर्य छे. ते आ प्रमाणे
कथा छे—पूर्वे पांडवनी स्त्री द्रौपदीए नारदने आवता जोइ ते संयमी न होवाथी तेने सामा उभा थइ
मान आप्युं नहीं तेथी तेणे रोष धरी द्रौपदीने कष्टमां पाडवाने धातकी खंडना भरतक्षेत्रमां आवेली
अपरकंका नामे राजधानीनो स्वामी पद्मोत्तर के जे स्त्रीओमां लुब्ध हतो तेनी आगल आवी द्रौपदीना
रूपनुं वर्णन कर्युं. तेणे पोताना मित्ररूप कोइ देवतानी पासे द्रौपदीने पोताने घेर आणी. अहीं पांड-
वोनी माता कुंतीए ते खबर जाणी कृष्णने विज्ञप्ति करी एटले कृष्ण द्रौपदीनी गवेषणा करवामां
व्यग्र थया. तेमने नारदना मुखथी ते समाचार प्राप्त थया एटले तेमणे सुस्थित देवनी आराधना करी.
देवताए ते कृष्णने मार्ग बताव्यो एटले ते बे लाख योजन विस्तारवाला लवण समुद्रने उल्लंघन करी
पद्मोत्तरनी अपरकंका राजधानीमां गया. त्यां पांडवोनो तिरस्कार करनारा ते पद्मोत्तरने नरसिंहरूप
करी जीती लइ पछी द्रौपदीना वचनथी तेने जीवतो मूकी पोते द्रौपदी साथे पाछा वळ्या. चालता
चालता शंखनो नाद कर्यो. ते सांभली त्यां विहार करता मुनिसुव्रत प्रभुना वचनथी कृष्णने आवेला
जाणी मलवाने उत्सुक एवा कपिल वासुदेवे पण समुद्र कांठे आवी शंखनो नाद कर्यो. पछी ते बंनेना शं-
खना नाद परस्पर मली गया. आ प्रमाणे आ अवसर्पिणीमां कृष्णनुं अपरकंका राजधानीमां गमन थयुं
हतुं ए पांचमुं आश्चर्य छे. ५ कौशांबी नगरीमां भगवंत श्री वर्द्धमान स्वामीने वांदवाने सूर्य अने
चंद्र पोतानां मूल विमानथी उतर्या हता, ए छठुं आश्चर्य. ६ हरिवंश कुलनी उत्पत्ति पण एक
आश्चर्य छे. ते आ प्रमाणे—कौशांबी नगरीमां सुमुख नामे राजा हतो. तेणे शालापति वीरक
राजानी वनमाला नामनी स्त्री घणी स्वरूपवान जाणीने पोताना अंतःपुरमां नाखी. ते शालापति


चित्र ५
श्रीकृष्ण वासुदेव
कपिल वासुदेव

तेना वियोगथी विकल थइ गयो. जे कोइ जोवामां आवे तेने वनमाला वनमाला कही बोलावतो हतो. एवी रीते कौतुकथी अनेक लोकोथी वींटाएलो शालापति नगरमां भमवा लाग्यो. वनमाला साथे क्रीडा करता राजाए तेने जोयो. तेनी एवी स्थिति जोइ 'आपणे आ अनुचित काम कर्युं' एम ते दंपती चिंता करवा लाग्यां. तेवामां तेमनी उपर विजली पडवाथी ते मृत्यु पामी गयां. त्यांथी तेओ हरिवर्ष क्षेत्रमां जुगलीयापणे अवतर्यां. शालापति तेओने मृत्यु पामेलां सांभली अरे ! ते बंने पापीने पाप लाग्युं—एम कही सावधान थइ गयो. ते पछी ए वैराग्यथी तपस्या करी सौधर्म कल्पमां किल्बिषिक व्यंतर थयो. विभंग ज्ञानथी ते बंनेने जोइ चिंतववा लाग्यो, अहो! आ मारा वैरी जुगलीयानुं सुख अनुभवी देवता थशे, तेथी ते बंनेने हुं दुर्गतिमां पाडुं. आवुं चिंतवी पोतानी शक्तिथी देह संक्षेप करी तेओने अहीं लाव्यो. लावीने राज्य आपी तेमने सात व्यसनो शिखडाव्यां. ते पछी तेओ तेवा व्यसनी थइ मृत्यु पामी नरके गयां. तेनो जे वंश ते हरिवंश कहेवाय. अहीं जुगलीयाने अहीं लाववा, शरीर तथा आयुष्यनो संक्षेप करवो अने नरकमां जवुं—ए आश्चर्य छे—आ सातमुं आश्चर्य. ७ चमर नामना असुरकुमारनो उत्पात ए पण आश्चर्य छे—ए आ प्रमाणे—पूरण नामना एक मुनि तपस्या करी चमरेंद्रपणे उत्पन्न थया. ज्यारे ते नवा उत्पन्न थया त्यारे सौधर्मेंद्रने पोताना शिर उपर रहेला जोइ कोप पाम्या पछी परिघ लई श्रीवीरनुं शरण करी सौधर्मना अंगरक्षकोने त्रास पमाडी सौधर्म विमाननी वेदिकामां पग मूकी शक्रेंद्र उपर आक्रोश कर्यो. तेथी क्रोध पामी शक्रे जाज्वल्यमान वज्र तेनी उपर मूक्युं, तेथी ए भय पामीने भगवंतना चरणमां संताइ गयो. ते वृत्तांत जाणी इंद्र तरत त्यां आव्यो, प्रभुथी चार आंगल दूर रहेलुं वज्र लीधुं अने कह्युं के, भगवंतना प्रसादथी तने छोडी मूक्यो छे. एम कही चमरने छोडी मूक्यो. आ चमरनुं जे ऊर्ध्वगमन ते आठमुं आश्चर्य छे. ८ एक समयमां उत्कृष्ट अवगाहनवाला एकसो आठ जीव सिद्धिए न जाय ते छतां आ अवसर्पिणीमां तेटला सिद्धिए गया छे. जेमके श्रीऋषभनाथ, तेमना भरत सिवाय नवाणुं

पुत्रो अने आठ भरतना पुत्र एक समये सिद्धिने पाम्या—ए नवमुं आश्चर्य छे. ए असंयत एटले संयम वगरना जे आरंभ परिग्रहमां आसक्त छे तेवानी पूजा. जे संयत—संयमवाला छे ते तो सर्वदा पूजाय, पण आ अवसर्पिणीमां एटले नवमा अने दशमा जिननी अंतरे असंयत एवा पण ब्राह्मणादिकनी पूजा प्रवर्त्ती ए दशमुं आश्चर्य. १० आ दश आश्चर्यो अनंतकाल गया पछी आ अवसर्पिणीमां थयेलां छे. एवी रीते कालनी समानताथी बाकीना चार भरतमां अने पांच ऐरवतमां एम प्रकारांतरे दश दश आश्चर्यो जाणवां. हवे ते दश आश्चर्यो कोना कोना तीर्थमां थयां ते स्पष्ट करे छे—एकसो ने आठ सिद्धिए गया ए आश्चर्य श्रीऋषभदेवना तीर्थमां थयुं हतुं. हरिवंशनी उत्पत्तिनुं आश्चर्य शीतलनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. अपरकंका राजधानीमां जवानुं आश्चर्य श्रीनेमिनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. स्त्री तीर्थंकर थवानुं आश्चर्य श्रीमल्लिनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. असंयत—ब्राह्मणादिकनी पूजानुं आश्चर्य श्रीसुविधिनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. बाकीनां उपसर्ग, गर्भनुं हरण, अभावित पर्षदा, चमरनुं ऊर्ध्व गमन अने सूर्य चंद्रनुं अवतरण—ए पांच आश्चर्य श्रीवीरतीर्थमां थयां छे.

ए दश आश्चर्य समाप्त थयां. हवे एक आश्चर्य बीजुं थयुं. आ आश्चर्य के जे नामगोत्र एटले नाम वडे गोत्र अर्थात् जे गोत्र नामनुं कर्म छे ते. वली ते केवुं छे के जे अक्षीण एटले स्थितिना अक्षयथी रहेलुं छे, वली ते रसना परिभोगथी अज्ञात छे, वली अनिर्जीर्ण अटले जीवना प्रदेशथी नहीं सडेलुं एवुं छे, एवा गोत्र अर्थात् नीच गोत्रना उदयथी भगवान् महावीर ब्राह्मणीनी कुक्षिमां उत्पन्न थया.

ते नीच गोत्र भगवंते सत्यावीश स्थूल भवनी अपेक्षाए त्रीजा भवमां बांध्युं हतुं, ते आ प्रमाणे वृत्तांत छे. पहेला भवमां पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां नयसार नामे एक ग्रामपति हतो. एक वखते ते काष्ठ लेवाने वनमां गयो. मध्याह्नकाल थतां ते वनमां भोजनसमये सार्थथी जुदा थयेला साधुओ तेना जोवामां आव्या. तेमने जोइ ते हर्ष पामी चिंतवन करवा लाग्यो, अहो! मारां मोटां भाग्य! आ समये अतिथिनो समागम थयो. पछी घणा हर्षथी ते साधुओने अशन पानादिकथी प्रतिलाभ्या. पछी

भोजन कर्या बाद ते साधुओने नमीने बोल्यो, महाभाग, चालो, आपने मार्ग बतावुं. पछी मार्गमां चालता साधुओए 'आ योग्य छे' एम धारी धर्मनो उपदेश आपी तेने समकितनी प्राप्ति करावी. अंतकाले नवकार स्मरण करतां मृत्यु पामी ते बीजे भवे सौधर्म देवलोकमां पल्योपम आयुष्यवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने त्रीजे भवे मरीचि नामे भरत चक्रवर्त्तीनो पुत्र थयो. वैराग्य प्राप्त करी श्री ऋषभदेव प्रभुनी पासे तेणे दीक्षा लीधी अने स्थविर पासे एकादशांगीनुं अध्ययन कर्युं. एक वखते ते ग्रीष्मऋतुमां तापादिकनी पीडा पामी चिंतवन करवा लाग्यो के, "आ संयमनो भार अति वहन करवो मुश्केल छे, ते माराथी निर्वाह करी शकाशे नहीं अने हवे आ वेष छोडी घेर चाल्या जवुं ते सर्वथा अनुचित छे" आवुं विचारी तेणे एक अभिनव वेष धारण कर्यो. ते आ प्रमाणे—आ साधुओ मन, वचन अने कायाना त्रण दंडथी विरत छे अने हुं तेवो नथी तो मारे त्रण दंडनुं चिह्न हो. आ साधुओ द्रव्य अने भावथी मुंडित छे, हुं तेवो नथी तेथी मारा मस्तक उपर शिखा अने क्षुर मुंडन हो. सर्व श्रमणोने प्राणातिपातथी विरति छे परंतु मारे तो स्थूल हिंसाथी विरति हो. साधुओ शीलव्रतथी सुगंधी छे अने हुं तेवो नथी तेथी मारे तो चंदनादिकनुं विलेपन हो. मुनिओ मोह वगरना छे अने हुं तो मोहथी आछादित छुं, तेथी मारे छत्रीनुं आछादन हो. मुनिओना चरण उपान वगरना छे पण मारा बे चरणमां उपान हो. श्रमण—मुनिओ कषाय रहित छे अने हुं कषाय सहित छुं, तेथी मारे कषाय वस्त्र हो. मुनिओ स्नानथी विरत छे परंतु मारे तो परिमित (मापवाला) जलथी स्नान तेमज पान हो. एवी रीते स्वबुद्धिथी परिव्राजकनो वेष कल्पी लीधो. पछी विरूप वेषवाला तेने जोइ सर्व लोको तेने धर्म पूछवा लाग्या, त्यारे तेओनी आगल साधुधर्मनी प्ररूपणा करवा लाग्यो. देशनाशक्तिथी अनेक राजपुत्रोने प्रतिबोध पमाडी भगवंतने शिष्यपणे वर्त्तवा लाग्यो, अने भगवंतनी साथेज विहार करवा लाग्यो. एक वखते भगवंत अयोध्यामां समोसर्या, त्यां वंदना करवाने आवेला भरते प्रभुने पूछ्युं के, स्वामी, आ पर्षदामां आ चोविशीनी अंदर भरतक्षेत्रने

विषे कोइ जिन थाय तेवो पुरुष छे ? भगवंते कह्युं, हे भरत, आ तारो पुत्र मरीचि आ चालती अवसर्पिणीमां वीर नामे चोवीशमा तीर्थंकर, विदेह क्षेत्रनी मूका राजधानीमां प्रियमित्र नामे चक्रवर्त्ती अने आ भरतक्षेत्रमां प्रथम वासुदेव थशे. आ सांभली हर्ष पामेला भरते मरीचि पासे जइ त्रण प्रदक्षिणा अने वंदना करी कह्युं, हे मरीचि, जेटला लाभ छे तेटला तेंज मेलव्या छे, कारण के तुं तीर्थंकर, वासुदेव अने चक्रवर्त्ती थइश. हुं तारा आ परिव्राजकपणाने वांदतो नथी, पण तुं तीर्थंकर थइश एम धारी तने वंदना करुं छुं. एम वारंवार स्तुति करी भरत पोताना स्थानमां गयो. मरीचिए पण ते सांभली हर्षना आधिक्यथी त्रिपदी बनावी नृत्य करतां आ प्रमाणे कह्युं "हुं पहेलो वासुदेव थइश, मूकापुरीमां चक्रवर्त्ती थइश अने छेल्लो तीर्थंकर थइश. अहो ! मारुं कुल घणुं उत्तम छे. वधा वासुदेवोमां हुं पहेलो वासुदेव थइश, मारा पिता भरत वधा चक्रवर्त्तीओमां पहेला चक्रवर्त्ती छे अने मारा पितामह ऋषभदेव सर्व तीर्थंकरोमां पहेला तीर्थंकर छे. अहो ! मारुं कुल केवुं उत्तम छे !" आ प्रमाणे मद करवाथी मरीचिए नीच गोत्र बांध्युं. कह्युं छे के, "जे माणस जाति, लाभ, कुल, ऐश्वर्य, वल, रूप, तप अने विद्या ए सर्वनुं अभिमान करे तो तेने पुनः ते वधां हीन मले छे." ते पछी ज्यारे भगवंत निर्वाण पाम्या, एटले ते पूर्वनी जेम लोकोने प्रतिबोध करी साधुओना शिष्य करी तेओनी साथे विहार करवा लाग्यो. एकदा मरीचिना शरीरे व्याधि थयो पण कोइ तेनी वैयावच्च करतुं नहीं त्यारे तेणे चिंतव्युं के, अहो, आ निर्ग्रंथो घणा परिचित छे तथापि ते पारका छे, तेथी जो हुं नीरोगी थाउं तो एक वैयावच्च करनारो शिष्य करुं—आम विचार्युं. अनुक्रमे ते नीरोगी थयो. एक वखते कपिल नामनो कोइ राजपुत्र मरीचिनी देशना सांभली प्रतिबोध पाम्यो एटले मरीचिए कह्युं, हे कपिल, तुं साधुओनी पासे जइ चारित्र ग्रहण कर. त्यारे कपिले कह्युं, स्वामी, हुं तो तमारा दर्शननुं व्रत लइश. त्यारे मरीचि बोल्यो, हे कपिल, ते साधुओ त्रण प्रकारना दंडथी विरत छे अने हुं तो त्रण दंडवालो छुं इत्यादि सर्व पोतानुं स्वरूप कही बताव्युं, तथापि ते भारेकर्मी कपिल चारित्रथी विमुख थइ बोल्यो, शुं तमारा दर्शनमां सर्वथा धर्म

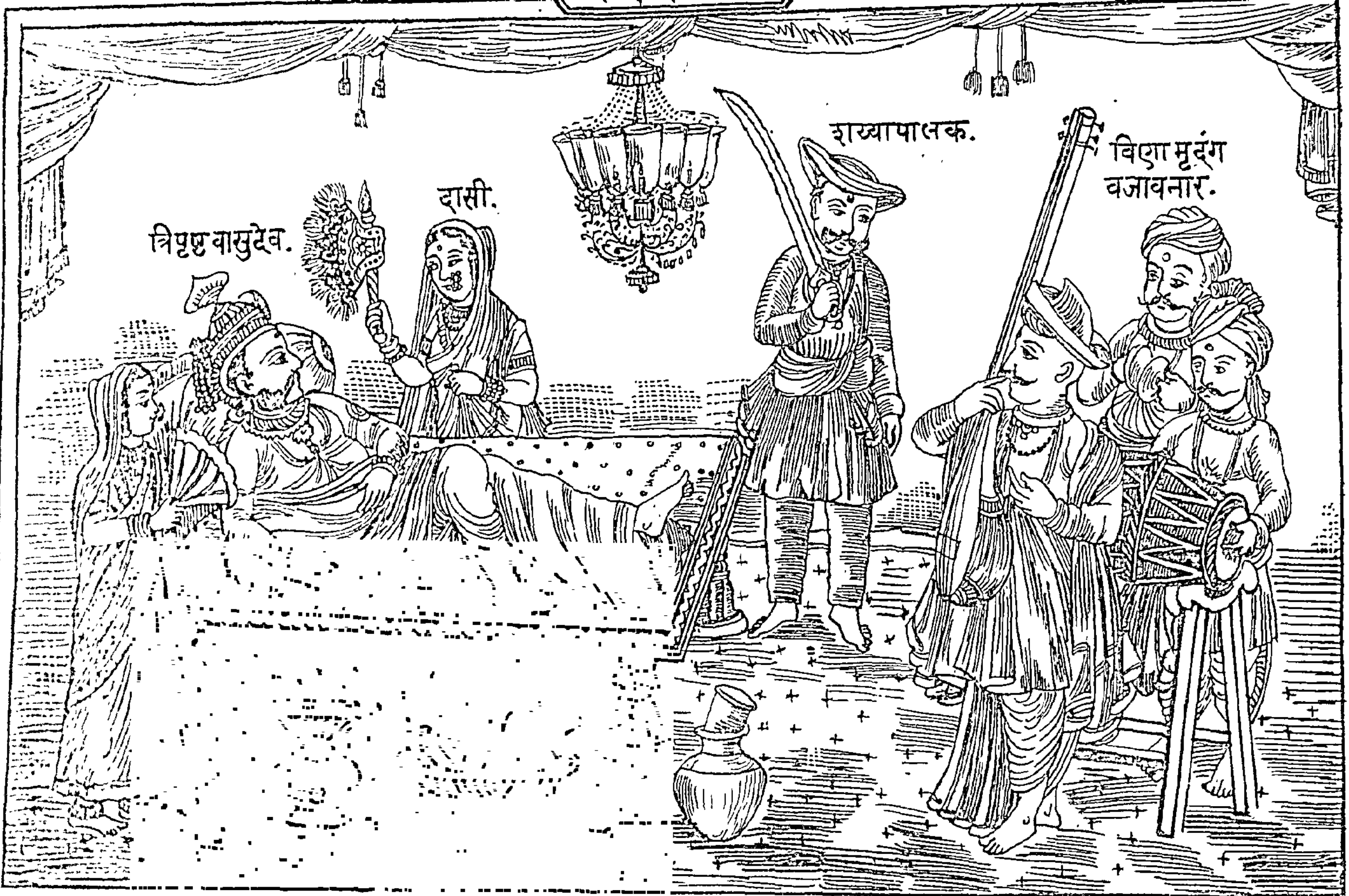
चित्र. ६





नथी ? ते सांभळी मरीचिए विचार्युं के, आ मारो योग्य शिष्य थशे. एवुं विचारीने कह्युं के, कापल, जैन मार्गमां पण धर्म छे अने मारा मार्गमां पण छे. ते सांभळी कपिले तेनी पासे दीक्षा लीधी. मरीचिए आवां उत्सूत्र वचनथी कोटाकोटी सागरोपम संसार उपार्जन कर्यो. जे अहीं किरणावलीकार कहे छे के, कविला इत्थंपि इहयंपि ए वचन उत्सूत्र मिश्रित छे. तेवा उत्सूत्रभाषीने नियतपणे अनंत संसार छे एम कही पोताना मतनुं स्थापन करवानी रसिकता छे एम जाणवुं. तेउनो मत आ प्रमाणे छे के उत्सूत्र कहेनाराने नियतपणेज अनंत संसार थाय छे. जो आ मरीचिनुं वचन उत्सूत्र कहीए तो एने पण अनंत संसार प्राप्त थवानो प्रसंग आवे, पण तेने अनंत संसार थयो नथी, तेथी ते उत्सूत्रमिश्रित छे एवो तेमनो मत युक्त नथी, कारण के 'उत्सूत्र कहेनाराने अनंत संसार छे' एवो नियम नथी. श्रीभगवती सूत्र विगेरे घणा ग्रंथोने अनुसारे उत्सूत्र कहेनाराउमां शिरोमणिरूप जमालिनिह्नवने पण परिमित संसार जोवामां आव्यो छे. वळी उत्सूत्र मिश्र कहेवाथी पण आ मरीचिना वचननुं उत्सूत्रपणुं चाल्युं जतुं नथी. विषमिश्रित अन्न विषज गणाय छे. हवे ए विषे वधारे कहेवुं योग्य नथी, एटलुंज बस छे. ते कर्मनी आलोचना कर्या वगर चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी मृत्यु पामी चोथे भवे ब्रह्मलोकमां दश सागरोपमनी स्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने पांचमे भवे कोल्लाक नामना ग्राममां एंशी लाख पूर्वना आयुष्यवालो ब्राह्मण थयो. ते अतिविषयासक्त अने शूकवगरनो थयो. छेवटे त्रिदंडी थइ बहुकाल सुधी संसारमां भम्यो. आ तेना भव स्थूल भवनी अंदर गणाता नथी. त्यांथी छठे भवे स्थूणा नगरीमां बोंतेर लाख पूर्वना आयुष्यवालो पुष्प नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो. सातमे भवे सौधर्म कल्पमां मध्यस्थिति देवता थयो. त्यांथी चवीने आठमे भवे चैत्य ग्राममां साठ लाख पूर्वना आयुष्यवालो अग्निद्योत नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो. नवमा भवमां ईशान देवलोके मध्यस्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवी दशमे भवे मंदर ग्रामे छपन्न लाख पूर्वना आयुष्यवालो अग्निभूति नामे ब्राह्मण थयो. अंते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो. अगीयारमा

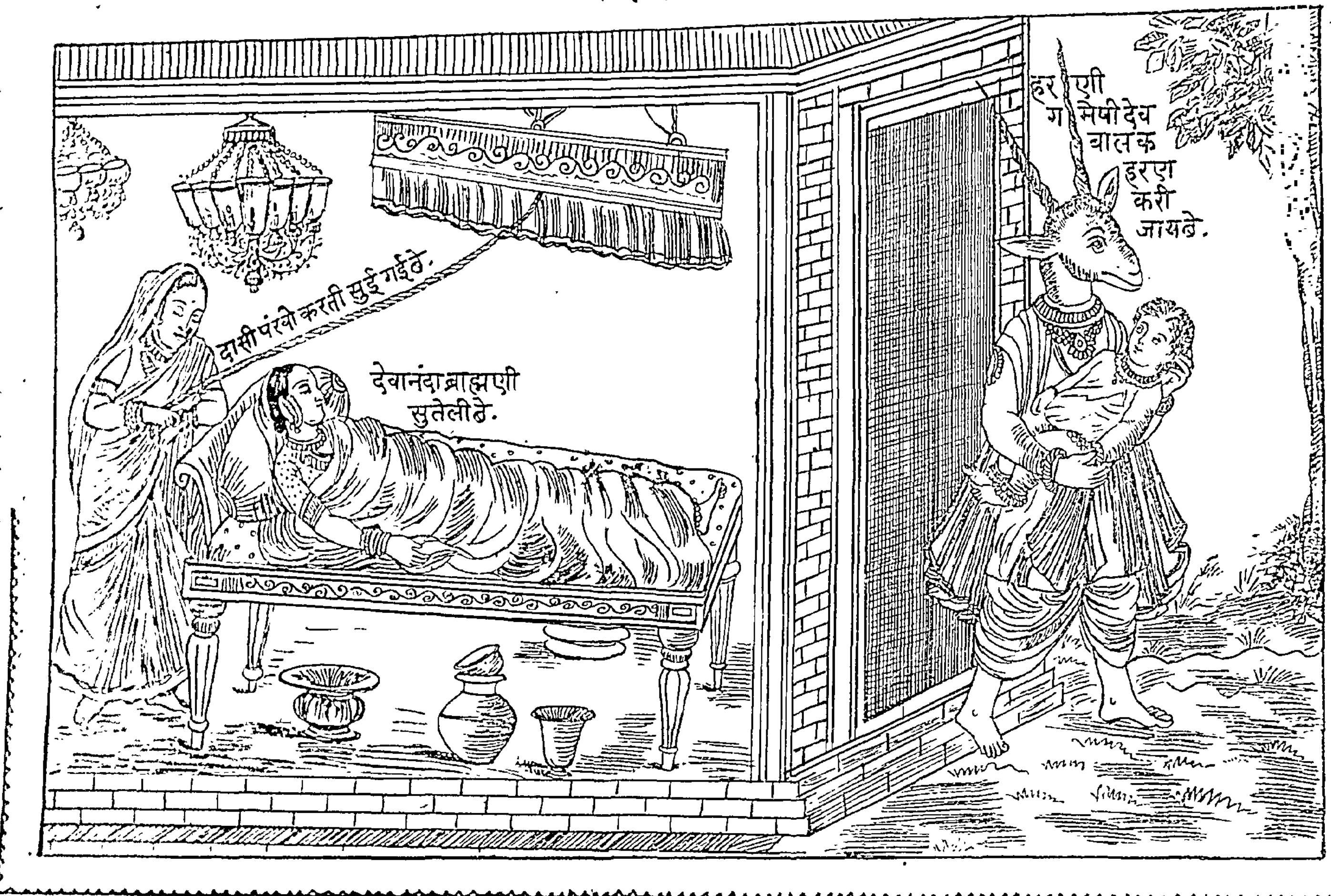
भवमां त्रीजा कल्पनी अंदर मध्यस्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवी बारमे भवे श्वेतांबी नगरीमां चुम्मालीश लाख पूर्वना आयुष्यवालो भारद्वाज नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामी तेरमे भवे माहेंद्र कल्पमां मध्यस्थिति देवता थयो. त्यांथी चवीने केटलोक काल संसारमां भमी चौदमे भवे राजगृह नगरमां चोत्रीश लाख पूर्वना आयुष्यवालो स्थावर नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामी पंदरमा भवमां ब्रह्मलोकमां मध्यमस्थितिवालो देव थयो. सोलमा भवमां कोटिवर्षना आयुष्यवालो विश्वभूति नामे युवराज पुत्र थयो. ते संभूति मुनि पासे चारित्र लइ एक हजार वर्ष दुस्तप तपस्या करवा लाग्यो. एक समये मासोपवासना पारणा माटे मथुरापुरीमां गोचरी सारु गयो. त्यां कोइ एक गाये तपस्याथी कृश थतने लीधे तेने पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो. तेने पडेलो जोइ त्यां परणवाने आवेला विशाखनंदी नामना तेना काकाना पुत्रे तेनुं उपहास्य कर्युं, तेथी कोप पामी तेणे ते गायने बे शींगडे पकडी आकाशमां भमावी अने एवुं नियाणुं कर्युं के, में करेला उग्र तपथी हुं भवांतरे घणो पराक्रमी थाउं. त्यांथी मृत्यु पामी सत्तरमे भवे महाशुक्र विमाने उत्कृष्ट स्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने अढारमे भवे पोतनपुरनो राजा प्रजापति के जे पोतानी पुत्री उपर कामी थयो हतो, तेनी पत्नीरूप मृगावती पुत्रीनी कुक्षिमां चोराशी लाख वर्षना आयुष्यवालो त्रिपृष्ट नामे वासुदेव थयो. त्यां बाल्यवयमां पण प्रतिवासुदेवना शालिक्षेत्रमां विघ्न करनारा सिंहने शस्त्र छोडी विदारण कर्यो. अनुक्रमे वासुदेवपणाने प्राप्त थयो. एक वखते ते वासुदेवे पोताना शय्यापालकने आज्ञा करी के, ज्यारे अमे सुइ जइए त्यारे तुं आ गायकोने गायन करता अटकावजे. तेवी आज्ञा कर्या छतां गीतरसमां आसक्त थयेला ते शय्यापालके वासुदेव सुता हता अने तेउने वार्या नहीं. ते पछी क्षणवारे जाग्रत थइ वासुदेवे कह्युं, "अरे पापी, मारी आज्ञा पालवाथी पण तने गीतश्रवण प्रिय लाग्युं, तो ले, तेनुं फल भोगव." एम कही तेना बंने कानमां तपेलुं सीसुं रेड्युं. आ कृत्यथी तेणे पोताना कानमां खीला नखाववानुं कर्म उपार्जन कर्युं. एवी रीते अनेक दुष्कर्म करी त्यांथी मृत्यु पामी ओगणीशमे भवे सातमी ना-

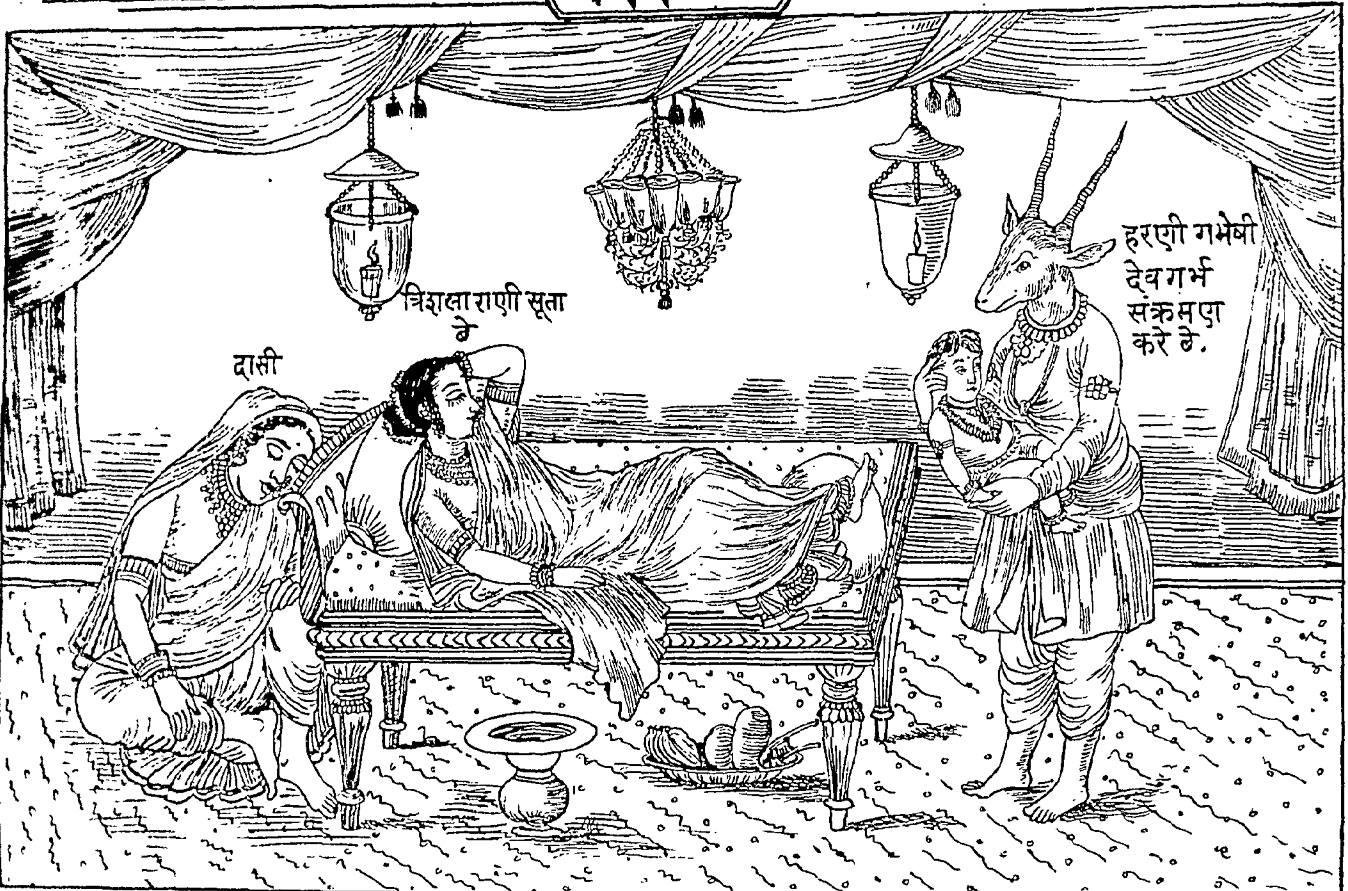

चित्र ७
त्रिपृष्ठ वासुदेव.
दासी.
शय्यापालक.
विणा मृदंग वजावनार.

रके नारकीपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकळी वीशमा भवमां सिंह थयो. त्यांथी मृत्यु पामी एकवीश-
मा भवमां चोथी नारकीमां उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकळी घणा भव भमी बावीशमे भवे मनुष्यपणुं
प्राप्त करी शुभ कर्म उपार्जन करी त्रेवीशमे भवे मूका राजधानीमां धनंजय राजानी धारिणी देवीनी
कुक्षिमां चोराशी लाख पूर्वना आयुष्यवाळो प्रियमित्र नामे चक्रवर्त्ती थयो. ते पोट्टिलाचार्यनी पासे
दीक्षा लइ एक कोटि वर्ष सुधी दीक्षा पाळी चोवीशमे भवे महाशुक्र देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी
चवीने पचीशमे भवे आ भरतक्षेत्रनी छत्रिका नगरीमां जितशत्रु राजानी भद्रा नामे देवीनी कुक्षिमां
पचीश लाख वर्षना आयुष्यवाळो नंदन नामे पुत्र थयो. ते पोट्टिलाचार्यनी पासे चारित्र लइ जाव जीव
सुधी मासक्षपण करी वीश स्थानकनी आराधना वडे तीर्थंकर नामकर्म निकाचित करी एक लाख वर्ष
सुधी चारित्रपर्याय पाळी मासिक संलेखनाथी मृत्यु पामी छवीशमे भवे प्राणत कल्पमां पुष्पोत्तरावतं-
सक विमानमां वीश सागरोपमनी स्थितिवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने पूर्वे मरीचि भवमां बांधेला
अने भोगववाने बाकी रहेला नीच गोत्रना कर्मथी सत्यावीशमे भवे ब्राह्मणकुंडग्राम नगरमां ऋषभदत्त
ब्राह्मणनी देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां ते उत्पन्न थयो. तेथी शक्र-इंद्र आ प्रमाणे चिंतवे छे के एवी
रीते नीच गोत्र कर्मना उदयथी अर्हंत, चक्री, बलदेव अथवा वासुदेव विगेरे अंत प्रमुख नीचकुलोमां
आव्या छे, आवे छे अने आवशे, अने कुक्षिमां गर्भपणे उत्पन्न थया छे, थाय छे अने थशे, पण जन्म
लेवाने माटे तेओ योनिमांथी नीकळ्या नथी, नीकळता नथी अने नीकळशे नहीं. भावार्थ एवो छे के
कदाचित् कर्मना उदयथी ते अर्हंत विगेरेनो अवतार तुछ प्रमुख नीच गोत्रमां थाय, पण योनिथी
जन्म तो थयो नथी, थतो नथी अने थशे नहीं; अने आ श्रमण भगवंत महावीर प्रभु जंबूद्वीपने विषे
भरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंडग्राम नगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी स्त्री देवानंदानी कुक्षिमां गर्भपणे उत्पन्न थया
छे, ते माटे आवो आचार छे. ते कोनो आचार छे ते कहे छे. देवताओना राजा शक्रादि इंद्रोनो आचार छे.
ते अतीत, वर्त्तमान अने अनागत एवा इंद्रोनो आचार छे. ते कयो आचार छे ते कहे छे. तेवा प्रकारना पूर्वे

कहेला स्वरूपवाला अंत्यादि कुलथी अर्हंत प्रभुने लइने तेवा प्रकारना उग्र विगेरे बीजी विशुद्ध जाति अने कुलवाला वंशमां राज्यसंपत्ति करते छते अने पालते छते मूकवानो इंद्रोनो आचार छे, माटे ते श्रेय–कल्याण छे, मने पण घटे छे के, ज्ञात एटले श्रीऋषभस्वामीना वंशना क्षत्रिउंमां प्रख्यात एवा काश्यपगोत्री सिद्धार्थ राजानी वाशिष्टगोत्री भार्या त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां गर्भपणे प्रभुने मूकवा जोइए अने जे त्रिशला क्षत्रियाणीनो पुत्रीरूप गर्भ छे, ते त्यांथी लइ जालंधरसगोत्री देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां मूकी देवा मारे युक्त छे. एम करीने ते विचारे छे, विचारीने पदाति-सेनाना नायक एवा हरिणैगमेषी देवने बोलावे छे. बोलावीने आ प्रमाणे कहे छे–हे देवानुप्रिय, त्यांथी मांडीने साहराविचए त्यां सुधीनां चार सूत्रो वडे इंद्र पोतानुं चिंतवेलुं हरिणैगमेषी देवने कहे छे. वली कहे छे के, हे देवानुप्रिय, इंद्रोनो आचार छे ते कारण माटे तुं जा अने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमांथी भगवंतने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां मूकी दे, अने त्रिशलानो जे गर्भ छे तेने देवानंदानी कुक्षिमां मूकी दे. ए प्रमाणे करीने आ मारी आज्ञाने सत्वर अर्पण कर. कार्य करीने आवी, आ कार्य में कर्युं, एम शीघ्र निवेदन कर. ते पछी ते हरिणैगमेषी देव के जे पेदल सेनानो अधिपति छे तेने देवेंद्र अने देवराज एवा इंद्रे आ प्रमाणे कह्युं एटले हृदयमां हर्ष पामी रोमांचित थइ गयो. एवो हरिणैगमेषी देव मस्तके अंजलि करी बोल्यो, जेवी आप देवनी आज्ञा, एम कही आज्ञानुं वचन विनयथी सांभले अने अंगीकार करे, अंगीकार करीने इशान कोणमां जाय. त्यां जइने वैक्रिय-समुद्घात एटले वैक्रिय शरीर करवा माटे प्रयत्न करे. ते करीने संख्येय योजन प्रमाण दंडनी आकृतिवाला उपर अने नीचे विशाल जीवप्रदेशना कर्मपुद्गलना समूहने बहार काढे. ते करवा वखते आवा प्रकारना पुद्गलोने ग्रहण करे. ते आ प्रमाणे– कर्केतनादि रत्नोना, जो के रत्न पुद्गलो औदारिक छे तेथी ते वैक्रिय शरीर करवामां असमर्थ छे. तेमां तो वैक्रिय वर्गणाना पुद्गलोज उपयोगमां आवे, तोपण रत्नोनी जेम ते सार पुद्गलो छे एम जाणवुं. ते रत्नो जेवां के हीरा, वैडूर्य, लोहिताक्ष, मसारगल्ल, हं-

चित्र. ८




चित्र ५
त्रिशला राणी सूता छे
दासी
हरणी गमेषी देव गर्भ संक्रमण करे छे.

बाकीना भांगानो निषेध कर्यो छे. ते विषे भगवती सूत्रमां लख्युं छे. वली जे त्रिशला क्षत्रियाणीनो पुत्रीरूप गर्भ हतो तेने पण देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां मूके छे, तेम करीने पछी जे दिशामांथी पोते आव्यो ते दिशा प्रत्ये जाय. पछी असंख्य द्वीपसमुद्रोनी मध्यमां थइ लक्ष योजन प्रमाण दिव्य गतिवडे ऊरुतो ते ज्यां सौधर्म कल्पमां सौधर्मावतंसक नामना विमानने विषे शक्र नामना सिंहासन उपर देवेंद्र, देवराज शक्रेंद्र रहेलो छे त्यां आवे. त्यां आवीने इंद्रनी आज्ञाने तुरत प्रत्यर्पित करे छे. ते काले ते समये वर्षाकाल संबंधी त्रीजो मास, पांचमुं पखवाडीयुं ते आश्विन मासनो कृष्णपक्ष, तेनी त्रयोदशीनो पक्ष अर्थात् पाछली अर्ध रात्रि, ते रात्रिनेविषे ब्याशी अहोरात्र अतिक्रांत थया पछी त्र्याशीमा अहोरात्रनो अंतरकाल एटले रात्रिनो काल प्रवर्त्तता ते हरिणैगमेषी देवताए त्रिशला मातानी कुक्षिमां ते श्रमण भगवंत महावीरनो गर्भ संहर्यो. ते हरिणैगमेषी देव केवो हतो केजे पोतानो अने इंद्रनो हितकारी छे, वली अनुकंपक एटले भगवंतनो भक्त छे. अनुकंपा शब्द भक्तिवाचक छे ते विषे 'आयरिय' ए वचननुं प्रमाण छे. अहीं कवि उत्प्रेक्षा करे छे—"श्रीभगवंत सिद्धार्थ राजाना आप्तकुलना घरमां प्रवेश करवाने क्षणवार मुहूर्त्त आववानी राह जोता होय तेम जे ब्राह्मणना घरमां ब्याशी अहोरात्र सुधी रह्या हता, ते श्रीचरम तीर्थंकर प्रभु पवित्र करो. ते संहरण काले श्रमणभगवंत श्रीमहावीर त्रण ज्ञाने युक्त हता, तेथी पोतानुं संहरण थवानुं छे ते जाणे छे, पण संहरण थती वखते जाणता नथी अने मारुं गर्भमांथी संहरण थयुं ए जाणे छे. अहीं शंका थाय छे के संहरण थती वखते ते जाणता नथी ते वात केम संभवे ? कारण के ते संहरण असंख्य समयनुं छे, वली भगवंत अने संहरण करनार हरिणैगमेषी देवना ज्ञाननो ते विषय छे, तेम तेनी अपेक्षाए भगवंतने विशिष्ट ज्ञान छे. तेना उत्तरमां कहे छे के आ वाक्य संहरण करनारा देवनी कुशलताने जणावे छे. ते देवताए भगवंतनुं एवी रीते संहरण कर्युं के जेथी भगवंते जाण्युं तोपण जाणे जाण्युंज न होय तेम लाग्युं, कारण के कांइ पण पीडानो अभाव हतो. जेम कोइ कहे छे के तमे मारा पगमांथी एवी रीते कांटो काढ्यो के जे मारा जाणवामांज आव्युं

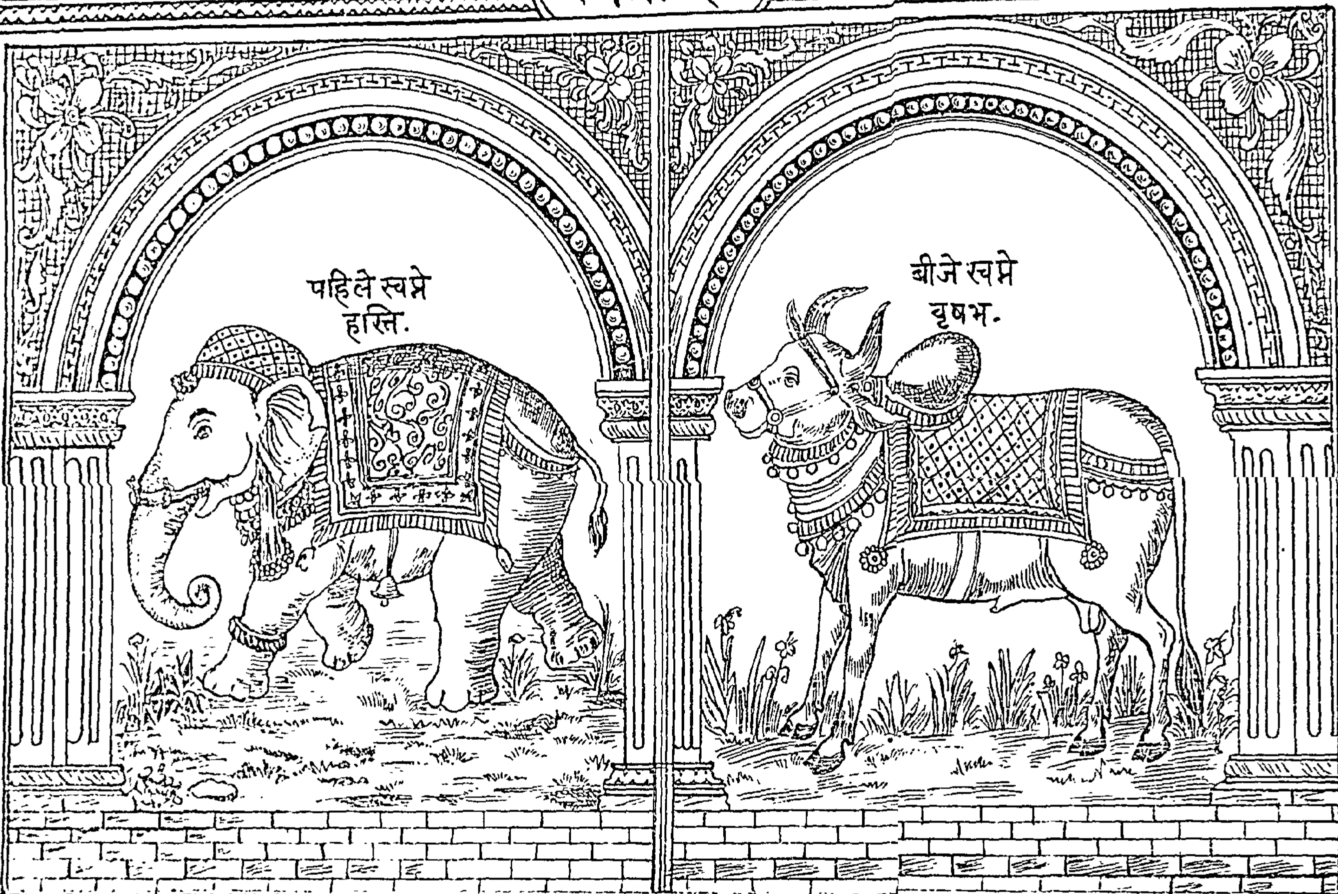


चित्र ५
दासी
त्रिशला राणी सूता छे
हरणी गमेषी देव गर्भ संक्रमण करे छे.

नहीं. ज्यां अतिशे सुख लागे त्यां आवो व्यपदेश थाय छे. सिद्धांतमां पण जोवामां आवे छे के जे
व्यंतर देवता छे तेओ उत्तम स्त्रीओनां गीत अने वाद्यना शब्दथी नित्ये सुखी अने प्रमुदित थइ पोताना
गतकालने पण जाणता नथी. वली आचारांग सूत्रमां कह्युं छे के ते हरण करातां जाणे. ए विरोध
पण न आवे एम मानवुं.जे रात्रे श्रमण भगवंत महावीर देवानंदानी कुक्षिमांथी त्रिशलानी कुक्षिमां सं-
हरणथी आव्या, ते रात्रे ते देवानंदाए पूर्वे कहेलां चौद स्वप्नो त्रिशलाए हरी लीधेलां जोयां. ते जोइ
जागी गइ. जे रात्रे भगवंतने गर्भपणे त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां मूक्या ते रात्रे त्रिशला क्षत्रिया-
णी जे वर्णवी शकाय नहीं तेवा वासगृहमां हती. जे वासगृह–शयनगृह केवुं हतुं तो के महा भाग्यवंतने
योग्य हतुं.जे चित्रकर्मे वडे रमणीय हतुं. जेनो बहारनो भाग चुना विगेरेथी धवलित कर्यो हतो. जे कोम-
ल पाषाणादिकथी घसेलुं,तेथी सुकोमल हतुं.जेनो उपरनो भाग विविध चित्रोथी युक्त हतो. जेनो अधो
भाग–तलीयुं देदीप्यमान हतुं. मणिरत्नोथी जे अंधकारने नाश करतुं हतुं. जे पंचवर्णनां मणिओथी नि-
बद्ध होवाथी अत्यंत सम हतुं अने जेनी भूमिनो भाग विविध स्वस्तिक विगेरेनी रचनाथी मनोहर हतो.
पंचवर्णा, सरस, सुगंधी अने आमतेम वेरेला पुष्पपुंजना उपचार–पूजाथी जे व्याप्त हतुं. कृष्णागुरु,
चीरु जातना, सिल्हक नामना अने दशांग विगेरे अनेक सुगंधी द्रव्यना संयोगथी उत्पन्न थयेल धूप
जेमां थता हता.ए सर्व वस्तु संबंधी मघमघीने प्रगट थयेल सुगंध वडे जे आह्लादक हतुं.वली जेमां उत्तम
सुगंधीनो गंध प्रसरतो हतो.जे वासभवन गंध द्रव्यना जेवुं अर्थात् अतिसुगंधी हतुं. एवा वासभवनमां
न वर्णवी शकाय तेवी शय्या–पलंग उपर ते रही हती. ते केवी शय्या छे? तो के जेमां शरीरना प्रमाण
जेटली लंबाइ छे, उभय तरफ एटले मस्तकांत अने पादांतमां बे ओशीकां छे, ते सिवाय बंने पडखे ओशीकां
छे तेथी ते शय्या बंने भागमां उंची लागे छे. वली तेने लीधे मध्यमां नमेली अने गंभीर छे. जेम गंगा-
तटनी रेतीमां पग विगेरे मूकवाथी ते पग नीचे उतरी जाय तेम ते शय्यामां पण अतिकोमलपणाने ली-
धे तेम हतुं. अतिकोमल रेशमी वस्त्रना पटथी ते आच्छादित छे. वली जेमां रज पडे नहीं तेवुं आच्छादन

छे. राता वस्त्रनी मच्छरदानीथी ते ढांकेली छे. अति रमणीय छे. सुकोमल मृगचर्म, कपासनी रूवांटी, बूर जातनी वनस्पति, मांखण अने आकडाना रूना जेवो जेनो स्पर्श छे. सुगंधी, सुगन्धे करीने प्रधान एवां पुष्पथी अने वासचूर्णथी जेमां उपचार करवामां आव्यो छे. आवी शय्यामां मध्य रात्रिना अवसरे सुती जागती अल्प निद्रा करती त्रिशला क्षत्रियाणी गज, वृषभ विगेरे चौद महास्वप्नोने जोइने जागी गइ. ते त्रिशला क्षत्रियाणी प्रथम स्वप्नमां हाथी जोवे–अहीं 'प्रथम हस्ती जुवे' एम जे कह्युं ते घणी जिनमाताओ तेम जोवे छे, तेथी पाठानुक्रमनी अपेक्षाए कह्युं छे. अन्यथा श्रीऋषभ देवनी माता प्रथम ऋषभ अने वीरमाता प्रथम सिंहने जोवे. हवे ते केवो हाथी जोयो के जेने चार दांत छे. कोइ ठेकाणे तउंच्च चउद्दंतं एवो पाठ छे तो एवो अर्थ थाय के, तेजथी घणा बलवान् एवा चार दांतवालो. ते हाथी केवो छे ? अति उंचो छे. वली वर्ष्या पछी दुग्धवर्ण थयेलो विशाल मेघ, मोतीनो हार, क्षीरसमुद्र, चंद्रनां किरणो, जलनां बिंदुओ अने रूपानो महान् पर्वत वैताढ्य तेना जेवो उज्ज्वल छे. गंधना लोभथी ज्यां भमराओ आवे छे एवा विशिष्ट गंधवाला मदजलथी जेना गंडस्थल सुगंधी थयेला छे. इंद्रना हस्ती ऐरावत जेवुं जेना देहनुं शास्त्रोक्त प्रमाण छे–एवा हाथीने त्रिशला माता जुवे छे. वली ते केवो हाथी छे तो के जलपूर्ण मेघनी गर्जना जेवो गंभीर अने मनोहर जेनो ध्वनि छे. वली ते शुभ एटले प्रशंसवा योग्य छे. जेनामां सर्व लक्षणोनो समूह छे, अने जेने प्रधान अने विशाल उरु छे एवा उत्तम हस्तीने त्रिशला माताए प्रथम स्वप्नमां जोयो.

ते हस्तीना दर्शन थया पछी ते वृषभने जुवे छे.ते वृषभ केवो छे तो के उज्ज्वल एवा कमलपत्रना समूहथी जेनी अधिक रूपकांति छे. जे पोतानी कांतिओना समूहने विस्तारी सर्व तरफ दशे दिशाने निश्चयपणे शोभावे छे. वली जेनो स्कंध भाग शोभाना समूहे करेली प्रेरणाथी होय तेम उल्लास पामती कांति वडे प्रकाशित, सुशोभित अने मनोहर छे. जो के स्कंधनो भाग उन्नत होवाथी स्वयमेव उल्लास पामे तथापि शोभाना समूहनी प्रेरणाथी जाणे उल्लास पामता होय तेवी उत्प्रेक्षा करे छे.सूक्ष्म,शुद्ध अने सुकमाल रोम


चित्र. १०
पहिले स्वप्ने
हस्ति.
बीजे स्वप्ने
वृषभ.

चित्र ११





वडे स्निग्ध एवी जेनी कांति छे. जेनुं अंग दृढ बांधादार, मांसवालुं, एथीज पुष्ट, प्रधान अने यथास्थाने रहेला योग्य अवयववालुं होवाथी घणुं सुंदर लागे छे. जेनां बे शींगडां, घाटा वर्त्तुलाकार, अति उत्कृष्ट, चीकाशवाला पदार्थथी अग्रजागे युक्त अने तीक्ष्ण छे. वली ते वृषन्न दान्त एटले क्रूर नथी, उपद्रवने हरनारो छे. तेना दांत सरखा प्रमाणवाला, सुशोन्नित अने श्वेत–निर्दोष छे. जेउना परिमित गुण छे एवां मंगलोनुं जे मुख एटले आववानुं कारण छे एवा वृषन्नने त्रिशलाए जोयो.

तेवा वृषन्नना दर्शन कर्या पछी आकाशमांथी उतरतो अने पोताना मुखमां प्रवेश करतो एक सिंह त्रिशला माताए स्वप्नमां जोयो. ते सिंह केवो छे तो के हारना समूह, क्षीरसागर, चंद्रकिरण, जलनां बिंदुउ अने रूपाना महान् पर्वत वैताढ्यना जेवो उज्ज्वल छे. वली ते मनोहर होवाथी दर्शनीय छे. तेना वे पोहोंचा–पंजा दृढ अने प्रधान छे. वर्त्तुलाकार, पुष्ट, परस्पर जडाएली प्रधान अने तीक्ष्ण दाढोथी तेनुं मुख अलंकृत थयेलुं छे. सारी रीते सिंचन करेला झातिवंत कमल जेवा कोमल अने प्रमाणथी सुशोन्नित तथा प्रधान एवा तेना बंने होठ छे. राता कमलना पत्र जेवुं कोमल तालवुं छे अने लप् लप् थती प्रधान जिह्वा छे–ए तालवुं अने जिह्वा ते बंनेथी ते शोन्नतो हतो.

सोनी जेमां सोनुं नाखीने गाले छे तेवी कुलडीमां रहेलुं, तपी गयेलुं अने प्रदक्षिणा फरतुं एवुं जे उत्तम सुवर्ण तेना जेवां गोल अने निर्मल विजली जेवां चलकतां जेनां बे नेत्रो छे. विशाल, पुष्ट अने प्रधान जेना बंने साथल छे. परिपूर्ण अने निर्मल जेनी कांध छे. कोमल, उज्ज्वल, सूक्ष्म, श्रेष्ठ लक्षणवाली अने दीर्घ एवी जे केशवाली छे तेना उरूतपणाथी जे सुशोन्नित छे. उन्नत, कुंडलाकारे शोन्नायमान करी जे पोताना पूंछडाने अफलावे छे. जे मनथी क्रूर नथी, जेनी आकृति सुंदर छे अने जे विलास सहित गति करे छे. जे आकाशमांथी नीचे उतरे छे. जेना गाढ अने तीक्ष्ण अग्रवाला नख छे अने मुखनी शोन्नाने माटे पल्लव जेवी प्रसारेली जेनी मनोहर जिह्वा छे एवा केशरीने त्रिशलाए जोयो.

ते पछी एटले सिंहना दर्शन थया पछी पूर्णचंद्र जेवा मुखवाली त्रिशला देवीए पद्मद्रहना कम-

लमां वसनारी जगवती लक्ष्मी देवीने हिमालयना शिखर उपर दिग्गजेंद्रे पोतानी पुष्ट सुंढथी अभिषेक करातां जोइ. ते लक्ष्मी देवी केवी छे? उंचा हिमालय पर्वत उपर थयेला प्रधान कमलस्थान उपर बेठेली छे—ते आ प्रमाणे. ए हिमालय पर्वत एकसो योजन उंचो छे. बार कलाए अधिक एक हजार ने बावन योजन विशाल अने सुवर्णनो छे. तेनी उपर दश योजन उंडो, पांचसो योजन विशाल अने एक हजार योजन लांबो वज्रमय तलीयावालो पद्मह्रद नामे धरो छे. तेना मध्य जागे एक कमल छे. ते जलथी बे कोश उंचुं छे, एक योजन विशाल छे, एक योजन लांबुं छे. तेनुं नील रत्नमय नालवुं दश योजननुं छे. तेनुं मूल वज्रमय छे. तेनो कंद रिष्ट रत्नमय छे. तेनी बाह्य पांखडीओ रक्त कनकमय छे. तेनी वचली पांखडीओ सुवर्णमय छे. ते कमलनी कनकमय कर्णिका छे जे बे कोश विशाल, बे कोश दीर्घ अने एक कोश उंची छे. तेना केसरा रक्त सुवर्णमय छे. तेनी मध्यमां अर्ध कोश विशाल, एक कोश दीर्घ, कांइ उणुं एक कोश उंचुं श्रीदेवीनुं जवन छे. तेने पांचसो धनुष्य उंचां, अढीसो धनुष्य विशाल, पूर्व, दक्षिण अने उत्तर दिशामां रहेलां त्रण द्वार छे. तेना मध्य जागे अढीसो धनुष्यना मापवाली रत्नमय वेदिका छे. तेनी उपर श्रीदेवीने योग्य एवी शय्या छे. हवे ते मुख्य कमलनी चारे तरफ श्रीदेवीनां आजरणे जरेलां, वलयाकारे रहेलां प्रथम कहेला मापथी अर्धा मापे उंचां, लांबां अने विशाल एवां एकसो आठ कमलो छे. एवी रीते सर्व पण वलयोमां अनुक्रमे अर्धुं अर्धुं मान जाणवुं. एवी रीते प्रथम वलय थयुं. बीजे वलये वायव्य, ईशान अने उत्तरदिशामां चार हजार सामानिक देवतानां चार हजार कमलो छे. पूर्वदिशामां चार महत्तरां कमलो छे. अग्नि दिशामां गुरुस्थाने रहेला अभ्यंतर पर्षदाना देवतानां आठ हजार कमलो छे. दक्षिण दिशामां मित्रस्थाने रहेला मध्यम पर्षदाना देवतानां दश हजार कमलो छे. नैर्ऋतदिशामां किंकरस्थाने रहेला बाह्य पर्षदाना देवताओनां बार हजार कमलो छे. पश्चिमदिशामां हाथी, अश्व, रथ, पेदल, पाडा, गंधर्व अने नाट्यरूप सात कटकना नायकोनां सात कमल. एवी रीते बीजुं वलय थयुं. २ त्रीजे

वलये तेटला अंगरक्षक देवताउनां सोल हजार कमलो छे. ए त्रीजुं वलय. ३ चोथे वलये अभ्यंतर आभियोगिक देवताउनां बत्रीश लाख कमलो छे. ए चोथुं वलय. ४ पांचमे वलये मध्यम आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमलो छे. ए पांचमुं वलय. ५ छठे वलये बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमलो छे. ए छठुं वलय. ६ मूल कमल साथे सर्व संख्याए एक कोटी, वीश लाख, पचास हजार, एकसो ने वीश कमलो थाय छे. एवी जातना कमललक्षणस्थानउपर जे श्रीदेवी रहेली छे. वली ते केवी हती तो के मनोहर रूपवाली हती, तेमना बंने चरण सारी रीते स्थापित करेला कनकमय काचबा जेवा हता, अति उन्नत अने पुष्ट एवा अंगोठा उपर रहेला श्रीदेवीना नख स्वाभाविक तेवा राता हता, के जाणे लाख विगेरेथी रंग्या होय, तेवा पुष्ट, मध्ये उंचा, सूक्ष्म, ताम्रवर्णी अने स्निग्ध नखो हता. तेमना हाथ तथा पग कमलनां पांदडांनी जेम सुकुमाल हता. तेमनी आंगलीउ कोमल होवाथी श्रेष्ठ हती. कुरुविंद जातना आवर्त्तथी अथवा तेवा आभूषणथी शोभित, अने वृत्तानुपूर्व एटले हाथीनी सुंढनी जेम पूर्वथी उत्तरोत्तर स्थूल एवी जेनी बे जंघा हती, जेना जानु गुप्त हता, जेना बंने उरु गजेंद्रनी सुंढ जेवा पुष्ट हता. सुवर्णनी मेखलाए युक्त होवाथी मनोहर अने विस्तारवालुं जेनुं कटितट हतुं, उंची जातना काजल, भ्रमरा अने मेघना समूहना जेवा वर्णवाली, सरल, सरखी, घाटी, सूक्ष्म, सुंदर, विलासथी मनोहर, शिरीष पुष्पादि वस्तुउथी कोमल अने रमणीय, एवी तेनी रोमराजी हती. तेनुं जघनस्थल नाभिमंडलथी सुंदर, विशाल अने श्रेष्ठ लक्षणोवालुं हतुं. तेना शरीरनो मध्य भाग मुष्टिमां आवे तेवो अने श्रेष्ठ त्रिवलिनी रेखावालो हतो. विविध जातनां चंद्रकांत विगेरे मणि, वैडूर्य विगेरे रत्नो, कनक एटले पीतवर्ण सुवर्ण अने निर्मल मोटी जातनुं रक्तवर्ण सुवर्ण तेना रचेलां आभरण एटले अंग उपर पहेरवानां गलचवा, कंकण विगेरे अने भूषण एटले उपांग उपर पहेरवाना मुद्रिका विगेरे तेउथी जेनां मस्तकादि अंग अने अंगुली विगेरे उपांग शोभतां हतां अर्थात् ते श्रीदेवीनां अंग आभरणोथी अने उपांग आभूषणोथी विराजित हतां. वली मोतीना हारथी

शोभायमान, डोलर विगेरेनां पुष्पोथी व्याप्त अने देदीप्यमान एवा स्तनयुगलरूप बे सुवर्ण कलश तेणीए धारण कर्या हता.

वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के यथायोग्य स्थानके स्थापन करेलां जे मरकतपत्र कहेतां पानां, तेउं वडे करीने शोभायुक्त थएली, तथा आंखोने अत्यंत आनंद आपनारा एवा जे मोतीउंना गुच्छा, तेउंए करीने मनोहर थएलो जे मोतीउंनो हार, तेणे करीने शोभायुक्त थएली. (अहीं "शोभायुक्त थएली" एटलुं पद मूल सूत्रमां नथी आप्युं, ते अध्याहार तरिके लेखवुं, अने एवी रीतेज आगलनां पण बन्ने विशेषणोमां लेइ लेवुं.) वली ते लक्ष्मी केवी छे,तो के उदरस्थ कहेतां हृदयमां रहेली जे दीनारमाला कहेतां सोनाना सिक्काउंनी जे माला तेणे करीने शोभायुक्त थएली एवी. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे,तो के मनोहर अने कंठमां रहेलो जे मणिसूत्र कहेतां मणिउंनो जे रत्नमय दोरो, तेणे करीने शोभायुक्त थएली एवी. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के आवी रीतना शोभागुणना समुदयथी, एटले कांतिगुणना अतिशयपणाथी शोभित थएली. हवे ते शोभागुणसमुदय केवो छे, तेनां विशेषणो कहे छे. अंस कहेतां जे खभा तेउंना पर लागीने रहेलुं जे कुंडलनुं युग्म, तेनी उल्लसायमान थती, शोभती अने समीचीन छे कांति जेमां एवो. वली ते शोभागुणसमुदय केवो छे, तो के लक्ष्मी देवीना मुखनो जाणे कुटुंबीज होय नहीं, एवो. अर्थात् जेम राजा कुटुंबीउं अने सेवकोथी शोभे छे, तेम लक्ष्मी देवीनुं मुख, ते शोभागुणसमुदये करीने शोभे छे. "अहीं खभा सुधी लटकता" ए विशेषण कुंडलोनुं छे. त्यारे अहीं कोइ शंका करे के, शोभागुणसमुदयनां बन्ने विशेषणोनी वच्चे, कुंडलयुगलनुं विशेषण शा-माटे मूक्युं? तथा ते विशेषणनो परनिपात केम कर्यो? तेने माटे कहे छे के आ मूल सूत्र प्राकृत भाषामां छे, अने तेथी ते भाषामां अन्य विशेषणोनी वच्चे पण बीजां विशेषणो आवे छे, तथा विशेषणोनो परनिपात पण थाय छे, अने एवी रीते सर्व जगोए विशेषणना परनिपात माटेनो खुलासो जाणी लेवो. हवे वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के कमलनी पेठे निर्मल अने विस्तारवालां ने लोचनो जेणीनां

एवी. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के देदीप्यमान एवा जे हाथो, तेणे करीने ग्रहण करेलां जे बे कमलो, तेउमांथी झरतुं जे मकरंदरूप पाणी, तेणे करी युक्त एवी, अर्थात् लक्ष्मी देवीए पोताना बन्ने हाथमां बे कमलो ग्रहण करेलां छे, अने तेउमांथी मकरंदनां एटले पुष्पोमां थता रसनां बिंदुउ नीचे पडतां जाय छे. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के केवल क्रीडाए करीने (पण पसीनो दूर करवा माटे नहीं, कारण के देव संबंधी शरीरने पसीनो थतोज नथी) पवन लेवा माटे हलावेलो जे तालवृंद कहेतां पंखो, तेणे करीने शोभायुक्त थएली. (अहीं पण " शोभायुक्त थएली " ए पद अध्याहार जाणवुं.) वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के सारी रीते बुटो करेलो, (पण जटाजूटनी पेठे परस्पर चोंटी गएला वालवालो नहीं,) तथा वली श्यामवर्ण एटले काली कांतिवालो तथा घाटो, (पण वच्चे आंतरावालो नहीं,) अने सूक्ष्म कहेतां कोमल, (पण डुक्करना वालनी पेठे जाडा केशवालो नहीं,) तथा अत्यंत लंबायमान थएलो, एवो छे वेणिदंड कहेतां चोटलो जेणीनो, एवी रीतनी लक्ष्मी देवीने त्रिशला क्षत्रियाणीए चोथा स्वप्नमां जोइ.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणि, शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती भाषांतरमां बीजो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥

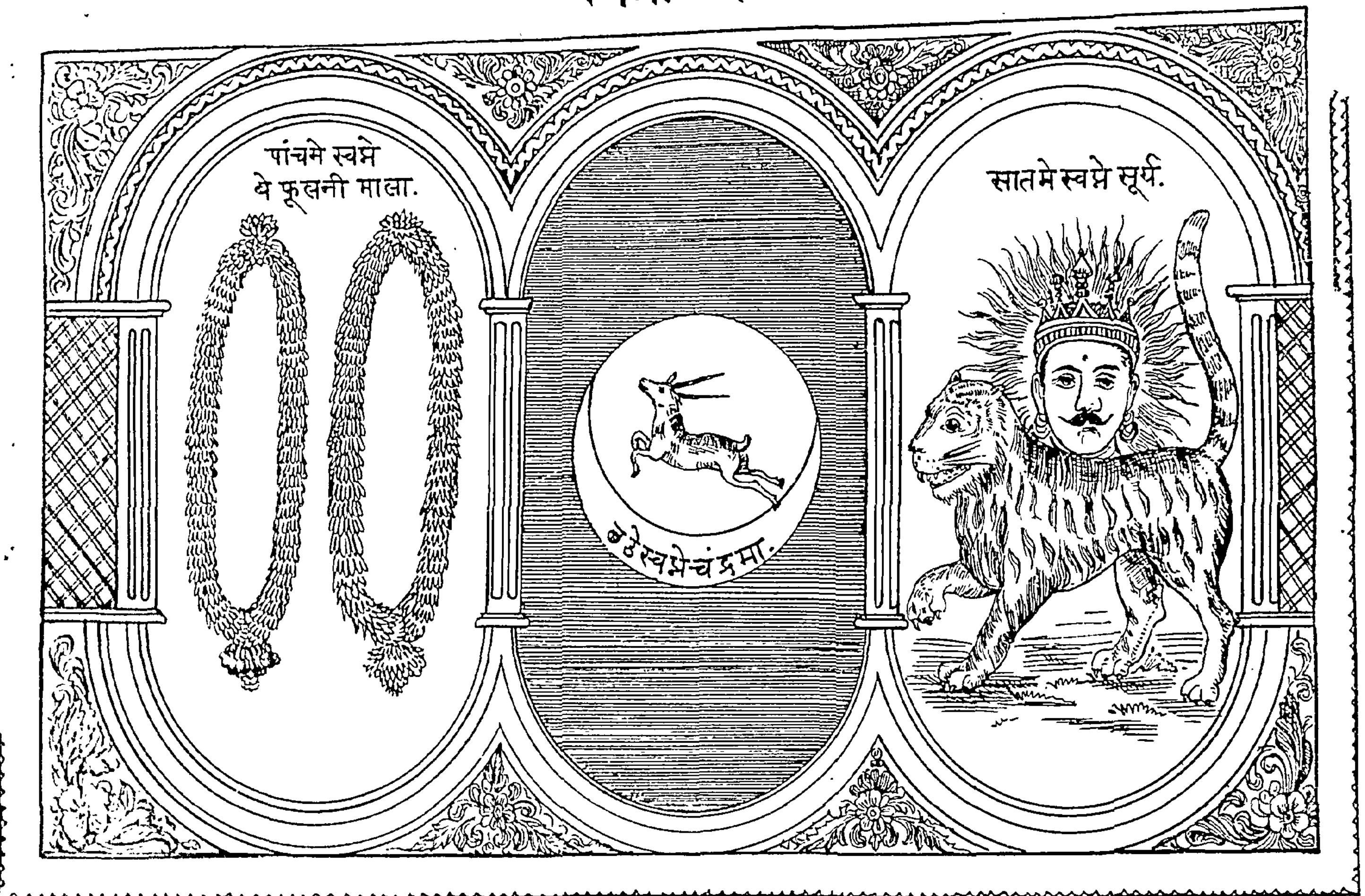
तृतीयं व्याख्यानं प्रारभ्यते

हवे एवी रीतनुं लक्ष्मीनुं स्वप्न जोया बाद, त्रिशला क्षत्रियाणीए नभस्तल कहेतां आकाश-तलमांथी पडती एवी जे दाम कहेतां पुष्पनी मालानुं, पांचमुं स्वप्न जोयुं. ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के सरस कहेतां मकरंदे करीने युक्त छे पुष्पो कहेतां फुलो जेमां, एवां जे कल्प-वृक्षोनां पुष्पो, तेउ वडे करीने रमणीय कहेतां मनोहर थएली एवी. वली ते पुष्पोनी माला

केवी छे, तो के चंपो, अशोक, पुन्नाग, नाग, प्रियंगु, शिरीष, मुग्गर, मल्लिका, जाइ, जूइ, अंकोल, कोज, कोरंट, दमनकपत्र, नवमालिका, वकुल, तिलक, वासंतिक, सूर्यविकाशी कमल, चंद्रविकाशी कमल, पाटल, कुंद, अतिमुक्त तथा सहकार आदिकनां पुष्पोनी छे सुगंधी जेमां एवी. वली ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के अनुपम एटले जेने कंइ पण उपमा आपी शकाय नहीं एवो अद्वितीय, अने मनने अत्यंत आनंद उपजावे एवो जे सुगंध, तेणे करीने आसपास दशे दिशाउने सुगंध युक्त करती एवी. वली ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के सर्वर्त्तुक कहेतां सघली ऋतुउमां मलतां जे पुष्पो तेणे करीने युक्त थएली एवी, अर्थात् ते पुष्पमालामां छए ऋतुमां थतां पुष्पो गुंथेलां हतां. वली ते पुष्पोनी माला केवी छे,तो के अत्यंत देदीप्यमान थतां, अने तेथीज अत्यंत मनोहर लागतां, एवां जे जुदी जुदी जातनां लाल, पीला विगेरे रंगोनां जे पुष्पो, तेउए करीने वच्चे वच्चे करेली जे रचना कहेतां गुंथणी, तेथी चित्र कहेतां आश्चर्य करनारी एवी. आ विशेषणथी एवो भावार्थ कह्यो के ते पुष्पमालामां घणो सफेद वर्ण वर्त्ते छे, अने अंदर थोडा थोडा बीजा पण वर्णो छे, एम सूचव्युं. वली ते माला केवी छे, तो के गुमगुमायमान एटले कर्णने मधुर लागे एवो जे शब्द, तेने करतो, अने अन्य स्थानकेथी त्यां आवीने, ते पुष्पोनी मालामां अत्यंत आसक्त थतो, तथा न समजी शकाय एवा गुंजारवने करतो एवो षट्पद, मधुकरी (मधमाख) तथा भ्रमरोनो जे समूह,ते छे अग्र भागमां, बन्ने पडखांना भागमां तथा नीचेना भागमां जेने एवी अर्थात् ते पुष्पमालानो विस्तार पामतो जे अत्यंत सुगंध, तेथी करीने ते मालाना सघला भागो पर भमराउ आवीने वलगेला हता. अहीं षट्पद (छ पगवालो), मधुकरी, तथा भ्रमर विगेरे जुदा जुदा रंगना भमराउनी जातिउ कहेली छे, एम जाणी लेवुं. एवी रीतनी पुष्पोनी मालाने आकाशमांथी पडती त्रिशला क्षत्रियाणीए पांचमा स्वप्नमां जोइ.

त्यार पछी छठ्ठा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए चंद्रने जोयो. ते चंद्र केवो हतो, तो के गोक्षीर क-

चित्र. २



हेतां गायनुं दूध, फीण, पाणीना कणीआ, तथा रजतकलश कहेतां रूपानो कलश, तेना सरखा सफेद रंगवालो. वली ते चंद्र केवो हतो तो के शुभ्र एटले शांतता आपनारो एवो. वली ते चंद्र केवो हतो, तो के आ दुनियांमां रहेता जे लोको, तेउनां हृदय एटले मन, अने नयन कहेतां आंखोने, कांत कहेतां वल्लभ लागे एवो. वली ते चंद्र केवो हतो तो के संपूर्ण छे मंडल जेनुं एवो. वली ते चंद्र केवो हतो तो के तिमिर कहेतां अंधकारोनो जे समूह तेणे करीने निबिड अने गंभीर एवां जे वननां गह्वरो कहेतां झाडीउथी भरपूर एवा वनना भागो, तेउमां अंधकारनो अभाव करनारो, अर्थात् झाडीउमां रहेला अंधकारनो पण नाश करनारो. कह्युं छे केः—

विरम तिमिर साहसादमुष्मा—द्यदि रविरस्तमितः स्वतस्ततः किम् ॥
कलयसि न पुरो महोमहोर्मि—स्फुटतरकैरवितांतरिक्षमिंदुम् ॥ १ ॥

अर्थ—हे अंधकार, आ तारा साहसथी तुं अटकी जा (एटले विराम पाम), कारण के सूर्यना आथम्या पछी, तेजनां मोटां मोजांउए करीने, प्रफुल्लित थयेला चंद्रविकासी कैरव सरखुं करेल छे आकाश जेणे, अथवा कांतिवालां किरणोए करीने रक्षण करेलुं छे आकाशनुं जेणे एवा आ चंद्रने शुं, तुं आगाडी जोतो नथी ?

वली ते चंद्र केवो तो के वर्ष अने मास आदिकना प्रमाणने करनारा, शुक्ल अने कृष्ण एवा जे बे पक्षो, तेनी मध्यमा रहेली जे पूर्णिमा, तेने विषे राजती कहेतां शोभती छे, लेखा कहेतां कला जेनी एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के कुमुद कहेतां चंद्रविकासी जे कमलो, तेउने विकस्वर करनारो. कह्युं छे केः—

दिनकरतापव्याप—प्रपन्नमूर्छानि कुमुदगहनानि ॥ उच्छस्थुरमृतदीधिति—कांतिसुधासेकतस्त्वरितं ॥१॥

अर्थ—दिनकर कहेतां सूर्यना तापनी जे व्याप्ति कहेतां फेलावुं, तेथी प्राप्त थएली छे मूर्छा जेउने, अर्थात् करमाइ गएलां, एवां जे कुमुदगहनानि कहेतां चंद्रविकासी कमलोनां जे वनो, ते, अमृतदीधिति कहेतां चंद्रनी जे कांति, तेरूपी जे अमृत, तेना सिंचावाथी; अर्थात् तेउना

पर चंद्रनां किरणो पडवाथी, एकदम पाछां विकस्वरपणाने कहेतां प्रफुल्लितपणाने पाम्यां. वली ते चंद्र केवो छे तो के निशा कहेतां जे रात्रि, तेने शोभावनारो. वली ते चंद्र केवो छे तो के सुपरिमृष्ट कहेतां राख आदिकथी मांजीने उज्ज्वल करेलो जे अरिसो, तेना तलीयानी छे उपमा जेने एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के हंसनी पेठे पटु कहेतां सफेद छे, वर्ण कहेतां रंग जेनो एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के ज्योतिष कहेतां जे ताराउ, तेउनां मुखोने शोभावनारो, अर्थात् तेउनो उपरी एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के तम कहेतां जे अंधकार, तेना प्रत्ये रिपु कहेतां वैरी सरखो एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के मदन कहेतां जे कामदेव, तेनां शरापूर कहेतां भाथां (जेमां तीरो रखाय छे, तथा जेने पीठ पाछल योद्धाउ बांधी राखे छे) ते सरखो. अर्थात् धनुषने धारण करनारो माणस, तुणीर कहेतां भाथांने मेलवीने, हर्षित थयो थको, जेम हरिण आदिकनो वध करे छे, तेम मदन कहेतां कामदेव पण चंद्रना उदयने पामीने जरा पण शंका राख्या विना माणसोने पोतानां पुष्पोरूपी बाणोथी व्याकुल करे छे. वली ते चंद्र केवो छे तो के जलधि कहेतां जे समुद्र, तेनी जे वेला कहेतां पाणीनी छोल, तेने वधारनारो एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के प्राणवल्लभ कहेतां जे भरतार, तेनाथी थएलो छे विरह जेणीने अने तेथी करीने दुर्मनस्क कहेतां व्यग्रचित्तवाली एवी जे स्त्री, तेने पोतानां किरणोए करीने शोषमां (शोकमां) गरकाव करतो, अर्थात् स्त्रीनां भरतारना वियोगरूपी दुःखने उलटो वृद्धि करतो. वली ते चंद्र केवो छे तो के सौम्य कहेतां मनोहर छे रूप जेनुं एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के गगनमंडल कहेतां आकाशमंडल तेनुं विशाल अने सुंदर आकारवालुं तथा चंक्रम्यमाण कहेतां चलनस्वभाववालुं, एवुं शोभा करनारुं जाणे तिलकज होय नहीं, एवो. वली ते चंद्र केवो छे तो के रोहिणी नामनी जे पोतानी स्त्री तेनो स्वामी छे, तथा तेणीने हित करनारो छे, हितकारी एवुं विशेषण एक पक्षना प्रेमने दूर करवा माटे छे. (अर्थात् बन्ने पक्षना प्रेमने बतावनारुं छे.) आवी रीतनो चंद्र अने रोहिणी वच्चे स्त्रीभरतारनो संबंध कविसमयनी अपेक्षाथी छे, केमके रोहिणी तो एक नक्षत्रविशेष छे, अने चंद्र तथा

नक्षत्रनी वच्चे तो स्वामिसेवकपणानो भाव सिद्धांतमां प्रसिद्ध छे, पण कंइ स्त्रीभरतारपणानो भाव कहेलो नथी. एवी रीते छट्ठा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए उल्लसायमान थता एवा संपूर्ण चंद्रने जोयो.

ते वार पछी सातमा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए सूर्यने जोयो. हवे ते सूर्य केवो हतो, तेनुं वर्णन करे छे. निश्चये करीने तमःपटल कहेतां अंधकारनो जे समूह, तेने परिस्फोटक कहेतां नाश करनारो एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के तेज वडे करीने प्रज्वलत् कहेतां जाज्वल्यमान छे रूप जेनुं एवो. हवे सूर्यनां बिंबमां रहेला बादर एवा जे पृथ्वीकाय, ते तो हमेशां शीतल कहेतां ठंडक आपनारा छे, पण आतपनामकर्मनो तेने (सूर्यने) उदय होवाथी तेजे करीने तेओ माणसोने व्याकुल एटले पीडा-युक्त करे छे, एवी रीते जाणवुं. वली ते सूर्य केवो छे तो के रक्ताशोक कहेतां लाल रंगवालुं अशोक जातनुं कोइ वृक्षविशेष, तथा प्रफुल्लित थएलुं जे किंशुक कहेतां केसुडानुं पुष्प, तथा शुकमुख कहेतां पोपटनुं मुख (चांच) तथा गुंजार्ध कहेतां चणोठीनो अर्धो भाग, के जे लोकोमां प्रसिद्ध छे; एटली वस्तुओनी जे रताश, तेना सरखो छे लाल वर्ण जेनो एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के कमलोनां जे वनो, तेओने अलंकरण कहेतां शोभा करनारो, अर्थात् तेओने विकस्वर करनारो, कारण के विकस्वर एटले प्रफुल्लित थएलां, एवां जे कमलो, ते जाणे के अलंकारोज होय नहीं तेवां शोभी नीकले छे. वली ते सूर्य केवो छे तो के ज्योतिषनुं जे चक्र, ते प्रत्ये अंकन कहेतां चिह्नरूप, अर्थात् मेष आदिक जे राशिओ, तेओमां जे पोतानुं संक्रमण, तेणे करीने ज्योतिषनां लक्षणने जणावनारो. वली ते सूर्य केवो छे तो के अंबरतल कहेतां जे आकाशतल, ते प्रत्ये प्रदीपक कहेतां प्रकाशनो करनारो. वली ते सूर्य केवो छे तो के हिमपटल कहेतां बरफनो जे समूह तेने गलग्रह एटले गलहस्त देनारो, अर्थात् बरफना समूहनो नाश करनारो. वली ते सूर्य केवो छे तो के ग्रहगण कहेतां ग्रहोना जे समूहो तेओनो उरु कहेतां महान् एवो नायक कहेतां स्वामी छे. वली ते सूर्य केवो छे तो के रात्रिविनाश कहेतां रात्रिने नाश करवाना एक कारणरूप एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के उदयास्त कहेतां तेना उदय

थवाना अवसर वखते तथा तेना अस्त थवाना अवसर वखते, फक्त एक मुहूर्तवार सुधी छे सुखदर्शन कहेतां सुखे करीने जोवापणुं जेनुं एवो, अने ते सिवाय बीजे वखते दुर्निरीक्ष्यरूपं कहेतां दुःखे करीने जोइ शकाय एवुं छे स्वरूप जेनुं एवो, अर्थात् जेनी सन्मुख पण जोइ शकातुं नथी एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के रात्रिने वखते उद्धत कहेतां पोतानी इच्छा प्रमाणे चालनारा, अर्थात् स्वेच्छाचारी एवा जे अन्याय करनारा चोर आदिको, तेओनो जे प्रचार, एटले चोरी माटे आमतेम भटकवुं, तेने निवारक कहेतां अटकाव करनारो. वली ते सूर्य केवो छे तो के शीतवेग कहेतां ठंडीनो जे वेग, तेने मथन करनारो, अर्थात् पोताना तापथी ठंडीने दूर करनारो एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के मेरु नामनो जे पर्वत तेनो आश्रय करीने प्रदक्षिणा वडे करीने (तेनी) मेरुनी आसपास भमनारो एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के विशाल कहेतां विस्तारवालुं छे मंरूप कहेतां मांडलुं जेनुं एवो. वली ते सूर्य केवो छे तो के रश्मिसहस्रेण कहेतां दश सो, अर्थात् एक हजार एवां जे पोतानां किरणो तेणे करीने प्रदलित कहेतां नाश करेली छे, दीप्तिवंत कहेतां चलकाटवाला एवा जे चंद्र तारा आदिको, तेओनी शोभा जेणे एवो, अर्थात् तेणे पोतानां किरणोए करीने सघला तेजस्वी पदार्थोनी कांतिनो नाश करेलो छे. हवे अहीं जे सूर्यनां एक हजार किरणो कह्यां, ते तो फक्त लोकमां एवी रीते प्रसिद्ध होवाथी कह्यां छे, पण तेनां किरणो तो काल विशेषनी अपेक्षाए अधिक पण थइ शके छे. लौकिक शास्त्रोमां पण कह्युं छे के:—

ऋतुभेदात्पुनस्तस्या—तिरिच्यंतेऽपि रश्मयः ॥ शतानि द्वादश मधौ, त्रयोदश तु माधवे ॥ १ ॥

अर्थ—ऋतुओना भेदो प्रमाणे वली ते सूर्यनां किरणो वृद्धि पण पामे छे, जेमके चैत्र मासमां तेनां बारसो किरणो थाय छे, अने वैशाख मासमां तेनां तेरसो किरणो पण थाय छे ॥

चतुर्दश पुनर्ज्येष्ठे, नभोनभस्ययोस्तथा, ॥ पंचदशैव त्वाषाढे, षोडशैव तथाश्विने ॥ २ ॥

अर्थ—वली जेठ महिनामां तेनां किरणो चौदसो थाय छे, तेम श्रावण अने भादरवामां पण तेटला-

ज एटले चौदसो थाय छे, अने आषाढ मासमां तेनां किरणो पंदरसो थाय छे, अने आसो महिनामां तेनां किरणो सोलसो थाय छे ॥

कार्तिके त्वेकादश च, शतान्येवं तपस्यपि ॥ मार्गे च दशसार्धानि, शतान्येवं च फाल्गुने ॥ ३ ॥ पौषे एव परं मासि, सहस्रं किरणा रवेः ॥

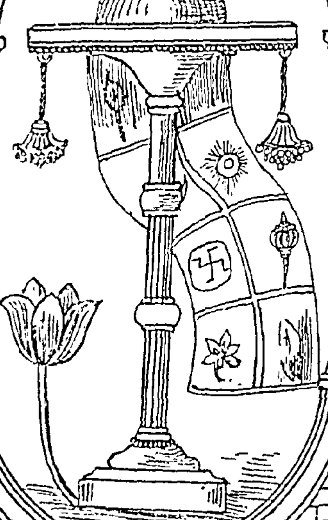
अर्थ—कार्तिक मासमां तेनां किरणो अग्यारसो थाय छे, अने माघ महिनामां पण तेटलांज एटले अग्यारसो किरणो थाय छे, अने मागशर महिनामां एक हजार अने पचास किरणो तेनां होय छे, अने फागण महिनामां पण तेटलांज, एटले एक हजार अने पचास किरणो होय छे. वली पोष महिनामां तेनां एक हजार किरणो होय छे. एवी रीते सूर्यनुं यंत्र जाणवुं.

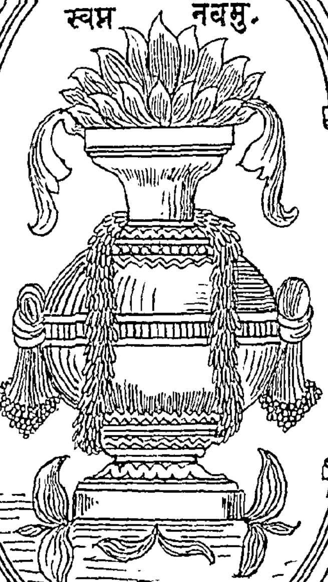
एवी रीते सातमा स्वप्नमां सूर्यने जोया बाद त्रिशला क्षत्रियाणीए आठमा स्वप्नमां ध्वजने जोयो. ते ध्वज केवो छे तो के जात्य कहेतां उत्तम जातिनुं एटले सो टचनुं जे कनक कहेतां सुवर्ण तेनो बनावेलो जे दंड, तेना पर रहेलो; अर्थात् सुवर्णमय जे दंड तेना शिखर पर रहेलो. वली ते ध्वज केवो छे तो के समूहीभूत कहेतां जथाबंध रहेलां एवां, अने लीलां, कालां, रातां, पीलां अने सफेद, एवी रीते पांचे जातिनां रंगवालां, अने तेथी मनोहर लागतां अने वली सुकुमाल कहेतां कोमल, तथा उल्लसायमान थतां, एटले आम तेम फरकतां एवी रीतनां जे मयूरपिछ कहेतां मोर नामना पक्षीनां जे पिंछा, तेउए करीने जाणे ध्वज पर वाल बनावेला होय नहीं, एवी रीते ते पिंछांउ जेना पर शोभी रह्यां छे, एवा ध्वजने, अर्थात् जेम माणसना मस्तक पर चोटलो शोभे छे, तेम आ ध्वज पर पण वेणिनी जगोए मोरपिंछनो गुछो स्थापेलो छे. वली ते ध्वज केवो छे तो के अधिकसश्रीक कहेतां अत्यंत शोभाए करीने युक्त एवो. वली ते ध्वज केवो छे तो के नीचे वर्णन करेलां विशेषणोवाला सिंहे करीने शोभायुक्त थएलो. ते सिंह केवो, तेनुं वर्णन हवे करे छे. स्फटिक एटले स्फटिक जातिनुं रत्नविषेष, शंख एटले समुद्रमां जे थाय छे ते, अने वली जे लोकमां प्रसिद्ध छे ते, अंक पण रत्ननी जातिविशेष छे ते, कुंद ए सफेद पुष्पनी

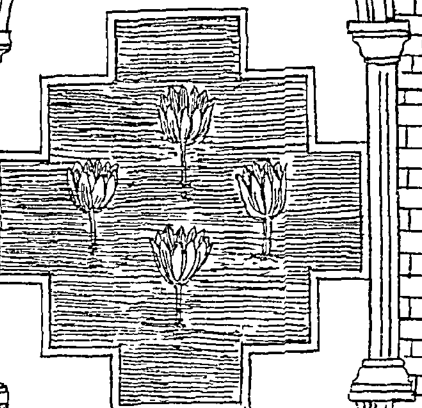
जाति छे, जेने डोलर पण कहे छे ते, दकरजस् एटले पाणीना कणीया, रजतकलश कहेतां रूपानो बना-वेलो जे कलश ते,एवी रीते उपर जणावेली सघली वस्तुओनी पेठे उज्ज्वल वर्णवालो. वली ते सिंह केवो छे तो के मस्तक पर रहेलो, अर्थात् चित्रामणरूपे ध्वजना उपरना भाग पर चित्री राखेलो एवो. वली ते सिंह केवो छे तो के राजमान कहेतां पोताना सुंदरपणाथी अत्यंत शोभायुक्त थएलो एवो, वली ते सिंह केवो छे तो के आकाशतलना मंडलने फोडी नाखवानेज जाणे उद्यमवालो थयो होय नहीं. एवो, अर्थात् पवनना झपाटाथी ध्वजा आकाश मार्गमां उंचे उंचे उड्या करती हती, अने तेथी करीने तेमां चित्रामण रूपे करेलो सिंह पण आकाश प्रत्ये उछल्या करतो हतो; तेना पर कविए उत्प्रेक्षा करी के आ सिंह जे आकाश तरफ उछल्या करे छे, ते शुं आकाशने फोडी नाखवानोज उद्यम करे छे शुं? एवो भा-वार्थ जाणवो. एवी रीते उपर वर्णन करेला सिंहना चित्रामणवालो ध्वज. वली ते ध्वज केवो छे तो के मंद मंद अने सुखकारी एवो जे मरुत कहेतां पवन, तेनुं जे आश्लेष कहेतां मलवुं, तेणे करीने जे आंदोलन कहेतां चलायमान थवुं,ते छे स्वभाव जेनो एवो,अर्थात् मंद मंद वाता एवा वायुथी चलायमान थएलो. वली ते ध्वज केवो छे तो के अति प्रमाणवालो एटले मोटो एवो. वली ते ध्वज केवो तो के माणसोने जोवाने लायक छे स्वरूप जेनुं एवो. एवी रीतना आठमा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए ध्वजने जोयो.

हवे ते जोया बाद नवमा स्वप्नमां तेणीए रजतपूर्णकलश, एटले रूपाना बनावेला अने संपूर्ण भरेला एवा कलश एटले कुंभने जोयो. ते कलश केवो छे तो के जात्य कहेतां अत्यंत उंची जातिनुं जे कांचन कहेतां सोनुं तेनी पेठे अत्यंत देदीप्यमान छे रूप जेनुं एवो, अर्थात् जेम उत्तम जातिना सुवर्णनुं तेज अत्यंत निर्मल होय छे, तेम ते कलशनुं तेज पण अत्यंत निर्मल जाणवुं. वली ते कलश केवो छे तो के निर्मल एटले बिलकुल मेल विनानुं जे पाणी, तेनाथी संपूर्ण रीते भरेलो, अने तेथीज कल्याणने सूचवनारो एवो. वली ते कलश केवो छे तो के देदीप्यमान छे शोभा कहेतां कांति जेनी एवो. वली ते कलश केवो छे तो के कमलोनो कलाप कहेतां जे समूह, ते वडे करीने आसपास सर्व बाजु-

चित्र. १९.



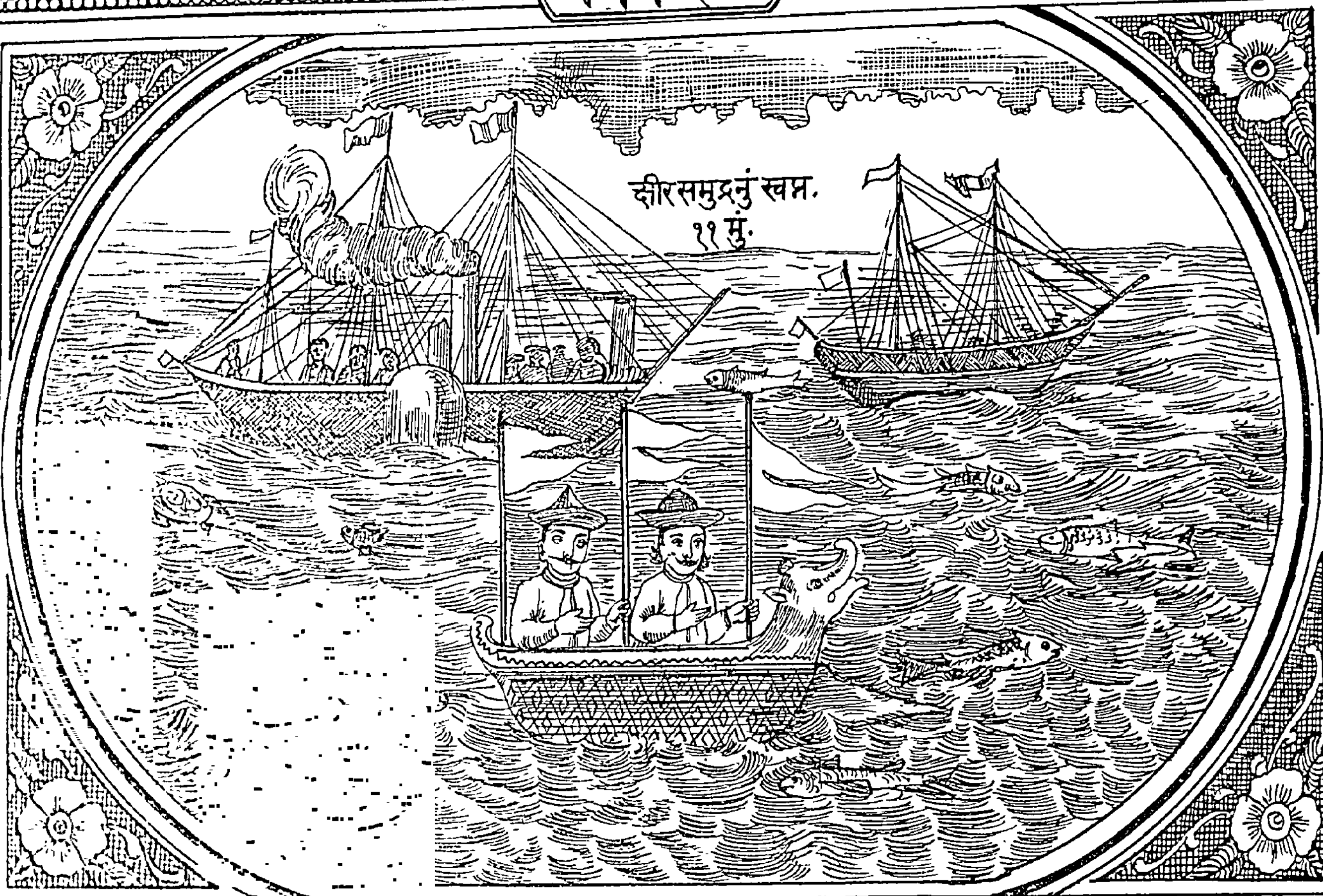




ठथी शोजतो एवो. वली ते कलश केवो छे तो के प्रतिपूर्ण एटले जरा पण न्यून नहीं एवा जे मंगलजेदो कहेतां मंगलना प्रकारो, तेउनो जे समागम कहेतां संकेत तेना स्थानकरूप; अर्थात् जेम संकेत करी राखेला स्थानक प्रत्ये माणसो अवश्य दाखल थाय छे, तेम आ कलश पण दृष्टि-गोचर थयाथी सर्व प्रकारनां जे मंगलो, ते पण प्राप्त थाय छे एवो जाव जाणवो. वली ते कलश केवो छे तो के प्रवररत्नो एटले अत्यंत उत्तम उत्तम जातिनां जे रत्नो, तेउए करीने शोजतुं जे कमल तेना पर रहेलो एवो; अर्थात् रत्नोए करीने विकस्वर एटले प्रफुल्लित थएलुं जे कमल, तेना पर ते कलश मूक्यो हतो एवो जावार्थ जाणवो. वली ते कलश केवो छे तो के नयन कहेतां जे आंखो, तेउ प्रत्ये जूषण करनारो, एटले आंखोने आनंद आपनारो, कारण के कमलनुं विकस्वर थवुं ते जेम कमलनुं जूषण छे, तेम आंखोने आनंद थवो ते पण तेनुं जूषण छे. वली ते कलश केवो छे तो के अत्यंत देदीप्यमान एवो. वली ते कलश केवो छे तो के सर्वतः कहेतां सर्व जे दिशाउ, तेउ प्रत्ये निश्चये करीने दीपतो एवो. वली ते कलश केवो छे तो के सौम्य एटले अत्यंत प्रशस्त कहेतां अत्यंत उत्तम प्रकारनी जे लक्ष्मी, तेना तो स्थानक समान एवो. वली ते कलश केवो छे तो के सर्वे प्रकारनां जे पापो कहेतां अमंगलो, तेउए करीने परिवर्जित कहेतां बिलकुल रहित, अने तेथी करीनेज शुज अने देदीप्यमान देखातो एवो. तथा श्री एटले जे शोजा, तेथी करीने प्रधान कहेतां अत्यंत मनोहर लागतो एवो. वली ते कलश केवो छे तो के सर्वर्तुक एटले सघली रुतुउमां उत्पन्न थतां जे सुगंध युक्त पुष्पो, तेउनी गुंथेली जे मालाउ, तेउने स्थापन करेली छे जे कलशना कंठना जागमां, एवा कलशने त्रिशला क्षत्रियाणीए नवमा स्वप्नमां जोयो.

पछी दशमा स्वप्नमां तेणीए पद्मसरोवरने जोयुं. हवे ते पद्मसरोवर केवुं छे तो के तरुण कहेतां नूतन एटले नवो उगेलो जे सूर्य, तेनां जे किरणो, तेउए करीने बोधित एटले विकस्वर थएलां जे सहस्रपत्रो कहेतां मोटां मोटां जे कमलो. तेउए करीने अत्यंत सुगंधीवालुं तथा जल पीलाञ अने रक्ताश

मारतुं ठे पाणी जेनुं एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के जलचर कहेतां पाणीमां वसनारा जे प्राणी, तेउनो जे समूह, तेणे करीने परिपूर्ण कहेतां चारे बाजुएथी व्याप्त थएलुं एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के मत्स्य कहेतां माछलांए करीने वपराइ रहेलो ठे पाणीनो समूह जेनो एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के ज्वलत् कहेतां देदीप्यमान एवुं. शाथी देदीप्यमान, ते हवे कहे ठे. कमलो एटले सूर्यना प्रकाशथी विकस्वर थतां कमलविशेषो, कुवलयो कहेतां चंद्रना प्रकाशथी विकासने पामतां कमलविशेषो, उत्पल एटले लाल रंगनां कमलो, तामरस एटले मोटां मोटां कमलो, तथा पुंडरीक एटले सफेद रंगनां कमलो, एवी रीते जुदी जुदी जातिउनां कमलोनो विस्तीर्ण अने फेलावो पामतो एवो जे श्रीसमुदय कहेतां शोभानो जे समूह (कमलोने तो शोभाना समूहथीज शोभापणुं मले ठे, पण कंइ तेमने सूर्यनां बिंब आदिकनी पेठे देदीप्यमानपणुं होतुं नथी) तेणे करीने जाणे देदीप्यमान ज लागतुं होय नहीं, एवुं पद्मसरोवर. (एवी रीते कविए एटले श्रीभद्रबाहुस्वामिजीए अत्र उत्प्रेक्षा अलंकार मूक्यो ठे.) वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के रमणीय कहेतां मनने अत्यंत आनंद उपजावे एवी ठे रूपनी शोभा जेनी एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के प्रमुदित कहेतां अत्यंत हर्षित थएलुं ठे अंतः कहेतां अंतःकरण जेउनुं एवा जे भमराना अने मत्त कहेतां मदोन्मत्त थएली जे भमरीउ, तेउना समूहो, तेउए करीने अवलिह्यमान कहेतां चुंबन करातां ठे कमलो जेमां एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के कादंब जातिनां पक्षीउ, वलाका कहेतां बगलांउ, चक्र कहेतां चक्रवाक नामनां पक्षीउ, कलहंस एटले कल कहेतां मधुर ठे शब्द जेउनो एवा जे हंसो एटले राजहंसो, तथा सारस कहेतां लांबा ठे घुंटणो जेउना एवां एक जातिनां पक्षीउ इत्यादिक जे गर्वित थएलां ठे एटले आवा मनोहर स्थानकनी प्राप्तिथी थएलो ठे अहंकार जेउने, एवा जे शकुनिगण कहेतां पक्षीउनी जातिउना जे समूहो, तेउनां जे द्वंद्व कहेतां स्त्रीभरतारोनां जे जोडलां, तेउए करीने सेवातुं ठे पाणी जेनुं एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं ठे तो के पद्मिनी एटले जे कमलिनी, तेउनां जे पत्रो कहेतां पांदडांउ, तेउ पर लागेलां एटले चोंटेला जे जलबिंदुनिचय कहेतां पाणीउनां बिंदुउना जे समूहो, तेणे क-


चित्र १४.
क्षीरसमुद्रनुं स्वप्न.
११ मुं.

रीने जाणे मंडन युक्त थएलुं होय नहीं ? अर्थात् तेमां रहेलां कमलिनीनां पांदडांओ जाणे के नील रत्नो-
मय छे अने तेओ पर मुक्ताफल कहेतां मोतीओनुं अनुकरण करनारां पडेलां जे पाणीनां बिंदुओ, तेओए
करीने कमलो अत्यंत शोभा आपनारां देखाय छे.एवां पत्रोए करीने ते तलाव कृतचित्रं इव कहेतां करे-
लुं छे आश्चर्य जेणे, एवुं होय नहीं ? तेम देखाय छे. वली ते पद्मसरोवर केवुं छे तो के हृदय कहेतां जे अं-
तःकरण, अने नयन कहेतां जे आंखो, तेओने अत्यंत वल्लभ कहेतां मनोहर लागे एवुं तथा "पद्मसरो-
वर" छे नाम जेनुं एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं छे तो के सरस्सु कहेतां तलावोने विषे पूज्य कहेतां
पूजा करवाने लायक एवुं, अने तेथीज अभिराम कहेतां अत्यंत रमणीय लागे छे. एवी रीतना
पद्मसरोवरने त्रिशला क्षत्रियाणीए दशमा स्वप्नने विषे जोयुं.

पछी अग्यारमे स्वप्ने शरद नामनी जे ऋतु, तेना चंद्रमा सरखुं छे वदन कहेतां मुख जेनुं, एवी ते त्रिशला
क्षत्रियाणीए क्षीरसमुद्रने जोयो.ते क्षीरसमुद्र केवो छे तो के चंद्रकिरणराशि कहेतां चंद्रनां जे किरणो,
तेओनो जे समूह, तेना सरखी जे श्री कहेतां शोभा, ते सरखी छे वक्षःस्थलनी शोभा जेनी एवो. हवे वक्षः
शब्दनो अर्थ तो हृदय थाय छे, अने ते हृदय तो प्राणीओने होय छे, पण कंइ समुद्रने होतुं नथी; माटे
अहीं हृदय शब्द वडे करीने मध्य भाग कह्यो छे अने तेथी जेनो मध्यभाग घणो उज्ज्वल छे एम जाणवुं.
वली ते क्षीरसमुद्र केवो छे तो के चतुर्षु दिग्मार्गेषु कहेतां चारे दिशाओना जे मार्गो, तेओने विषे प्रकर्षेण
एटले अत्यंत वेग वडे करीने वर्धमान कहेतां वृद्धि पामतो छे, जलसंचय कहेतां पाणीनो समूह जेनो ए-
वो. अर्थात् चारे दिशाओमां ते समुद्रमां अत्यंत ऊंडो एवो जलनो प्रवाह छे, एवो भावार्थ जाणवो. वली
ते क्षीरसमुद्र केवो छे तो के चपल अने अत्यंत चपल एवा, अत्यंत मोटा मोटा जे कल्लोलो कहेतां मो-
जांओ, तेओए करीने चलायमान थतुं, तथा वली पाछुं एकठुं थइने जुदुं पडतुं, एवी रीतनुं छे, तोय कहेतां
पाणी जेनुं एवो. वली ते क्षीरसमुद्र केवो छे तो के पटु एटले जरा पण मंदता विनानो एवो जे पवन, तेणे
करीने आहत कहेता हणाएला, अने तेथी करीनेज उपरा उपरी दोडवाने प्रवृत्त थएला, अने तेथी

करीनेज चपल जणाता अने प्रकट रीते देखाता, एवा जे तरंगो कहेतां कल्लोलो, तथा आसपास (आजु-बाजु) नाचता एवा पण जे भंग कहेतां कल्लोलविशेषो, तथा अत्यंत क्षोभ पामेला, अर्थात् जाणे भयभ्रांतज थया होय तेम चारे कोरे भ्रमण करता अर्थात् अथडाता अने तेथी करीने शोभावाला थएला, तथा निर्मल एटले जरा पण मलिनता विनाना, अने उत्कट एटले उंचे उछलती एवी जे ऊर्मिओ कहेतां तरंगो (मोजांओ) (एवी रीते तरंग, भंग, कल्लोल, ऊर्मि विगेरे मोजांओना प्रकारो जाणवा) एवी रीतनां मोजांओनो जे संबंध कहेतां परस्पर मलवुं, तेणे करीने अत्यंत उतावलथी तीराभिमुख कहेतां कांठानी सन्मुख दोडतो तथा अपनिवर्तमान कहेतां कांठाथी पाछो वलतो थको, भासुरतर कहेतां अत्यंत दीप्तिवालो लागतो अने तेथी करीने अभिराम कहेतां मनने आह्लाद उपजावतो एवो. वली ते क्षीर समुद्र केवो छे तो के महान् कहेतां मोटा मोटा जे मगरमछो, तथा प्रसिद्ध एवां जे माछलांओ, तथा तिमि, तिमिंगल, निरुद्ध, तिलितिलिका विगेरे जुदी जुदी जातिना जलचर प्राणीविशेषो, तेओना जे अभिघातो कहेतां पुंछडीओना पाणी पर करवामां आवता जे पछाडाओ, तेणे करीने उत्पन्न थएलो, अने कर्पूरवत् कहेतां कपूरनी पेठे उज्ज्वल कहेतां सफेद छे रंग जेनो, एवो जे फीणनो समूह ते छे जेनी अंदर एवो. वली ते क्षीरसमुद्र केवो छे तो के मोटी मोटी एवी जे गंगा आदिक नदीओ, तेओना अत्यंत वेगथी जोसभर दोडी आवता जे प्रवाहो, तेओथी उत्पन्न थतुं जे गंगावर्त्त नामनुं भ्रमण एटले आवर्त्तविशेष (पाणीनी घूमरी अथवा वंटोलीओ) त्यां व्याकुल थतुं एटले मुंझाइ जतुं, अने तेथीज उंचा उछाला मारतुं (एटले आवर्त्तमां पडवाथी अने बीजी जगो तरफ जवाने अवकाश नहीं मलवाथी उंचे उछलतुं) अने उंचे उछलीने पाछुं तेना तेज आवर्त्तमां पडतुं, अने तेथी करीने ते आवर्त्तनी अंदरज भ्रमणपणाने प्राप्त थएलुं, अने तेथी करीनेज, तथा स्वभावथी पण चपल थएलुं, एवी रीतनुं छे पाणी जेनी अंदर, एवा क्षीरसमुद्रने त्रिशला क्षत्रियाणीए अग्यारमा स्वप्ननी अंदर जोयो.

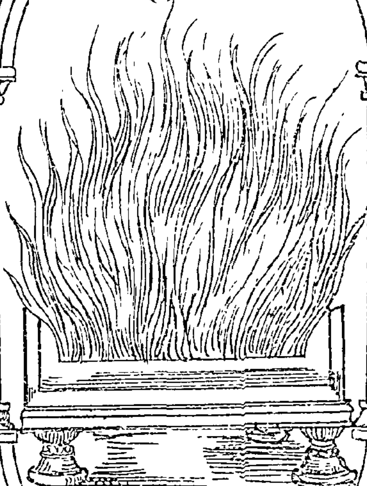
ते अग्यारमं स्वप्न जोया बाद तेणीए बारमा स्वप्नमां एक अतिउत्तम एवा विमानने जोयुं. हवे

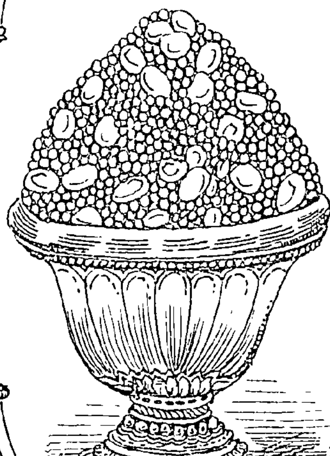
ते विमान केवुं छे तो के तरुण कहेतां नवो उगेलो जे सूर्य, तेनुं जे मंडल कहेतां बिंब, तेना सरखी छे प्रभा कहेतां कांति जेनी एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के देदीप्यमान कहेतां अत्यंत तेज युक्त छे शोभा जेनी एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के उत्तम प्रकारनुं जे कंचन कहेतां सुवर्ण अने मणिउनो जे समूह, तेणे करीने बहुज मनोहर थएला जे एक हजार ने आठ स्तंभो, तेउए करीने अत्यंत देदीप्यमान होवाथी नभ कहेतां आकाशने पण कांति युक्त बनावतुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के कनकप्रतर कहेतां सोनानां बनावेलां जे पत्रांउ, तेउमां लटकतां जे मोतीउ, तेणे करीने उज्ज्वल थएलुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के अत्यंत जाज्वल्यमान थएली अने देवताउने लायकनी, लंबायमान थएली एटले लटकेली छे, एवी रीतनी पुष्पनी मालाउ जेना पर एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के ईहामृग कहेतां वरगडां, वृषभ, तुरग कहेतां घोडा, नर कहेतां माणसो, मकर कहेतां मगरमच्छो, विहग कहेतां पक्षीउ, व्याल कहेतां सर्पो, किन्नर कहेतां देवजातिविशेष, रुरु कहेतां हरिणजातिविशेष, शरभ कहेतां अष्टापद नामना जीवो, चमरी कहेतां जेना छेडाना वालनां चमर बने छे एवी गायो, संसक्त कहेतां कोइ जंगली प्राणीविशेष, कुंजर कहेतां हाथीउ, वनलता कहेतां अशोक वृक्षनी लताउ आदिक लताउ, तथा पद्मलता कहेतां कमलिनी, ते सघलांउनां चित्रोनी जे विचित्र प्रकारनी रचना, तेउए करीने चित्रकारी कहेतां मनने अत्यंत आश्चर्य उपजावनारुं. वली ते विमान केवुं छे तो के (" गांधर्व " शब्दे करीने अहीं गीतनो अर्थ करवो, तथा " उपवाद्यमान " शब्दनो अर्थ वाजित्रो करवो) गांधर्वोए करीने गवातां जे गायनो तथा वगाडातां जे वाजित्रो तेउनो संपूर्ण रीते छे घोष कहेतां नाद जेमां एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के नित्य कहेतां जरा पण आंतरारहित, सजल कहेतां वरसादनां पाणीए करीने संपूर्ण कहेतां भरेलो, अने निबिड तथा पृथुल एटले विस्तारवालो, एवो जे जलधर कहेतां मेघ, तेनो जे गर्जित शब्द कहेतां गर्जारव, एटले गर्जना वखते थतो जे ध्वनि, तेनो अनुनादि कहेता तेना तुल्य नादवालो, एवो जे देव संबंधी दुंदुभिनो मोटो शब्द, ते वडे

करीने समस्त एवो जे आ जीवलोक, तेने पूरतुं, अर्थात् दुंदुभिना नादथी समस्त जगतने व्याप्त करतुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के कालागुरु एटले कृष्णागुरु, प्रवरकुन्दुरुष्क (कोइ सुगंधवालुं द्रव्यविशेष) तथा तुरुष्क इत्यादि, के जेओनां नामो अगाडी आवी गएलां छे तेओनो, अने बीजां पण सुगंधीओनां अंगभूत द्रव्यो, तथा दशांग आदिक धूपोनो वलातो, अने तेथी मघमघायमान थइ रहेलो, अने वली आजुबाजु फेलावो पामतो जे गंध, तेणे करीने अभिराम कहेतां मनोहर थएलुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के ज्यां नित्य प्रकाश रहे छे एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के जे उज्ज्वल छे अने तेथी करीने जेनी कांति उज्ज्वल छे एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के सुरवर कहेतां उत्तम उत्तम जातिना जे देवो, तेओए करीने सुशोभित एटले भरपूर थएलुं, पण खाली नहीं रहेलुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के शातावेदनीय नामनुं जे कर्म, तेनो छे उपभोग जेनी अंदर एवुं. वली ते विमान केवुं छे तो के विमानवरपुंडरीक कहेतां बीजां सघलां विमानोमां पुंडरीकनी पेठे अति उत्तम एवुं. एवी रीतना विमानने त्रिशला क्षत्रियाणीए बारमा स्वप्ननी अंदर जोयुं.

त्यार पछी तेरमा स्वप्नमां तेणीए रत्ननिकरराशि कहेतां रत्नोना समूहनो ढगलो जोयो. ते रत्ननो ढगलो केवो छे तो के पुलक जातिनां रत्नो, वज्र कहेतां हीरानी जातिनां रत्नो, इंद्रनील कहेतां लीलमनी जातिनां रत्नो, सस्यक जातिनां रत्नो, कक्केयण कहेतां कर्केतन जातिनां रत्नो, लोहियक्ख कहेतां लोहिताक्ष जातिनां रत्नो, मरगय कहेतां मरकत जातिनां रत्नो, मसारगल्ल जातिनां रत्नो, प्रवाल जातिनां रत्नो, स्फटिक जातिनां रत्नो, सौगंधिक जातिनां रत्नो, हंसगर्भ जातिनां रत्नो, अंजण कहेतां अंजन जातिनां रत्नो तथा चंद्रकांतमणिनी जातिनां रत्नो इत्यादि अनेक जातिनां रत्नोए करीने, महीतल कहेतां पृथ्वीतल, ते पर रह्यो छतां पण गगनमंडल कहेतां आकाशना मंडलना अंत भागने पण प्रभाए करीने युक्त करतो एवो. अर्थात् लोकमां प्रसिद्ध एवुं जे आकाश, तेना शिखरने पण पोतानी कांतिथी शोभावतो एवो. वली ते रत्नोनो ढगलो केवो छे तो के तुंग कहेतां उंचो एवो. ते केटलो

चित्र १५.







ऊंचो ? ते हवे कहे छे. मेरुगिरिसदृशं कहेतां मेरु नामनो जे पर्वत, तेना सरखो, एवो ऊंचो थएलो रत्नोनो समूह ते त्रिशला क्षत्रियाणीए तेरमा स्वप्नमां जोयो.

हवे "सिहिं चेत्यादितः सिहिं यावत्" एटले शिखि कहेतां अग्निथी मांडीने शिखि कहेतां अग्नि सुधीनुं पद ग्रहण करवुं. हवे अहीं कोइ शंका करे के पहेलां पण शिखिपद अने पाछुं पण शिखि पद ग्रहण करवाथी पुनरुक्ति दोष शुं न आवे ? तेने माटे कहे छे. पहेलां "शिखि" ("सिहिं") एवुं पद कहेलुं छे, ते पद "गयवसहेति" गाथामां कहेलुं जे "सिहिं" पद तेना ग्रहण माटे छे, अने अंते रहेलुं "सिहिं" पद स्वरूपना ग्रहण करवा माटे छे. माटे तेनो भावार्थ ए के "गयवसह" ए गाथामां जे "सिहिं" पद कहेलुं छे, ते चौदमुं स्वप्न जाणवुं, अने तेथी आवी रीतना "सिहिं" (शिखि) कहेतां अग्निने जुए छे, एम योजना करी लेवी; अने तेथी करीनेज "तओ पुणो" एटले अने वली पण, एवुं पद कह्युं नथी; केमके "सिहिं च" ए पदथी तेनो भावार्थ स्वयमेवज जणाइ आवे छे. माटे जे गाथाना अंतमां "सिहिं" पद रहेलुं छे, तेनेज विशेष्यपद तरीके जाणवुं. एवी रीते चौदमा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए अग्निने जोयो. ते अग्नि केवो छे तो के विपुल कहेतां विस्तारवाली, अने उज्ज्वल एवुं जे घी तथा पीला रंगनुं जे मध, ते बन्नेथी सिंचाती, अने तेथी करीनेज धूमाडा विनानी अने "धग् धग्" एवी रीतना शब्दने प्रगट करती, तथा जाज्वल्यमान एटले बहुज तेजवाली थएली एवी जे ज्वालाओ, तेओए करीने उज्ज्वल लागतो अने तेथी करीनेज अभिराम कहेतां मनने अत्यंत आनंद आपतो एवो. वली ते अग्नि केवो छे तो के तरतम योगे करीने युक्त एवा जे ज्वालाओना समूह, तेणे करीने अनुक्रम प्रमाणेज जाणे निचित थएलो होय नहीं एवो, अर्थात् तरतम योग एटले एक ज्वाला ऊंची, बीजी तेथी पण ऊंची, त्रीजी तेनाथी पण वधारे ऊंची, एवी रीतना तरतम योगे करीने युक्त थएला जे ज्वालाओना समूहो तेणे करीने, अन्योन्य कहेतां अरस्परस सघली ज्वालाओ जाणे मांहे प्रवेशज करी गइ होय नहीं ? एवो. (अर्थात बिलकुल अंतर

विना ज्वालाउं ते अग्निमां हती.) वली ते अग्नि केवो छे तो के ज्वालाउंनुं जे ऊर्ध्व कहेता उंचना भागोमां प्रसरीने जे "ज्वलनक" कहेतां बलवुं, (अहीं "ज्वलनक" शब्दने जे "क" प्रत्यय लागेलो छे, ते "स्वार्थेक" एवी रीतना व्याकरणना सूत्रे करीने लागेलो छे.) (वली अहीं तृतीया विभक्तिना एक वचननो लोप थइने समास थयेलो छे.) ते बलवाए करीने कोइ कोइ प्रदेशमां आकाशने पण जाणे पकावतो होय नहीं ? एवो, अर्थात् ते अग्निनी शिखाउं आकाश प्रत्ये पहोंचवाथी, जाणे तेने (आकाशने) पण पकाववानीज तैयारी करतो होय नहीं ? एवो. (एवी रीतनो कविए उत्प्रेक्षा अलंकार मेळ्यो.) वली ते अग्नि केवो छे तो के अतिशय एवो जे वेग, तेणे करीने चंचलपणाने प्राप्त थएलो एवो अग्नि त्रिशला क्षत्रियाणीए चौदमा स्वप्नमां जोयो. एवी रीतनां शुभ कहेतां कल्याणना हेतुरूप, तथा उमया एटले कीर्तिए करीने पण सहित एवां, तथा प्रियदर्शन कहेतां फक्त जोवा मात्रथीज प्रीतिने उत्पन्न करनारां एवां, तथा उत्तम छे स्वरूप जेनुं एवां ते स्वप्नोने निद्रानी अंदर जोइने, अरविंद कहेतां कमलना सरखां छे लोचन कहेतां आंखो जेनी एवी तथा हर्षे करीने पुलकित कहेतां रोमांच युक्त थएलुं छे शरीर जेणीनुं एवी ते त्रिशला क्षत्रियाणी प्रतिबुद्धा कहेतां जागी उठी. हवे अहीं प्रसंग होवाथी उपर कहेलां स्वप्नोने गर्भकालना समय वखते सघला जिनेश्वरोनी माताउं पण जुए छे, एवुं देखाडता थका गाथा कहे छे.

एए चउदस सुमिणे, सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ॥ जं रयणिं वक्कमई, कुछिंसि महायसो अरिहा ॥ १ ॥

अर्थ–जे रात्रिए महायशवाला एवा अरिहंत प्रभुउं मातानी कुक्षिमां आवे छे, ते रात्रिए सघला जिनेश्वर प्रभुनी सघली माताउं उपर कहेलां चौद स्वप्नांउं जुए छे.

पछी उपर वर्णवेलां चौद महास्वप्नोने जोइने जागी उठी छती हर्ष पामेली, संतोष पामेली, हर्षथी पूर्ण हृदयवाली, मेघधाराथी सिंचन थएलां कदंबपुष्पनी पेठे शरीरनां छिद्ररूप कूवाने विषे उल्लास पाम्यां छे रुंवाडां जेनां एवी त्रिशला क्षत्रियाणी स्वप्नोनुं स्मरण करे छे, अने स्मरण करीने शय्यामांथी उठे छे,


चित्र.१६.
सिद्धार्थ राजा.
त्रिशलाराणी.
दासीनं
दरवान.

अने उठीने पादपीठथी नीचे उतरे छे, अने नीचे उतरीने चित्तनी उत्सुकता रहित, कायानी चपलता रहित, स्खलना रहित, विलंब रहित एवी राजहंसना जेवी गति वडे ज्यां शय्यागृह छे अने ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय छे त्यां आवे छे अने आवीने तेवी रीतनी वाणीए करीने, बोलती थकी तेने जगाडवा लागी. हवे ते वाणी केवी छे तो के विशिष्ट कहेतां उत्तम उत्तम जातिउना जे गुणो तेउए करीने संयुक्त कहेतां भरेली एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के इष्ट कहेतां ते सिद्धार्थ क्षत्रियना मनने वल्लभ लागे एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के हमेशां वांछित छे अने तेथी करीने प्रिय एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के मनने विनोद करावववाली, अने तेथी करीनेज मनने गमे तेवी, पण कोइ दहाडो भूली जवाय नहीं एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के उदार कहेतां सुंदर एवो छे ध्वनि कहेतां अवाज जेनो एवा जे वर्णो कहेतां अक्षरो, तेउए करीने संयुत थएली एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के कल्याण कहेतां समस्त प्रकारनी जे समृद्धिउ, तेउने करनारी. वली ते वाणी केवी छे तो के शिव कहेतां कोइ पण प्रकारना जे उपद्रवो कहेतां विघ्नो, तेउए करीने रहित एवी, कारण के ते वाणीमां एवा तो अक्षरो गोठवेला हता के जेथी बिलकुल उपद्रव थवानो तो संभवज नहोतो, अने तेथी करीनेज धन्य कहेतां धननी जे प्राप्ति, तेने करावववाली. वली ते वाणी केवी छे तो के मंगल कहेतां जे कल्याण, ते करवामां प्रवीण एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के शोभाए करीने युक्त, अर्थात् अलंकारोए करीने विराजित थएली. वली ते वाणी केवी छे तो के सुकुमाल कहेतां सुखे करीने तेनो अर्थ जणाइ जाय अने तेथी करीने हृदयने अत्यंत प्यारी लागे एवी. वली ते वाणी केवी छे तो के हृदयने प्रह्लाद करनारी, एटले हृदयमां रहेलो जे चिंता आदिकनो शोक, तेना उछेदने करनारी. वली ते वाणी केवी छे तो के मित कहेतां अल्प एटले थोडा छे शब्दो जेनी अंदर एवी, अने बहु छे अर्थ कहेतां भावार्थ जेनी अंदर एवी, तथा मधुर कहेतां कानने अत्यंत सुखनी करनारी एवी, तथा मंजुल कहेतां उत्तम लालित्य कहेतां भडकमकवाला शब्दो अने वाक्यो तथा वर्णोवाली. (एवी रीते अहीं त्रणे पदनो कर्मधारय समास करी लेवो.)

अर्थात् मित, मधुर अने मंजुल एवी वाणीउंए करीने बोलती थकी ते त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थ राजाने जगाडती हवी. तेवी रीते तेने जगाड्या बाद, तेनी एटले सिद्धार्थ राजानी आज्ञा थवाथी ते त्रिशला क्षत्रियाणी, नाना प्रकारना एटले जुदी जुदी जातिनां जे मणि, कनक कहेतां सुवर्ण, तथा रत्नो, तेउंनी जे रचना, तेणे करीने चित्र कहेतां मनने आश्चर्य उपजावे एवा जद्रासन कहेतां सिंहासन पर बेठी. बेसीने, मार्गे चालतां थएलो जे खेद तेनो नाश थवाथी शांतताने पामेली, अने तेथी करीनेज, क्षोजना अन्नावे करीने विश्वास पामेली अने अत्यंत सुखे करीने आसन पर बेठेली त्रिशला सिद्धार्थ राजाने, आगल करेलुं बे वर्णन जेनुं एवी वाणीए करीने कहेवा लागी के हे स्वामिन्! आजे में चौद महास्वप्नो जोयां बे, अने तेथी मनोहर एवां जे ते स्वप्नो, तेउंनुं कल्याण एटले मंगलने करनारुं, एवुं शुं फल तथा वृत्तिविशेष थशे? त्यारे सिद्धार्थ राजा पण त्रिशला क्षत्रियाणीना मुखथी एवो अर्थ (शुं कल्याणकारी फल वृत्ति विगेरे) कानथी सांजलीने, तथा तेने हृदयमां सारी रीते धारीने हर्षित थयो थको, संतुष्ट थयो थको अर्थात् हर्षथी पूर्ण हृदयवालो थयो थको, मेघनी धाराथी सिंचाएलां कदंबनां सुगंधी पुष्पनी पेठे शरीरनां ठिद्ररूप कूवाने विषे उल्लास पामेलां रुवाडांवालो थयो थको, ते स्वप्नोने ग्रहण करतो हवो, एटले चित्तने विषे धारण करतो हवो; तथा हृदयमां धारण करीने ईहा कहेतां खरा अर्थनी विचारशक्तिमां लीन थतो हवो; अने एवी रीते लीन थइने पोतानी स्वाजाविक मतिपूर्वक बुद्धिना विज्ञाने करीने ते स्वप्नोना अर्थोनो निश्चय करतो हवो, अने अर्थनो निश्चय कर्या बाद ते सिद्धार्थ राजा त्रिशला क्षत्रियाणीने, आगल जेनुं वर्णन करवामां आवेलुं बे, एवी उत्तम प्रकारनी वाणीउंए करीने बोलतो थको कहेवा लाग्यो के हे देवानुप्रिये कहेतां सरल बे स्वजाव जेणीनो एवी हे त्रिशला क्षत्रियाणि, तें उदार कहेतां मनोहर स्वप्नां जोयां बे, कल्याण कहेतां कल्याणना करनारां स्वप्नो तें जोयां बे, शिव कहेतां निरुपद्रव करनारां स्वप्नो तें जोयां बे, धन्ना कहेतां धनप्राप्ति करावे एवां स्वप्नो तें आजे जोयां बे, मंगल कहेतां मंगलने अर्थात् कल्याणने करनारां स्वप्नो तें आजे जोयां बे, वली लक्ष्मीए करीने युक्त एवां ते स्वप्नो आजे तें जोयां बे,

वली आरोग्यने पण करनारां एवां स्वप्नो तें आजे जोयां छे, वली तुष्टि कहेतां संतोषने आपनारां एवां स्वप्नो आजे तें जोयां छे. वली दीर्घायु करनारां स्वप्नो आजे तें जोयां छे, वली कल्याण अने मंगलिकनां करनारां एवां स्वप्नो तें आजे जोएलां छे. माटे हवे एवां मनोहर स्वप्नोनुं तमोने शुं फल थशे ? ते हवे हुं कहुं छुं. हे देवानुप्रिये, ते स्वप्नोथी अर्थनो कहेतां मणि माणिक सुवर्ण आदिकनो लाभ थशे, वली भोग कहेतां शब्दादिक जे भोग्य पदार्थो, तेनो पण लाभ थशे,पुत्र एटले संतान आदिकनो पण लाभ थशे, सुख एटले निवृत्तिनो पण लाभ थशे, वली राज्य कहेतां सात लक्षणो युक्त जे राज्य, तेनो पण लाभ थशे, राज्यनां ते सात लक्षणो कयां कयां, ते नीचे प्रमाणे जाणी लेवां. स्वामी एटले राजा, अमात्य एटले प्रधान, सुहृद् एटले मित्र, कोश एटले भंडार, राष्ट्र एटले देश, दुर्ग एटले किल्लो,तथा सैन्य एटले चतुरंगी (हाथी, घोडा, पाला अने रथ) सेना. एवी रीतनां सात अंगयुक्त राज्यनो लाभ थशे. एवी रीते सामान्यपणाथी फलनुं वर्णन करीने हवे विशेषपणाथी तेनुं वर्णन करे छे.

हे देवानुप्रिये, आजथी नव महिना संपूर्ण गया बाद, तथा ते उपरांत साडा आठ रात्रिदिवसो पण अतिक्रमण थये छते, उत्तम छे स्वरूप जेनुं, एवा एक पुत्रने तुं जन्म आपीश. हवे ते पुत्र केवो तो के अमारा कुलने विषे केतु कहेतां ध्वज सरखा एवा अति अद्भुत पुत्रने तुं जन्म आपीश.वली ते पुत्र केवो तो के अमारा कुलने विषे दीपक समान, अर्थात् कुलने प्रकाश करनारो तथा मंगल करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे पर्वत समान, अर्थात् पर्वतनी पेठे जेने कोइ पण दुश्मन पराभव न करी शके एवा, तथा स्थिर अने कुलना आधारभूत एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे अवतंस कहेतां मुकुट समान, कारण के ते यश अने शोभाने धारण करनारो थशे. वली ते पुत्र केवो तो के लोकोने विषे तिलक समान, अने वली कुलने विषे कीर्तिना करनारा एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश.वली ते पुत्र केवो तो के कुलनी वृत्ति करनारो,एटले कुलनो निर्वाह कहेतां आजीविका चलावनारा एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश; वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे दिनकर

कहेतां सूर्य सरखो, कारण के ते कुलने प्रकाश करनारो थशे, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो थशे तो के पृथ्वीनी पेठे कुलने आधारभूत थशे, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलनी जे नंदि कहेतां वृद्धि, तेने करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे यश करनारो, अर्थात् सर्व दिशाउंमां कुलनी प्रख्यातिनो करनारो. कह्युं छे केः—

"एकदिग्गामिनी कीर्त्तिः, सर्वदिग्गामुकं यशः" ॥ अर्थ—कीर्ति एक दिशामां जनारी होय छे, अनेजे सर्व दिशाउंमां व्यापे ते यश कहेवाय; माटे एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलने विषे पादप एटले वृक्ष समान अर्थात् वृक्ष जेम पंथे चालनाराउंने आश्रयरूप थइने छाया आपे छे, तेम तुं पण कुलने आश्रयभूत एवा पुत्रने जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के कुलनी सर्व रीते वृद्धि करनार एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के सुकुमाल छे हाथ अने पगो जेना, तथा जरा पण न्यूनता विनाना अने संपूर्ण पांचे इंद्रियो सहित शरीरवाला, तथा लक्षण अने व्यंजन आदिक गुणोए करीने सहित, तथा मानोपमाने करीने सुंदर छे सर्व अंग जेनुं एवा, तथा चंद्र सरखा सौम्य आकारवाला, तथा कांत एटले मनोहर तथा प्रिय छे दर्शन जेनुं एवा, तथा उत्तम रूपवाला एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश.वली ते बालक पण बाल्यावस्थाने त्यजी दइ सर्व जातना विज्ञाने करीने युक्त अर्थात् परिपक्व विज्ञानवालो थशे. वली यौवनावस्था पाम्यो छतो दान देवामां शूरो अर्थात् अंगीकार करेलां कार्योने निर्वाह करवामां समर्थ, वीर कहेतां रण संग्राम करवामां समर्थ तथा विक्रांत कहेतां परराज्यने आक्रमण करवामां समर्थ अर्थात् महा पराक्रमे करीने युक्त थशे. वली ते विस्तीर्ण थकी पण विपुल अर्थात् अत्यंत विस्तारवालां बल कहेतां सेना तथा वाहन कहेतां बेल आदिके करीने युक्त थशे. वली ते राज्यनो स्वामी कहेतां राजा थशे. माटे हे देवानुप्रिये, त्रिशला क्षत्रियाणि, तें अत्यंत मनोहर एवां स्वप्नो जोयां छे. एम बे त्रण वार प्रशंसा करी. त्यार पछी ते त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थ राजानी पासे ए स्वप्नोना अर्थने सांभळीने अने अवधारीने हर्षित थएली, संतुष्ट थएली, यावत् हर्षथी भराइ गएला हृद-

सुगंध तेणे करीने ते कचेरीने सुंदर तथा चूर्णादिकथी अत्यंत सुगंधमय करो; अने त्यां सुगंधवाली गोलीर्ड पण पथरावो; ए सघलुं कार्य तमो पोते जाते जइने करो, बीजाउनी पासे पण करावो अने तेम कर्या बाद त्यां तमो सिंहासननी रचना करो; अने तेम करीने, आवीने मने कहो के, तमारी आज्ञा प्रमाणे अमोए सघलुं तैयार करी राख्युं छे. ते सांजलीने ते कौटुंबिको पण, एवी रीते सिद्धार्थ राजाथी आज्ञा कराया छता, अत्यंत हर्षित तथा संतुष्ट थया, अने हाथ जोडीने तथा मस्तके अंजलि करीने, तेउ सिद्धार्थ राजाने कहेवा लाग्या के, जेम आप कहो छो, ते प्रमाणेज अमो पण करीशुं; एम कहीने आज्ञा प्रमाणे विनयथी सिद्धार्थ राजानां वचनने सांजले छे, अने सांजलीने सिद्धार्थ क्षत्रियनी पासेथी बहार नीकले छे; अने बहार नीकलीने ज्यां बहार कचेरी छे त्यां जाय छे. त्यां जइने बहारनी कचेरीने सुगंधी जलथी सिंचन करवा पूर्वक पवित्र करीने त्यां सिंहासननी रचना सुधीनुं सर्व कार्य करे छे अने ते करीने ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय छे त्यां तेउ आवे छे, अने आवीने बे हाथ जोडीने मस्तक उपर अंजलि करीने सिद्धार्थ क्षत्रियने "आपनी आज्ञा प्रमाणे अमोए सघलुं तैयार कर्युं छे" एम निवेदन कर्युं.

हवे ते वार पछी सिद्धार्थ राजा पण रजनी कहेतां रात्रि वीत्या बाद, पद्म तथा "कमल" एटले हरिणनी जातिविशेष, तेनुं जे नयन कहेतां लोचन, ते प्रफुल्लित कहेतां विकस्वर थाते छते अर्थात् जे वखते कमलोनां पत्रो तथा हरिणनां नेत्रो पण विकस्वर एटले खुल्लां थयां हतां एवो पांडुर कहेतां श्वेत रंगवालो प्रभातकाल होते छते, एवी रीते रात्रिना वोत्या बाद, प्रभात थवाथी, अनुक्रमे सूर्य पण उगते छते; ते सूर्य केवो तो के रक्त कहेतां लाल रंगनुं जे अशोक नामनुं वृक्ष तेनी कांतिना समूह सरखो, वली ते सूर्य केवो तो के किंशुक कहेतां केसुडांनां पुष्प सरखो, वली ते सूर्य केवो तो के शुक कहेतां जे पोपट तेनी चांच सरखो, वली ते सूर्य केवो तो के चणोठीनो जे अर्ध भाग तेना जेवो, एटले चणोठीमां रहेलो कालो भाग वर्जीने बाकी जे लाल भाग होय तेना जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के बंधुजीवक एटले एक फुलनी जातनुं नाम छे, के जेने लोको बपोरीया कहे छे, तेना

जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के पारापत कहेतां जे पारवा (कबुतर) तेना पग अने आंखो जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के परभृत कहेतां जे कोयल, तेणे क्रोध आदिकथी लाल करेली जे आंखो, ते आंखोना जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के जपापुष्प कहेतां जासूद नामनी जातिनां जे पुष्पो, तेउ-नो जे राशि कहेतां ढगलो, तेना जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के प्रसिद्ध एवो जे हिंगलो तेनो जे ढगलो, तेना जेवो. उपर जे सघली लाल रंगनी वस्तुउ कही, तेनाथी पण अधिक शोजतो एवो. तेउनाथी पण अधिक शोजतो, एम शा माटे कह्यो ? एम जो कोइ शंका करे तो तेने माटे खुला-सो एवो के, रताशमां तो तेना सरखो, पण कांतिए करीने तो तेनाथी पण अधिक सूर्य शोजे ठे, एम वृद्ध आचार्योनो मत ठे. अथवा लाल रंगमां अशोकथी मांकीने ठेक हिंगलाना ढगला सुधीनां जे विशेषणो, तेउनो शोजतो एवो जे अतिरेक कहेतां प्रकर्ष, तेना जेवो सूर्य एवो अर्थ पण करवो. वली ते सूर्य केवो तो के कमलोना जे आकरो कहेतां उत्पत्तिनां स्थानको, अर्थात् पद्मनी उत्पत्ति थवानां जे तलावो, तेने विषे रहेलां जे कमलोनां वनो, तेउने विकस्वर करनारो, एवो, वली ते सूर्य केवो तो के हजार ठे किरणो जेनां एवो, वली ते सूर्य केवो ठे, तो के दिनकर कहेतां दिवसने उत्पन्न करवामां समर्थ एवो, वली ते सूर्य केवो तो के तेजे करीने देदीप्यमान एवो, वली ते सूर्य केवो तो के तेनां (सूर्यनां) किरणोना जे अ-जिघात, तेणे करीने अपराधी एटले दुश्मनरूप एवो जे अंधकार, तेनो नाश होते ठते, नवो एवो जे तेनो लाल रंगनो ताप, ते जाणे के कुंकुमज होय नहीं ? तेनाथी तमाम मनुष्यलोक व्याप्त होते ठते, अ-र्थात् जेम कुंकुमे करीने कंइक वस्तुने पिंजरी कराय ठे, तेम ते सूर्यनां तेजे करीने पण समस्त मनुष्यलोक पण पिंजरा रंगनो (कंइक रातो अने कंइक पीला रंगनो) कराते ठते, ते सिद्धार्थ राजा शयनीय कहेतां पोतानी शय्यामांथी उठतो हवो. ते शय्यामांथी उठीने ते पादपीठ परथी (पलंग उपरथी नीचे उत-रवा माटे मुकेली सीडी उपरथी) नीचे उतर्यो. नीचे उतरीने ज्यां अट्टनशाला कहेतां कसरतशाला हती, ते तरफ चाल्यो. ते तरफ चालीने ते तेनी अंदर दाखल थयो. त्यां दाखल थइने अनेक प्रकारनां

चित्र १७.





नियमथी विरुद्ध छे, कारण के "प्राणितुर्यांगाणां" एवी रीतना हेमचंद्र महाराजे कहेला व्याकरणना सूत्रने अनुसारे तेनो "एकवद्भाव" थवो जोइए. अर्थात् "पणिपादानां" एम पद नहीं मूकतां "पाणिपादस्य" एवुं पद मूकवुं जोइए. वली ते पुरुषो केवा तो के अभ्यंगन कहेतां तेल आदिकनुं चोपडवुं ते, तथा मर्दन कहेतां तेने चोलवुं ते, तथा उद्वलन कहेतां तेज तेलने चोलीने तेनी वाटो करीने पाछुं काढी नाखवुं ते, इत्यादिक जे प्रकारो, तेओमां उत्कृष्ट अभ्यासवाला एवा. वली ते माणसो केवा तो के अवसरने एटले उचित कालने जाणनारा एवा. वली ते माणसो केवा तो के दक्ष कहेतां तुरतातुरत कार्य करनारा एवा. वली ते माणसो केवा तो के मर्दन करनारा माणसोमां पण अग्रेसर एवा. वली ते माणसो केवा तो के कुशल कहेतां विवेके करीने युक्त एवा. वली ते माणसो केवा तो के मेधावी कहेतां अपूर्व एटले अति उत्कृष्ट जे चतुराइ तेने ग्रहण करवामां समर्थ एवा. वली ते माणसो केवा तो के जीतेलो छे परिश्रम जेणे एवा, अर्थात् बहु महेनत करता छतां नहीं थाकी जता एवा पुरुषोए करीने पहेलो अस्थिसुखकारिण्या कहेतां जे चंपीए करीने शरीरमां रहेलां हाडकांओने सुख उपजे एवो प्रकार, बीजो मांससुखकारिण्या कहेतां जे चंपीए करीने शरीरमां रहेला मांसने पण सुख उपजे एवो प्रकार, त्रीजो त्वचासुखकारिण्या कहेतां, जे चंपीथी त्वचा कहेतां चामडीने पण सुख उपजे एवो प्रकार, तथा चोथो रोमसुखकारिण्या कहेतां जे चंपीथी रोमोने पण सुख उपजे एवो प्रकार, एवी रीतनी चार प्रकारनी शरीरने सुख करनारी चंपी विगेरेनी क्रियाथी, चंपाएला थवाथी थाक रहित थएला ते सिद्धार्थ राजा तुरत अट्टनशाला कहेतां कसरतशालामांथी बहार नीकल्या. त्यांथी नीकल्या बाद तुरतज ते ज्यां मज्जनगृह कहेतां स्नान करवानुं गृह एटले स्थानक हतुं, ते तरफ ते सिद्धार्थ राजा आव्या. ते तरफ आवीने तेणे ते मां प्रवेश कर्यो. त्यां प्रवेश करीने मुक्ताफल कहेतां मोती आदिकथी व्याप्त एटले जडेला एवा जे गवाक्षो कहेतां झरूखाओ, ते छे जेनी अंदर, अने तेओए करीने अभिराम कहेतां मनने अत्यंत आनंद आपनारा एवा, तथा विचित्र एटले जुदी जुदी जातिनां अथवा आश्चर्य उपजावनारां एवा जे मणि अने रत्नो, ते-

ओए करीने जडेलो छे, कुट्टिमतल कहेतां तलीयानो भाग जेनो, एवी छे भूमि ज्यां, एवा प्रकारना स्नान-मंडप कहेतां स्नान करवाने माटे बनावेला मांडवामां नाना प्रकारना कहेतां विचित्र प्रकारनां जे मणिओ तथा रत्नो, तेओए करीने जडेला, अने तेथी मनने आश्चर्य उपजावनारा, एवा स्नानपीठ कहेतां स्नान करवा माटे तैयार करी राखेला बाजोठ पर ते सुखे करीने बेठा अने एवी रीते सुखे समाधे त्यां बेठा बाद पुष्पोदक कहेतां फुलोना रसथी मिश्रित थएलां जे जलो कहेतां पाणी,तेओए करीने, तथा गंधोदक एटले श्रीखंड कहेतां जे सुखड,तेनो जे रस,तेणे करीने मिश्रित थएलां जल,तेओए करीने,तथा उष्णोदक कहेतां अग्निए करीने वासण आदिकोमां गरम करेलां पाणीओथी तथा शुभोदक कहेतां पवित्र एवां जे तीर्थो, त्यांथी मगावेलां एवां जे पाणी, तेओए करीने, तथा शुद्धोदक एटले स्वभावथीज निर्मल कहेतां जरा पण मेल विनानां एवां जे पाणी, तेओए करीने, एवी रीतनां विविध कहेतां जुदा जुदा प्रकारनां जे पाणी, तेओए करीने, कल्याणकरणप्रवर कहेतां मंगलिक कार्योने करवामां समर्थ एवो जे स्नान करवानो विधि, तेणे करीने, मज्जितः तादृशैः पुरुषैः कहेतां, उपर जेनुं वर्णन करवामां आवेलुं छे, एवा पुरुषोए करीने ते सिद्धार्थ राजाए स्नान कर्युं. ते स्नान अवसरे, बहु प्रकारनां सेंकडो कौतुकोए करीने युक्त थयो थको, ते राजा मंगलकारी श्रेष्ठ स्नान करी रह्या पछी पक्ष्मल कहेतां रुंवाटीवालुं, अने तेथी करीनेज स्पर्शमां अत्यंत कोमल लागे एवुं तथा उत्तम प्रकारनी छांटेली छे सुगंधीओ जेनी अंदर एवुं लाल रंगनुं जे कापड, तेणे करीने, निर्जलीकृत कहेतां बिलकुल पाणी विनानुं पोतानुं अंग कहेतां शरीर करतो हु-वो. तथा त्यार बाद अर्हत कहेतां आखुं अने बहुमूल्य कहेतां जेने खरीदवा जतां अथवा बनावतां घणुं द्रव्य लागे एवुं,तथा अत्यंत उत्तम जातिनुं जे दूष्यरत्न कहेतां रेशमी कापडनुं बनावेलुं जे वस्त्र, तेणे क-रीने तेणे पोताना शरीरने लपेटी लीधुं;अर्थात् तेणे ते उत्तम वस्त्र पहेर्युं. वली ते राजा केवो तो के सरस कहेतां रसे करीने संयुक्त थएलुं एवुं तथा सुरभि कहेतां सुगंध युक्त थएलुं एवुं जे गोशीर्षचंदन कहेतां गायना मस्तकमांथी नीकलतुं एवुं जे गोरुचंदन(गोरोचन)तेणे करीने अनुलित कहेतां लेपन युक्त थएलुं

छे शरीर जेनुं एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के माला एटले पुष्पोनी माला तथा वर्णक एटले पीठी अने शरीरने शोभावनारुं कुंकुम आदिकनुं विलेपन, ते सघलुं शुचि कहेतां पवित्र छे जेने एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के परिहित कहेतां शरीर पर पहेरेलां छे, मणि अने सुवर्णमय कहेतां सोनामय, भूषण कहेतां अलंकारो जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के कल्पित कहेतां शरीर पर योग्य स्थानके पहेरेला छे, हार कहेतां जेमां जुदी जुदी अढार सेरो होय ते, तथा अर्धहार कहेतां जेमां जुदी जुदी नव सेरो होय ते, अने त्रिसरिक एटले जेमां त्रण सेरो जुदी जुदी होय एवो हार, तथा प्रलंबमान कहेतां लांबो लटकतो एवो, प्रालंब कहेतां झुंबनक (झुमणुं) तथा कटिसूत्र कहेतां केडने स्थानके पहेरवानुं जे आभूषण ते, अर्थात् कंदोरो, एटलां उपर वर्णवेलां जे आभूषणो, तेउंए करीने करेली छे उत्तम प्रकारनी शोभा जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के पिनद्ध कहेतां पहेरेलां छे, ग्रैवेयक कहेतां कंठमां पहेरवानां कंठा आदिक जुदी जुदी जातिनां आभूषणो जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के अंगुलीयक कहेतां आंगलीउंमां पहेरवानां जुदा जुदा प्रकारनां आभूषणो के जेउं वेढ, वींटी विगेरेनां नामथी दुनियामां प्रसिद्ध छे ते तथा ललित कहेतां अत्यंत शोभा आपे एवां कचाभरण कहेतां केशोने शोभावनारां पुष्प आदिकनां आभूषणो, ते जेणे योग्य स्थानके पहेरेलां छे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के वर एटले अत्यंत उत्तम जातिनां एवां जे कटक कहेतां कडां तथा त्रुटित कहेतां पोंची, बाजुबंध विगेरे जातिनां आभूषणोथी स्तंभित थयेला छे हाथ जेना एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के अधिक एवुं जे तेनुं पोतानुं स्वाभाविक रूप, तेणे करीने अत्यंत शोभायुक्त थएलो एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के कानमां पहेरवानां जे कुंडलो, तेणे करीने अत्यंत प्रकाशित थएलुं छे आनन कहेतां मुख जेनुं एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के मस्तक पर पहेरवानो जे मुकुट, तेणे करीने अत्यंत तेजवालुं थएलुं छे मस्तक जेनुं एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के हारे करीने आछादित एटले आछादन युक्त करेलुं, अने तेथी करीने जोनार माणसोने प्रमोद कहेतां अतिशय हर्षने आपनारुं छे

हृदय कहेतां वक्षःस्थल जेनुं एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो छे तो के मुद्रिका कहेतां वींटी आदिकथी पिंगल कहेतां पीला रंगवाली थएली छे हाथनी आंगलीओ जेनी एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के प्रलंब कहेतां लांबो, अने तेथी करीनेज नीचे लटकतो एवो जे डुपट्टो, तेणे करीने उत्तम रीते करेलुं छे उत्तरासंग जेणे एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के नाना प्रकारनां एटले जुदी जुदी जातिनां जे मणि अने कनक कहेतां जे सुवर्णो, अने रत्नो, तेणे करीने दीप्तिमंत कहेतां कांतिवालां, अने तेथी करीनेज महार्घ्य कहेतां जेने खरीद करतां अने बनावतां पण घणुं मूल्य पडे एवां, तथा निपुण एटले शिल्पविद्यामां अत्यंत प्रवीण थएलो एवो जे शिल्पी कहेतां कारिगर, तेणे उपचित कहेतां घडीने बनावेलां, तथा अत्यंत दीपतां, तथा घणीज चीवट राखीने बनावेलां, तथा कोइ जाणी न शके तथा उखली पण न जाय एवी रीते जोडेला छे सांधाओ जेओनी अंदर एवां, अने तेथी करीनेज विशिष्ट कहेतां बीजां आभूषणोथी अत्यंत रमणीय लागे एवां, तथा मनने पण हरी लीए एवां, धारण करेल छे वीरवलय कहेतां वीरपणानो जे पोतानो अहंकार तेने सूचवनारां वलयो कहेतां कडांओ जेणे एवो; अर्थात् जे कोइ पोताने वीर तरिके मानतो होय, ते मने जीतीने आ कडांओ उतरावे, एवी बुद्धिथी धारण करेल छे वीरवलय जेणे एवो सिद्धार्थ राजा. हवे कवि कहे छे के वधारे तेनुं शुं वर्णन करवुं ? ते राजा तो कल्पवृक्षनी पेठे विभूषित थएलो हतो; एटले कल्पवृक्ष जेम पत्र कहेतां पांदडां आदिकथी अलंकृत होय, अने पुष्प एटले फुल आदिकथी जेम भूषित होय, तेम आ सिद्धार्थ राजा पण मुकुट आदिकथी अलंकृत हतो, तथा वस्त्र आदिकथी विभूषित थयो हतो. वली ते राजा केवो तो के कोरिंट नामनां वृक्षनां जे पुष्पो, तेनी बनावेली जे मालाओ, तेओए करीने सहित एवुं, अने तेना पर धारण करातुं जे छत्र, तथा श्वेत वर्णवालां अने मनोहर एवां, अने बन्ने बाजुए वींझातां एवां जे चामरो, तेओए करीने भूषित थएलो एवो. वली ते राजा केवो तो के मंगलभूत कहेतां कल्याणकारी एवो जे "जय जय" नो शब्द ते कराइ रहेलो छे, आलोकमात्रे कहेतां जेना जोवा मात्रथी एवो; अर्थात् जेने जोतां थकाज लोको जय जय शब्द करी रह्या छे एवो.

वली ते राजा केवो तो के अनेक कहेतां घणा एवा जे गणनायको कहेतां पोतपोताना समुदायना स्वामीउं एटले उपरीउं, तथा दंडनायक कहेतां तंत्रपाल एटले देशनी चिंता करनाराउं, तथा राजाउं एटले मांडलिक राजाउं, अर्थात् पोताना ताबा तलेना देशोना खंडीआ राजाउं, तथा ईश्वरो एटले युवराजा, (अहीं कल्पसूत्रनी किरणावली नामनी टीका करनारा धर्मसागर उपाध्याय तथा दीपिका नामनी टीका करनार ए बन्नेए ईश्वरनो अर्थ "युवराजाः" ने बदले "युवराजानः" एम करीने प्रयोग मूकेलो छे ते विचारवा लायक छे, केमके ते व्याकरणना नियमथी उलटो छे; कारण के "अट्समासांतागमनेन" एवी रीतना व्याकरणना सूत्रथी "युवराजाः" एवी रीतनो प्रयोग थाय छे, पण "युवराजानः" थइ शकतो नथी, तेथी विद्वानोए मूकेलो प्रयोग विचार करवा जेवो छे) तथा तलवरा कहेतां संतुष्ट थएला राजाउंए दीधेलो जे पट्टबंध कहेतां चांद, तेणे करीने विभूषित थएला एवा राजस्थानीय कहेतां राजदरबारी माणसो तथा मांडलिक कहेतां मंडलना स्वामी एटले उपरीउं, तथा कौटुंबिक कहेतां केटलांक एवां जे कुटुंबो, तेउंनां स्वामीउं, तथा मंत्रिउं कहेतां राज्यना अधिष्ठायक एवा सचिवो, के जेउं तमाम राज्य संबंधी कार्यने चलावे छे तेउं, तथा महामंत्रिउं कहेतां उपर कहेला मंत्रिउं करतां पण जेने वधारे अधिकार छे एवा, तथा गणक एटले ज्योतिष संबंधी विद्यानां शास्त्रोने पार पहोंचेला ज्योतिषीउं, तथा दौवारिक कहेतां द्वार पासे चोकी करनारा प्रतिहारो एटले छडीदारो, तथा अमात्यो कहेतां पोतानी साथेज जेउंनो जन्म थएलो होय एवा मंत्रिउं, तथा चेटो कहेतां चाकरोनुं कार्य करनारा माणसो, पीठमर्दको एटले पीठ कहेतां आसनने जे मर्दन करे ते अर्थात् नजदीकमां रही सेवा करनारा, एटले मित्रो, (कारण के तेउं मित्रो होवाथी, तेमने कोइ वखते पोताना आसन पर पण जोरमां राजाउं बेसाडे छे,) तथा नागरो कहेतां नगरमां वसनारा लोको, तथा निगमो एटले वेपार करनारा लोको, तथा श्रेष्ठी कहेतां नगरना मुख्य मुख्य वेपार करनारा लोको, तथा सेनापति एटले चतुरंगी सेनाना अधिकारीउं, तथा सार्थवाहो कहेतां सार्थना नायको, एटले उपरीउं, तथा दूतो कहेतां बीजा राजाउंनी पासे जइ, पोताना

राजाउंनो संदेशो कहेनारा, तथा संधिपालो कहेतां अन्य राजाउंनी साथे पोताना राजाउंने संधि करावनारा, अर्थात् एलचीउं, ए उपर कहेला सघला माणसोथी वींटाएलो एवो ते सिद्धार्थ राजा स्नानगृह कहेतां ते स्नान करवाना घरमांथी वहार नीकलतो हवो. हवे अहीं तेनां संबंधमां महाकवि श्री नद्रबाहुस्वामी उपमा अलंकार मूके ठे के ग्रहसमूहथी देदीप्यमान एवो जे नक्षत्र अने ताराउंनो जे समूह, तेउं वच्चे वर्ततो एवो, जाणे ते राजा, चंद्र होय नहीं ? तेम शोनतो हतो; केमके उपर वर्णवेलो जे परिवार ते ग्रहगण, नक्षत्र अने ताराउं सरखो हतो, तथा तेउंनी वच्चे राजा चंद्र सरखो शोनतो हतो. हवे ते सिद्धार्थ राजा जे स्नान करवाना घर मांहेथी वहार नीकल्यो, तेने माटे कवि उपमा अलंकार मूके ठे के ते राजा स्नानगृहमांथी वहार नीकल्यो, ते जाणे के सफेद रंगनां जे वादलांउं,तेउंमांथी ग्रहोना समूहोनी साथे चंद्र जाणे वहार नीकल्यो होय नहीं ? एवो ते राजा शोनतो हतो. वली ते राजा केवो तो के जेनुं दर्शन प्रिय ठे एवो एटले वादलांमांथी वहार नीकळेलो अने नक्षत्र आदिथी वींटाएलो चंद्र जेम प्रियदर्शनी थाय ठे तेम अहीं राजाना संबंधमां पण जाणवुं. वली ते राजा केवो तो के नरेंद्र कहेतां माणसोनो इंद्र कहेतां राजा तथा नरवृषन कहेतां माणसोने विषे वृषन समान एटले पृथ्वीनो नार धारण करवामां समर्थ एवो, तथा नरसिंह कहेतां मनुष्योमां सिंह समान, केमके ते डुःखे करीने सहन थइ शके एवां पराक्रमवालो हतो. वली ते राजा केवो तो के अत्यंत अधिक एवी जे राज्य संबंधीनी लक्ष्मी, तेणे करीने अत्यंत देदीप्यमान एवो, ते राजा मज्जनगृह एटले स्नानगृहमांथी नीकलीने, वहार रहेली जे उपस्थानशाला कहेतां बेठकनी जगो अर्थात् कचेरी, तेनी अंदर आव्यो. त्यां आवी ते पूर्व दिशा तरफ पोतानुं मुख करीने बेठो. एवी रीते सिंहासन पर पूर्व सन्मुख बेसीने, तेणे पोताथी इशान खुणानी बाजुमां आठ नद्रासनो कहेतां सिंहासनो मंडाव्यां, तथा तेमना पर श्वेत एटले सफेद वस्त्रो बीठाव्यां, तथा तेउंने सिद्धार्थ कहेतां सफेद सरसवोना दाणाउंथी मांगलिक उपचार कराव्यो, अर्थात् ते सफेद सरसवोना दाणाउंथी तेउंनी पूजा करी. तेम कराव्या बाद तेणे पोता-

ना सिंहासनथी नहीं बहु नजदीकमां, तेम नहीं बहु छेटे, एवी रीते तेणे एक यवनिका कहेतां कनात तणावी. हवे ते कनात केवी तो के नाना प्रकारनां एटले जुदी जुदी जातिनां जे मणि, माणिक, रत्नो विगेरे जवाहीरथी मंडित थएली, अने तेथी करीनेज अधिक रीते प्रेक्षणीय कहेतां जोवा लायक एवी. वली ते यवनिका कहेतां कनात केवी तो के महार्घ्य कहेतां जेनुं अत्यंत मूल्य थाय एवी. वली ते कनात केवी तो के वर कहेतां प्रधान एवुं जे पत्तन कहेतां नगर, ते नगर पण केवुं तो के ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां वस्त्रो वणाय छे, तथा ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां रत्नो नीपजे छे, एवा नगरनी अंदर बनावेली. वली ते यवनिका कहेतां कनात केवी तो के अत्यंत कोमल छे स्पर्श जेनो एवी. वली ते कनात केवी तो के उत्तम जातिना रुनुं बनावेलुं बारिक एवुं जे सुतर, तेनी सेंकडो गमे जे रचनाओ, तेओए करीने मनने आश्चर्य उपजे एवो छे ताणं कहेतां ताणो जेनी अंदर एवी. वली ते कनात केवी तो के इहामृग कहेतां वरु, ऋषभ कहेतां बलदो, तुरग कहेतां घोडाओ, नर कहेतां मनुष्यो, मगर कहेतां मगरमछो, विहंग कहेतां जुदी जुदी जातिनां पक्षीओ, व्याल कहेतां सर्पो, किन्नर कहेतां किन्नरो, रुरु कहेतां एक जातिनां हरिणो, सरभ कहेतां अष्टापद नामनां प्राणीओ, चमरी कहेतां जेनां पुंछडांओना वालोनां चामरो बने छे एवी चमरी गायो, कुंजर कहेतां हाथीओ, तथा वनलता कहेतां अटवीमां थती चंपक, आंबा विगेरेनी लताओ, पद्मलता कहेतां कमलनी लताओ, के जेओ दुनियामां प्रसिद्ध छे, एवी रीते उपर वर्णवेलां सघलांओनी जे रचना कहेतां चित्रकामो, तेओए करीने चित्र कहेतां मनने अत्यंत आश्चर्य उपजावनारी एवी रीतनी अभ्यंतर यवनिका कहेतां अंतेउरने (राणीवासने) बेसवानी जे कनात, तेने रचावीने, तेणे (राजाए) तेनी अंदरना भागमां एक सिंहासन मंडाव्युं. ते सिंहासन केवुं तो के नाना प्रकारनां जे मणि माणेकादि जवेरात, तेनी जे रचना, तेणे करीने चित्र कहेतां चित्तने आश्चर्य उपजावे एवुं. वली ते सिंहासन केवुं तो के गादी अने कोमल तकीआए करीने आछादित करेलुं एवुं. वली ते सिंहासन केवुं तो के श्वेत कहेतां सफेद एवुं जे मलमल आदिकनुं सुकुमाल वस्त्र, तेणे करीने प्रत्यवस्तृत कहेतां पाछुं उपर आ-

छादित करेलुं एवुं. (उपर खोल चडावेलुं.) वली ते सिंहासन केवुं तो के (रेशमनी गादी तेना पर बीछाववा वडे करीने) अत्यंत सुकुमाल थएलुं एवुं. वली ते सिंहासन केवुं तो के अंगने सुख आपनारो छे स्पर्श जेनो एवुं, अने तेथी करीनेज अत्यंत शोभाए करीने युक्त थएलुं एवुं ते सिंहासन सिद्धार्थ राजाए त्रिशला क्षत्रियाणीने बेसवा माटे तैयार कराव्युं. एवी रीतनी सघली तैयारीउ कर्या बाद तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, अने तेउने बोलावीने तेणे कह्युं के, हे देवानुप्रियो, तमो क्षिप्र कहेतां तुरतज जइने स्वप्नपाठको कहेतां स्वप्नशास्त्रोमां पार पहोंचेला एवा पंडितोने बोलावी लावो. ते स्वप्नपाठको केवा तो के आठ अंगो छे जेनी अंदर, एवी रीतनुं जे महानिमित्त शास्त्र, एटले भविष्य कालमां थता बनावो सूचवनारुं जे शास्त्र, तथा जेमां स्वप्नादिकनां फलोनुं माहात्म्य कहेलुं होय एवा जे ग्रंथो, तेउनां मूलसूत्रो अने वली तेउना जे अर्थो, तेउने संपूर्ण रीते जाणनारा एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के विविध प्रकारनां जे शास्त्रो तेउने विषे पण कुशल कहेता पंडित एवा. हवे ते ज्योतिषशास्त्रनां आठ अंगो कयां कयां ते देखाडे छे.

अंगं स्वप्नं स्वरं चैव, भौमं व्यंजनलक्षणे ॥ उत्पातमंतरिक्षं च, निमित्तं स्मृतमष्टधा ॥ १ ॥

अर्थ—पहेलुं अंग एटले अंगस्फुरणनी चेष्टाउ जाणवी ते, जेमके पुरुषनुं जमणुं अंग स्फुरे तो सारुं, अने स्त्रीनुं डाबुं अंग स्फुरे तो सारुं. बीजुं स्वप्न एटले उत्तम जातिनां, मध्यम जातिनां तथा अधम जातिनां जे स्वप्नो माणसोने आवे छे, तेनां फलादिकने जे जाणवां ते. त्रीजुं स्वर कहेतां दुर्गा (पक्षीविशेष), रुपारेल, काली, शियाल विगेरेना शब्दोथी थतां फलादिकने जाणवुं ते. चोथुं भौम कहेतां पृथ्वीमां थता कंप एटले धुजारा आदिकनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. पांचमुं व्यंजन कहेतां मषा, तल आदिकनां फलोनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. छठ्ठुं हाथपगोनी रेखा आदिकनुं जे ज्ञान सामुद्रिकशास्त्रोमां कहेलुं छे, तेना विज्ञानने जाणवुं ते. सातमुं उत्पात तथा उल्कापात कहेतां तारा आदिकना खरवाथी सारां नरसां फलने जे जाणवुं

ते. तथा आठमुं अंतरिक्ष कहेतां आकाशनो उदय अथवा ... आदिक ... जे सारा माठा
बनावो बने तेनुं जे विज्ञान थवुं ते.

एवी रीते सिद्धार्थ राजाए करेल छे हुकम जेउने एवा ते कौटुंबिक लोको हर्ष पामेला, संतोष पामेला, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया थका राजानी ते आज्ञाने हाथ जोडीने सांभलवा लाग्या, अने सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियनी पासेथी बहार जाय छे, अने बहार जइने क्षत्रियकुंडग्राम नगरना मध्य भागमां थइने ज्यां स्वप्नपाठकोनां घर छे त्यां जाय छे अने जइने तेउने बोलावे छे. पछी ते स्वप्नपाठको पण सिद्धार्थ राजाना कौटुंबिकोने बोलाववा आवेला जाणीने अत्यंत हर्षित थया; तथा पछी तेउए स्नान कर्युं, त्यार बाद तेउए बलिकर्म कहेतां पूजा करी. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के करेलां छे तिलक आदिक जेउए एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के दधि कहेतां दहीं, दूर्वा कहेतां धरो तथा अक्षत कहेतां चोखा आदिकथी करेलुं छे मंगल जेउए एवा. ते मंगलो शाने माटे तो के दुःस्वप्न कहेतां खराब एवां जे स्वप्न आदिक तेउनो नाश करवा माटे. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के शुद्ध एटले पवित्र अने उज्ज्वल एवां तथा प्रवेश्य कहेतां राजानी सभामां जेवां कपडांउ पहेरीने जवाय एवां तथा मंगलसूचक पहेरेलां छे श्रेष्ठ कपडां जेणे एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के अल्प कहेतां थोडां अने महार्घ कहेतां मोटी किमतनां जे आभूषणो, तेउए करीने अलंकृत कहेतां शोभावेलुं छे शरीर जेउए एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के सिद्धार्थ कहेतां जे सफेद रंगना सरसवो तथा हरितालिका एटले जे दूर्वा ते वगेरे वस्तुउने जेउए मंगल कहेतां कल्याणने माटे धारण करेली छे मस्तकमां जेउए एवा. एवी रीतना थइने तेउ सघला पोतपोताने घेरथी नीकल्या. एवी रीते पोतानां घरोमांथी नीकल्या बाद तेउ ते क्षत्रियकुंडग्रामनी मध्यमां थइने, ज्यां सिद्धार्थ राजानुं भुवनवर कहेतां उत्तम मेहेलो तेने विषे पण भवनावतंसक कहेतां मुकुट सरखुं एवुं जे भुवन छे, तेना प्रतिद्वार कहेतां मूल दरवाजा पासे तेउ आव्या. त्यां आव्या बाद तेउ सघला एकठा थइने, एक सरखा मतवाला थया, अने तेउए

पोतामांना एकने अगाडी करीने बीजा सघलाओ तेना अनुयायी कहेतां ते उपरी कहे तेम करनारा तथा बोलनारा थया, अर्थात् तेवो सघला संप करीने एक मतवाला थया; कारण के कह्युं छे केः—

सर्वेऽपि यत्र नेतारः, सर्वे पंडितमानिनः ॥ सर्वे महत्त्वमिछंति, तद्वृंदमवसीदति ॥ १ ॥

अर्थ—ज्यां सघला माणसो उपरी थइने बेसे, तथा ज्यां सघलाओ पोताने पंडित माननाराओ होय, तथा ज्यां सघलाओ पोताने मोटाइ मलवानी इछा करे, ते टोळुं अंते नाशने प्राप्त थाय.

तेना पर अत्रे पांचसो सुभटोनुं एक दृष्टांत कहे छे. एक दहाडो कोइक पांचसें सुभटो एकठा थइने मांहोमांहे संबंध विनाना थया थका, नोकरी माटे एक राजा पासे आव्या. त्यारे राजाए मंत्रिना वचनथी तेओनी परीक्षा करवा माटे, तेओने सुवा माटे एकज शय्या मोकली. हवे तेओमां सघलाओ अहंकारी हता, अने तेथी तेओ नानामोटानो पण व्यवहार राखता नहोता, तेथी ते एक शय्या आवेली जोइने, ते लेवा माटे मांहोमांहे विवाद तथा क्लेश करवा लाग्या. अंते एवा ठराव पर आव्या के कोइ पण ते शय्या पर सुवे नहीं, अने तेथी तेओ शय्याने वचमां राखीने तेनी तरफ पोताना पगो राखीने सुता. हवे राजाए तेओनुं वृत्तांत जाणवा माटे गुप्त पुरुषोने राखेला हता, तेओए ते वृत्तांत प्रभातमां राजाने निवेदन कर्युं. त्यारे राजाए विचार्युं के आवी रीते ठेकाणा विनाना अने मांहोमांहे संप विनाना तथा अहंकारी एवा आ सुभटो युद्धादिक शी रीते करी शकशे? एम विचारी तेओने निर्भछीने काढी मेल्या.

तेथी ते स्वप्नपाठको पण सघला एकठा मलीने तथा एकसंपवाला थइने ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय बेठो हतो, त्यां आव्या. तथा आवीने हाथ जोडीने राजाने तेओ आशिष देवा लाग्या के हे राजा! तुं जय पाम, विजय पाम. वली तेओए कह्युं केः—

दीर्घायुर्भव, वृत्तवान् भव, भव श्रीमान्, यशस्वी भव, प्रज्ञावान् भव, भूरिसत्त्वकरुणादानैकशुंडो भव, भोगाढ्यो भव, भाग्यवान् भव, महासौभाग्यशाली भव, प्रौढश्रीर्भव, कीर्तिमान् भव, सदा विश्वोपजीव्यो भव १

अर्थ—हे राजा, तुं दीर्घ कहेतां लांबा आयुष्यवालो था, वृत्तवान् कहेतां यम नियमादि व्रतने

धारण करनारो था, श्रीमान् कहेतां लक्ष्मीवान् था, यशस्वी कहेतां यशवालो था, प्रज्ञावान् कहेता बुद्धिवालो था, नूरि कहेतां घणां एवां जे सत्त्व कहेतां प्राणीउं, तेउं प्रत्ये जे करुणादान कहेतां दयादान, तेने विषे शूर कहेतां पराक्रमी था, अर्थात् प्राणी उपर दयालु था, नोगोए करीने आढ्य कहेतां सहित था, नाग्यवान् कहेतां नाग्यवालो था, तथा उत्तम प्रकारनुं जे सौनाग्य तेणे करीने पण मनोहर था, प्रौढ कहेतां मोटी एवी जे श्री कहेतां लक्ष्मी अथवा शोना तेणे करीने युक्त था, वली कीर्त्तिए करीने पण तुं युक्त था, तथा हमेशां समस्त जगत्ने उपजीव्यक कहेतां आजीविका देनारो, अने रक्षण करनारो था.

(अहीं किरणावलीकारे तथा दीपिकाकारे "कोटिंनर" एवो प्रयोग मूक्यो बे, ते व्याकरणथी विरुद्ध होवाथी विद्वानोने विचारवा जेवो बे.)

वली पण तेउं बीजा काव्ये करीने पण राजाने आशीर्वाद आपे बे, ते नीचे प्रमाणे जाणवुं.

कल्याणमस्तु शिवमस्तु धनागमोऽस्तु, दीर्घायुरस्तु सुतजन्मसमृद्धिरस्तु ॥
वैरिक्षयोऽस्तु नरनाथ सदा जयोऽस्तु, युष्मत्कुले च सततं जिननक्तिरस्तु ॥ २ ॥

अर्थ–हे नरनाथ, तमने कल्याण थाओ, निरुपद्रवपणुं थाओ, धननुं आवागमन थाओ, लांबुं आयुष्य थाओ, पुत्रजन्मनी समृद्धि थाओ, वैरीओनो नाश थाओ, हमेशां तमारो जय थाओ तथा तमारा कुलमां हमेशां जिनेश्वर प्रनुनी नक्ति रहो.

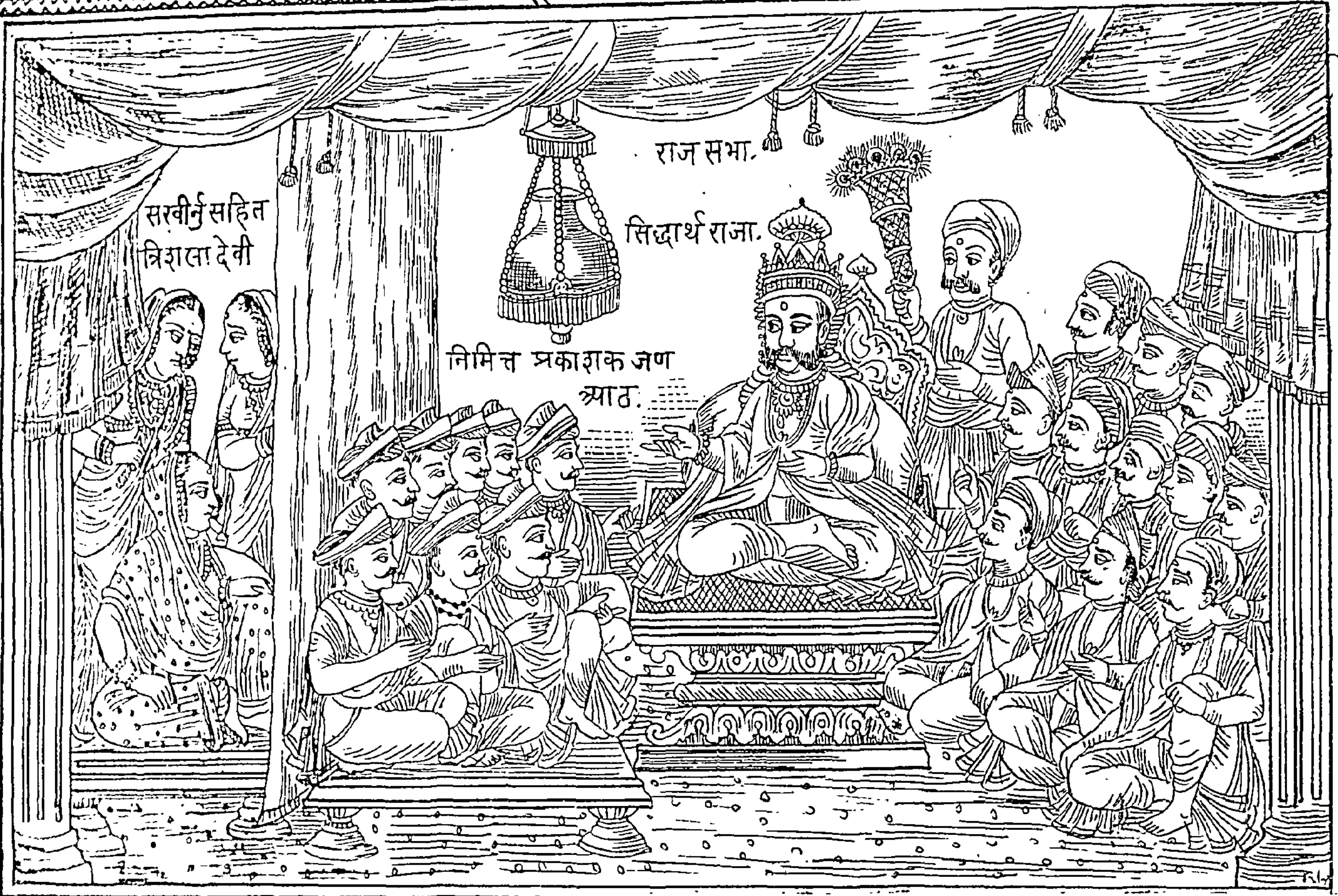
एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती नाषांतरमां त्रीजो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ चतुर्थं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

ते वार पठी ते सिद्धार्थ राजाए ते स्वप्नपाठकोने तेमना गुणे[illegible]स्तुति करीने वांद्या, पुष्पादिकथी

तेमने पूज्या, फल वस्त्र आदिकना दानथी तेमनो सत्कार [illegible] ऊभा थवा विगेरेथी तेमनुं सन्मान कर्युं. एवी रीते थया थका तेओ दरेक अगाऊथी राखेलां आसनो पर बेठा; ते वार पछी ते सिद्धार्थ राजा त्रिशला क्षत्रियाणीने पडदानी अंदर राखीने पुष्प तथा नालीयेर आदिक फलोए करीने भरेला छे हाथ जेना (केमके खाली हाथे देव, गुरु, राजा तथा विशेषे करीने निमित्तिआने मलवुं नहीं, केमके फलथी फल मले छे) एवो राजा ते स्वप्नपाठकोने घणा विनयथी एम कहेवा लाग्यो के हे देवानुप्रियो ! आजे त्रिशला क्षत्रियाणी तेवी शय्यामां सुती जागती अर्थात् अल्प निद्रा करती छती आ आवा प्रकारनां (गज, वृषभ विगेरेनां) श्रेष्ठ चौद महा स्वप्नोने जोइने जागी गइ, माटे हे देवानुप्रियो ! ते चौद श्रेष्ठ महा स्वप्नोमां हुं विचारुं छुं के कयुं स्वप्न कल्याणकारी अने फलवृत्तिविशेष आपनारुं थशे ? पछी ते स्वप्नपाठको सिद्धार्थ राजानी पासेथी ए स्वप्नोने सांभलीने, जाणीने, हर्ष पामेला, संतोष पामेला, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया छता ते स्वप्नोने सारी रीते हृदयमां धारी राखे छे अने हृदयमां धारी राखीने स्वप्नोना अर्थनो विचार करवा लाग्या अने अर्थनो विचार करीने ते परस्पर मसलत करवा लाग्या अने मसलत करीने पोतानी बुद्धिथी जाणेल छे अर्थ जेउंए, परस्पर ग्रहण करेल छे अर्थ जेउंए, संशय पडते छते परस्पर पूछेलो छे अर्थ जेउंए, निश्चित करेलो छे अर्थ जेउंए, अवधारण करेल छे अर्थ जेउंए, एवा थया थका, सिद्धार्थ राजानी पासे स्वप्नशास्त्रोने उच्चारता थका एम कहेता हवा. अनुभवेलुं, सांभलेलुं, दीठेलुं, प्रकृतिना विकारथी उत्पन्न थएलुं, स्वभावे उत्पन्न थएलुं, चिंतानी परंपराथी उत्पन्न थएलुं, देवतादिकना उपदेशथी उत्पन्न थएलुं, धर्मकार्यना प्रभावथी उत्पन्न थएलुं तथा पापना उदयथी उत्पन्न थएलुं, एवी रीते नव प्रकारनुं माणसोनुं स्वप्न जाणवुं. पहेला छ प्रकारोथी दीठेलुं शुभ अथवा अशुभ स्वप्न निरर्थक जाय छे, अने पछीना त्रण प्रकारोथी दीठेलुं स्वप्न सार्थक थाय छे; रात्रिना चारे पहोरमां दीठेलुं स्वप्न बार, छ, त्रण तथा एक मासे अनुक्रमे फलदायक थाय छे. रात्रिनी छेल्ली बे घडीए जोएलुं स्वप्न


चित्र.१८.
राज सभा.
सिद्धार्थ राजा.
सखीर्नु सहित
त्रिशला देवी
निमित्त प्रकाशक जण
आठ.

दश दिवसमां निश्चे फले छे,तथा सूर्योदय वखते दीठेलुं स्वप्न तुरत निश्चे फले छे.दिवसमां दीठेल स्वप्न-नी श्रेणी तेमज आधि, व्याधि तथा मलमूत्रादिकनी पीडाथी उत्पन्न थएलुं स्वप्न ए सर्व निरर्थक जाणवुं. धर्ममां रक्त (आसक्त), समधातुवालो, स्थिर चित्तवालो, जितेंद्रिय तथा दयालु माणस प्राये करीने स्वप्नथी प्रार्थित अर्थने साधे छे. खराब स्वप्न कोइने संजलाववुंज नहीं; सारुं स्वप्न गुरु आदिकने संजलाववुं; अने ते न होय तो गायना कानमां पण संजलाववुं. उत्तम स्वप्नने जोइ बुद्धिवान् माणसे सुवुं नहीं; केमके तेथी तेनुं फल मलतुं नथी, अने आखी रात्रि जिनेश्वर प्रभुनां स्तवनमांज गुजारवी. खराब स्वप्न जोइने फरीने पाछुं सुइ जवुं, अने ते कोइने कहेवुं पण नहीं; अने तेथी ते फलवंत थतुं नथी. जे माणस पहेलां अनिष्ट स्वप्नने जोइने पाछलथी शुभ स्वप्न जुए छे, ते तेने (शुभ) फलदायक थाय छे अने एम परावर्ते जाणवुं. स्वप्नमां मनुष्य, सिंह, घोडो, हाथी, वृषभ अने सिंहणथी युक्त एवा रथमां आरूढ थयेलो जे माणस जाय छे ते राजा थाय छे. स्वप्नमां घोडा, हाथी, वाहन, आसन, घर, निवसन आदिकनो जे अपहार ते, राजा तरफनी बीक तथा शोक करनारो, बंधुओनो विरोध करनारो, तथा पैसानी हानि करनारो थाय छे. जे पुरुष सूर्यचंद्रनां संपूर्ण बिंबने गली जाय, ते गरीब होय तोपण सुवर्ण अने समुद्र सहित पृथ्वीने निश्चे मेलवे छे. प्रहरण, आभूषण, मणि, मोती, सोनुं, रूपुं तथा धातुओनुं जे हरण, ते धन अने मानने नाश करनारुं, तथा प्रायः भयंकर मरण करनारुं छे. सफेद हाथी पर बेठो थको नदीने कांठे भाततुं भोजन करे, ते जातिहीन होय तोपण धर्मरूपी धनने ग्रहण करतो थको आखी पृथ्वीने भोगवे. पोतानी स्त्रीना हरणथी धननो नाश थाय, पराभवथी क्लेश थाय, अने गोत्रनी स्त्रीना हरण तथा पराभवथी बंधुओनो वधबंधन थाय. सफेद सर्पथी जे माणस पोतानी जमणी भुजामां डंखाय, ते माणसने पांच रात्रिमां हजार सोनामोहोरो मले. जे माणसनी शय्या तथा पगरखांनुं हरण स्वप्नमां थाय, तेनी स्त्री मृत्यु पामे, तथा तेना शरीरे अत्यंत पीडा थाय. जे माणस मनुष्यनां मस्तक, पग तथा हाथनुं स्वप्न[illegible]ण करे छे, तेने अनुक्रमे

राज्य, हजार सोनामोहोरो, तथा तेथी अर्धी सोनामोहोरो मळे ठे. जे माणस वारणानो जोगवना, शय्यानो, हिंचोळानो, पाडुकानो तथा घरनो जंग जुए ठे, तेनी स्त्रीनो नाश थाय ठे. जे माणस तळाव, समुद्र, जळथी जरेली नदी, तथा मित्रनुं मरण जुए ठे, ते माणसने निमित्त विना पण अत्यंत धन मळे ठे. ठाणवाळुं गकुल तथा औषध सहित तपेलुं पाणी जे माणस पीए ठे, ते माणस निश्चे अतिसार रोगथी मृत्यु पामे ठे. जे माणस स्वप्नमां देवनी प्रतिमानी यात्रा, स्नान, जेट तथा पूजा आदिक करे ठे, ते माणसने सर्व जगोएथी वृद्धि थाय ठे. जे माणस स्वप्नमां पोताना हृदयरूपी तळावमां उत्पन्न थएलां कमळोने जुए ठे, ते माणस कुष्टी थइने तुरत मृत्यु पामे ठे. जे माणस स्वप्नमां मनोहर घी मेळवे ठे, तेनो यश वृद्धि पामे ठे; वळी क्षीरान्ननी साथे तेनुं खावुं जुए ए प्रशस्त ठे. स्वप्नमां हसे तो शोक थाय, नाचवाथी वधबंधन थाय, जणवाथी क्लेश थाय, एम डाह्या माणसे जाणवुं; गाय, घोडो, राजा, हाथी अने देव सिवायनां सघळां काळा रंगनां स्वप्न खराब जाणवां. वळी कपास, लवण आदि सिवायनां सघळां सफेद रंगनां स्वप्नां सारां जाणवां. जे स्वप्नां पोता माटे जोयेल होय ते शुज अथवा अशुज ते माणसने थाय ठे अने जे स्वप्नां बीजा प्रत्येनां होय तेमां तेने पोताने कांइ नथी. खराब स्वप्न देखाय तो देव गुरुने पूजवा तथा शक्ति प्रमाणे तप करवो; केमके हमेशां धर्ममां रक्त थयेला माणसोने खराब स्वप्न पण उत्तम स्वप्न तुल्य थाय ठे. एवी रीते हे देवानुप्रिय ! हे सिद्धार्थ राजन् ! अमारा स्वप्नशास्त्रने विषे बेंतालीश स्वप्न सामान्य फळ आपनारां अने त्रीश महा स्वप्न उत्तम फळ आपनारां ठे. एम सर्वे मळीने बहोंतर स्वप्न कहेलां ठे. तेमां पण हे देवानुप्रिय ! अरिहंतनी माता अथवा चक्रवर्तीनी माता अरिहंत अथवा चक्रवर्ती गर्जमां आवते ठते आ त्रीश महा स्वप्नोमांथी आवां चौद महा स्वप्नो जोइने जागी जाय ठे. ते चौद स्वप्न गज, वृषज विगेरे. वासुदेवनी माता वासुदेव गर्जमां आवते ठते आ चौद महा स्वप्नमांथी मात्र सात स्वप्न जोइने जागी जाय ठे. बलदेवनी माता बलदेव गर्जमां आवते ठते आ चौद महा स्वप्नमांथी मात्र चार

स्वप्न जोइने जागी जाय छे, अने मंडलिकनी माता मंडलिक गर्भमां आवते छते आ चौद महा स्वप्न-मांथी मात्र एक स्वप्नने जोइने जागी जाय छे; माटे हे देवानुप्रिय ! आ त्रिशला क्षत्रियाणीए तो आ चौदे महा स्वप्नो जोयेलां छे, माटे हे देवानुप्रिय ! आ त्रिशला क्षत्रियाणीए ए प्रशस्त स्वप्न जोयेलां छे. हे देवानुप्रिय ! त्रिशला क्षत्रियाणीए यावत् मंगलकारक स्वप्न जोयेलां छे. तेथी हे देवानुप्रिय ! तमोने अर्थनो लाभ, भोगनो लाभ, पुत्रनो लाभ, सुखनो लाभ अने राज्यनो लाभ थशे; अने एवे प्रकारे हे देवानुप्रिय ! त्रिशला क्षत्रियाणी नव मास संपूर्ण थइ साडा सात रात्रि दिवस जाते छते तमारा कुलमां ध्वज समान, दीपक समान, मुकुट समान, पर्वत समान, तिलक समान, कुलनी कीर्त्तिना करनार, कुलना निर्वाह करनार, कुलमां सूर्य समान, कुलना आधाररूप, कुलना यश करनार, कुलने विषे वृक्ष समान, कुलनी परंपराने वधारनार, सुकोमल हाथपगनां तलीयावाला, नहीं ओछा एवा परिपूर्ण पंचेंद्रिय युक्त शरीरवाला, लक्षण अने व्यंजनना गुणोए करीने युक्त, मान अने उन्मानना प्रमाणथी परिपूर्ण अने सारी रीते प्रगट थयेला अवयवोए करीने सुंदर अंगवाला, चंद्र समान मनोहर आकृतिवाला, प्रिय, प्रियदर्शनी अने सुंदर रूपवाला एवा पुत्रने जन्म आपशे. वली ते पुत्र बाल्य अवस्थाने तजीने परिपक्व विज्ञानवाला थइ यौवनावस्थाने प्राप्त थये छते दानादिक आपवामां शूरा, संग्रामने विषे वीर, परराज्यने आक्रमण करवामां समर्थ, घणा विस्तार युक्त सेना तथा वाहनवाला अने चारे दिशाउना स्वामी एवा चक्रवर्ती राज्यपति राजा थशे, तेमज त्रण लोकना नायक अने धर्मने विषे श्रेष्ठ एवा चार गतिना नाश करनार चक्रवर्ती जिनेश्वर थशे.

तेमां जिनपणामां ते चौदे स्वप्ननां पृथक पृथक फलो नीचे प्रमाणे जाणवां. चार दांतवाला हाथीने जोवाथी चार प्रकारना धर्मने ते कहेशे. वृषभने जोवाथी आ भरतक्षेत्रमां ते बोधिरूपी बीजने वावशे. सिंहने जोवाथी कामदेव आदिकरूप जे उन्मत्त हाथीओ, तेणे करीने भंगातुं एवुं जे भव्यजनरूपी वन, तेनी रक्षा करशे. लक्ष्मीने जोवाथी वार्षिक दान दइने तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे. माला जो-

वाथी त्रणे भुवनने मस्तकमां धारवाने ते लायक थशे. चंद्रने जोवाथी भव्यरूपी जे कुवलय कहेतां चं-
द्रविकासी कमल, तेने विकस्वरपणुं आपशे. सूर्यने जोवाथी कांतिना मंडले करीने ते भूषित थशे.
ध्वजने जोवाथी धर्मरूपी ध्वजे करीने ते भूषित थशे. कलशने जोवाथी धर्मरूपी महेलनां शिखर
पर ते रहेशे. पद्मसरोवर जोवाथी देवोए संचार करेलां जे कमलो तेना पर स्थापन करेला छे चरणो जेणे
एवा ते थशे. समुद्रने जोवाथी केवलज्ञानरूपी रत्नना स्थानक सरखा थशे. विमान जोवाथी वैमानिक जे
देवो, तेओने पण पूजनीय थशे. रत्नना राशिने जोवाथी रत्नना गढोए करीने ते भूषित थशे. धूमाडा
विनाना अग्निने जोवाथी भव्यजनरूपी सुवर्णने शुद्ध करनारा थशे. चौदे स्वप्ननां एकठां फलरूप चौदे
रज्वात्मक लोकना अग्र भाग पर रहेनारा थशे. माटे हे देवानुप्रिय! त्रिशला क्षत्रियाणीए अत्यंत उदार,
यावत् मंगलकारक एवां आ चौद महा स्वप्नो जोयेलां छे. पछी सिद्धार्थ राजाए स्वप्नपाठकोनी पासेथी
ए अर्थ सांभलीने अने धारीने हर्ष पामेला, संतोष पामेला, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया थका बे
हाथथी यावत् अंजलि करीने ते स्वप्नपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं. हे देवानुप्रिय पाठको ! ए एमज
छे. हे स्वप्नपाठको ! ते तेमज छे. हे पाठको! ए यथार्थ छे. हे पाठको! ए वांछित छे. हे पाठको! तमारा
मुखथी पडतांज ए वचनने में ग्रहण करेलुं छे. हे पाठको ! ए वांछित छतां वारंवार वांछेलुं छे. ए
अर्थ साचो छे. जेवी रीते ए अर्थने तमे कहो छो तेवी रीते ते छे एम कहीने सिद्धार्थ राजा
ते स्वप्नोने सारी रीते धारण करे छे अने धारण करीने ते स्वप्नपाठकोने विपुल एवा शालि आदि-
कना अशन एटले भोजननी वस्तुओए करीने, अत्यंत उत्तम एवां पुष्पोए करीने, वस्त्रोए करीने,
सुगंधीओए करीने, पुष्पोनी गुंथेली मालाओए करीने, मुकुट आदिक आभूषणोए करीने
तेमनो सत्कार करता हवा, तेमने विनयपूर्वक वचनोथी सन्मान करता हवा; अने तेम करीने
छेक जीवित पर्यंत तेमनो निर्वाह चाले एटलुं तेमने प्रीतिदान देता हवा, तथा तेम करीने तेउने
विसर्जन करता हवा. पछी सिद्धार्थ राजा सिंहासन परथी उठीने ज्यां त्रिशला क्षत्रियाणी कना-

तनी अंदर बेठां हतां, त्यां आव्या, अने आवीने तेने कहेता हवा के हे त्रिशला ! आ प्रमाणे स्वप्नशास्त्रमां बेंतालीश सामान्य स्वप्न अने त्रीश महा स्वप्नथी आरंभीने छेवट एक महा स्वप्नने जोइने जगाय छे अने हे त्रिशला ! तें तो आ चौद महा स्वप्नो दीठां छे, तें उदार स्वप्नो दीठां छे, माटे त्रण लोकना नायक अने धर्मने विषे श्रेष्ठ एवा चार गतिना नाश करनार चक्रवर्ती जिनेश्वर तारा पुत्र थशे. पछी ते त्रिशला क्षत्रियाणी ए अर्थने सांभलीने अने धारीने हर्ष पामेली, संतोष पामेली, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाली थइ थकी बे हाथ वडे अंजलि करीने ते स्वप्नोने सारी रीते हृदयमां धारी राखे छे अने धारी राखीने सिद्धार्थ राजाए जवानी रजा आपी एटले नाना प्रकारनां मणि अने रत्नोनी रचनाथी मनोहर एवा भद्रासन उपरथी उठे छे अने उठीने उतावल विनानी, चपलता विनानी, यावत् राजहंसना सरखी गति वडे ज्यां पोतानुं निवासमंदिर छे त्यां आवे छे अने आवीने पोताना मंदिरमां पेठां.

हवे जे दिवसथी आरंभीने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ते राजकुलने विषे आव्या ते दिवसथी आरंभीने जेओ धनदना स्वाधीनपणाने धारण करे छे, एवा जे तिर्यग् लोकमां रहेनारा घणा जृंभक देवताओ, शक्रनां वचने करीने, अर्थात् इंद्रे वैश्रमण एटले कुबेरने कह्युं, अने कुबरे तिर्यक्जृंभकोने कह्युं, अने तेथी ते जृंभक देवो, जेनुं आगल स्वरूप वर्णववामां आवशे, एवा पूर्वे निधानरूपे स्थापी राखेलां अने तेथीज पुराणां एवां महानिधानो लाव्या. ते नीचे प्रमाणे जाणवां. नाश थएला छे मालिको जेओना, नाश थएला छे एकठा करवावाला जेओना एवां निधानो, वली ते निधानो केवां तो के जे निधानोनां गोत्रीयो तथा घरो नाश पामेलां छे एवां, तथा सर्व प्रकारे अभावने प्राप्त थएला छे स्वामीओ जेना, तथा सर्व प्रकारे नाश पाम्या छे एकठा करनारा जेना, तथा सर्व प्रकारे नाश पाम्यां छे गोत्रीयो अने घरो जेनां; हवे ते निधानो कयां कयां स्थानकोमां छे ? ते कहे छे. गाममां, आकर कहेतां लोखंड आदिकनी उत्पत्तिनां स्थानकमां, नगर एटले ज्यां कर न लेवातो होय तेमां, खेट कहेतां जेनी आसपास धूलिनो कोट छे तेमां, कर्वट एटले कुनगरोमां, मडंब एटले चारे बाजुएथी अर्धा योजन दूर रहेलां

गामोमां, द्रोण एटले ज्यां जलवाटे अने स्थलवाटे बन्ने वाटे रस्ताओ होय छे त्यां, पत्तन एटले जल अथवा स्थल बन्नेमांथी एक मार्ग ज्यां होय तेमां, आश्रमो कहेतां तीर्थनां स्थानको, अथवा ऋषिओने रहेवानां स्थानकोमां, संबाह कहेतां सपाट भूमिमां के ज्यां खेडुतो रक्षा माटे धान्यने राखे छे, ते स्थानकोमां, सन्निवेश कहेतां ज्यां संघ, लश्कर विगेरे आवीने उतरे छे, ते स्थानकोमां, तथा शृंगाटक कहेतां सिंघाटक (सींघोडां) नामे फलना आकारे त्रण खुणावालुं जे स्थानक होय तेमां, त्रिक एटले ज्यां त्रण रस्ताओ आवीने एकठा थाय छे, ते स्थानकमां, चतुष्क कहेतां ज्यां चार रस्ताओ एकठा थाय छे, ते स्थानकमां, चत्वर कहेतां ज्यां अनेक रस्ताओ एकठा थाय छे, ते स्थानकमां, चतुर्मुख कहेतां जेनां चार बारणांओ होय एवा देवकुल कहेतां देवालयोमां, महापथ कहेतां राजमार्गेमां, ग्रामस्थान कहेतां गामडांओनां जे उंचां स्थानको, तेओने विषे, तथा नगरस्थानक कहेतां नगरनां उंचां स्थानकोमां, तथा ग्रामनिर्धमन कहेतां गाममांथी पाणी जवाना मार्गरूप जे खालो तेउमां, एवी रीतेज नगरनिर्धमन कहेतां नगरमांथी पाणी जवाना मार्गरूप जे खालो तेउमां, आपण एटले जे डुकानो तेओमां, देवकुल कहेतां यक्ष आदिकनां जे स्थानको तेओमां, सभा कहेतां माणसोने वेसवानां जे स्थानको तेओमां, प्रपा कहेतां पाणीनां जे पर्वो तेओमां, तथा आराम कहेतां केल आदिक वृक्षोए करीने आछादित थएला तथा स्त्री पुरुषोने क्रीडा करवानां स्थानकरूप एवा बगीचाओमां, तथा उद्यान कहेतां पुष्प अने फलोए करीने सहित एवां जे वृक्षो, तेओए करीने शोभायुक्त थएलां तथा घणां माणसोने उपभोगमां आवी शके एवां उद्यानिकाना स्थानकोमां, तथा वन कहेतां एक जातिनां वृक्षोना समूहो छे जेमां एवां स्थानकोमां, तथा वनखंड कहेतां अनेक जातिनां छे वृक्षोना समुदायो जेमां एवां स्थानकोमां, तथा स्मशान कहेतां ज्यां माणसोनी लासोने अग्निदाह करवामां आवे छे एवां स्थानकोमां, शून्यागार कहेतां जेमां कोइनी वस्ती न होय एवां शून्य घरोमां, तथा गिरिकंदरा कहेतां पर्वतोनी जे गुफाउ तेउमां, तथा शांतिगृह कहेतां ज्यां शांतिनां कार्यो थाय छे एवां स्थानकोमां, तथा शैलगृह

कहेतां पर्वतनां घरोमां, तथा उपस्थानगृह कहेतां ज्यां आस्थानसनानां मकानो छे एवां स्थानकोमां तथा भवनगृह कहेतां कुटुंबीउने वसवानां जे स्थानको तेउमां, एवी रीते ग्रामादिक अने, शृंगाटकादिने विषे रहेलां महा निधानो, के जेउ त्यां पूर्वे थइ गएला कृपण माणसोए दाटेलां छे,ते सघलां निधानोने लइने तिर्यकजृंभक देवो सिद्धार्थ राजाना घरमां संघरता हवा.

हवे जे रात्रिने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी ज्ञातकुलनी अंदर संहराया, ते रात्रिथी आरंभीने ते ज्ञातकुल हिरण्य अने सूवर्णथी वृद्धि पामतुं हवुं. ते हिरण्य एटले रूपुं अथवा नहीं घडेलुं सुवर्ण, अने सुवर्ण एटले घडेलुं सोनुं. धन चार प्रकारनुं एक तो गणी शकाय तेवुं, बीजुं धारी शकाय तेवुं, त्रीजुं मापी शकाय तेवुं, तथा चोथुं परिछेद्य थइ शके तेवुं. तेमां फल पुष्पादिक गणी शकाय एवुं, कुंकुम गोल आदिक धारी शकाय तेवुं (जोखी शकाय तेवुं), चोपड तथा लुण विगेरे मापी शकाय तेवुं, तथा रत्नादिक परिछेदी शकाय तेवुं जाणवुं. तथा धान्य चोवीश प्रकारनु जाणवुं. तेनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां. जव, घउं, शालि, व्रीहि, सठीय, कुद्दव, अणुआ, कंगु, रालय, तिल, मग, अडद, अलसी, हरिमंथ, तिउडा, निप्फाव, सिलिंद, रायमासा, उच्छू, मसूर, तुवरी, कलथी, धन्नय अने कलाया, ए चोवीश प्रकारनुं धान्य जाणवुं. तथा राज्यनां सात अंगो जाणवां; ते नीचे प्रमाणे. एक तो राष्ट्र कहेतां देश, बीजुं बल कहेतां चतुरंगी सेना, त्रीजुं वाहन कहेतां खचर आदिक वाहनो, चोथुं कोश कहेतां भंडार, पांचमुं कोष्ठागार कहेतां धान्य भरी राखवाना कोठारो, छठुं पुर एटले नगर, तथा सातमुं अंतःपुर कहेतां राणीउने रहेवानुं स्थानक अर्थात् जनानखानुं; तथा जानपद कहेतां देशवासी लोकथी तथा यशोवाद एटले कीर्त्ति, ए सघलाथी ते ज्ञातकुल वृद्धि पामतुं हवुं. तथा विपुल एटले विस्तारवालुं धन एटले गायो आदिक, तथा कनक एटले घडेलुं अथवा नहीं घडेलुं एवुं बन्ने प्रकारनुं सुवर्ण, तथा रत्न एटले कर्केतन आदिक तथा मणि एटले चंद्रकांत आदिक तथा मौक्तिक एटले मोती के जे प्रसिद्ध छे, तथा शंख कहेतां दक्षिणावर्त्तादिक शंखो तथा शिला एटले राजपट्टादिक तथा प्रवाल एटले विद्रुमो,

तथा रक्तरत्न कहेतां पद्मराग आदिक अर्थात् माणिक आदिक, अहीं "आदि" एवा शब्दथी वस्त्र, कंबल विगेरेने ग्रहण करवां, तथा सत् एटले विद्यमान एवुं, पण इंद्रजालनी पेठे असत् नहीं एवुं जे सारस्वापतेय कहेतां प्रधान अर्थात् उत्तम जातिनुं जे द्रव्य, तेणे करीने, तथा प्रीति कहेतां मन संबंधी-नी जे तुष्टि, तथा सत्कार कहेतां वस्त्र आदिकथी स्वजनोए करेली भक्ति, ते सघळाओना समुदाये ते ज्ञातकुल अत्यंत वृद्धि पामतुं हवुं.

व श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनां मातापिताने हवे पछी कहेवाशे एवा प्रकारनो पोताना सं-ी चिंतवेलो, प्रार्थेलो, मनमां रहेलो अध्यवसाय उपजतो हवो. ते अध्यवसाय केवो? ते हवे कहे छे.

थी अमारो आ पुत्र कुक्षिने विषे गर्भपणाए करीने उत्पन्न थएलो छे, त्यारथी मांडीने अमे रूपाथी वृद्धि पामीए छीए, सुवर्णथी वृद्धि पामीए छीए, धनथी वृद्धि पामीए छीए, एवी रीते उपर कहेलां छेक प्रीतिसत्कार सुधीनां विशेषणोए करीने अत्यंत वृद्धि पामीए छीए, तेथी करीने ज्यारे अमारा आ बालकनो जन्म थशे, त्यारे अमो पण आ धनादिकनी वृद्धिने अनुरूप एवुं आ बालकनुं गुणोए करीने निष्पन्न एवुं नाम पाडशुं. ते नाम शुं ? ते हवे कहे छे. "वर्धमान इति" एटले "वर्धमान" एवुं अमो तेमनुं नाम पाडशुं.

ते वार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीए गर्भमांज रहीने विचार्युं के मारा हलनचलनथी माताने कष्ट मा थाओ, एवी रीते मातानी अनुकंपा माटे, अर्थात् मातानी भक्ति माटे, तथा बीजाए पण आवी रीते मातानी भक्ति करवी, एवुं देखाडवा माटे, पोते निश्चल, निष्पंद अर्थात् कंइ पण हाल्या चाल्या विना, अने तेथी करीनेज निष्कंप कहेतां कंप विना, तथा अंगोना गोपववाथी जरा लीन थएला, तथा अंगोपांगना गोपववाथी प्रकर्षे करीने लीन थएला, अने तेथी करीनेज गुप्त रहेला एवा श्री वीर प्रभु होता हवा. तेना पर कविए उत्प्रेक्षा करी के, शुं एकांतमां माताना गर्भमां रहीने प्रभु मोह राजाने जीतवा माटे विचार करे छे? अथवा परब्रह्म माटे कंइ अगोचर एवा ध्यानने रचे छे?

सीने खेंची लीधुं. अथवा हे विधात्रि, में भवांतर अथवा आ भवमां पण कंइ तारो शुं अपराध कर्यो छे? के जेथी आम करतां तुं उचित अनुचितनो विचारज करती नथी ! हवे हुं शुं करुं ! ! क्यां जउं ! ! ! अथवा कोनी पासे कहुं ! ! आ अधम दुर्दैवे मने बाली तथा खाधी तथा मूर्छा पमाडी. हवे मारे आ राजनी शी जरुर छे ? अथवा विषयजन्य एवां आ कृत्रिम सुखोनी पण मारे हवे शी जरुर छे ? अथवा दुकूलनी शय्यामां शयनथी उत्पन्न थतुं छे सुख जेमां एवा आ महेलनी पण मारे शी जरुर छे ? हाथी, वृषभ आदिक स्वप्नथी सूचित थएला, उचित, पवित्र तथा त्रण जगतने पूजनिक, त्रण भुवनना माणसो प्रत्ये अतुल्य एवा पुत्ररूपी रत्न विना हवे मारे कशानी शी जरुर छे ? आ असार संसारने धिक्कार छे, तथा दुःखथी प्राप्त थता एवा विषयसुखना क्लेशोने पण धिक्कार छे, तेम मधथी लेपयुक्त थएली खड्गनी धाराने चाटवा सरखा लाभोने पण धिक्कार छे. अथवा ऋषिओए धर्मशास्त्रोमां कहेलुं एवुं कंइक दुष्कर्म में पूर्व भवमां करेलुं छे. (ते दुष्कर्म कयुं ? तो के पशु पंखी अथवा माणसोनां बालकोनो में तेमनां मातपिताथी वियोग पडाव्यो लागे छे) अथवा अधम बुद्धिवाली एवी जे हुं, तेणीए शुं नानां वाछरडांओने तेमनी माताओथी वियोग कराव्यो छे ? वली तेओने दूधनो में अंतराय कर्यो छे, अथवा कराव्यो छे, अथवा शुं बच्चांओ सहित में उंदरनां दरो पाणीएथी पूर्यां छे ? अथवा शुं में इंडा अने बच्चांओ सहित पक्षीओना माला नीचे जमीन पर पाडी नाख्या छे ? अथवा कोयल, पोपट तथा कुकडा आदिकनां बच्चांओनो में शुं वियोग कराव्यो छे ? अथवा में शुं बालहत्या करी छे ? अथवा शोकोनां बालको पर में शुं दुष्ट विचारो चिंतव्या छे ? अथवा में कंइ कामण आदिक कर्यां छे ? अथवा में कोइना गर्भोनुं स्तंभन, नाश अथवा पाडवा प्रमुख शुं कर्युं छे? अथवा ते संबंधी कंइ में मंत्र अथवा औषधो कर्यां छे ? अथवा भवांतरमां में शुं घणीवार शीलखंडन कर्युं छे ? कारण के ते विना जीवोने आवुं दुःख होय नहीं. मोह राजाने जोर थएली, तथा तेथी करमाइ गएला कमल सरखुं छे मुख जेणीनुं, एवी ते

त्रिशला राणीने जोवाथी सखीओए तेनुं कारण तेणीने पूछ्युं. त्यारे ते त्रिशला क्षत्रियाणी आंखोमां अश्रु लावीने, निःश्वास सहित वचने करीने कहेवा लागी के, हुं मंदभाग्यवाली हवे शुं कहुं? मारुं तो जीवित पण चाल्युं गयुं छे. त्यारे सखीओए कह्युं के हे सखि, बीजुं सघलुं अमंगल शांत थाओ? पण तारा गर्भने तो कुशल छे के नहीं? ते वात हे चतुर सखि, तुं सत्य कहे? त्यारे तेणीए कह्युं के हे सखीओ! ज्यारे मारा गर्भनेज कुशल होय त्यारे तो बीजुं मारे शुं अकुशल छे? इत्यादिक कहीने मूर्छा खाइने ते पृथ्वी पर पडी. पछी सखीओए शीतल पवन आदिकथी घणा उपचारो कर्याथी तेणीने चैतन्य आव्या बाद पाछी ते रुवा लागी. अपार पाणीवाला, मोटा तथा रत्नोनां निधानरूप एवा समुद्रमां पडेलो छिद्रवालो घडो ज्यारे भराइ शकतो नथी, त्यारे तेमां समुद्रनो शो दोष छे? वली वसंत ऋतुमां ज्यारे सघली वनस्पतिओ प्रफुल्लित थाय छे, अने ते वखते ज्यारे कंथेरने (केरडानां वृक्षने) पत्रो आवतां नथी, तेमां वसंत ऋतुनो शो दोष छे? उंचुं अने सीधुं एवुं वृक्ष घणां एवां फलोना भारे करीने ज्यारे नमेलुं छे, अने ते उपरनां फलने ज्यारे कुबडो माणस मेलवी शकतो नथी, त्यारे ते वृक्षनो शो दोष छे? माटे हे प्रभु! ज्यारे हुं मारा इच्छितने मेलवी शकती नथी तेमां तमारो शुं दोष छे? तेमां मारां कर्मनोज दोष छे, केमके घुवड ज्यारे दिवसे जोइ शकतो नथी, त्यारे तेमां सूर्यनो शो दोष छे? माटे हवे तो मारे मरणनुंज शरण लेवुं, केमके फोकट जीववा वडे करीने शुं? एवी रीते तेणीना विलापने सांभलीने सघली सखीओ आदिक परिवार पण रुवा लाग्यो. अरे!! आ शुं थइ गयुं? कारण विना दैव वैरीरूप थयो छे; अरे! कुलदेवीओ! तमो क्यां गइओ? आम उदासीन थइने केम बेठी छो? हवे एवी रीते विघ्न आवी पडते छते विचक्षण एवी कुलनी वृद्ध स्त्रीओ शांति तथा मंत्रना उपचारो तथा मानता आखडी (बाधा) आदिक करवा लागी, जोशीओने बोलावीने पूछवा लागी. नाटक आदिकने अटकाववा लागी. तथा अत्यंत उंचा सादनां वचनोने निवारवा लागी. उत्तम बुद्धिवालो एवो राजा

पण लोको सहित चिंतातुर थयो, तथा सघला मंत्रीउ पण हवे शुं करवुं ? एवी रीते अत्यंत विमूढ थया.

हवे ते अवसरने विषे सिद्धार्थ राजानुं ज्ञवन केवुं थयुं हतुं ? ते सूत्रकार पोते वर्णवे छे. ते सिद्धार्थ राजानुं ज्ञवन, मृदंग कहेतां मर्दल, तंत्री एटले वीणा, ताल एटले हाथनी तालीउं, तथा नाटकनां पात्रो तेउंनुं जे मनोज्ञपणुं ते निवृत्त थएलुं छे जेमां एवुं थयुं, अने तेथी करीने विमनस्क कहेतां चपलचित्तवालुं थयुं. एवी रीतनो वृत्तांत ते श्रमण ज्ञगवंत श्री महावीर प्रज्ञु गर्ज्ञमां रह्या थका, अवधिज्ञानथी जोइने विचारवा लाग्या के हवे शुं करवुं ? अथवा कोने कहेवुं ? मोहनी गति आवी रीतनीज छे. दुष्ट धातुनी पेठे अमारो जे गुण ते उलटो दोषनी पुष्टि वास्ते थयो. में तो मारी माताना सुख माटे कर्युं, ते उलटुं तेणीना खेद माटे थयुं. माटे आ ज्ञावी एवो जे कलिकाल तेने सूचववावालुं आ लक्षण छे. माटे जेम नालीयेरना पाणीमां नाखेलो कपूर मृत्यु माटे थाय छे, तेम आ पंचम आरामां गुण पण दोषने करनारो थशे. एवी रीते श्रमण ज्ञगवंत श्री महावीर प्रज्ञु माताने उत्पन्न थएला एवी रीतना पोताना संबंधी इछित, प्रार्थित अने मनमां रहेला संकल्पने अवधिज्ञानथी जाणीने एक देश कहेतां आंगली आदिकथी कंपता हवा. ते जाणीने ते त्रिशला क्षत्रियाणी हर्षित थइ थकी, तथा संतुष्ट थइ थकी कहेवा लागी. शुं कहेवा लागी ? ते हवे कहे छे. निश्चे मारो गर्ज्ञ हरायेलो नथी, मृत्यु पामेलो नथी, चवेलो नथी, अने गली गयो पण नथी. ए मारो गर्ज्ञ पूर्वे हालतो नहोतो; परंतु हमणां हाले छे एम कहीने हर्ष पामेली, प्रसन्न थयेली, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाली त्रिशला क्षत्रियाणी आ प्रमाणे विलास करवा लागी. एवी रीते ते त्रिशला क्षत्रियाणी केवी रीते हर्षित थइ ? तेनुं हवे वर्णन करे छे. उलसायमान थयेलां छे नयनयुगल जेणीनां, तथा स्मेर थयेला छे कपोल जेणीना, तथा प्रफुल्लित थयेल छे मुखरूपी कमल जेणीनुं, तथा जाणेल छे गर्ज्ञने कुशलपणुं जेणीए तथा रोमांचित थयेल छे कंचुक जेणीनो

एवी थइ थकी मधुर वाणीथी कहेवा लागी के, मारा गर्नने कल्याण छे. अर ! । धिक्कार छे ! क म अति मोहयुक्त मतिपणाए करीने कुविकल्पो चिंतव्या; हजु मारां नाग्यो विद्यमान छे, तेम हुं त्रणे नुवनोमां माननीय छुं, तथा धन्य छुं. मारुं जीवित वखाणवालायक छे, तथा मारो जन्म कृतार्थपणाने प्राप्त थयो छे. श्री जिनेश्वर प्रनु मारा प्रत्ये प्रसादयुक्त थयेला छे, तथा गोत्रदेवीए पण मारा पर कृपा करी छे, अने छेक जन्म पर्यंत जे में जिनधर्मरूपी कल्पवृक्षनी आराधना करी, ते आज मारी सफल थइ छे. एवी रीते अत्यंत हर्षयुक्त चित्तवाली त्रिशला देवीने जोइने वृद्ध स्त्रीउनां मुखकमलोमांथी " जय जय नंदा " इत्यादि आशीषना ध्वनिउ नीकलवा लाग्या. वली कुलांगनाउ हर्षपूर्वक मनोहर एवां धवलो गावा लागी. तथा ध्वज, पताकाउ उडवा लागी, मोतीउना साथीआउ पूरावा लाग्या, तथा ते वखते सघलुं राजकुल आनंदमय थइ रह्युं. तथा वाजित्र, गीत अने नाटकोए करीने समस्त राजकुल देवलोक सरखी शोनावालुं थयुं, तथा क्रोमो गमे धननां वधामणांउने सिद्धार्थ राजाए ग्रहण कर्यां, तथा क्रोमो गमे धन आप्युं अने एवी रीते सिद्धार्थ राजा अत्यंत हर्षयुक्त थयो थको कल्पवृक्षनी पेठे शोनवा लाग्यो.

ते वार पछी श्रमण नगवंत श्रीमहावीर प्रनु गर्नमां रह्या थकाज पक्षथी अधिक छ मास, एटले साका छ महिनाउ गये छते, आवी रीतना अनिग्रहने ग्रहण करता हवा. ते कयो अनिग्रह ? ते हवे कहे छे. खरेखर मारां मातापिता ज्यांसुधी जीवे, त्यांसुधी मारे लोच करी घरथी नीकलीने अणगारपणुं एटले दीक्षा लेवी नहीं. एवी रीतना अनिग्रहने तेमणे ग्रहण कर्यो. हुं उदरमां छुं त्यारे पण मारी मातानो मारा पर ज्यारे आवो स्नेह छे, त्यारे ज्यारे मारो जन्म थशे, त्यारे तो ते स्नेह केवो थशे ? एवी रीतनी बुद्धि लावीने तेमणे एवो अनिग्रह ग्रहण कर्यो, अने वली बीजाउने पण माताने विषे बहु मान देखामवा माटे तेमणे तेम कर्युं. केमके कह्युं छे के पशुउ ज्यांसुधी माता धवरावे छे, त्यांसुधी स्नेह राखे छे, अधम माणसो ज्यांसुधी स्त्री मले छे, त्यांसुधी माता पर स्नेह राखे छे,


चित्र १९.
आकाशमां देव दुंदुभी
सूतिका गृह.
दिग्. कुमारिका.
दिग्. कुमारिका.
भगवान.

हजार अंगरक्षको होय, सात लश्कर तथा तेना [illegible] होय, तथा बीजा पण महर्धिक देवो होय; तथा तेउ आभियोगिक देवोए योजनप्रमाण करेलां विमानोमां बेसीने त्यां आवे छे. एवी रीते दिक्कुमारिकाउनो महोत्सव जाणवो.

ते वार पछी पर्वत सरखुं निश्चल एवुं इंद्रनुं आसन चलायमान थयुं, त्यारे इंद्रे अवधिज्ञानथी छेल्ला तीर्थंकरनो जन्म थयो एम जाण्युं, अने तेथी तेणे वज्रमय एवी योजननी सुघोषा नामनी घंटा नैगमेषी देव पासे वगडावी अने तेथी सघलां विमानोमां रहेली घंटाउ पण वागवा लागी. पछी ते नैगमेषी देवे उंचे प्रकारे पोतेज इंद्रनो हुकम देवोने जणाव्यो, अने तेथी देवो पण हर्षयुक्त थइ चालवानी तैयारी करवा लाग्या. पालक नामना देवे बनावेला तथा लाख योजनना मानवाला एवा पालक नामना विमान पर इंद्र बेठो; ए पालक नामना विमानमां इंद्रना आसननी [illegible] अग्रमहिषीउनां आठ भद्रासनो हतां, डाबी बाजुमां चोराशी हजार सामानिक देवोनां चोराशी हजार भद्रासनो हतां, दक्षिण बाजुमां बार हजार अभ्यंतर पर्षदानां बार हजार भद्रासनो हतां, तथा चौद हजार मध्य पर्षदानां चौद हजार भद्रासनो हतां, एवी रीते सोल हजार बाह्य पर्षदानां सोल हजार भद्रासनो हतां, पाछलना भागमां सात सेनापतिउनां सात भद्रासनो हतां. चारे दिशाउमां प्रत्येकमां चोराशी हजार आत्मरक्षक देवोनां चोराशी हजार भद्रासनो हतां. तथा एवी रीते बीजा पण घणा देवोथी वींटाएलो तथा सिंहासन पर बेठेलो, तथा गवाता छे गुणो जेना एवो ते इंद्र त्यांथी चालवा लाग्यो, तथा बीजा देवो पण एवी रीते त्यांथी चालवा लाग्या. तेओमां केटलाक तो इंद्रना हुकमथी, केटलाक मित्रना अनुवर्तनथी, केटलाक स्त्रीउथी (देवीउथी) प्रेरायेला, केटलाक पोतानाज भावथी, केटलाक कौतुकथी, केटलाक विस्मयपणाथी तथा केटलाक भक्तिथी, एवी रीते सघला देवो विविध प्रकारनां वाहनोए करीने युक्त थया थका चालवा लाग्या. ते वखते विविध प्रकारनां वाजित्रोना शब्दोथी तथा घंटाओना नादोथी तथा देवोना

कोलाहलथी सघलुं ब्रह्मांड गाजी रह्युं. तेओमांथी सिंह पर स्वार थयेलो देव हाथी पर स्वार थयेला देवने कहेवा लाग्यो के तारा हाथीने तुं दूर कर, केमके नहींतर मारो आ जोरावर केसरी सिंह खरेखर तारा हाथीने मारी नाखशे. तथा एवीज रीते पाडा पर बेठेलो घोडे स्वारने, गरुड पर बेठेलो सर्पवालाने तथा चित्रा पर बेठेलो बकरा पर बेठेलाने आदरपूर्वक कहेवा लाग्यो. ते वखते देवोनां क्रोडो गमे विमानो आदिक वाहनोए करीने विस्तीर्ण एवो पण आकाशमार्ग सांकडो थइ गयो. केटलाक देवो तो मित्रने पण तजीने दक्षपणाए करी अगाडी जता हवा. तथा बीजो देव वली कोइने एम कहेतो हवो के हे भाइ! तुं जरा मारे माटे थोडी वार तो थोभ. केटलाक तो वली एम कहेवा लाग्या के हे देवो! पर्वना दिवसो तो एवी रीते सांकडाज होय छे, माटे हमणां तो मौन करीनेज चालो. एवी रीते आकाशमां आवता थका देवोनां मस्तको पर चंद्रनां किरणो पडवाथी तेउ "निर्जर" छतां पण जाणे जरायुक्त थयेला होय तेम शोभता हवा. (केमके तेमनां मस्तको चंद्रनां किरणोथी सफेद लागतां हतां.) देवोनां मस्तक पर रहेला ताराउ घटिका सरखा, कंठमां कंठा सरखा तथा शरीर पर पसीनानां बिंदुउ सरखा शोभता हता. एवी रीते इंद्र नंदीश्वर द्वीप पासे विमानने संक्षेपीने त्यां आव्यो, तथा जिनेंद्र अने तेमनी माताने तेणे त्रण प्रदक्षिणा करी, तथा तेमने नमस्कार करी ते कहेवा लाग्यो के हे रत्नकुक्षि! तथा जगत्मां दीपिका सरखी माता! तमारा प्रत्ये नमस्कार थाउ. हुं देवोनो स्वामी इंद्र छुं, तथा देवलोकथी अहीं आव्यो छुं, तथा आ प्रभुनो हुं जन्ममहोत्सव करीश. माटे हे माता! तमारे डरवुं नहीं, एम कही तेणीने अवस्वापिनी निद्रा तेणे आपी; तथा जिनेश्वर प्रभुनुं प्रतिबिंब करीने ते


सूतिका गृह.
इन्द्र पांच
रूपें करीने
प्रभुने लई
जायछे.

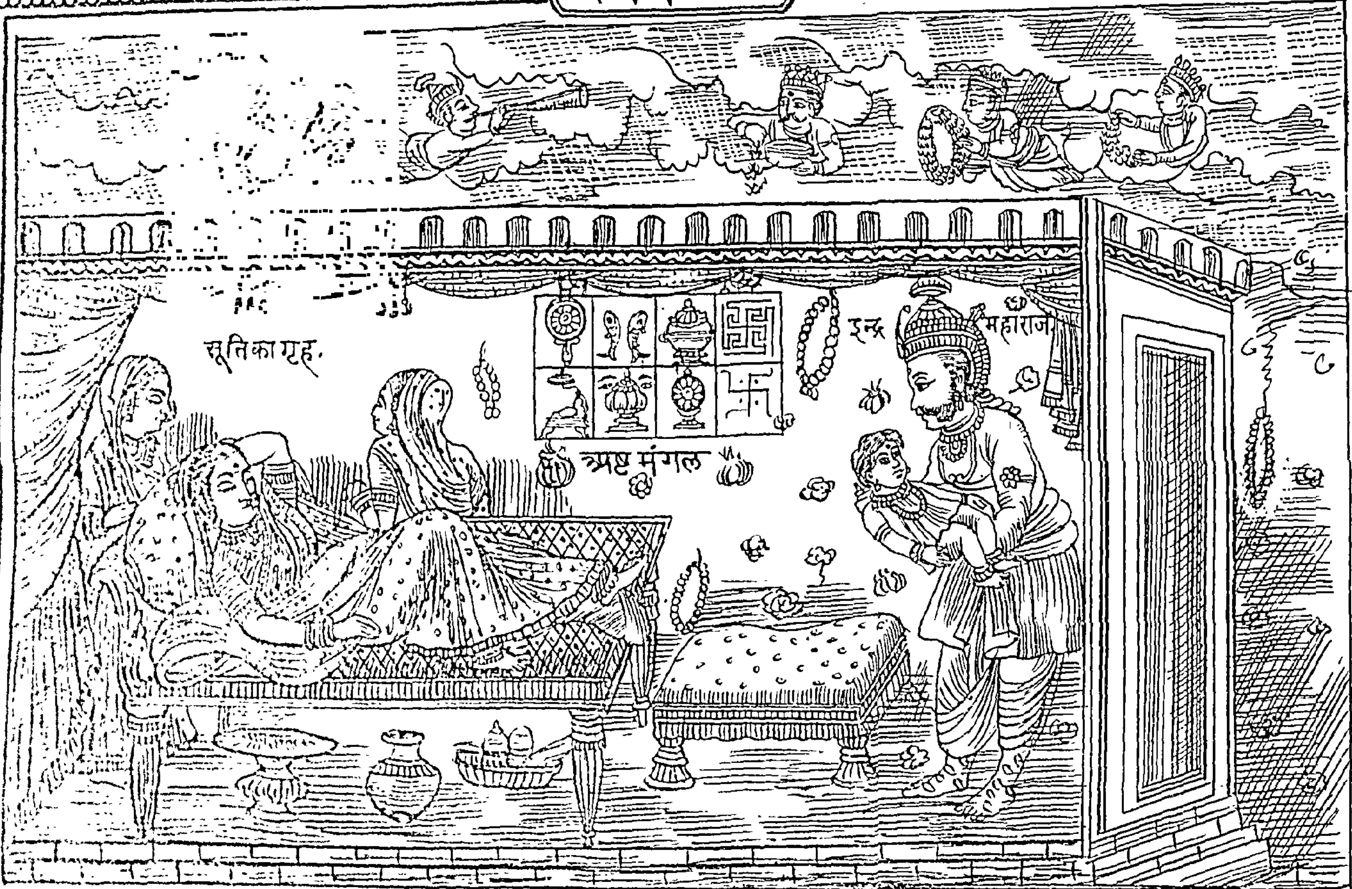
हवे देवोमांथी जे अगारी होय छे, ते पछाडी रहेलाने धन्य माने छे, तथा पछाडी रहेलो अगारी रहेलाने धन्य माने छे, तथा केटलाक अगारीना [illegible] मां गयेला देवो प्रभुने जोवा माटे पोतानी पीठमां पण नेत्रने इछवा लाग्या. एवी रीते इंद्र मेरु पर्वतना शिखर पर जइ, त्यां दक्षिण भागमां रहेला पांडुक वनमां पांडुकंबला नामनी शिला पर [illegible] खोलामां लइ पूर्व सन्मुख ते बेठो; तथा ते वखते सघला देवो पण प्रभुना [illegible] दश वैमानिक, वीश भवनपतिओ, बत्रीश व्यंतरो, बे ज्योतिष्क एम मली चो[illegible] आव्या. त्यां सोनाना, रूपाना, रत्नोना, सोनारूपाना, सोना अने रत्नोना, रूपा अने रत्नोना, [illegible], रूपा अने रत्नना, तथा माटीना, एवा आठ जातिना प्रत्येकना एक हजार ने आठ एक योजनना मुखवाला कलशो (पचीश योजन उंचा, बार योजन पोहोला अने एक योजनना नालवाला सर्व देवोना एक करोड अने साठ लाख कलश) तथा एवी रीते भृंगार, दर्पण, रत्नकरंडक, सुप्रतिष्ठक एवा थाल, पुष्प, चंगेरिकादिक पूजानां उपकरणो, प्रत्येक कलशनी पेठे एक हजार ने आठ प्रमाणे जाणवां, तथा मागध आदिक तीर्थनी माटी, गंगादिकनां जल, पद्मसरोवर आदिकनां पाणी तथा कमलो, क्षुद्रहिमवंत, वर्षधर, वैताढ्य विजय तथा व[illegible] आदिक पर्वतो परथी सर्षव, पुष्प, गंध विगेरे सर्व प्रकारनी औषधीओने अच्युतेंद्र आभियोगिक देवोनी मारफते मगावी लेतो हवो. ते वखते वक्षःस्थल पासे राखेल छे क्षीरसमुद्रना पाणीना [illegible] एवा देवो जाणे संसारनो समूह तरवा माटे घडाओनेज तेओए धारण कर्या होय तेम [illegible] लाग्या; तथा जाणे भावरूप वृक्षने सिंचता होय अथवा पोतानो मेल जाणे धोइ नाखताज होय अथवा धर्मरूप प्रासाद उपर जाणे कलश स्थापन करता होय तेम ते देवो शोभता हवा.

हवे ते वखते इंद्रना संशयने जाणीने वीर प्रभुए जमणा अंगुठाथी चारे बाजुएथी मेरु पर्वतने कंपाव्यो; ते वखते पृथ्वी ध्रुजवा लागी, शिखरो पडवा लाग्यां तथा समुद्रो क्षोभायमान थवा लाग्या. तथा एवी रीते ब्रह्मांड फुटी जाय एवा शब्दो थते छते, क्रोध पामेल इंद्रे अवधिथी जाणी

प्रजुु पासे क्षमा मागी. असंख्याता तीर्थंकरो मांहेथी आज दिन सुधी मने कोइए पगेथी स्पर्श कर्यो नथी, अने आजे आ वीर प्रजुुए कर्यो, एवा हर्षथी जाणे ते मेरु नाचतोज होय नहीं! तेम देखावा लाग्यो. वली तेणे विचार्युं के आ स्नात्रनीरना अजिषेकथी ऊरतां सघलां ऊरणांउरूपी मैं हारो पहेर्या, तथा जिनेश्वररूपी मुकुटने धारीने हुं सघला पर्वतोनो राजा थयो हुं. हवे त्यां पहेलां अच्युतेंद्र प्रजुुने नवरावे, तथा एवी रीते अनुक्रमे ठेक चंद्र सूर्यादिक सुधी सघलाउ अजिषेक करे. अहीं कवि घटना करे ठे के, स्नात्रमहोत्सव वखते चरम तीर्थंकरना मस्तक पर श्वेत ठत्रनी पेठे आचरण करतुं, मुखरूपी चंद्र प्रत्ये किरणोना समूहनी पेठे आचरण करतुं, तथा कंठमां हारनी पेठे आचरण करतुं, तथा समस्त शरीर पर चीन देशना कपमानी पेठे आचरण करतुं, तथा इंद्रोना समूहोए उंचा करेला घमाउना समूहना मध्य जागमांथी नीचे पडतुं एवुं क्षीरसमुद्रनुं पाणी तमारी लक्ष्मीने माटे थाउ!

पठी इंद्रे पोते चार वृषजोनुं स्वरूप कर्युं, तथा तेनां आठ शिंगडांउमांथी पमता दूधथी पोते प्रजुुनुं अजिषेचन करवा लाग्यो. ते देवो प्रजुुने पाणीथी स्नान करावतां एवी रीते उलटा पोते निर्मलपणाने प्राप्त थया!! पठी तेउ मंगलदीवो तथा आरात्रिक क्रिया करीने नृत्य, गीत, वाद्य आदिकथी विविध प्रकारे महोत्सव करवा लाग्या. पठी इंद्रे गंधकाषायथ नामना दिव्य वस्त्रथी प्रजुुना अंगने लुंठीने अने चंदन आदिकथी लेपन करीने पुष्पोथी तेमनी पूजा करी. पठी इंद्रे प्रजुुनी सन्मुख रत्नना पाटला पर रूपाना चोखाए करीने दर्पण, वर्धमान, कलश, मत्स्ययुगल, श्रीवत्स, स्वस्तिक, नंदावर्त्त तथा सिंहासन, ए अष्टमंगलो आलेखीने प्रजुुनी स्तुति करवा मांमी. पठी प्रजुुने तेमनी माता पासे लावीने मूक्या, तथा पेलुं प्रतिबिंब अने अवस्वापिनी निद्राने पोतानी शक्तिथी इंद्रे पाठां ग्रहण करी लीधां.

पठी इंद्रे ओशीका प्रत्ये कुंमल अने रेशमी कपमांनी जोमी मूकी तथा चंद्रवामां श्रीदाम,


चित्र २३.
सूतिका गृह.
अष्ट मंगल
इन्द्र
महाराज


चित्र.२४.
सिद्धार्थ राजा.
दासी वधामणी आपेछे.
चोकीदार
सीपाई.

रत्नदाम अने सोनानो दडो राख्यां. तथा बत्रीश क्रोड रत्न, सोना अने रूपानी वृष्टि करीने इंद्रे आभियोगिक देवोने मोढेथी घोषणा करावी के प्रभु अथवा प्रभुनी माता तरफ जे कोइ अशुभ चिंतवशे, तेना मस्तकना अर्जुन वृक्षना मांजरनी पेठे सात टुकडा थशे. वली प्रभुना अंगुठा पर अमृत मूकीने तथा नंदीश्वर द्वीपमां अठाइ महोत्सव करीने सघला देवो पोताने स्थानके गया. एवी रीते देवोए करेलो श्री वीर प्रभुनो जन्मोत्सव जाणवो.

हवे ते अवसरने विषे प्रियंवदा नामनी दासी जलदी राजा पासे जइ ते पुत्रना जन्मना वृत्तांतने कहेती हवी. सिद्धार्थ राजा पण ते वृत्तांतने सांभलीने अत्यंत हर्षित थयो, तथा हर्षथी तेनी वाचा पण गद्गद शब्दोवाली थइ, तथा तेना शरीर पर रोमांच थयां. वली तेणीने राजाए मुकुट सिवाय सघलां आभूषणो वधामणीमां आप्यां, तथा तेणीनुं माथुं धोवरावीने तेने दासीपणाथी मुक्त करी.

जे रात्रिने विषे श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु जन्म्या ते रात्रिने विषे कुबेरनी आज्ञा माननारा घणा तिर्यग्जृंभक देवताओ सिद्धार्थ राजाना घरने विषे रूपानी वृष्टि, सोनानी वृष्टि, हीरानी वृष्टि, वस्त्रनी वृष्टि, आभरणनी वृष्टि, नागरवेल विगेरे पांदडांनी वृष्टि, पुष्पनी वृष्टि, नालियेर विगेरे फलनी वृष्टि, शालि विगेरे बीजनी वृष्टि, पुष्पमालानी वृष्टि, सुगंधनी वृष्टि, वासक्षेपनी वृष्टि, हिंगलादिक वर्णनी वृष्टि तथा द्रव्यनी वृष्टि वरसाववा लाग्या.

पछी सिद्धार्थ राजाए भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोए तीर्थंकरना जन्माभिषेकनो उत्सव कर्ये छते प्रभात कालना अवसरे नगरना आरक्षकोने बोलाव्या अने बोलावीने तेमने कह्युं के हे देवानुप्रियो, तमे शीघ्र आ क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां जे केदखानांओ होय तेने साफ करो, अर्थात् तेमां रहेला केदीओने छोडी मूको; केमके कह्युं छे के युवराजना अभिषेक वखते, शत्रुना राज्यनो नाश करती वखते, तथा पुत्रजन्मना महोत्सवने दिवसे केदीओने बंधन-

मुक्त कराय छे. वली तमो मान एटले रस अने धान्यना विषयरूप, तथा उन्मान एटले जोखाय ते, ते सघलामां वधारो करो; अने तेम करीने आ क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरने अंदरथी अने बहारथी पण तमे अत्यंत शोभायुक्त करो. ते नगरने केवी रीते शोभायुक्त करो ? ते हवे कहे छे. सुगंधी जलनो छंटकाव करीने तेथी आसिक्त करो, तथा कचरो विगेरे दूर करो तथा छाण आदिकथी लींपावो. वली केवुं करो? तो के शृंगाटक कहेतां त्रण खुणावालां स्थानको, त्रिक कहेतां ज्यां त्रण मार्गो भेगा थाय एवां स्थानको, चतुष्क कहेतां ज्यां चार मार्गो भेगा थाय एवां स्थानको, चत्वर कहेतां ज्यां अनेक मार्गो भेगा थाय एवां स्थानको, चतुर्मुख कहेतां देवालय आदिक, महापथ कहेतां राजमार्ग, पंथ कहेतां सामान्य मार्गो, एटलां स्थानकोमां पाणीए करीने सिंचेला, अने तेथी करीनेज पवित्र तथा कचरो विगेरे दूर करवाथी शोभायुक्त करेला, एवा जे रथ्यांतर कहेतां मार्गना मध्यभागो तथा आपणवीथि कहेतां दुकानोना मार्गो अर्थात् बजारो, ते छे जेनी अंदर एवुं. तथा वली ते नगर केवुं ? तो के मंच कहेतां महोत्सव जोवा माटे लोकोए बेसवा माटे करेला झरुखाओ, तथा अतिमंच कहेतां तेओनी पण उपर करेल झरुखाओ, तेओए करीने शहेरने शोभायुक्त करो. वली ते नगर केवुं ? तो के नाना प्रकारनी रंगबेरंगी जे ध्वजाओ (कहेतां जेनी अंदर सिंह आदिकनां चित्रामणोए करीने सहित एवां मोटां लुगडांओ लटकी रह्यां छे एवी ध्वजाओ) तथा पताका कहेतां नानी ध्वजाओ, तेओए करीने शोभायुक्त करो. वली ते नगर केवुं ? तो के छाण आदिकथी भूमि पर लेपनवालुं तथा चाक आदिकथी भितो पर करेली छे सफेदाइ ज्यां एवुं करीने पूजना कर्या सरखुं करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के गोशीर्ष चंदन तथा रसयुक्त एवुं जे रक्तचंदन, तथा दर्दर एटले पर्वतमां उत्पन्न थयेलुं जे चंदन, तेओए करीने भित आदिक पर दीधेला छे पांच आंगलीओना हाथाओ ज्यां एवुं ते नगर करो. वली ते नगर केवुं ? तो के घरनी अंदर चोकीओ पर राखेल छे चंदनना कलशो ज्यां एवुं

करो. वली ते नगर केवुं ? तो के बारणांओना भागोमां चंदनना कलशोए करीने करेलां छे तो-रणो जेमां एवुं ते नगर करो. वली ते नगर केवुं ? तो के भूमि पर तथा उपरना भागमां पण वि-स्तीर्ण अने गोल आकारवालो लटकावेल छे पुष्पोनी मालाओनो समूह जेमां एवुं ते नगर करो. वली ते नगर केवुं ? तो के पंच वर्णना तथा रसे करीने युक्त अने सुरभि कहेतां सुगंधवाला एवा जे पुष्पोना समूहो, तेओनो करेल जे उपचार कहेतां शोभा, तेणे करीने ते नगरने युक्त करो. वली ते नगर केवुं ? तो के बलता एवा कृष्णागरु, श्रेष्ठ कुंडुरुक्क, तुरुष्क विगेरे जातिना धूप-थी मघमघी रहेला सुगंधथी अत्यंत मनोहर एवुं करो तथा चूर्णोना श्रेष्ठ सुगंधथी उत्तम सुगंधवालुं करो तथा सुगंधनी गोटी सरखुं करो. वली ते नगर केवुं ? तो के नट कहेतां नाटक करावनारा तथा नर्तक कहेतां पोते नाचनारा, तथा जल्ला एटले दोरीओ पर खेल करनारा, तथा मल्ल, तथा मुष्टीओथी युद्ध करनारा, तथा विडंबक एटले माणसोने हास्य कुतूहल करावनारा विदूषको, अ-थवा जेओ मोढांओना चालाओ करीने कुदे छे तेओ, छेकनारा तथा नदी विगेरेने तरनारा तथा रसे करीने युक्त एवी वार्त्ताउंना करनाराओ तथा सुंदर कथा कहेनारा तथा लासक कहेतां रास रमनाराओ, तथा आरक्षको कहेतां कोटवालो, तथा लंख कहेतां वांस पर चडी तेना अग्रभाग पर खेल करनाराओ, तथा मंख कहेतां हाथमां छवीउं राखी भिक्षा मागनाराओ के जेओ 'गौरीपुत्रो' एवा नामथी प्रसिद्ध छे तेओ, तथा तूण नामनां वाजित्र वगाडनाराउं, तथा तुंबवीणिका एटले वीणा वगाडना-राउं, तथा जेउं तालीउं वगाडीने कथाओ कहे छे एवा लोको, तेउंए करीने संयुक्त, एवा आ क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरने तमो पोते करो, बीजाउं पासे तेम करावो अने तेम करीने तथा करावीने हजारो गमे गाडांनां धोंसरांउं तथा प्रसिद्ध एवां हजारो गमे मुशलो उत्सवनी अंदर उभां करावो. (तेम करावावानी मतलब ए के ते महोत्सव चालते छते, तेम करवाथी, गाडां खे-डवानी तथा खांडवा आदिकनी मनाइ करेली छे, एम वृद्ध आचार्योनो मत छे.) एम करीने

ते मारी आज्ञा तमो पाछी आपो. तथा पाछी आपीने आवीने मने कहो के तमारी आज्ञा प्रमाणे सघलुं तैयार कर्युं छे.

एवी रीते सिद्धार्थ राजाथी आज्ञा कराएला ते कौटुंबिक पुरुषो हर्ष पाम्या, संतोष पाम्या, यावत् हर्षथी पूर्ण हृदयवाला थया छता बे हथेलीथी यावत् अंजलि करीने ते सिद्धार्थ राजानी आज्ञा सांभली तरतज क्षत्रियकुंडग्राम नगरमां बंदिजनने छोडी मूकवाथी आरंभीने हजारो मुशल ऊभा करवा सुधीनां सर्व कार्य करीने ज्यां सिद्धार्थ राजा हता त्यां आव्या अने आवीने तेमने तेमनी आज्ञा पाछी सोंपता हवा.

ते वार पछी ते सिद्धार्थ राजा, ज्यां कसरतशाला हती त्यां गया; तथा त्यां जइ आवीने सर्व प्रकारनी ऋद्धिए करीने युक्त, तथा सर्व युक्तिए करीने एटले सघली उचित वस्तुओना संयोगे करीने युक्त, सर्व सैन्य वडे करीने, तथा पालखी घोडा आदिक सर्व प्रकारनां वाहनोए करीने, तथा परिवार आदिकना समूहे करीने, तथा सघला अंतःपुरे करीने, तथा सघली पुष्प, गंध, वस्त्र, माल्य, अलंकार आदिकनी जे शोभा, तेणे करीने, तथा सघला प्रकारनां वागतां एवां जे वाजित्रो, तेना निनादो कहेतां शब्दोए करीने, तथा वाजित्रोना एकी वखते थता शब्दोए करीने, तथा शंख, माटीना पटह, तथा भेरी, तथा झालर, तथा खरमुखी एटले काहला नामनुं वाजित्र, तथा मुरज कहेतां ढोल, तथा मृदंग तथा दुंदुभि, ए सघलां वाजित्रोनो जे मोटो शब्द, तथा तेना पडघारूप थतो जे प्रतिशब्द, तेणे करीने, तथा एवी रीते सामग्री सहित सिद्धार्थ राजा दश दिवस सुधी महोत्सवपूर्वक कुलमर्यादा करता हवा. हवे ते कुलमर्यादा केवी ? ते कहे छे. तेणे वेचाण थती वस्तुओने जगातथी मुक्त करी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के कर कहेतां दरेक वर्षे राजाओ जे प्रजा पासेथी ले छे ते करे करीने प्रजाने रहित करी, अर्थात् कर माफ कर्या; अने तेथीज सघलाओने हर्षना हेतुरूप होवाथी उत्कृष्ट एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के जे जे वस्तुओ जे जे माणसोने जोती

होय, ते ते वजारमांथी मूल्य दीधा विनाज लोकोए ग्रहण करवी, केमके तेनु मूल्य राजा आपशे एवी रीतनी जाहेरखबरवाली, अने तेथी करीनेज अमेय कहेतां प्रमाण विनानी वस्तु मेलवी शकाय एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नास्तिकोने घेर पण राजानी आज्ञाने आपनारा राजपुरुषोनो छे प्रवेश जेनी अंदर एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के दंड कहेतां राजा वडे अपराधना प्रमाणमां प्रजा पासेथी ग्रहण करातुं जे धन ते, तथा कुदंड कहेतां मोटो अपराध होते छते पण अल्प एवो जे राजा दंड ले छे ते, ते बन्नेथी रहित एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के करजे करीने पण रहित एवी अर्थात् सघलानुं करज पण राजा आपशे एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी? तो के उत्तम एवी गणिकाओ, तथा नाटकमां जोडायेलां पात्रोए करीने सहित एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के अनेक एवा जे प्रेक्षाकारी, तेउए करीने सेवित थयेली. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नथी तजायेलां मृदंगो जेनी अंदर एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के नथी करमायेली पुष्पनी मालाओ जेनी अंदर एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के प्रमुदित कहेतां हर्षवंत, अने तेथी करीनेज क्रीडा करवाने लागेला छे नगरना लोको सहित देशना लोको जेनी अंदर एवी. एवी रीतनी उत्सवरूप कुलमर्यादा सिद्धार्थ राजा दश दिवस सुधी पालता हवा.

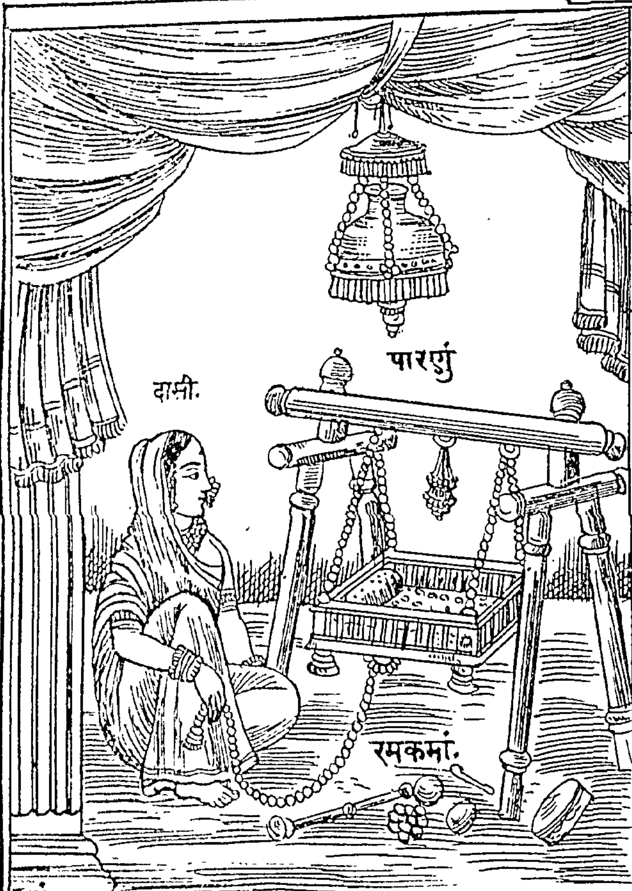
पछी ते सिद्धार्थ राजा, तेवी रीते दश दिवस सुधी कुलमर्यादा पालते छते, सेंकडो, हजारो अने लाखो प्रमाणे अरिहंतनी प्रतिमानी पूजाओ करता हवा; केमके प्रभुनां मातपिता श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां संतानना श्रावको हता. "यज" धातु देवपूजाना अर्थने कहेनारी छे, माटे अहीं "याग" एवा शब्दथी प्रतिमानी पूजाज ग्रहण करवी, केमके बीजा यज्ञोनो असंभव छे; वली तेओ पार्श्वनाथ प्रभुनां संतानना श्रावको हता, एम आचारांगमां कहेलुं छे. वली ते राजा पर्वने दहाडे दानने अने मानेली मानताने पोते देता अने सेवको पासे देवरावता छता सेंकडो, हजारो अने लाखो एवां वधामणांने पोते ग्रहण करता अने सेवको पासे ग्रहण करावता छता आ प्रकारे महोत्सव करता हवा.

ते वार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनां मातापिताए पहेले दिवसे एवी रीते कुल-मर्यादा करी. तथा त्रीजे दिवसे चंद्र सूर्य देखाडवानो महोत्सव करता हवा.

तेनो विधि नीचे प्रमाणे जाणवो. जन्मथी मांडी बे दिवस जाते छते, गृहस्थ गुरु अरिहंत प्रभुनी प्रतिमा पासे रूपानी चंद्रनी मूर्तिने प्रतिष्ठित करीने पूजीने विधिपूर्वक स्थापे. ते वार पछी स्नान करेली तथा उत्तम वस्त्राभूषणो पहेरेली एवी प्रभुनी माताने पुत्र सहित, चंद्रनो उदय होते छते, प्रत्यक्ष चंद्रनी सन्मुख लइ जइने "ॐ अर्हं चंद्रोऽसि, निशाकरोऽसि, नक्षत्रपतिरसि, सुधाकरोऽसि, औषधीगर्भोऽसि, अस्य कुलस्य वृद्धिं कुरु स्वाहा" एवी रीतनो चंद्रनो मंत्र उच्चारण करतो थको चंद्रने देखाडे; पछी माता पुत्र सहित थइ थकी गुरुने नमे; त्यारे गुरु पण आशीर्वाद आपे के सघली औषधीओए करी मिश्रित थयेल छे किरणोनी पंक्ति जेनी, तथा सघली आपदाओने हरवामां जे प्रवीण छे एवो आ चंद्र हमेशां प्रसन्न थयो थको तमारा समस्त वंशने विषे वृद्धि करो. एवीज रीते सूर्यनुं पण दर्शन करावे; तेमां मूर्ति सोनानी अथवा तो त्रांबानी करे, अने मंत्र नीचे प्रमाणे बोले. "ॐ अर्हं सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, तमोऽपहोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, जगच्चक्षुरसि प्रसीद". पछी गुरु आशीर्वाद आपे के सघला देव अने असुरोने वंदनीय, सर्व अपूर्व कार्योना करनारा तथा त्रण जगतने चक्षु समान एवा सूर्य पुत्र सहित तमोने मंगलना देनारा थाओ. एवी रीते चंद्र सूर्यनां दर्शननो विधि जाणवो. हमणांना कालमां तो तेने बदले बालकने आरिसो देखाडे छे.

ते वार पछी छठे दहाडे एटले कुलधर्मे करीने छठी रात्रिए जागता थका जागरणमहोत्सव करे. एवी रीते अग्यारमो दिवस गये छते अशुचि एवां जे जन्मकार्यो, जेवां के नालछेद इत्यादि कार्यो समाप्त होते छते अने बारमो दिवस आवते छते प्रभुनां मातापिताए घणां एवां अशन, पान, खादिम अने स्वादिम एम चार प्रकारनां भोजन तैयार कराव्यां; अने तेम करावीने मित्रोने, ज्ञाति

चित्र २५.



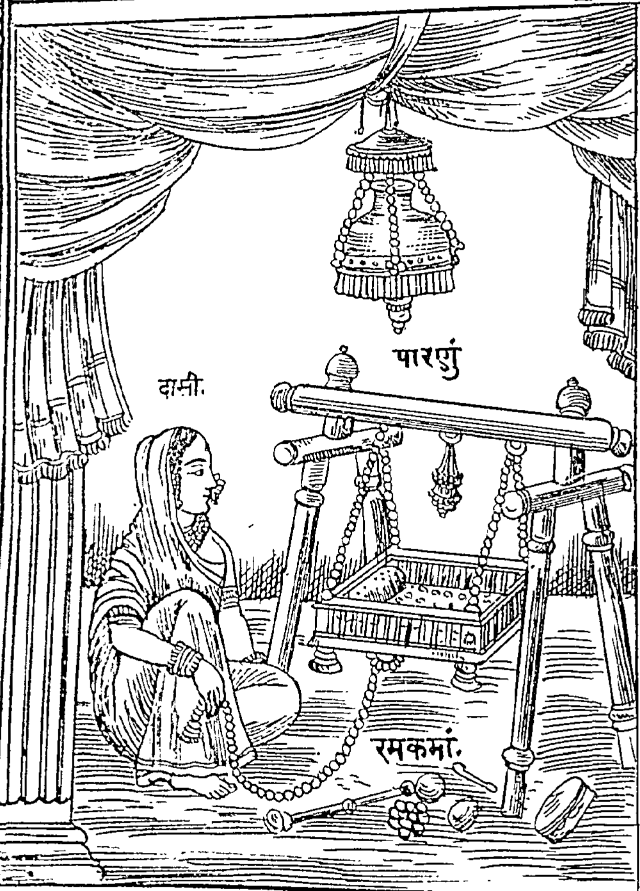


ते वार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनां मातापिताए पहेले दिवसे एवी रीते कुल-मर्यादा करी. तथा त्रीजे दिवसे चंद्र सूर्य देखाडवानो महोत्सव करता हवा.

तेनो विधि नीचे प्रमाणे जाणवो. जन्मथी मांडी बे दिवस जाते छते, गृहस्थ गुरु अरिहंत प्रभुनी प्रतिमा पासे रूपानी चंद्रनी मूर्तिने प्रतिष्ठित करीने पूजीने विधिपूर्वक स्थापे. ते वार पछी स्नान करेली तथा उत्तम वस्त्राभूषणो पहेरेली एवी प्रभुनी माताने पुत्र सहित, चंद्रनो उदय होते छते, प्रत्यक्ष चंद्रनी सन्मुख लइ जइने "ॐ अर्हं चंद्रोऽसि, निशाकरोऽसि, नक्षत्रपतिरसि, सुधाकरोऽसि, औषधीगर्भोऽसि, अस्य कुलस्य वृद्धिं कुरु स्वाहा" एवी रीतनो चंद्रनो मंत्र उच्चारण करतो थको चंद्रने देखाडे; पछी माता पुत्र सहित थइ थकी गुरुने नमे; त्यारे गुरु पण आशीर्वाद आपे के सघली औषधीओए करी मिश्रित थयेल छे किरणोनी पंक्ति जेनी, तथा सघली आपदाओने हरवामां जे प्रवीण छे एवो आ चंद्र हमेशां प्रसन्न थयो थको तमारा समस्त वंशने विषे वृद्धि करो. एवीज रीते सूर्यनुं पण दर्शन करावे; तेमां मूर्ति सोनानी अथवा तो त्रांबानी करे, अने मंत्र नीचे प्रमाणे बोले. "ॐ अर्हं सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, तमोऽपहोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, जगच्चक्षुरसि प्रसीद". पछी गुरु आशीर्वाद आपे के सघला देव अने असुरोने वंदनीय, सर्व अपूर्व कार्योना करनारा तथा त्रण जगतने चक्षु समान एवा सूर्य पुत्र सहित तमोने मंगलना देनारा थाओ. एवी रीते चंद्र सूर्यनां दर्शननो विधि जाणवो. हमणांना कालमां तो तेने बदले बालकने आरिसो देखाडे छे.

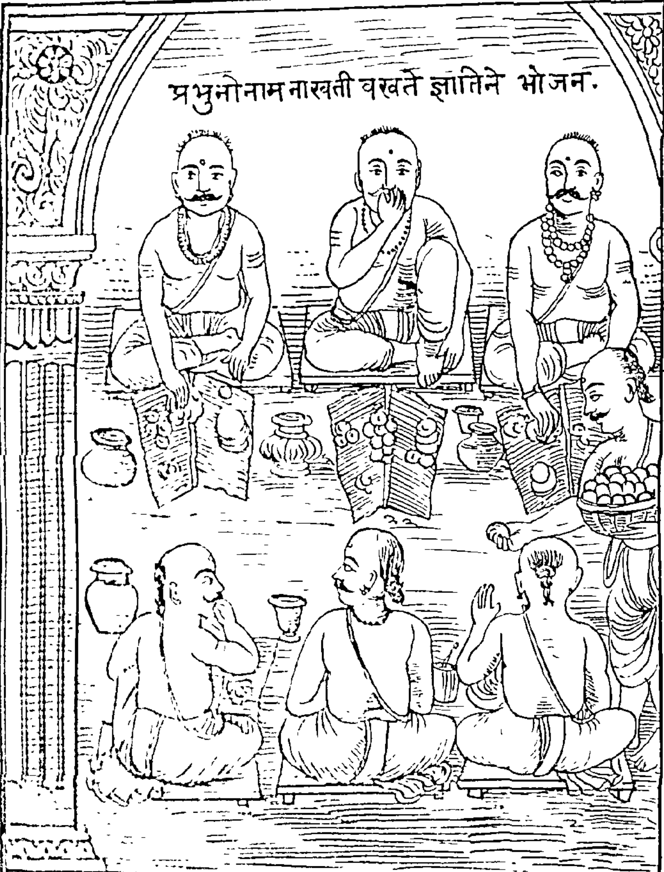
ते वार पछी छठ्ठे दहाडे एटले कुलधर्मे करीने छठ्ठी रात्रिए जागता थका जागरणमहोत्सव करे. एवी रीते अग्यारमो दिवस गये छते अशुचि एवां जे जन्मकार्यो, जेवां के नालछेद इत्यादि कार्यो समाप्त होते छते अने बारमो दिवस आवते छते प्रभुनां मातापिताए घणां एवां अशन, पान, खादिम अने स्वादिम एम चार प्रकारनां भोजन तैयार कराव्यां; अने तेम करावीने मित्रोने, ज्ञाति

चित्र २५.





चित्र. २६.

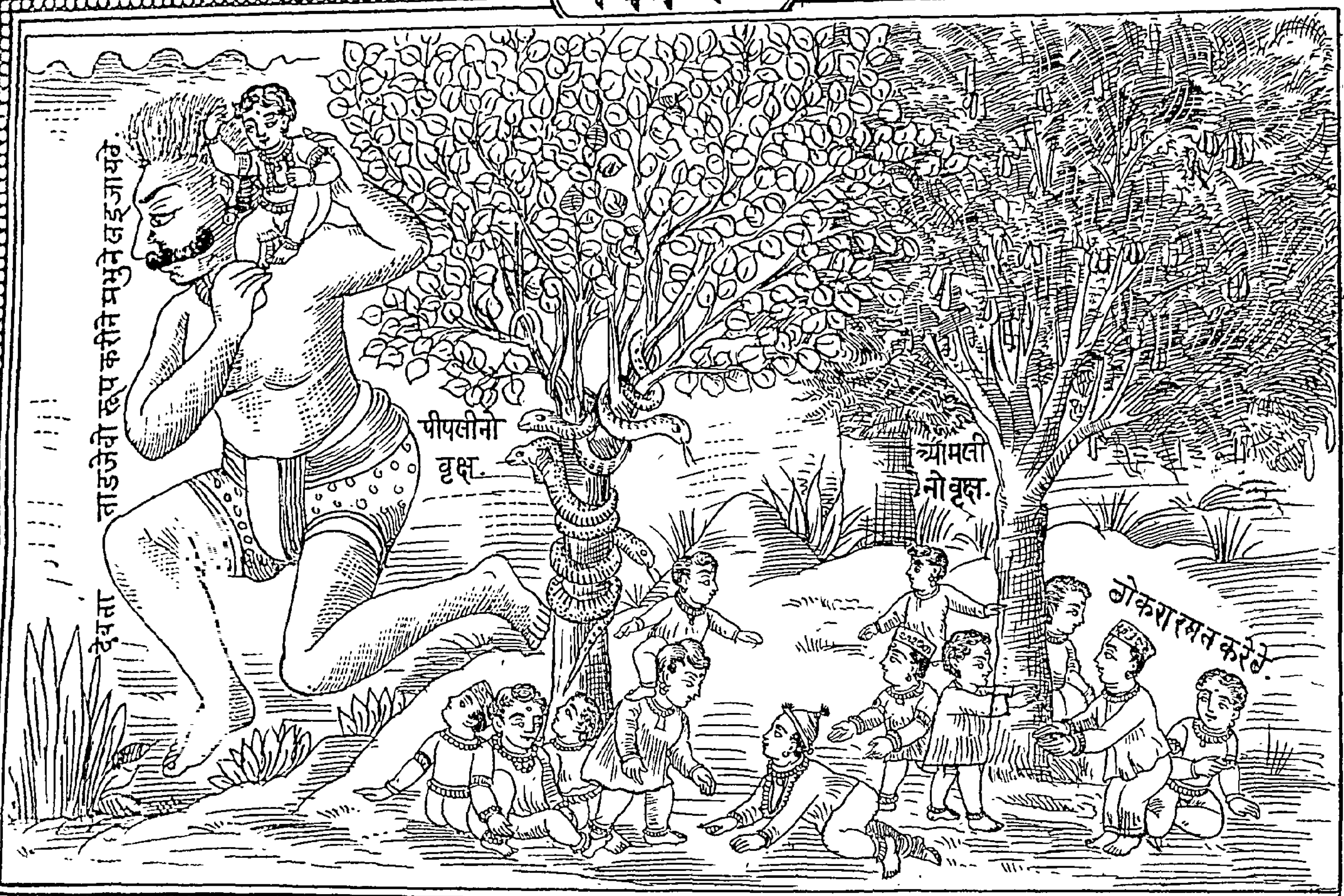




एटले पोतानी जातवालाओने, पुत्रादिक सगाओने, पित्राइओने, पुत्र तथा पुत्रीना ससरा आदिकने, दास दासीओने तथा श्री ऋषभदेव प्रभुना वंशना क्षत्रिओने तेओए जमवा माटे नोतरुं आप्युं, अने तेम कर्या पछी पूजा आदिक कार्यो करीने तथा कौतुकमंगल करीने, तथा शुद्ध सभाप्रवेशने योग्य मंगलिक अने श्रेष्ठ वस्त्रो पहेरीने, तथा थोडां पण महा मूल्यवालां आभूषणोथी शरीर अलंकृत करीने भगवंतनां मातापिता भोजनसमये भोजनमंडपमां सारां आसनो पर बेठां. तथा उपर कहेला स्वजनादिकनी साथे ते घणां एवां अशन,पान, खादिम अने स्वादिम एवा प्रकारनां भोजनोने सेलडीनी पेठे थोडुं खातां थकां वधारे तजतां थकां, खजूर आदिकनी पेठे घणुं खातां अने थोडुं तजतां थकां, अने उत्तम भोजननी पेठे सघलुं खाइ जतां अने केटलीक वस्तुओ एकबीजाने आपतां थकां जमवा लाग्यां; अर्थात् एवी रीते भोजन करतां हवां. एवी रीते भोजन कर्या बाद तेओ बेठकनी जगो पर आवी बेठां; एवी रीते रहेता थकां त्यां शुद्ध एवुं पाणी पीता हवां. ते वार पछी परम पवित्र थइने ते मित्रादिक वर्गनो तेओए घणां एवां पुष्प,वस्त्र,गंध,माला तथा आभूषण आदिकथी सत्कार कर्यो अने सन्मान कर्युं तथा तेम करीने ते मित्रादिक वर्गने प्रभुनां मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं के, हे स्वजनो! प्रथम पण अमारो आ बालक गर्भमां उत्पन्न थये छते आ आवा प्रकारनो चिंतवेलो संकल्प थयो हतो. ते संकल्प कयो छे ते हवे कहे छे. ज्यारथी आरंभीने अमारो आ बालक उदरमां गर्भरूपे उत्पन्न थयो हतो ते दिवसथी अमे रूपा वडे वृद्धि पामीए छीए, सोना वडे वृद्धि पामीए छीए, तेमज धनथी, धान्यथी, राज्यथी यावत् सर्व प्रकारनां द्रव्यथी अने प्रीतिसत्कारथी अमे बहु बहु वृद्धि पामीए छीए. वली सीमाडाना राजाओ पण अमारे वश थयेला छे. माटे ज्यारे अमारा आ बालकनो जन्म थशे त्यारे आ बालकनुं आ एने योग्य, गुणवालुं अने गुणने अनुसरतुं 'वर्द्धमान' एवुं नाम पाडशुं. ते पूर्वे उत्पन्न थयेली अमारी मनोरथसंपत्ति आजे फलीभूत थइ छे, माटे अमारो कुमार वर्द्धमान ए नामे थाओ.

हवे काश्यप गोत्रवाला श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुनां त्रण नामो कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे जाणवां. तेओमांथी मातापिताए "वर्द्धमान" एवुं प्रथम नाम पाड्युं; तप करवा विगेरेनी शक्ति प्रभुनी साथेज उत्पन्न थइ छे माटे "श्रमण" एवुं बीजुं नाम जाणवुं. तथा भय अने भैरवमां निष्कंप रहेवाथी; तेमां भय एटले अकस्मात् वीजली आदिकथी उत्पन्न थयेलो भय, तथा भैरव एटले सिंह आदिक, तथा भूख, तरस आदिक बावीश परिषहो, तथा देवता संबंधी चार उपसर्गो, तथा तेना जुदा जुदा भेदो लेखीए तो सोल उपसर्गो, तेने प्रभुए क्षमाए करीने सहन कर्या छे, पण असमर्थपणाए करीने नहीं; वली भद्रादिक तथा एकरात्रिकी आदिक प्रतिमाओना तथा अभिग्रहोना पालनारा, तथा त्रण ज्ञाने करीने मनोहर होवाथी बुद्धिवंत, तेम तेमणे रति अरति पण सहन करेली छे, अर्थात् तेमां हर्ष शोक तेमणे कर्यो नथी; एवी रीते ते ते गुणोना ते भाजनरूप छे, अर्थात् रागद्वेषरहित छे एम वृद्ध आचार्योनो मत छे; तथा वीर्य कहेतां पराक्रमे करीने संपन्न छे. एवी रीतना प्रभुने देवोए "श्रमण भगवान् महावीर" एवुं नाम आप्युं छे. एवुं नाम देवोए केम कर्युं? तेने माटे अहीं वृद्ध संप्रदायनो मत छे.

एवी रीते उपर वर्णवेली युक्तिए करीने सुरासुरनरेश्वरोए करेल छे जन्मोत्सव जेमनो एवा ते वीर प्रभु बीजना चंद्रनी पेठे, अथवा कल्पवृक्षना अंकुरनी पेठे वृद्धि पामता थका अनुक्रमे केवा थया? ते कहे छे. चंद्र सरखुं तेमनुं मुख थयुं, ऐरावण हाथी सरखी तेमनी चाल थइ, तेमना होठ लाल थया, दांतनी पंक्ति सफेद थइ, केशनो समूह कालो थयो, हाथ कमल सरखा कोमल थया; श्वासोश्वास सुगंधी थयो, तथा कांतिए करीने पण ते उल्लसायमान थया. वली ते मति, श्रुत तथा अवधिज्ञान संयुत हता, वली तेमने पूर्वभवनुं पण स्मरण हतुं, रोग रहित हता, वली मति, कांति, धीरज आदिक पोताना गुणोए करीने जगतथी पण अधिक हता, तेम जगतमां तिलक समान हता.


चित्र २७.
देवता ताडजेनो रूप करीने प्रभुने लइजायछे.
पीपलीनो वृक्ष.
आंमली नो वृक्ष.
छोकरा रमत करेछे.

एक दहाडो ते वीर कुमार कौतुक रहित हता, तोपण समान वयवाला कुमारोना उपरोधथी तेमनी साथे क्रीडा करता थका, आमलकीक्रीडा करवाने माटे नगरनी बहार गया; त्यां ते कुमारो वृक्ष पर चढवा आदिके करीने क्रीडा करता हता. एटलामां सौधर्मेंद्र पोतानी सन्नामां वीर प्रज्ञुनी धैर्यता आदिक गुणोनुं वर्णन करता हवा; तेमणे कह्युं के हे देवो ! हमणांना कालमां मनुष्यलोकमां श्री वर्द्धमान कुमार बालक छे, तोपण महा पराक्रमी छे; तेने इंद्रादिक देवो पण बीवराववाने समर्थ नथी; ते सांजली कोइक मिथ्यादृष्टि देवे विचार्युं के अहो ! इंद्रने तो पोताना स्वामिपणाना अन्निमाने करीने निरंकुश अने विचारो विनानी, एक पुंबडुं नाखी नगरने दाटी देवा जेवां नहीं श्रद्धा आवे एवां वचनोनी चतुराइ आवी होय तेम लागे छे, के जेथी एक मनुष्यकीटने पण आटली हदे चढावी दे छे, माटे आजेज त्यां जइ तेने बीवरावीने इंद्रना वचनने हुं जूठुं पाडुं. एम विचारी ते देवे मनुष्यलोकमां आवीने सांबेला सरखा जाडा, चपल एवी बे जीन्नोवाला, न्नयंकर फुंफाडावाला, अत्यंत क्रूर आकारवाला, विस्तार पामता कोपवाला, विस्तारवाली फणावाला तथा चलकता मणिवाला एवा सर्पे करीने तेणे ते क्रीडा करवाना वृक्षने वींट्युं. ते जोइ सर्व कुमारो त्यांथी नासी गया, त्यारे श्रीवीर कुमारे जरा पण न्नय राख्या विना, पोते त्यां जइ, ते सर्पने हाथमां लइ दूर फेंकी दीधो. त्यार पछी सघला कुमारो पाछा एकठा थइने दडानी रमत करते छते ते देव पण एक कुमारनुं रूप विकुर्वीने तेमनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो. ते रमतमां नीचे प्रमाणे शरत हती. जे कोइ कुमार हारी जाय, ते जीतेला कुमारने पोतानी पीठ पर चढावे. पछी ते देवकुमारे जाणीने हारी जइने प्रज्ञुने पोतानी पीठ पर बेसाडी पोतानुं सात ताड जेटलुं ऊंचुं शरीर कर्युं. त्यारे न्नगवाने पण तेनुं स्वरूप जाणीने तेने पोतानी वज्र सरखी कठिन मुठीथी पीठ पर मार्यो; त्यारे ते देव पण ते प्रहारनी वेदनाथी पीडित थयो थको मशकनी पेठे संकोच पाम्यो. ते वार पछी ते देवे शक्रनुं वचन खरुं मानीने पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं, तथा सघलो आगलनो वृत्तांत

कही संभलावीने वारंवार प्रभुनी तेणे क्षमा मागी, तथा तेम करीने ते पोताने स्थानके गयो. ते वखते इंद्रे संतुष्ट थइने प्रभुनुं "वीर" एवुं नाम कर्युं. एवी रीते आमलकीक्रीडानुं वृत्तांत जाणवुं.

हवे प्रभुनां मातापिता तेमने आठ वर्षनी उमरना थया जाणीने अति मोहथी आभूषणो आदिक पहेरावीने पाठशालामां लइ गया. ते वखते मातापिताए लग्नस्थितिपूर्वक अति हर्षित थइने घणुं धन खरचीने मोटो अने मूल्यवान् उत्सव कर्यो.

ते वखते हाथी तथा घोडाओना समूहे करीने, तथा मनोहर एवा बाजुबंध तथा हारोए करीने, तथा सोनानां घडावेलां एवां विंटी, कुंडल तथा कंकण आदिके करीने, तथा अत्यंत मनोहर एवां पंच वर्णनां रेशमी कापडे करीने स्वजन आदिक राजाओनो तेमणे भक्तिपूर्वक सत्कार कर्यो. तथा पंडितने माटे नाना प्रकारनां वस्त्र, आभूषणो, नालियेर आदिक तथा निशालीआओने वहेंचवा माटे सोपारी, शींगोडां, खजूर, साकर, खांड, चारोली तथा द्राक्ष आदिक मनोहर खावानी वस्तुओ पण तेमणे साथे लीधी तथा सोना, रूपा अने रत्नोनां मिश्रणथी बनावेलां पुस्तकोनां उपकरणो, तथा मनोहर खडीया, लेखण तथा पाटीओ पण साथे लीधां. वली सरस्वती देवीनी मूर्त्तिनी पूजा माटे मनोहर, नवुं तथा घणां रत्नोथी जडित एवुं सोनानुं भूषण, तथा निशालीआओ माटे विविध प्रकारनां वस्त्रो पण साथे लीधां. एवी रीते सघली भणवानी सामग्रीओ सहित कुलनी वृद्ध स्त्रीओथी तीर्थोदके करीने स्नान करायेला, पहेरेला एवा घणा जे अलंकारो, तेओए करीने कांतियुक्त थयेला, मस्तक पर मेघाडंबर सरखुं धारण करेल छे छत्र जेणे एवा, चार चामरोथी वींझातुं छे अंग जेमनुं एवा, चतुरंगी सेनाथी वींटायेला, वागतां छे विविध वाजांओ जेनी आगल एवा ते वीर प्रभु पंडितने घेर जता हवा. ते वखते पंडित पण राजाना पुत्रने भणाववाने उचित एवी, तथा क्षीरसमुद्रना पाणी सरखा उज्ज्वल धोतीयां, सोनानी जनोइ, तथा केसरनां तिलक आदिकनी सामग्री करतो हवो.


चित्र. २८.
वृद्ध ब्राम्हणने रूपें इंद्र महाराज.
भणावनार मेताजी
भणनार निशालिया.

हवे ते वखते इंद्रनुं आसन हालता पीपलानां पाननी पेठे, तथा हाथीना कानना पठ, तथा कपटीना ध्याननी पेठे, तथा राजाना माननी पेठे चलायमान थयुं. तेथी अवधिज्ञाने करीने ते वृत्तांत जाण्या बाद इंद्र देवोने कहेवा लाग्या के अहो ! आ तो मोटुं आश्चर्य छे के प्रभुने पण निशाले जणवा माटे मोकलाय छे !!! माटे ते तो जेम आंबा पर तोरण, अमृतमां मीठाश, ब्राह्मीने पाठनी विधि, चंद्रमां सफेदाइनुं आरोपण, कुंदनमां सुवर्णनुं स्थापन, तथा पवित्रतानी संपत्तिने माटे शास्त्रनुं जणवुं, एटलानी माफक प्रभुने पण पाठशालामां जणवा माटे मोकलवानुं कार्य छे. तीर्थंकर प्रभु पासे जे वचनो बोलवां छे, ते तो मानी पासे मामानुं वर्णन, लंका नगरी प्रत्ये समुद्रनां मोजांउनुं वर्णन, तथा समुद्रने लवणनी भेट आपवा जेवुं छे; केमके जिनेश्वरो तो जण्या विना विद्यावान्, द्रव्य विना परमेश्वर तथा आभूषण विना मनोहर छे, माटे एवा प्रभुउं तमारुं रक्षण करो. एम कही ते इंद्र तुरत ब्राह्मणनुं स्वरूप करीने ज्यां प्रभु हता, ते पंडितने घेर आव्यो. तथा त्यां प्रभुने पंडितने योग्य एवा आसन पर बेसाडीने पंडितना पण मनमां रहेला संदेहो प्रभुने पूछतो हवो. ते जोइ लोको विचारवा लाग्या के आ बालक ते आनो शो उत्तर दइ शकशे ? एम विचारता हता, तेटलामां श्री वीर प्रभुए तेना सघला उत्तरो दीधा. त्यारथी “जिनेंद्र” नामनुं व्याकरण थयुं. ए जोइ सघला लोको आश्चर्य पाम्या, तथा पंडित पण मनमां चिंतववा लाग्यो के अहो ! आ बालक एवा वर्द्धमान कुमारे पण आटली बधी विद्यानो क्यां अभ्यास कर्यो हशे !!! अरे ! वली आ केटलुं बधुं आश्चर्य छे के बालपणाथी मने पडेला जे संदेहोनुं कोइए पण निराकरण कर्युं नहोतुं, ते सघला संदेहो आ बालक एवा पण वीर प्रभुए दूर कर्या. वली आवी विद्या जाणनारनुं आटलुं बधुं गंभीरपणुं !! अथवा आवा महात्माउने ते युक्तज छे, केमके मेघ पण शरद् ऋतुमां खाली गाजे छे, ते वरसतो नथी, अने वर्षा ऋतुमां जे गाजतो नथी ते वरसे छे; एवीज रीते नीच माणस पण बोले छे, अने करतो नथी, अने उ-

उत्तम माणस बोलता नथी, पण करी देखाडे छे. तेमज असार पदार्थनो प्राये मोटो आडंबर होय, केमके जेवो कांसानो अवाज थाय छे, तेवो सोनानो अवाज थतो नथी. इत्यादिक विचार करता एवा पंडितने इंद्रे कह्युं के हे विप्र! तारे मनमां आमने मनुष्य मात्र एवा बालक नहीं जाणवा, पण आने तो त्रण जगतना नाथ अने सघलां शास्त्रोना पारने पहोंचेला एवा श्री वीर जिनेश्वर तारे जाणवा. इत्यादिक श्री वीर प्रभुनी स्तुति करीने इंद्र पोताने स्थानके गयो. श्री वीर प्रभु पण सघला ज्ञातकुलना क्षत्रिओथी परिवारयुक्त थया थका पोताने घेर आव्या. एवी रीते प्रभुने पाठशालामां मोकलवानो अधिकार जाणवो.

एवी रीते प्रभुनी बाल्यावस्था गया बाद यौवन युक्त थये छते, तथा भोगो भोगववाने समर्थ थये छते प्रभुने मातापिताए शुभ मुहूर्त्तमां समरवीर राजानी यशोदा नामे पुत्री परणावी. तेणीनी साथे सुख भोगवतां प्रभुने एक पुत्री थइ, अने तेणीने पण कोइ मोटा राजाना पुत्र एवा पोताना भाणेज जमाली साथे परणावी, अने तेणीने पण शेषवती नामनी पुत्री थइ, अने ते प्रभुनी दौहित्री थाय.

श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना पिता काश्यप गोत्रवाला हता. तेमनां त्रण नाम आ प्रमाणे कहेवाय छे. एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस अने त्रीजुं यशस्वी. श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनी मातानुं वाशिष्ठ गोत्र हतुं. तेमनां त्रण नाम आ प्रमाणे कहेवाय छे. एक त्रिशला, बीजुं विदेहदिन्ना अने त्रीजुं प्रीतिकारिणी. श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना काका सुपार्श्व, मोटा भाइ नंदिवर्धन, बहेन सुदर्शना, अने स्त्री कौडिन्य गोत्रवाली यशोदा हती. श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनी काश्यप गोत्रवाली पुत्री एक हती. तेनां बे नाम आवी रीते कहेवाय छे. एक अणोज्जा अने बीजुं प्रियदर्शना. श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनी कौशिक गोत्रवाली एक पौत्री हती. तेनां बे नाम आवी रीते कहेवाय छे. एक शेषवती अने बीजुं यशस्वती.

हवे दक्ष कहेतां सकल कलाओमां कुशल एवा, तथा निपुण छे प्रतिज्ञा जेनी एवा, तथा सुंदर

रूपवाला, तथा सर्व प्रकारना गुणोए करीने आलिंगित थयेला, तथा सरल, तथा विनयवान्, तथा प्रख्यात, तथा ज्ञात कहेतां जे सिद्धार्थ राजा, तेना पुत्र, तथा केवल पुत्र मात्रज एटलुंज नहीं, पण ज्ञातकुलने विषे चंद्र सरखा, वज्रऋषभनाराच संघयण तथा समचतुरस्र संस्थानना मनोहरपणाने लीधे सुंदर छे देह जेमनो एवा, तथा वैदेहदिन्न कहेतां त्रिशलाना पुत्र एटले विदेहा कहेतां जे त्रिशला क्षत्रियाणी, तेणीनी कुक्षिए उत्पन्न थयेलुं छे शरीर जेमनुं एवा, गृहस्थावासमां सुकुमाल एवा, (केमके दीक्षा वखते तो परिषहो सहन करवाथी सुकुमालपणाए करीने रहित हता) श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभु त्रीश वर्ष सुधी गृहस्थावासमां रहीने, मातापिता ज्यारे देवलोके गयां, त्यारे नंदिवर्धन आदिक वडीलोनी लीधेल छे रजा जेमणे एवा, एटले गर्भमांज होते छते प्रतिज्ञा करी हती के मातापिताना बेठां हुं दीक्षा लइश नहीं, एवी रीतनी प्रतिज्ञा संपूर्ण थइ छे जेमनी एवा, अहीं आवश्यकसूत्रना अभिप्राये प्रभुने अठ्यावीश वर्ष वीत्या बाद तेमनां मातापिता चोथे स्वर्गे गयां, अने आचारांगना अभिप्राये अनशन करी अच्युत देवलोके गयां. ते वार पछी प्रभुए पोताना मोटा भाइ नंदिवर्धनने कह्युं के हे राजन्! मारो अभिग्रह संपूर्ण थयो छे, माटे हुं हवे दीक्षा लइश. त्यारे नंदिवर्धने कह्युं के हे भाइ! मातपिताना विरहथी खिन्न थयेला एवा मने आ वात कहीने तुं घा पर खार मेलवा जेवुं केम करे छे ? त्यारे प्रभुए कह्युं के हे भाइ! पिता, माता, भ्राता, बेहेन विगेरेनो संबंध आ जीव अनेक वार परस्परना स्नेहथी बांधी चुक्यो छे; माटे शामाटे आपे प्रतिबंध करवो जोइए ? त्यारे नंदिवर्धने कह्युं के हे भाइ! ते सघलुं हुं जाणुं छुं, पण प्राण थकी पण अत्यंत वहाला एवा जे तमो, तेनो विरह मने अत्यंत पीडा उपजावे छे, माटे मारा उपरोधथी तमे बे वर्ष सुधी घरमां रहो. त्यारे प्रभुए कह्युं के ठीक; पण हे राजन्! मारा माटे तमारे कोइ पण जातनो आरंभ करवो नहीं; हुं प्रासुक एवां आहार पाणी ग्रहण करीने रहीश; त्यारे नंदिवर्धन राजाए पण ते कबूल कर्युं.

तेथी वीजां वे वर्ष सुधी वस्त्रालंकारथी जूषित एवा प्रजु पण प्रासुक अने एषणीय एवा आहारथी, सचित्त पाणीने पण नहीं पीता थका घरमां रह्या. ते वारथी मांमी प्रजुए अचित्त पाणीथी पण सर्व स्नान कर्युं नहीं, तथा त्यारथी जीवित पर्यंत ब्रह्मचर्य तेमणे पाळ्युं; पण दीक्षोत्सवमां तो सचित्त पाणीथी प्रजुए स्नान कर्युं छे, केमके तेवो कल्प कहेतां आचार छे. एवी रीते प्रजुने वैराग्ययुक्त जाणीने चौद स्वप्नोथी सूचित एवा चक्रवर्त्तिपणानी बुद्धिथी तेमनी सेवा करता एवा श्रेणिक तथा चंमप्रद्योत आदिक राजकुमारो पोतपोताने स्थानके गया.

एवी रीते प्रजुनी प्रतिज्ञा एक बाजुए समाप्त थइ, अने वीजी तरफ लोकांतिक देवोए प्रजुने प्रतिबोध कर्यो. लोकांतिक एटले संसारने अंते रहेला देवो, अर्थात् एकावतारी देवो, केमके जो तेम न मानीए तो ब्रह्मलोकमां रहेनारा एवा देवोने लोकांतिकपणुं घटी शकतुं नथी; ते देवो नव प्रकारना छे. तेउनां नाम सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध, अग्नि अने अरिष्ट. हवे प्रजु जो के स्वयंबुद्ध हता तेथी तेउना उपदेशनी प्रजुने जरुर नथी, तोपण आम करवुं ए तेमनो आचार छे. तेज कहे छे. जीत एटले अवश्य थावे करीने छे कल्प कहेतां आचार जेउनो ते जीतकल्पिक कहेवाय; एवा ते देवो इष्ट, मनोहर आदिक गुणोवाली वाणीथी प्रजुने निरंतर अजिनंदता थका तथा स्तुति करता थका एम कहेवा लाग्या के हे नंदा ! कहेतां हे समृद्धिवाला प्रजु ! तमे जय पामो, जय पामो. हे कल्याणवान्! तमे जय पामो, जय पामो. हे उत्तम क्षत्रिय! तमे जय पामो, जय पामो. हे जगवान्! हे लोकना नाथ! तमे प्रतिबोध पामो, अने सघला [illegible]तना जीवोने हितकारी एवा धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावो, केमके ते तीर्थ सर्व लोकने विषे सर्व [illegible]ने हितकारी, सुखकारी अने मोक्षने आपनारुं थशे, एम कही तेउ जय जय शब्द करवा लाग्या.



[illegible] श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने तो मनुष्यने उचित एवो जे विवाहादिक गृहस्थधर्म तेथी [illegible] अनुपम तथा उपयोगवालां तथा केवलज्ञान उपजे त्यां सुधी स्थिर रहे एवां अवधिज्ञान



पा.६१

चित्र. ३०




विगेरेथी बजार तथा आ कुंरूपुर नगरने देवलोक सरखुं बनाव्युं. ते वार पछी नंदिवर्धन राजा तथा इंद्र आदिके सोनाना, रूपाना, मणिना, सोनारूपाना, सोनामणिना, रूपामणिना, सोना रूपा मणिना, तथा माटीना, दरेकना एक हजार ने आठ कलशो तथा बीजी पण सघली सामग्री करावी.

ते वार पछी अच्युतेंद्रादिक चोसठ इंद्रे अभिषेक करते छते, ते देवोए करेला कलशो, देव संबंधी प्रभावथी राजाए करावेला कलशोमां पेठा, अने तेथी तेओ अत्यंत शोभवा लाग्या. पछी नंदिवर्धन राजाए प्रभुने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवोए लावेला क्षीरसमुद्रना पाणीथी तथा सर्व तीर्थनी माटीथी तथा सर्व औषधिओथी अभिषेक कर्यो. ते वखते इंद्रो हाथमां झारी तथा आरिसाओ सहित जय, जय शब्द करता थका आगाडी उभा रह्या. एवी रीते प्रभुने स्नान कराव्या बाद गंधकाषाय्य नामना वस्त्रथी लुछेलुं छे शरीर जेनुं, तथा दिव्य चंदनथी लेपनयुक्त करेलां छे गात्र जेनां, तथा कल्पवृक्षनां पुष्पोनी मालाओथी मनोहर थयेल छे कंठनो भाग जेनो, तथा जेना छेडाओमां सोनुं जडेलुं छे एवां स्वच्छ, उज्ज्वल तथा लाखोनां मूल्यनां श्वेत वस्त्रोथी वींटायेलुं छे शरीर जेनुं, तथा हारथी शोभतुं छे वक्षःस्थल जेनुं, तथा बाजुबंध अने कडांओथी शोभतो छे भुजदंड जेनो, तथा कुंडलथी शोभता छे गाल जेना एवा प्रभु, श्रीनंदिवर्धन राजाए करावेली तथा पचास धनुष्य लांबी, अने पचीश धनुष्य पोहोली, तथा छत्रीश धनुष्य उंची, तथा घणा स्तंभोथी शोभती, तथा मणि अने सुवर्णथी विचित्र लागती, तथा दिव्य प्रभावथी अंदर समायेली छे देवोए करेली पण पालखी जेमां, एवी चंद्रप्रभा नामनी पालखीमां बेसीने दीक्षा लेवा माटे चालवा लाग्या.

बाकीनुं वर्णन सूत्रकार पोतेज कहे छे.

ते कालने विषे तथा ते समयने विषे जे आ शियालानो पहेलो मास अने पहेलुं पखवाडीयुं ते मागशर मासनो कृष्ण पक्ष, तेनी दशमीने दिवसे, पूर्व दिशा प्रत्ये छाया जते पाछलनी पोरसी संपूर्ण होते छते, अने ते पण प्रमाणने प्राप्त होते छते, एटले जरा पण न्यूनाधिक नहीं, एवी रीते होते छते सुव्रत नामना


चित्र ३१
महोत्सवनो वरघोडो.

थाउं नीचे प्रमाणे छे. केटलीक बालिकाउं उत्सुकपणाथी पोताना गालो पर काजलना अंको करती हवी, अने आंखमां कस्तुरी नाखती हवी, गलामां नूपुर पहेरती हवी, तथा पगमां कंठो पहेरती हवी. कोइए तो केड पर हार पहेर्यो, तथा घमघमती घुघरीवालो कंदोरो गलामां पहेर्यो, तथा गोशीर्ष चंदनथी पगने रंग्या, अने अलताथी शरीरने रंग्युं. कोइक बालिका तो अर्धु स्नान करेली, अने तेथी गलतुं छे पाणी एवी तथा बुटा छे केश जेणीना एवी पहेलां त्रास, तथा जाएया बाद कोने हास्य न करावती हवी? कोइक मुग्ध बालानां वस्त्रो ढीलां थइ खसी जवाथी तेणी हाथमां केवल नाडी पकडीनेज रहेली हती, तोपण सघला लोको प्रभुने जोवामां लागते छते तेणीने जरा पण शरम लागी नहीं. कोइक तरुण स्त्री तो उत्सुकपणाथी पोताना रडता बालकने तजीने, तथा हाथमां तेने बदले बीलाडाने लइने, केड पर बेसाडीने रस्ते जती थकी कोने हास्य नहीं करावती हवी? कोइक स्त्री तो कहेवा लागी के प्रभुनुं अहो महा रूप! अहो तेज! अहो शरीरनुं सौभाग्य केवुं छे!!! हुं तो विधात्राना हाथनी आ चतुराइ जोइ तेनां दुःख लउं. विकस्वर थयेल छे कपोल जेणीना एवी कोइक स्त्री तो प्रभुनुं मुख जोवामां अत्यंत लोलुप थवाथी पोतानां पडी गयेलां सोनानां आभूषणोने जाणती पण न हती. कोइक चंचल नेत्रवाली स्त्री तो पोताना हस्तकमलथी पवित्र मोतीउं उडाडवा लागी अने केटलीक तो मंगलोने कोमल स्वरथी गावा लागी, तथा केटलीक तो हर्षथी संपूर्ण थइने नाचवा लागी.

एवी रीते नगरनी स्त्रीउंथी जोवातो छे विभवनो प्रकर्ष जेमनो एवा प्रभुनी अगाडी पहेलां तो रत्नमय अष्ट मंगलो चालतां हवां. ते नीचे प्रमाणे, स्वस्तिक, श्रीवत्स, नंदावर्त्त, वर्धमानक, भद्रासन, कलश, मत्स्ययुग, अने दर्पण; तेनी पछी पूर्ण कलश, झारी, चामर, त्यार बाद मोटी पताका, छत्र, मणि अने स्वर्णमय पादपीठवालुं सिंहासन, त्यार बाद स्वार विनाना एकसो आठ उत्तम हाथी, तेटलाज घोडा, त्यार बाद तेटलाज घंटा अने पताकाउंए करीने मनोहर लागता अने शस्त्रथी पूर्ण रथो,

तेटलाज उत्तम पुरुषो, ते वार पछी अनुक्रमे घोडा, हाथी, रथ तथा पालानां सैन्यो, ते वार पछी एक हजार नानी पताकाउथी मंडित थयेलो तथा एक हजार जोजन उंचो एवो ध्वज, ते वार पछी खड्ग धरनाराउ, ते वार पछी भालांवालाउ, ते वार पछी ढालवालाउ, ते वार पछी हास्य करावनाराउ, ते वार पछी नर्त करनाराउ, ते वार पछी जय जय शब्द करती कंदर्पिकाउ, ते वार पछी घणा उग्रकुलना भोगकुलना राजाउ, क्षत्रियो, कोटवालो, मांडलिको, कौटुंबिको, शेठीआउ, सार्थवाहो, देवो, देवीउ विगेरे प्रभुनी अगाडी चालता हता, ते वार पछी स्वर्ग, मृत्युलोक अने पातालमां रहेनारा देव, मनुष्य अने असुरो सहित एवी पर्षदाए करीने सारी रीते अनुगमन करातुं, तथा अगाडी शंख वगाडनाराउ, चक्र धारण करनाराउ, हल धारण करनाराउ एटले गलामां सोनानां लांगलना आकारनां आभूषण धरनारा भट्ट विशेषो, मुखथी चाटु वचन बोलनारा माणसो, पोतानी खांध पर बेसाडेल छे माणसो जेउए एवा माणसो, तथा मागध एटले बिरुदावली बोलनारा माणसो, तथा घंटा लइ चालनारा राउलीआ माणसो, ते सघलाउथी वींटायेला प्रभुने कुलना वडिल आदिक स्वजनो, इत्यादिक विशेषणोवाली वाणीउए करीने प्रभुने अभिनंदता थका बोलवा लाग्या के "जय जय नंदा, जय जय भद्दा भद्दं ते" एटले हे समृद्धिमन् ! तथा हे भद्रकारक ! तमे जय पामो, तमने भद्र थाउ. तथा अजित एवी इंद्रियोने अतिचार रहित एवां ज्ञान, दर्शन, चारित्रथी वश करो. तथा तमोए वश करेल एवा श्रमणधर्मने तमे पालो. वली हे प्रभु ! तमोए विघ्नने जीत्या छे, तोपण तमे सिद्धि मांहे जइ वसो अर्थात् तमे त्यां मोक्षमां अंतराय रहित रहो. तथा रागद्वेषरूपी मल्लनो तमे निश्चयपूर्वक नाश करो. शाथी ? तो के बाह्य अने अभ्यंतर एवां तपथी. तथा संतोष अने धैर्यतामां प्रवीण थया थका आठ कर्मोरूपी शत्रुउनुं मर्दन करो. शाथी ? तो के उत्तम एवा शुक्ल ध्यानथी. वली हे वीर ! अप्रमत्त थया थका त्रण लोकरूपी जे मल्लयुद्धनो अखाडो, तेनी अंदर आराधनपताकाने तमे ग्रहण करो. तथा तिमिर रहित एवुं अनुपम जे के-

वलज्ञान तेने मेलवो अने मोक्षरूपी परम पदने तमे प्राप्त थाउं. केवी रीते ? तो के जिनेश्वर प्रजुए कहेला अकुटिल मार्ग वडे करीने. शुं करीने ? तो के परिषहोनी सेनाने हणीने तथा हे क्षत्रियने विषे वृषज्ञ समान ! तमे जय पामो, जय पामो. तथा घणा दिवसो सुधी, घणां पखवाडीयांउं सुधी तथा घणा महिनाउं सुधी, तथा घणी एवी हेमंत आदिक बे मासना परिमाणवाली ऋतुउं सुधी, तथा घणी ठमासीउं सुधी, तथा घणां वर्षो सुधी, उपसर्गोथी निर्जय थया थका, विजली, सिंह आदिकना जयोने क्षमाए करीने सहन करता थका तमे जय पामो. वली तमारा धर्ममां विघ्नोनो अजाव थाओ. एम कही स्वजन लोको जय जय शब्दो करवा लाग्या. ते वार पठी श्रमण जगवंत श्री महावीरस्वामी क्षत्रियकुंड नगरनी मध्यमां थइने ज्यां ज्ञातखंड नामे वन हतुं तथा ज्यां अशोक वृक्ष हतुं, त्यां आव्या. केवी रीते आव्या ? तो के हजारो एवां नेत्रोनी पंक्तिथी जोवाता, तथा वारंवार जोवातुं ठे सौंदर्य जेमनुं एवा; वली केवा ? तो के श्रेणिबंध थयेला लोकोनां मुखनी हजारो गमे पंक्तिउंथी वारंवार स्तुति कराता; वली केवा ? तो के हजारो गमे हृदयनी पंक्तिउंथी तमे जय पामो, जीवो, इत्यादि ध्याने करीने समृद्धिने पमाडाता; वली केवा ? तो के हजारो गमे मनोरथोनी पंक्तिथी विशेष प्रकारे स्पर्श कराता, अर्थात् आपणे एमना सेवक थइए तो सारुं, एवी रीते लोकोथी चिंतवाता; वली केवा ? तो के कांति, रूप अने गुणोए करीने प्रार्थना कराता, अर्थात् स्वामिपणाए करीने वांठा कराता; वली केवा ? तो के आंगलीउंनी हजारो पंक्तिथी देखाडाता; वली केवा ? तो के जमणा हाथथी हजारो स्त्रीपुरुषोना नमस्कारोने ग्रहण करता; वली केवा ? तो के जवनोनी हजारो गमे श्रेणिउंने उल्लंघन करता; वली केवा ? तो के वीणा, तलताल, वादित्र, गीत, वादन विगेरेना शब्दोथी, तथा मधुर अने मनोहर एवा जय जय शब्दना उद्घोषणथी मिश्रित थयेला एवा अति कोमल मनुष्योना शब्दे करीने सावधान थता तथा, समस्त ठत्रादिक राज्यचिह्नी ऋद्धिए करीने तथा, आजूषण आदिकनी सर्व प्र-

कारनी कांतिए करीने, तथा हाथी, घोमा आदिक सर्व प्रकारनी सेनाए करीने, तथा शिबिकादिक सर्व प्रकारनां वाहने करीने, तथा सघला महाजनोना मेलापे करीने, तथा सर्व प्रकारना आदरे करीने, तथा सर्व प्रकारनी संपदाए करीने,तथा समस्त शोजाए करीने, तथा सर्व हर्षेथी थता उत्सुकपणाए क-रीने, तथा सर्व स्वजनोना मेलापे करीने, तथा अढार एवी निगमादिक नगरमां रहेती प्रजाउए करी-ने, तथा सर्व नाटकोए करीने, तथा सर्व तालचरोए करीने, तथा सर्व अंतःपुरे करीने, तथा सर्व पुष्प, गंध, माल्य अने अलंकारोनी शोजाए करीने, तथा सर्व वाजित्रोना एकठा मलता एवा शब्दे अने प्रति-रवे करीने, तथा मोटी ऋद्धिए करीने,तथा मोटी द्युतिए करीने, तथा मोटा बल एटले सैन्ये करीने, त-था मोटा वाहने करीने, तथा मोटा समुदये करीने, तथा श्रेष्ठ वाजित्रोनुं समकाले वागवुं ठे जेमां एवा शंख, ढोल, पटह, जेरी, ऊल्लरी, खरमुखी, हुडुक्क अने देवडुंडुजिना थता शब्दना प्रतिशब्दरूप मोटा शब्दे करीने युक्त,एवा प्रकारनी ऋद्धिथी व्रत लेवा माटे जता प्रजुनी पाठल चतुरंगी सेनाथी वींटायेलो तथा मनोहर ठत्र चामरथी शोजतो एवो नंदिवर्धन राजा पण जवा लाग्यो. उपर वर्णवेला आमम्बरे करीने युक्त एवा जगवान् क्षत्रियकुंमग्राम नगरना मध्य जागमां थइने नीकले ठे, अने नीकलीने ज्यां ज्ञातखंमवन नामे उद्यान ठे अने जे उद्यानमां उत्तम अशोक नामे वृक्ष ठे त्यां प्रजु आव्या अने आवीने ते वृक्षनी नीचे प्रजुए पालखीने स्थापन करावी. तथा ते स्थापन करावीने तेमांथी प्रजु नीचे उतर्या. एम करीने प्रजु पोतानी मेलेज घरेणां, माला प्रमुख आजूषण आदिकने उतारवा लाग्या. ते एवी रीते के आंगलीएथी वींटीउ, हाथ परथी वीरवलय, जुजा परथी बाजुबंध, कंठथी हार, कानथी कुंमल तथा मस्तक परथी मुकुट पण उतार्यो. ते सघलां आजूषणो कुलनी महत्तराए हंसलक्षणवाली साडीमां लीधां. ते लइने तेणीए "इख्खागकुलसमुप्पन्नेसि णं तुमं जाया" इत्यादि पाठ कह्यो. एम कही प्रजुने वांदीने ते एक बाजु खसी गइ. ते वार पठी प्रजुए एक मुष्टिथी दाढी मुठना वालोनो, तथा चार मुष्टिथी मस्तक परना केशोनो, एम पंच मुष्टिथी पोतानी मेलेज लोच

कर्यो. तेम करीने पाणी पीधा वगर छठना तप सहित, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते इंद्रे डाबा खभा पर धारण करेला एक देवदूष्य वस्त्रने लइने प्रभु एकला एटले रागद्वेषनी सहाय विना, अद्वितीय एटले जेम ऋषभदेव प्रभुए चोसठ हजार राजाओ साथे, मल्लिनाथ अने पार्श्वनाथजीए त्रणसो साथे, वासुपूज्यजीए छसो साथे, तथा बाकीना जिनेश्वरोए जेम एक हजार साथे दीक्षा लीधी हती, तेम वीर भगवाननी साथे कोइ पण नहोतुं; तेथी अद्वितीय एटले एकाकी, तथा द्रव्यथी केशलोचे करीने मुंडित थयेला तथा भावथी क्रोधादिकने दूर करवाथी मुंडित थयेला घरथी नीकली आगारीपणानो त्याग करी एटले अनागारताने (साधुपणाने) प्राप्त थया. तेनो विधि नीचे मुजब जाणवो. एवी रीते उपर कहेवा प्रमाणे कर्यो छे पंचमुष्टि लोच जेणे एवा ते प्रभु ज्यारे सामायिक करवाने इच्छता हवा, त्यारे इंद्रे सघलो वाजित्र आदिकनो कोलाहल बंध कराव्यो. त्यार पछी प्रभुए "नमो सिद्धाणं" इत्यादि कथनपूर्वक "करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि" इत्यादि पाठ उच्चारण कर्यो; पण "भंते" एवो पाठ बोल्या नहीं, केमके एवो तेमनो कल्प कहेतां आचार छे. एवी रीते चारित्र ग्रहण कर्युं के तुरत ज प्रभुने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वार पछी इंद्रादिक देवो प्रभुने वांदीने नंदीश्वर द्वीपनी यात्रा करीने पोतपोताने स्थानके गया.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजयगणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती भाषांतरमां पांचमो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

॥ षष्ठं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

ते वार पछी चार ज्ञानवाला भगवान् बंधुवर्गनी रजा लइने विहार करवा लाग्या. बंधुवर्ग पण ज्यांसुधी प्रभु दृष्टिगोचर रह्या, त्यांसुधी त्यां ठेरीने "हे वीर" हवे अमे तमारा विना शून्य वन सरखा घेर प्रत्ये केम जइशुं ? वली हे बंधु ! कोनी साथे अमे वातचित करीने सुख भोग-

चित्र. ३२




चित्र ३३.
गोवालिया
भगवान
इंद्र.
सिद्धार्थ व्यंतर.
बलदो.

वीशुं ? तथा हवे कोनी साथे भोजन करीशुं ? वली हे आर्य ! सघलां कार्योमां हे वीर ! हे वीर ! एम बोलावीने तमारां दर्शनथी तथा अतिशय प्रीतिथी अमे हर्ष पामता हता. हवे आश्रय विनाना अमे कोनो आश्रय लइशुं ? वली हे बांधव ! अमारी आंखोने अमृतांजन सरखुं तमारुं अतिप्रिय दर्शन हवे अमोने क्यारे थशे ? वली हे उत्तम गुणोए करीने मनोहर ! रागरहित चित्तवाला एवा पण तमे अमोने क्यारे संभालशो ? एम बोलता थका अश्रु सहित आंखोवाला थया थका केटलाक कष्टथी पोताने घेर गया.

हवे प्रभुने दीक्षामहोत्सव वखते देवोए जे गोशीर्षचंदन आदिकथी तथा पुष्पोए करीने पूज्या हता, तेनो सुगंध चार महीनाथी पण अधिक प्रभुना शरीर पर रह्यो हतो, अने ते गंधथी खेंचाइने भमराउ आवीने प्रभुने डंख देवा लाग्या. केटलाक युवानीआउ प्रभु पासे ते सुगंधी मागवा लाग्या, पण प्रभु तो मौन रह्या, तेथी तेउ क्रोधायमान थइने प्रभुने आकरा उपसर्गो करता हवा. स्त्रीउ पण प्रभुने अद्भुत रूपवाला तथा सुगंध युक्त शरीरवाला जोइने कामातुर थइ थकी अनुकूल उपसर्गो करती हती, पण प्रभु तो मेरुनी पेठे स्थिर थया थका ते सघलुं सहन करता थका विहार करवा लाग्या. हवे ते दिवसे बे घडी दिवस बाकी हतो, त्यारे प्रभु कुमारग्राम प्रत्ये पहोंच्या, तथा त्यां रात्रिए कायोत्सर्गध्यानमां रह्या.

एटलामां कोइ गोवालीउ आखो दिवस हलमां बलदोने जोडीने संध्यावखते तेउने प्रभुनी पासे मूकीने गायो दोवा माटे घेर गयो, अने ते बेलो तो वनमां चरवा माटे चाल्या गया. पछी ते गोवालीए आवीने प्रभुने पूछ्युं के हे आर्य ! मारा बलदो क्यां छे ? पण प्रभु बोल्या नहीं, त्यारे तेणे जाण्युं के आने खबर नथी, तेथी तेउनी वनमां ते शोध करवा लाग्यो. पछी बलदो तो थोडी रात्रि बाकी रही त्यारे पोतानी मेलेज प्रभु पासे आव्या. ते वखते गोवालीउ पण त्यां आव्यो, अने बलदोने जोइ तेणे विचार्युं के अहो ! आने खबर हती, तोपण तेणे मने आखी रात [illegible]

एम विचारी क्रोधथी रासडी लइ मारवा माटे ते प्रभु तरफ दोड्यो. एटलामां इंद्रे ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणीने गोवालीआने आवीने शिक्षा करी.

पछी इंद्रे प्रभुने विनंति करी के हे प्रभु ! तमोने घणा उपसर्गो थवाना छे, माटे बार वर्ष सुधी वैयावृत्य माटे हुं आपनी पासेज रहुं. त्यारे प्रभुए कह्युं के हे देवेंद्र ! एवुं कदापि थयुं नथी, थतुं नथी, अने थशे पण नहीं, केमके तीर्थंकरो कोइ देवेंद्र अथवा असुरेंद्रनी सहायथी केवलज्ञान उपार्जन करता नथी, पण फक्त पोतानांज पराक्रमथी केवलज्ञान उपार्जन करे छे. त्यारे इंद्र पण मरणांत उपसर्गने टालवा माटे प्रभुनी मासीना पुत्र सिद्धार्थ व्यंतरने प्रभुनी वैयावृत्य माटे स्थापीने पोते देवलोके गयो.

ते वार पछी प्रभुए सवारमां कोल्लाग नामना सन्निवेशमां बहुल नामना ब्राह्मणने घेर "मारे पात्र सहित धर्म प्ररूपवो" एम विचारी पहेलुं पारणुं त्यां गृहस्थना पात्रमां परमान्नथी कर्युं. ते वखते चेलोत्क्षेप, गंधोदकनी वृष्टि, दुंदुभिनो नाद, "अहो दानमहो दानं" इत्यादि उद्घोषणा, तथा वसुधारानी वृष्टि, एम पांच दिव्यो प्रगट थयां.

त्यांथी प्रभु विहार करीने मोराक नामना सन्निवेशमां दुइज्जंत नामना तापसना आश्रममां गया. त्यां सिद्धार्थ राजानो मित्र एवो ते कुलपति प्रभु पासे आव्यो. प्रभुए पण पूर्वेना अभ्यासथी मलवा माटे हाथ पहोला कर्या. पछी तेनी प्रार्थनाथी प्रभु पण एक रात्रि तिहां रहीने पोते निरागी चित्तवाला हता, पण तेना आग्रहथी त्यां चोमासुं रहेवानुं कबुल करीने प्रभु बीजी जगोए विहार करवा लाग्या. आठ मास सुधी विहार करीने पाछा प्रभु वर्षाऋतु गालवा माटे त्यां आव्या. तथा त्यां आवीने कुलपतिए आपेली घासनी झुंपडीमां रह्या. त्यां बहारना भागमांथी घास नहीं मलवाथी अन्य तापसोए पोतपोतानी झुंपडीओमांथी निवारण करेली गायो प्रभुथी मंडित थयेली

खाधी. त्यारे कुलपति पण प्रभुने आवी कहेवा लाग्यो के हे वर्धमान ! पक्षीओ पण पोतपोताना मालानुं रक्षण करवामां दक्ष होय छे, अने तुं तो राजपुत्र थइने पोताना आश्रमनुं रक्षण करवाने केम अशक्त थाय छे ? त्यारे प्रभुए विचार्युं के मारा अहीं रहेवाथी आमने अप्रीति थाय छे, एम विचारी असाड सुदि पूनमथी मांडी पंदर दिवसो गया बाद वर्षाकालमां पण प्रभु पांच अभिग्रहो लइने अस्थिकग्राम प्रत्ये गया. ते पांच अभिग्रहो नीचे प्रमाणे जाणवा. अप्रीति उपजे एवा घरमां मारे वास करवो नहीं, हमेशां प्रतिमा धारीने रहेवुं, गृहस्थीनो विनय करवो नहीं, मौन रहेवुं तथा हाथमांज आहार करवो.

हवे एवी रीते श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी एक वर्ष अने एक मास सुधी वस्त्रधारी रह्या, तथा ते वार पछी वस्त्ररहित रह्या, तथा हाथरूपीज पात्रवाला रह्या. प्रभुनुं वस्त्ररहितपणुं नीचेना वृत्तांतथी जाणवुं.

प्रभुए दीक्षा लीधा बाद एक वर्ष अने एक मास गया बाद दक्षिणवाचाल नामना नगरनी पासे सुवर्णवालुका नामनी नदीने किनारे कांटामां भरावाथी अर्धुं देवदूष्य वस्त्र पडी जते छते प्रभुए सिंहावलोकनथी तेनी पाछल दृष्टि करी. अहीं केटलाको कहे छे के ममताथी प्रभुए पाछल जोयुं; अने बीजा केटलाको कहे छे के ते स्थंडिल जगो पर पड्युं के अस्थंडिल जगो पर पड्युं, ते जोवा माटे प्रभुए पाछुं वाली जोयुं; अने केटलाको कहे छे के अमारी संततिमां वस्त्र पात्र सुलभ या दुर्लभ थशे, ते जोवा माटे पाछुं वाली जोयुं, तथा केटलाक वृद्धो वली एम कहे छे के कांटामां वस्त्र भरायुं, तेथी पोतानुं शासन कंटकबहुल थशे एम विचारी पोते निर्लोभी होवाथी ते अर्धुं वस्त्र प्रभुए पाछुं लीधुं नहीं.

हवे ते वस्त्र प्रभुना पिताजीना मित्र एवा कोइ ब्राह्मणे लीधुं, अने अर्धुं तो प्रभुए तेने पहेलांज आपी दीधुं हतुं. ते वृत्तांत नीच प्रमाणे जाणवुं.

ते ब्राह्मण दरिद्री हतो, पण प्रभु ज्यारे वार्षिक दान देता हता, त्यारे ते परदेशमां गयो हतो. त्यां पण दुर्भाग्यपणाथी कंइ नहीं मलवाथी घेर पाछो आव्यो, त्यारे स्त्रीए तेनी तर्जना करी के हे अभाग्यमां शिरोमणि ! ज्यारे श्रीवर्धमान प्रभुए सुवर्णनो वरसाद वरसाव्यो, त्यारे तुं परदेश गयो हतो, अने हवे पाछो पण तुं निर्धनज रहीने आव्यो, माटे दूर जा, मोढुं देखाड मां. अथवा तो हजु पण ते जंगम कल्पवृक्ष सरखा प्रभु पासे जइ याचना कर, के जेथी ते तारुं दरिद्रीपणुं हरे; केमके, जेणे पहेलां दान दीधां छे, ते फरी पण आपवाने समर्थ थशे. केमके पाणीना अर्थी माणसो सुकाइ गयेलो एवो पण नदीनो मार्ग खोदे छे. एवी रीतनां स्त्रीनां वाक्योथी प्रेरायेलो ते ब्राह्मण प्रभुनी पासे आवीने विनंति करवा लाग्यो के हे प्रभो ! तमे जगतना उपकारी छो, तमोए सघला जगतनुं दारिद्र्य निर्मूल कर्युं छे, अने हुं निर्भागी ते वखते त्यां नहीं हतो, अने मने परदेशमां भमतां थका पण कंइ मल्युं नहीं, माटे पुण्य रहित तथा आश्रय विनानो अने निर्धन एवो हुं जगतनां वांछितने आपनार एवा आपने शरणे आव्यो छुं, अने आखा जगतनुं दारिद्र्य हरनार एवा आपने मारुं दारिद्र्य हरवुं ए शुं हिसाबमां छे ? केमके भरी दीधेल छे सघलुं महीतल जेणे, तथा अद्भुत शक्तिवाला एवा वरसादने एक तुंबडुं भरवा माटे शुं प्रयास पडी शके तेम छे ? एवी रीते याचना करता करता एवा ते ब्राह्मणने करुणावंत भगवाने अर्धुं देवदूष्य वस्त्र आप्युं. अहीं केटलाक आचार्यो कहे छे के एवा दानेश्वरी भगवाने पण प्रयोजन विनाना वस्त्रनुं पण जे अर्धुं दान दीधुं, ते प्रभुनी संततिमां थनारी वस्त्रपात्रनी मूर्छा सूचवे छे, अने बीजाओ कहे छे के पहेलां जे विप्रकुलमां उत्पन्न थया हता, तेना ते संस्कार छे.

हवे ते ब्राह्मणे ते अर्धुं वस्त्र लइने तेना छेडाओ वणवा माटे एक वणकरने बताव्युं. त्यारे ते वणकरे पण कह्युं के हे विप्र ! तुं तेज प्रभुनी पाछल हजु जा. ते निर्मम अने करुणावंत एवा प्रभु तने बीजुं पण अर्धुं वस्त्र आपी देशे. अने पछी हुं तने ते एवी रीते जोडी आपीश के जेथी

ते अक्षत जेवुं देखाशे अने तेनुं एक लाख सोनामोहोर जेटलुं मूल्य थशे, अने पछी आपणे ते धन वहेंची लइशुं, तेथी आपण बन्नेनुं दारिद्र्य चूर्ण थशे. एवी रीते तेणे प्रेरणा करेलो ब्राह्मण फरीने पाछो प्रभु पासे आव्यो, पण लज्जाथी मागणी कर्या विना एक वर्ष सुधी प्रभुनी पाछल ज-म्यो,अने पछी पोतानी मेले पडी गयेलुं ते अर्धुं वस्त्र लइने चालतो थयो; माटे एवी रीते प्रभुए सवस्त्रधर्म प्ररूपवा माटे एक वर्ष अने एक मास सुधी वस्त्र धारण कर्युं, अने सपात्रधर्म स्थापवा माटे पहेलुं पा-रणुं पण गृहस्थना पात्रमां प्रभुए कर्युं, अने त्यार पछी छेक जीवित पर्यंत प्रभु वस्त्र तथा पात्र विना रह्या.

एवी रीते विहार करता एवा प्रभुनी कोइ दिवसे गंगाने कांठे सूक्ष्म माटीवाला कादवमां प्र-तिबिंबित थयेली पदपंक्तिमां चक्र, ध्वज, अंकुश आदिक लक्षणोने जोइने पुष्पक नामनो सा-मुद्रिक विचारवा लाग्यो के अहींथी कोइ चक्रवर्ती एकाकी चाल्यो जाय छे, माटे जइने हुं तेनी सेवा करुं, के जेथी मारो मोटो उदय थाय. एम विचारी तुरत ते पगलांने अनुसारे चालीने ते प्रभुनी पासे आव्यो, अने तेमने जोइ विचारवा लाग्यो के अरे ! हुं तो फोकटज मोटुं कष्ट वे-ठीने पण सामुद्रिकशास्त्र नण्यो; जे आवी रीतनां लक्षणयुक्त थइने पण साधु थइ व्रतकष्टने आचरे छे; माटे सामुद्रिकशास्त्रनुं पुस्तक तो हवे मारे पाणीमांज बोलवुं.

एटलामां दीधेल छे उपयोग जेणे एवो इंद्र तुरत त्यां आवीने प्रभुने नमस्कार करीने ते पु-ष्पकने कहेवा लाग्यो के हे सामुद्रिकवेत्ता ! तुं खेद कर नहीं; तारुं शास्त्र सत्यज छे; आ ल-क्षणथी आ प्रभु त्रणे जगतने पूजनीक, तथा सुरासुरना पण स्वामी, तथा सर्व प्रकारनी उत्तम संपदाना आश्रयभूत एवा तीर्थंकर थशे; केमके आ प्रभुनी काया परसेवाना मेल रहित छे, श्वासोश्वास सुगंधी छे, रुधिर तथा मांस गायना दूध सरखां श्वेत रंगनां छे, तथा इत्यादिक बाह्य अने अभ्यंतर एवां एमनां अनेक सुलक्षणोने गणवाने कोण समर्थ छे ? इत्यादिक तेने कहीने, तथा तेने मणि, सुवर्ण आदिकथी समृद्धिवान् करीने इंद्र पोताने स्थानके गयो. ते सा-

मुद्रिकवेत्ता पण हर्ष पामीने पोताने देश गयो, तथा प्रभु पण वीजी जगोए विहार करवा लाग्या.

हवे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर प्रभु बार वर्ष उपरांत कांइ थोडा वखत सुधी नित्य कायाने वोसरावीने अने शरीर उपरथी ममताने तजीने रह्या हता, एवामां जे कोइ उपसर्ग तेमने उपज्या हता ते जे आ कहेवामां आवे छे ते देवे करेला, मनुष्ये करेला, भोगप्रार्थनारूप अनुकूल उपसर्गो, ताडनादि प्रतिकूल उपसर्गो, ते उत्पन्न थयेला उपसर्गोने प्रभुए निर्भयपणे सम्यक् प्रकारे सहन कर्या, क्रोध कर्या विना खम्या, दीनता कर्या विना सहन कर्या अने निश्चलपणाथी सहन कर्या. हवे प्रभुए देव संबंधी, मनुष्य संबंधी तथा तिर्यंच संबंधी अनुकूल तथा प्रतिकूल विगेरे जे उपसर्गो सहन कर्या छे, तेनुं वर्णन करे छे.

प्रभु पहेलुं चोमासुं मोराक नामना सन्निवेषथी आवीने शूलपाणि यक्षना चैत्यमां रह्या. ते यक्ष पूर्व भवमां धनदेव नामे वेपारीनो बलद हतो. ते वेपारी नदी उतरतो हतो, ते वारे तेनां पांचसो गाडां कादवमां खुंची बेठां. त्यारे उल्लसायमान थयुं छे वीर्य जेनुं एवा ते वृषभे डावी बाजुए जोडाइने विचार्युं के जो माराज कडका करीने बन्ने पडखे मने जोडे, तो हुं एकलोज सघलां गाडां खेंची लावुं, एम विचारतां तेणे सघलां गाडांउ कादवमांथी खेंची काढ्यां. एवी रीते पराक्रम कर्याथी ते बलद शरीरना सांधाउ त्रुटी जवाथी अशक्त थइ गयो. त्यारे तेने अशक्त जोइने धनदेवे वर्धमान नामे गाममां जइ गामना मुखीउने तेने माटे घास पाणी विगेरेना पैसा आपीने ते बेलने त्यां मूक्यो, पण ते मुखीउए तेनी सारसंभाल लीधी नहीं, तेथी भूख अने तृषाथी पीडित थइ शुभ अध्यवसायना योगथी मृत्यु पामीने व्यंतर थयो. त्यां तेणे आगला जन्मनो वृतांत याद लावीने क्रोधथी ते गाममां मरकी फेलावीने अनेक माणसोने मारी नाख्या. "केटलाकनो ते संस्कार थाय" एम विचारी मडदां तेमनां तेम पडी रहेवाथी तेउनां हाडकांउना समूह उपरथी ते गामनुं अस्थिकग्राम एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं. पछी बाकी रहेला लोकोए तेनुं आराधन करवाथी तेणे प्रत्यक्ष य-


शूलपाणीयक्ष
सिद्धार्थ
भगवान.
पूजक

इने पोतानुं देवल तथा प्रतिमा करावी. त्यां माणसो तेनी हमेशां पूजा करता हता. भगवान् पण तेने प्रतिबोधवा वास्ते तेज चैत्यमां आव्या. लोकोए प्रभुने कह्युं के आ दुष्ट यक्ष पोताना चैत्यमां जे रात्रि रहे छे, तेने मारी नाखे छे, एम लोकोए वार्या छतां पण प्रभु त्यांज रात्रि रह्या. तेणे प्रभुने क्षोभ पमाडवा माटे पृथ्वी फाटी जाय एवो अट्टहास कर्यो. पछी हाथीनुं अने सर्पनुं रूप करीने दुःसह उपसर्गो कर्या, तोपण प्रभु तो जरा पण क्षोभायमान थया नहीं. पछी अन्यनो जीव जाय एवी तेणे प्रभुने मस्तकमां, कानमां, नासिकामां, चक्षुमां, दांतमां, पीठमां नखमां विगेरे अनेक सुकुमाल स्थानकोमां वेदना करवा मांडी, तेथी पण प्रभुने निष्कंप जोइने ते प्रतिबोध पाम्यो. तेज वखते सिद्धार्थ व्यंतर पण त्यां आवी तेने कहेवा लाग्यो के हे निर्भागि, दुष्ट, शुलपाणि! तें आ शुं आचर्युं? जे तें इंद्रने पण पूजनीक एवा प्रभुनी आशातना करी. जो आ वात इंद्र जाणशे, तो तारा स्थाननो पण ते नाश करशे. ते सांभली शूलपाणि पण भय पामीने प्रभुने पूजवा लाग्यो, तथा तेमनी आगल गायन अने नाच करवा लाग्यो. ते सांभली लोकोए विचार्युं के आणे ते प्रभुने मार्या छे, तेथी गाय छे, अने नाचे छे.

हवे त्यां प्रभुए एक देश ऊणा एवा रात्रिना चार पोहोरो सुधी जे अत्यंत वेदना सहन करी, तेथी प्रभाते तेमने क्षणवार निद्रा आवी. ते वखते प्रभु उभा थकांज दश स्वप्नो जोइने जाग्या. हवे प्रभात थयुं एटले लोको एकठा थया. ते वखते त्यां उत्पल अने इंद्रशर्मा नामे अष्टांग निमित्तना जाणनारा बे निमित्तिआओ पण आव्या. तेओ सघलाओए प्रभुने दिव्य गंध, चूर्ण, पुष्प आदिकथी पूजित जोइने हर्ष सहित नमस्कार कर्यो.

पछी उत्पल निमित्तिओ बोल्यो के हे भगवन्! आपे रात्रिने छेडे जे दश स्वप्नो जोयां छे तेओनुं फल आप तो जाणो छो, तोपण हुं कहुं छुं. जे आपे तालपिशाचने हण्यो, तेथी करीने तमो थोडाज वखतमां मोहनीय कर्मने हणशो. तथा सेवा करतुं एवुं आपे जे श्वेत पक्षी जोयुं, तेथी तमो शुक्लध्यानने धारण करशो. जे तमे चित्र कोकिलने सेवा करतो जोयो, तेथी तमो द्वादशांगीनो अर्थ

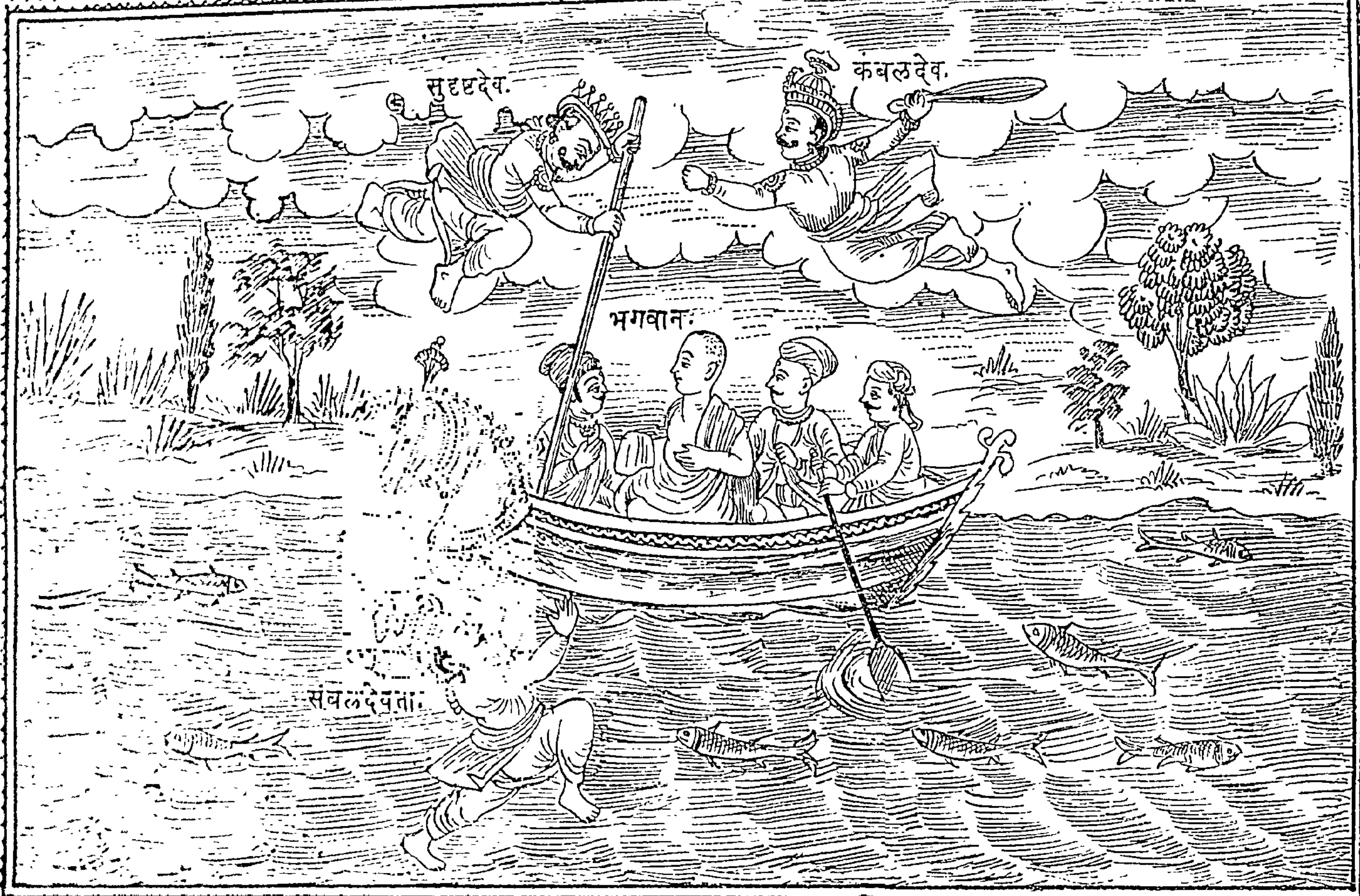
विस्तारशो. जे तमोए गायोनो वर्ग सेवा करतो जोयो, तेथी साधु,साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघ आपनी सेवा करशे. वली जे आपे स्वप्नमां समुद्रने तर्यो, तेथी आप संसारने तरी जशो. वली आपे उगतो सूर्य जोयो, तेथी आपने तुरत केवलज्ञान उत्पन्न थशे. वली आपे आंतरडांथी जे मानुषोत्तरने वींट्यो, तेथी करीने तमारी कीर्ति त्रण भुवनमां थशे. वली आप जे मंदराचलना शिखर पर चड्या, तेथी आप सिंहासन पर बेसीने देव अने मनुष्यनी पर्षदामां धर्मने प्ररूपशो. वली आपे जे देवोए करीने शोभायुक्त थयेलुं पद्मसरोवर जोयुं, तेथी करीने आपने चारे निकायना देवो सेवशे. वली आपे जे मालानुं युग्म जोयुं, तेनो अर्थ हुं जाणी शकतो नथी. त्यारे भगवाने कह्युं के हे उत्पल ! जे में मालानुं युग्म जोयुं, तेथी हुं साधुधर्म तथा श्रावकधर्म, एम बे प्रकारना धर्म प्ररूपीश. पछी ते उत्पल पण प्रभुने वांदीने चालतो थयो. त्यां प्रभु आठ अर्धमासक्षपणे करीने ते चोमासुं अतिक्रमण करीने मोराक नामना सन्निवेशमां गया. त्यां प्रतिमा धारीने रहेला प्रभुना शरीरमां तेमना सत्कार माटे सिद्धार्थ व्यंतरे दाखल थइने निमित्तो कहेते छते, प्रभुनो महिमा फेलायो. एवी रीते प्रभुना थता महिमाने जोइने अच्छंदक नामना त्यां रहेता निमित्तिआए गुस्से थइने तृणछेदना विषयमां प्रश्न करते छते सिद्धार्थे कह्युं के नहीं छेदाय; एम कहेते छते जेवो ते छेदवा जाय छे के तुरत उपयोगपूर्वक इन्द्रे त्यां आवीने वज्रथी तेनी आंगली छेदी नाखी. पछी रुष्ट थयेला सिद्धार्थे लोकोने जणाव्युं के आ निमित्तिउ चोर छे. त्यारे लोकोए पूछ्युं के शी रीते ? त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के आ माणसे वीरघोष कर्मकरनो दश पलना प्रमाणनो वाटको चोरीने खजुरीना वृक्ष नीचे राख्यो छे, तथा इन्द्रशर्मानो घेटो पण ते खाइ गयो छे, तेनां हाडकां पोतानां घर आगल रहेली बोरडी नीचे तेणे दाट्यां छे, अने तेनुं त्रीजुं दूषण तो मुखथी कही शकाय तेवुं नथी, ते तेनी स्त्री कहेशे. त्यारे माणसोए जइ तेनी स्त्रीने पूछवाथी तेणीए पण ते दिवसे तेनी साथे कजीउ करेलो होवाथी गुस्साथी कह्युं के हे माणसो !


चित्र २५
भगवान्.
चंद्रकोशी सर्प.

जेनुं मुख पण जोवालायक नथी एवो ते दुष्ट छे, केमके ते तो पोतानी बेनने पण जोगवे छे. त्यारे ते ।नीमे- त्तिए अत्यंत लज्जायुक्त थइ एकांतमां आवीने प्रभुने विनंति करी के हे स्वामिन्! आप तो विश्वपूज्य छो अने सर्व जगोए पूजाशो, अने मारी तो अत्रेज आजीविका छे. त्यारे प्रभुए तेनी अप्रीति जाणीने त्यांथी विहार कर्यो; अने श्वेतांबी प्रत्ये जतां थका लोकोए वार्या छतां पण कनकखल नामे तापसना आश्रममां चंडकौशिकने प्रतिबोधवा माटे प्रभु त्यां गया.

ते चंडकौशिक आगला जवमां महा तपस्वी साधु हतो; पारणाने दिवसे गोचरी जतां थयेली देडकीनी विराधनाने प्रायश्चित्तपूर्वक पडिक्कमवा माटे ईर्यापथिकी प्रतिक्रमण वखते, गोचरी प्रति- क्रमण वखते तथा संध्याकालना प्रतिक्रमण वखते एम त्रण वार कोइ लघु शिष्ये तेने संजाली दीधाथी क्रोधायमान थइ ते लघु शिष्यने मारवा माटे दोड्यो, पण वच्चे स्तंजमां अथडाइ मृत्यु पामी ज्योतिष्क देव थयो. त्यांथी चवीने ते आश्रममां पांचसें तापसोनो चंडकौशिक नामे अधिपति थयो. त्यां पण पोताना आश्रमनां फलोने ग्रहण करता एवा राजकुमारोने जोइने गुस्से थयो थको तेमने मारवा तैयार थयो अने हाथमां कुहाडी लइ दोडतां कूवामां पडी गयो. त्यां एवी रीते क्रोधयुक्त मरण पामीने तेज आश्रममां पूर्वजवना नामवालो दृष्टिविष सर्प थयो. ते सर्प प्रभुने प्रतिमामां रहेला जोइने क्रोधथी बलतो थको सूर्य तरफ जोइ जोइने दृष्टिज्वाला मूकवा लाग्यो अने मूकीने तेणे विचार्युं के आ प्रभु पडता थका मने न दाबो एम धारीने ते दूर हठ्यो, पण प्रभुने तो आगलनी पेठे निश्चल जोइने अत्यंत क्रोधातुर थइने तेणे प्रभुने डंख मार्या, तोपण प्रभुने अव्याकुल जोइने तथा प्रभुना रुधि- रने पण क्षीर सरखुं जोइने तथा "बुज्झ बुज्झ चंडकोसिआ" एम प्रभुनां वचनने सांजलीने थयेलुं छे जातिस्मरणज्ञान जेने एवो ते चंडकौशिक सर्प प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दइने अहो! करुणासागर एवा प्रभुए मने दुर्गतिरूपी कूवामांथी उद्धर्यो, इत्यादि प्रकारनुं मनमां चिंतवन करीने अनशन लइ एक पखवाडीया सुधी बिलमां पोतानुं मुख राखीने रह्यो. त्यां घी आदिक वेचनारी स्त्रीओए

तेने घी आदिक नाखीने पूज्यो; अने ते घी आदिकनी गंधथी त्यां आवेली कीडीओथी अत्यंत पीडा पामतो तथा प्रभुनी दृष्टिरूपी अमृतथी सिंचातो थको मृत्यु पामी सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. पछी प्रभु पण त्यांथी बीजी जगोए विहार करी गया. पछी उत्तरवाचालामां नागसेने प्रभुने क्षीर वोराव्युं. त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां. त्यांथी श्वेतांबी नगरीमां प्रदेशी राजाए प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी सुरभिपुर प्रत्ये जतां प्रभुने पांच रथ लावीने नैयका गोत्रवाला राजाओ वांदता हवा. त्यांथी सुरभिपुर नगरे प्रभु गया. त्यां गंगा नदीने कांठे सिद्धयात्र नाविक लोकोने नाव पर चडावतो हवो, भगवान् पण ते नावमां चड्या. ते अवसरे घुवडनो शब्द सांभळीने क्षेमिल नामना निमित्तिए कह्युं के आजे आपणने मरणांत कष्ट आवशे, पण आ महात्माना प्रभावथी ते संकटनो नाश थशे. एवी रीते गंगा नदी उतरतां प्रभुना त्रिपृष्ठना भवमां मारेला सिंहना जीव सुदंष्ट्र नामना देवे नाव बुडाडवा आदिकनुं विघ्न कर्युं, पण कंबल अने शंबल नामना नागकुमारोए आवीने ते विघ्न निवार्युं. ते बन्नेनी उत्पत्ति नीचे प्रमाणे जाणवी. मथुरा नगरीमां साधुदासी अने जिनदास नामे बे स्त्री भरतार हता, तेओ परम श्रावक हता, तेथी पांचमा व्रतमां सर्वथा प्रकारे चोपगां पशुओ राखवानुं पच्चक्खाण तेमणे कर्युं हतुं. त्यां एक भरवाडण पोतानुं गोरस लावीने साधुदासीने आपती हती, अने तेथी ते पण तेणीने यथोचित द्रव्य आपती हती. एवी रीते केटलेक काले तेओ बन्नेमां अत्यंत प्रीति थइ. एक दहाडो ते भरवाडणे पोताने घेर विवाह आववाथी ते बन्ने स्त्री भरतारने निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेओए कह्युं के अमे त्यां आवी शकीशुं तो नहीं, पण तमारे विवाहमां जे कंइ वस्तुओ जोइए, ते अमारे घेरथी लेवी. पछी तेओए दीधेलां चंद्रवादिक उपकरणो तथा वस्त्र, आभूषण, धूप आदिकथी ते भरवाडणनो विवाह अत्यंत उत्कृष्टो थयो; तेथी ते भरवाड तथा भरवाडणे खुशी थइने अत्यंत मनोहर तथा समान वयवाला एवा बे बालवृषभो लावीने तेमने आप्या. तेओनी इच्छा नहोती, तोपण तेओ ते बेलोने तेने घेर पराणे बांधीने पोताने घेर गया. त्यारे ते वेपारीए विचार्युं


चित्र ३६.
सुदष्टदेव.
कंबलदेव.
भगवान.
संबलदेवता.

तेने घी आदिक नाखीने पूज्यो; अने ते घी आदिकनी गंधथी त्यां आवेली कीडीओथी अत्यंत पीडा पामतो तथा प्रभुनी दृष्टिरूपी अमृतथी सिंचातो थको मृत्यु पामी सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. पछी प्रभु पण त्यांथी बीजी जगोए विहार करी गया. पछी उत्तरवाचालामां नागसेने प्रभुने क्षीर वोराव्युं. त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां. त्यांथी श्वेतांबी नगरीमां प्रदेशी राजाए प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी सुरभिपुर प्रत्ये जता प्रभुने पांच रथ लावीने नैयका गोत्रवाला राजाओ वांदता हवा. त्यांथी सुरभिपुर नगरे प्रभु गया. त्यां गंगा नदीने कांठे सिद्धयात्र नाविक लोकोने नाव पर चडावतो हवो, भगवान् पण ते नावमां चढ्या. ते अवसरे घुवडनो शब्द सांभ-ळीने क्षेमिल नामना निमित्तिए कह्युं के आजे आपणने मरणांत कष्ट आवशे, पण आ महात्माना प्रभावथी ते संकटनो नाश थशे. एवी रीते गंगा नदी उतरतां प्रभुना त्रिपृष्ठना भवमां मारेला सिंहना जीव सुदंष्ट्र नामना देवे नाव बुडाडवा आदिकनुं विघ्न कर्युं, पण कंबल अने शंबल नामना नाग-कुमारोए आवीने ते विघ्न निवार्युं. ते बन्नेनी उत्पत्ति नीचे प्रमाणे जाणवी. मथुरा नगरीमां साधु-दासी अने जिनदास नामे बे स्त्री भरतार हता, तेओ परम श्रावक हता, तेथी पांचमा व्रतमां सर्वथा प्रकारे चोपगां पशुओ राखवानुं पच्चख्खाण तेमणे कर्युं हतुं. त्यां एक भरवाडण पोतानुं गोरस लावीने साधुदासीने आपती हती,अने तेथी ते पण तेणीने यथोचित द्रव्य आपती हती.एवी रीते केटलेक काले तेओ बन्नेमां अत्यंत प्रीति थइ. एक दहाडो ते भरवाडणे पोताने घेर विवाह आववाथी ते बन्ने स्त्री भरतारने निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेओए कह्युं के अमे त्यां आवी शकीशुं तो नहीं, पण तमारे विवाहमां जे कंइ वस्तुओ जोइए, ते अमारे घेरथी लेवी. पछी तेओए दीधेलां चंद्रवादिक उपकरणो तथा वस्त्र, आभूषण,धूप आदिकथी ते भरवाडणनो विवाह अत्यंत उत्कृष्टो थयो;तेथी ते भरवाड तथा भरवाडणे खुशी थइने अत्यंत मनोहर तथा समान वयवाला एवा बे बालवृषभो लावीने तेमने आप्या. तेओनी इछा नहोती, तोपण तेओ ते बेलोने तेने घेर पराणे बांधीने पोताने घेर गया. त्यारे ते वेपारीए विचार्युं

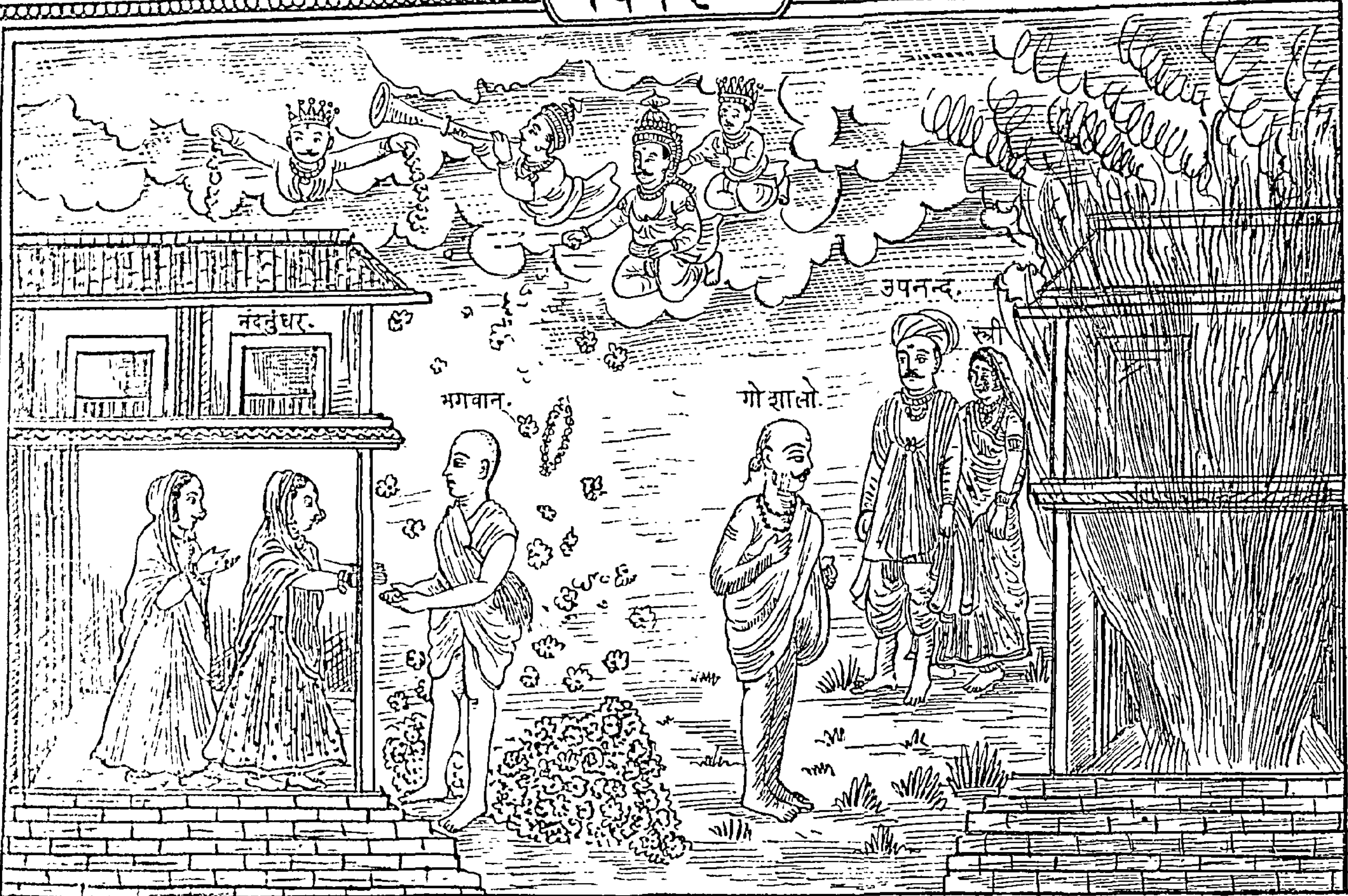

चित्र ३९.
सुदृष्टदेव.
कंबलदेव.
भगवान.
संबलदेवता.

के जो आ वेलोने पाठा आपीशुं, तो ते खासी करवा तथा भार उपाडवा आदिकथी दुःखी थशे, एम विचारी ते तेउनुं प्रासुक तृण जल आदिकथी पोषण करवा लाग्यो; अने तेथी भार उपाडवा आदिकना श्रम विना तेउ त्यां सुखे रहेवा लाग्या. कोइ दहाडो अष्टमी आदिने दिवसे ते श्रावक पौषध लइ त्यां पुस्तक आदिक वांचतो. ते सांभली ते बलदो भद्रक थया. पछी जे दिवसे ते श्रावक उपवास करे, ते दिवसे तेउ पण तृण आदिक खाय नहीं. एवी रीते साधर्मिकपणाए करीने तेउ ते श्रावकने पण अत्यंत प्रिय थइ पड्या. एक दहाडो ते जिनदासना मित्रे ते अति बलवान् तथा सुंदर बेल जोइने शेठने पूछ्या विनाज भंडीर वनना यक्षनी यात्रा माटे जेउए धुर जोयेल पण नहीं हतुं एवा ते वेलोने गाडीमां जोडीने एवा तो हांक्या के जेथी तेउ त्रुटी गया; अने पछी लावीने तेमने शेठने घेर बांध्या. शेठे तेमने एवी अवस्थावाला जोइने आंखोमां आंसु लावी खावा आदिकनां पच्चक्खाण करावी नवकार आदिकथी तेमनी निर्यामणा करी. पछी त्यांथी तेउ बन्ने मृत्यु पामीने नागकुमार देवो थया; ते त्यां नवा उत्पन्न थया के तेउए उपयोग दीधाथी बन्नेमांथी एके ते नावनुं रक्षण कर्युं, तथा बीजो ते प्रभुने उपसर्ग करता सुदंष्ट्र देवनी सामो थयो. त्यार पछी तेने जीतीने भगवानना सत्त्व तथा रूपनुं गायन करता तथा नाचता थका महोत्सवपूर्वक सुगंधी जल अने पुष्पनी वृष्टि करीने तेउ पोताने स्थानके गया.

भगवान् पण राजगृही नगरीमां नालंदा नामना पाडामां शालवीनी शालाना एक भागमां तेनी रजा लइने पहेलुं मासक्षपण करीने रह्या. त्यां मंखलि नामे मंख (चित्रकला जाणनार भिक्षाचर विशेष) नी सुभद्रा नामनी स्त्रीने पेटे पुत्र थयो हतो. ते बहुल नामना ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो हतो, माटे तेनुं गोशालो नाम पाड्युं हतुं. ते मंखकिशोर भगवान् पासे आव्यो. त्यां भगवानने मासक्षपणने पारणे विजय नामना शेठे कूर आदिक विपुल भोजन विधिए करीने वोराव्युं, तेथी त्यां प्रगट थयेलां पंच दिव्यादि महिमाने जोइने ते गोशाले भगवानने कह्युं के हुं तमारो शिष्य छुं. पछी बीजे पारणे नंद शेठे

पक्वान्न आदिथी, तथा त्रीजे पारणे सुनंद शेठे परमान्न आदिथी प्रभुने प्रतिलाभ्या. चोथा मासक्षपणे प्रभु कोल्लाग नामे सन्निवेशमां पधार्या. त्यां बहुल नामे ब्राह्मणे प्रभुने दुधपाक वोराव्यो. त्यां पण पंच दिव्यो प्रगट थयां.

हवे गोशालो पण प्रभुने ते तंतुशालामां नहीं जोइने आखा राजगृह नगरमां शोधतो थको पोतानुं उपकरण ब्राह्मणोने आपीने मुख तथा मस्तकने मुंडावीने कोल्लागमां भगवानने जोइने "तमारी दीक्षा मने होजो" एम कहीने तेमनी साथे रहेवा लाग्यो. प्रभु पण ते शिष्यनी साथे सुवर्णखल नामे गाम तरफ चाल्या. मार्गमां गोवालीयाउं एक मोटा वासणमां दुधपाक पकावता हता, ते जोइ गोशाले भगवानने कह्युं के आपणे अहीं भोजन करीने चालीशुं. त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के ते वासण भांगी जशे, तेथी गोवालीयाउंए यत्न वडे तेनुं घणुं रक्षण कर्युं, तोपण ते वासण भांगी गयुं. त्यारे गोशाले एवो निश्चय कर्यो के जे थवानुं छे ते थाय छेज, एवो नियतिवाद अंगीकार कर्यो. ते वार पछी प्रभु ब्राह्मणग्राम प्रत्ये गया. त्यां नंद अने उपनंद नामे बे भाइउंना बे पाडा हता. प्रभुए नंदना पाडामां प्रवेश कर्यो. त्यां नंदे प्रभुने वोराव्युं. गोशालो उपनंदना पाडामां गयो. त्यां वासी अन्न उपनंदे वोराव्याथी ते गुस्से थयो, अने शाप दीधो के मारा धर्माचार्यनुं जो तपतेज होय, तो आनुं घर बली जाउ. त्यारपछी प्रभुनो महिमा राखवा वास्ते नजदीकमां रहेला देवे तेनुं घर बाली नाख्युं. पछी प्रभु चंपा नगरीमां आव्या. त्यां द्विमासक्षपणे करीने ते चतुर्मास रह्या. छेल्ला द्विमासनुं पारणुं चंपानी बहार करीने कोल्लाग सन्निवेशमां गया. त्यां शून्य घरमां ते कायोत्सर्गध्याने रह्या. गोशाले पण तेज घरमां रहीने सिंह नामे एक ग्रामणीपुत्रने विद्युन्मती दासीनी साथे क्रीडा करतां जोइ हांसी करी, त्यारे तेणे गोशालाने मार्यो. त्यारे तेणे प्रभुने कह्युं के मने एकलानेज अहीं आणे मार्यो, पण आपे तेने केम निवार्यो नहीं ? त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के फरीने तुं एवुं करीश नहीं. पछी प्रभु पात्तालक प्रत्ये गया, तथा त्यां शून्य घरमां रह्या. त्यां पण गोशाले स्कंदने पोतानी दासी स्कंदिला साथे क्रीडा करतां



चित्र ३७.
नंदतुंधर.
भगवान.
गोशालो.
उपनन्द.
स्त्री

जोइ हांसी करी,अने तेथी त्यां पण तेणे प्रथमनी पेठे मार खाधो. पछी प्रभु कुमारक नामे सन्निवेशमां जइने चंपारमणीय नामना उद्यानमां कायोत्सर्गध्याने रह्या. त्यां पार्श्वनाथ प्रभुना शिष्य मुनिचंद्र मुनि घणा शिष्योना परिवार सहित कुंभारनी शालामां रह्या हता. तेना साधुओने जोइ गोशाले कह्युं के तमो कोण छो ? त्यारे तेओए कह्युं के अमो निर्ग्रंथ छीए. त्यारे फरीने गोशाले कह्युं के तमो क्यां तथा अमारा गुरु क्यां ? त्यारे तेओए कह्युं के जेवो तुं छे, तेवा तारा धर्माचार्य पण हशे. त्यारे गोशाले गुस्से थइने कह्युं के मारा धर्माचार्यना तपथी तमारो आश्रम बली जाओ. त्यारे तेओए कह्युं के अमोने कंइ तेनी बीक नथी. पछीथी तेणे आवी सघलो वृत्तांत कही बताव्यो. त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के ते साधुओ कंइ बली शके नहीं. रात्रिए जिनकल्पनी तुलना करता मुनिचंद्र मुनि काउस्सग्गमां हता, ते वखते मदोन्मत्त एवा कुंभारे चोरनी बुद्धिथी तेमने मार्या, तेथी अवधिज्ञान उत्पन्न थया बाद ते मृत्यु पामी स्वर्गे गया. पछी तेना महिमा माटे देवोए त्यां उद्योत कर्यो, त्यारे गोशाले कह्युं के अहो ! आ तेमनो उपाश्रय बले छे. पछी सिद्धार्थे तेने खरी वात जणाववाथी ते त्यां जइ तेना शिष्योने निभ्रंछीने पाछो आव्यो.पछी प्रभु चौरा प्रत्ये गया.त्यां प्रभु अने गोशालाने छुपी खबर लइ जनारा जासुस जाणीने आरक्षकोए (अगरू)हेडमां नाखवा मांड्या.त्यां प्रथम गोशालाने अगरूमां नाख्यो,पण प्रभुने हजु नाख्या नथी,तेटलामां त्यां उत्पल निमित्तिआनी सोमा अने जयंती नामनी बे बहे-नो के जेओ संयम पालवाने असमर्थ थइने परिव्राजिकाओ थइ हती,तेओए प्रभुने जोइ अने ओलखीने ते संकटथी छोडाव्या.पछी प्रभु पृष्ठचंपा प्रत्ये गया.त्यां प्रभु चोमासुं चतुर्मासक्षपण वडे निर्गमन करीने तथा बहारना भागमां ते पारीने (पारणुं करीने) कायंगल नामे सन्निवेश प्रत्ये जइने श्रावस्ती नगरीए गया. त्यां बहारना भागमां कायोत्सर्गध्यानमां रह्या. त्यां सिद्धार्थे गोशालाने कह्युं के आजे तुं मनु-ष्यनुं मांस खाइश.पछी ते सांभली ते पण तेनुं निवारण करवा माटे वाणीआओने घेर भिक्षा माटे भमवा लाग्यो. त्यां पितृदत्त नामे वणिक रहेतो हतो, तेनी स्त्री मरेल बालकने जन्म आपनारी हती. तेणीने

शिवदत्त नामे निमित्तिए छोकरां जीववानो उपाय कह्यो के 'तारे तारा मरी गयेला बालकनुं मांस दुधपाकनी साथे मिश्रित करीने कोइ भिक्षुकने आपवुं'. त्यारे तेणीए तेज विधिपूर्वक गोशालाने ते आप्युं, अने घर बाली नाखवानी बीकथी घरनुं बारणुं तेणीए बदलावी नाख्युं. गोशालो पण तेनुं स्वरूप नहीं जाणतां तेनुं भक्षण करीने भगवान् पासे आव्यो. सिद्धार्थे तेने सघलो वृत्तांत कही बताव्याथी तेणे वमन करीने तेनो निश्चय कर्यो, तथा पछी तेणीनुं घर बालवा चाल्यो, पण घर नहीं मलवाथी तेणे प्रभुने नामे ते पाडोज बाली नाख्यो. त्यांथी प्रभु हरिद्र सन्निवेशनी बहार हरिद्र वृक्षनी नीचे प्रतिमा धारीने रह्या. त्यां पंथिउए सलगावेला अग्नि वडे प्रभु नहीं खसवाथी तेना चरणो दाझ्या; ते जोइ गोशालो त्यांथी नासी गयो. त्यांथी प्रभु मंगला नामे गाममां वासुदेवना स्थानके प्रतिमाथी रह्या. त्यां बालकोने बीवराववा माटे आंखोना विकारो करता गोशालाने ते बालकोनां मावापोए मार्यो अने मुनिपिशाच कहीने तेनी उपेक्षा करी. त्यांथी प्रभु आवर्त गाममां बलदेवने स्थानके प्रतिमाथी रह्या. त्यां पण छोकरांउने बीवराववा माटे गोशालो मुखना चाला करवा लाग्यो. त्यारे तेउनां मावापोए विचार्युं के आ तो गांडो छे, माटे आने मारवाथी शुं छे ? एना गुरुनेज मारवा. एम जाणी जेवा तेउ प्रभुने मारवाने आव्या के तुरत ते बलदेवनी मूर्तिए हाथमां हल लइने तेउने वार्या, त्यारे ते सर्वे पण प्रभुने नमवा लाग्या. त्यार पछी प्रभु चोराक सन्निवेश गया. त्यां मंडपने विषे भोजन रंधातुं जोइने गोशालो वारंवार नीचो नमीने तक जोवा लाग्यो. त्यारे लोकोए चोर जाणीने तेने मार्यो. यारे तेणे गुस्से थइने प्रभुना नामथी ते मंडपने बाली नाख्यो. त्यार पछी प्रभु कलम्बुका सन्निवेश प्रत्ये गया. त्यां मेघ अने कालहस्ति नामे बे भाइ हता. तेमां कालहस्तिए प्रभुने उपसर्ग कर्या अने मेघे तेमने उलखीने खमाव्या. त्यार पछी प्रभु क्लिष्ट कर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे लाट देश प्रत्ये गया. त्यां हीलना आदि घणा घोर उपसर्गो लोकोए कर्या. पछी पूर्णकलश नामे अनार्य गाममां जता भगवानने मार्गमां बे चोर मल्या. तेउ भगवानने

ग्रहो करता हवा. त्यां फरीने छ मासने अंते पाछो गोशालानो मेलाप थयो. त्यां प्रभु वह्मारना भागमां पारणुं करीने कृतबंध एवी मगधभूमिमां उपसर्गोए करीने रहित थया थका विहार करवा लाग्या. त्यांथी आलंभिकामां सातमा चोमासामां [illegible] मासक्षपणथी रहीने वह्मारना भागमां पारणुं करीने कुंडग नामना सन्निवेशमां वासुदेवना [illegible] प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो पण वासुदेवनी प्रतिमाथी पराङ्मुख थइने मुख प्रत्ये अधिष्ठान करी रह्यो, तेथी लोकोए तेने मार मार्यो. त्यांथी प्रभु मर्दन नामे गाममां बलदेवना चैत्यमां प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो बलदेवना मुखने विषे मेहन राखीने रह्यो. [illegible] पण लोकोए तेने मार्यो. एवी रीते बन्ने जगोए तेने मुनि जाणीने लोकोए छोडी मेल्यो. त्यांथी प्रभु अनुक्रमे उन्नाग नामे सन्निवेशमां गया. त्यां मार्गमां सन्मुख आवता एवा दंतुर वहु वरनी गोशाले हांसी करी "के विधिराज कुशल छे के दूरदेशमां पण जे माणस ज्यां वसे छे तेमां जेने जे योग्य होय तेने लोलीने जोडी मेलवे छे." तेथी तेउए तेने मारीने वांसनी जालीमां नाख्यो, पण प्रभु पर छत्र धरनार होवाथी तेने छोडी मेल्यो. त्यांथी प्रभु गोभूमि प्रत्ये गया. त्यांथी प्रभुए राजगृहीमां आठमुं चोमासुं कर्युं तथा चतुर्मासी तप पण कर्यो, अने बह्मारना भागमां पारणुं करीने त्यांथी वज्रभूमिने विषे घणा उपसर्ग छे एम कहीने नवमुं चोमासुं त्यां (वज्रभूमिने विषे) कर्युं, तथा चतुर्मासी तप पण कर्यो तेम बीजा बे मास पण त्यांज प्रभुए विहार कर्यो. वसति एटले स्थानकना अभावथी नवमुं चोमासुं अनियत कर्युं. त्यांथी कूर्मग्राम प्रत्ये जतां मार्गमां एक तलना छोडने जोइने गोशाले भगवानने पूछ्युं के आ छोड निपजशे के नहीं ? त्यारे प्रभुए कह्युं के आमां रहेला तलनां पुष्पोना साते जीवो मरीने एक शंबा(शिंग)मां तलरूप थशे. ते सांभली प्रभुनुं वचन जूठुं पाडवा माटे ते छोडने उखेडीने तेणे एकांत जगामां मेल्यो. ते वखते नजदीकमां रहेता व्यंतरोए विचार्युं के प्रभुनुं वचन जूठुं पडो नहीं, एम विचारी त्यां वृष्टि करी. तथा ते भीनी

घां


चित्र ३८.
वैश्यायन ता.
सिद्धार्थव्यंतर
गोशाले
भगवान्.

वेश्यायन तापसे आतापना ग्रहण करवा माटे जटा छुटी मूकी हती, तेनी मांहे घणी ... ने जोइ गोशाले तेने "यूकाशय्यातर" एम वारंवार कहीने तेनी हांसी करी. तेथी ते तापसे क्रोधायमान थइ तेना पर तेजोलेश्या मूकी, पण दयारसना सागर एवा प्रभुए शीतलेश्या वडे तेनुं निवारण करीने गोशालानुं रक्षण कर्युं.

पछी ते मंखलिना पुत्र गोशाले ते तापसनी तेजोलेश्याने जोइने भगवानने पूछ्युं के हे भगवन् ! ते तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय? ते सांभली प्रभुए अवश्य भावी भावना जोगथी सर्पने दूध पावानी पेठे तेवा अनर्थ करनारी एवी पण तेजोलेश्यानी विधि तेने शिखवी के हमेशां आतापनापूर्वक छठनो तप करी, एक मुठी अडदना बाकुलाथी तथा एक भना पाणीनी अंजलिथी पारणुं करवुं, अने एवी रीते करनारने छ मासने अंते तेजोलेश्या प्राप्त थाय छे. त्यांथी सिद्धार्थ नामे नगर प्रत्ये जतां गोशाले कह्युं के ते तलनो छोड निपज्यो नथी, पण प्रभुए कह्युं के ते छोड तो निपज्यो छे. गोशाले ते वचन पर श्रद्धा नहीं राखता ते तलनी शिंग फोडीने जोइ, तो अंदर सात तलने जोइने तेज शरीरमां तेज प्राणीओ फरीने परावर्तन करीने उपजे छे, एम मति अने नियतिने दृढ करी. त्यांथी ते प्रभुथी जूदो पड्यो; अने श्रावस्ती नगरीमां जइ कुंभारनी शालामां रहीने प्रभुए बतावेला उपायथी तेजोलेश्यो साधीने अने श्रीपार्श्वनाथ प्रभुना तजीदीधेला व्रतवाला शिष्य पासेथी अष्टांग निमित्त भणीने अहंकारे करीने लोकोने जणाववा लाग्यो के हुं तो सर्वज्ञ छुं. अहीं किरणावली टीकाकारे कह्युं छे के तेजोलेश्यानो उपाय सिद्धार्थे शिखव्यो छे, ते विचारवा जेवुं छे, केमके आवश्यक वृत्ति तथा हेमचंद्राचार्यजीए करेला श्रीवीरचरित्र आदिक अनेक ग्रंथोमां प्रभुए ते विधि कह्यो एम कह्युं छे. त्यांथी प्रभुए दशमुं चोमासुं श्रावस्तीमां कर्युं तथा त्यां तेणे विचित्र प्रकारनो तप पण कर्यो. एवी रीते अनुक्रमे प्रभु बहु म्लेच्छोवाली एवी दृढ भूमिमां गया. त्यां पेढाल ग्रामनी बहार पोलास चैत्यमां अष्टमभक्तपूर्वक प्रभु एक रात्रिनी प्रतिमाथी रह्या. ते वखते सभामां आवेला इंद्रे कह्युं के वीर प्रभुना चित्तने चलाववामां त्रणे लोकोना रहेवासीओ

पण असमर्थ छे, एम प्रभुनी प्रशंसा करी. ते सांभली संगम नामनो सामानिक देव ईर्ष्या लावीने इंद्र समक्ष प्रतिज्ञा करवा लाग्यो के एक क्षणवारमां हुं तेमने चलायमान करीश. एम कही तुरत प्रभु पासे आवीने पहेलां तो तेणे धूलनी वृष्टि करी के जेथी प्रभुनां आंख, कान आदिक विवरो ढंकाइ जवाथी ते श्वास लेवाने अशक्त थया. ते वार पछी वज्र सरखा मुखवाली कीडीओए करीने प्रभुना शरीरने तेणे चालणी सरखुं कर्युं. ते कीडीओ एक बाजुथी प्रवेश करीने बीजी बाजुथी नीकलवा लागी. ते वार पछी वज्र सरखा मुखवाला डांसो,ते वार पछी तीक्ष्ण मुखवाली घीमेलो,ते वार पछी वींछीओ,ते वार पछी नोलीयां,ते वार पछी सर्पो,ते वार पछी उंदरो—ए सर्वेना भक्षण आदिकथी,ते वार पछी हाथी तथा हाथणीओनी शुंढना आघातोथी तथा पगोए करीने कचरवाथी,ते वार पछी पिशाचना अट्टहास आदिकथी, ते वार पछी वाघना दाढ तथा नखना विदारण आदिकथी,ते वार पछी सिद्धार्थ अने त्रिशलाना करुणाजनक विलाप आदिकथी तेणे उपसर्ग कर्या. पछी स्कंधावार (लश्कर) विकुर्वीने के ज्यां लोकोए प्रभुना चरणोनी मध्ये अग्नि सलगावीने अने वासण मूकीने रसोइ करी हती.ते वार पछी चंडालोए प्रभुना कान अने भुजानां मूल आदिने विषे तीक्ष्ण चांचोवालां पक्षीओनां पांजरां लटकाव्यां अने तेओ चांचथी भक्षण करवा लाग्यां.ते वार पछी प्रचंड पवनथी के जे पवन पर्वतोने पण कंपावतो थको प्रभुने उछाली उछालीने नीचे पाडतो हतो. ते वार पछी वंटोलीआथी के जे प्रभुने चक्रनी पेठे भमावतो हतो.ते वार पछी हजार भारना प्रमाणवाला चक्रथी के जेथी मेरु पर्वतनुं शिखर पण चूर्ण थइ जाय अने प्रभु पण जेथी ठेक ढींचण सुधी जमीनमां खुंची गया हता. ते वार पछी प्रभात करीने तेणे कह्युं के हे देवार्य! हजु सुधी केम ऊभा छो? पण प्रभु तो ज्ञानथी रात्रि छे एम जाणे छे. त्यार पछी देवनी ऋद्धि करीने कह्युं के हे महर्षे! तमारे स्वर्ग अथवा मोक्ष जे कंइ जोइए ते मागी लो; तेथी पण प्रभुने निश्चल जोइ तेणे देवांगनाना हावभावथी प्रभुने उपसर्ग कर्या. एवी रीते तेणे एक रात्रिमां वीश उपसर्गो कर्या, पण तेथी प्रभु जरा पण चलायमान थया नहीं. अहीं कविए कह्युं छे के हे प्रभु! तमारुं बल जगतनो नाश करवाने अने रक्षण कर-


चित्र ३५
गक्षनुं मंदीर.
भगवानने संगमो देवता उपसर्ग करे छे.

वाने समर्थ छे, अने अपराधी एवा संगमक उपर करेली दया पण तेवीज छे, एवुं विचारीनेज होय नहीं जेम तेम रोषथी क्रोध तो तमारा मनने तजीने जतो रह्यो छे. ते वार पछी छ मास सुधी अनेषणीय कहेतां कल्पे नहीं [illegible] करवा आदिकना तेना करेला नाना प्रकारना उपसर्गोने सहन करता थका प्रभु आहार रहित थया [illegible] मास व्यतीत थये छते ते संगम गयो हशे एम धारीने वज्र ग्रामना गोकुलमां गोचरी माटे गया. त्यां पण तेणे आहारने अनेषणीय करेलो जाणीने प्रभु ते लीधा विना गाम बहार आवी प्रतिमाथी रह्या. पछी ते नीच देव प्रभुने अवधिज्ञानथी कोइ रीते पण स्खलित नहीं थयेला तथा विशुद्ध परिणामवाला जोइने विलखो थइने शक्रनी बीकथी प्रभुने वांदीने सौधर्म देवलोक प्रत्ये गयो. पछी तेज गोकुलमां जता प्रभुने एक घरनी गोवालणीए दुधपाकथी प्रति-लाभ्या, तथा त्यां वसुधारा पण थइ.

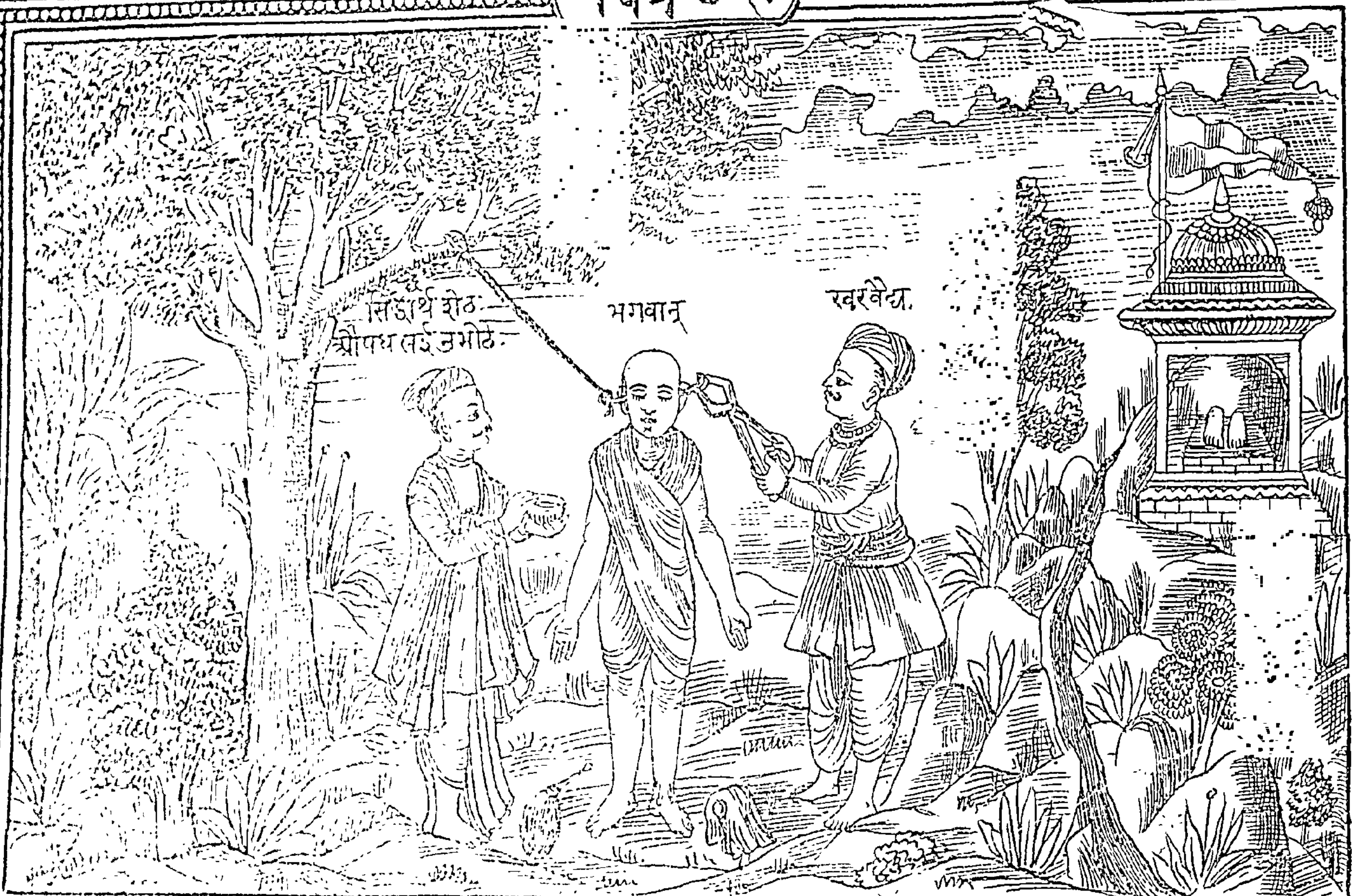
अहीं प्रभुने उपसर्ग कर्या तेटलो काल सुधी सौधर्म देवलोकमां रहेनारा सघला देव तथा देवीउ आनंद रहित अने उत्साह रहित रह्या, अने इंद्र पण गीत, नाटक आदिकने तजीने "आ उपसर्गोनो हुंज हेतु थयो छुं, केमके में करेली प्रभुनी प्रशंसाथी आ दुष्ट संगमके प्रभुने उपसर्गो कर्या छे" एम वि-चारी अत्यंत दुःखित चित्तवालो थयो थको हाथ पर मुख राखी दीन दृष्टियुक्त थयो थको दिलगी-रीमां रह्यो. पछी भ्रष्ट थयेल छे प्रतिज्ञा जेनी तथा श्याम मुखवाला एवा ते नीच संगमक देवने त्यां आवतो जोइने इंद्रे पराङ्मुख थइने देवोने कह्युं के अरे देवो! आ दुष्ट कर्मचंडाल पापी आवे छे, माटे तेनुं दर्शन पण महापापने आपनारुं थाय छे; वली एणे आपणनो मोटो अपराध करेलो छे, केमके तेणे आपणा स्वामीने कदर्थना करी छे. जेम ए पापी आपणाथी डर्यो नथी, तेम पापथी पण डर्यो नथी; माटे दुष्ट अने अपवित्र एवा देवने स्वर्गमांथी तुरत काढी मूको. एवी रीते इंद्रे आज्ञा करेला सुभटोथी निर्दय रीते लाकडी, मुष्टि विगेरेथी ताडना करायेलो, आंगली मोडवाना करेला देवोना आक्रोशने सहन क-रतो, चोरनी पेठे शंकित थइने आमतेम जोतो, छरी गयेला अंगारानी पेठे निस्तेज थयेलो अने परिवार

तेणी तो जीभ करडीने मृत्यु पामी, पण वसुमतीने पुत्री तरीके करवानुं समजावीने तेणीने तेणे को-
शांबीमां लावीने चौटामां वेचवाने राखी. त्यां धनावह नामना शेठे तेणीने वेचाती लइ चंदना एवुं
नाम आपीने पुत्री तरीके राखी अने ते घणी प्रिय थइ. एक दहाडो ते शेठना पग धोवरावती हती ते
वखते तेणीनो चोटलो पृथ्वी पर लटकतो हतो, ते शेठे पोते उंचो कर्यो, ते जोइने ते शेठनी मूला नामनी
स्त्रीए विचार्युं के आ युवान बालिका खरेखर शेठनी स्त्री थशे अने हुं निर्माल्य प्राय थइश एम धारीने
खेद युक्त चित्तवाली तेणीए चंदनानुं मस्तक मुंडावी तेणीने बेडी पहेरावी तालामां घालीने क्यांक
चाली गइ. शेठने पण महा मुश्केलीए चोथे दहाडे ते खबर पडवाथी तालुं उघाडीने तथा तेवीज रीते
तेणीने उंबरामां मूकीने तथा सुपडाना खुणामां अडदना बाकुला आपीने ते बेडी भांगवा माटे लुहारने
ज्यारे बोलाववा गयो, त्यारे चंदनाए विचार्युं के जो कोइ पण भिक्षुक आ वखते आवे तो तेने आ बाकु-
लामांथी आपीने पछी हुं पण खाउं. एम विचार करे छे एटलामां त्यां श्री वीर प्रभु पधार्या. त्यारे तेणीए
पण हर्षित थइने कह्युं के हे प्रभु! आ तमे ल्यो, पण प्रभु पोताना अभिग्रहपूर्वक तेणीने रडती नहीं
जोइने पाछा वळ्या. त्यारे चंदनाए विचार्युं के अहो! प्रभु आ वखते आवीने कंइ पण ग्रहण कर्या
विना पाछा चाल्या जाय छे, एम विचारी खेदपूर्वक ते रडवा लागी. पछी प्रभुए पण पोतानो अभि-
ग्रह संपूर्ण थयेलो जाणी ते बाकुला लीधा. अहीं कवि कहे छे के पंडित लोकोए चंदनाने बाला
केम कहेली छे? (अर्थात् तेणीने तो महा हुशियार समजवी;) केमके तेणीए तो वीर प्रभुने बाकुला वडे
छेतरीने मोक्ष लइ लीधुं!!! ते वखते त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां, इंद्र पण आव्यो, देवो नाचवा लाग्या,
तेणीना मुंडित मस्तक पर केश थइ गया, बेडीओ झांझररूपे थइ. त्यां मृगावती मासीनुं मलवुं थयुं
तथा संबंधथी वसुधारामां पडेलुं धन शतानीक लेवा लाग्यो, तेने निवारीने चंदनानी आज्ञाथी धनावहने
ते धन दइने तथा आ वीर प्रभुनी प्रथम साध्वी थशे, एम कहीने इंद्र अंतर्धान थइ गयो. पछी अनुक्रमे
जृंभिका नामे गाममां इंद्रे नाट्यविधि देखाडीने कह्युं के आटले दिवसे ज्ञाननी उत्पत्ति थशे. त्यारबाद

मेंढिक नामे गाममां चमरेंद्रे प्रभुने कुशल पूछ्युं. त्यांथी पएमानि नामे गाममां प्रभु बहारना भागमां प्रतिमाथी रह्या हता, तेमनी पासे एक गोवालीओ पोताना बेलो मूकीने गाममां गयो. पछी आवीने तेणे प्रभुने पूछ्युं के हे देवार्य ! मारा बेलो क्यां गया ? पण प्रभु मौन रहेवाथी तेणे गुस्से थइने प्रभुना कानमां एवी रीते वांसना खीला ठोक्या के जेमना अग्र भाग अंदर एक बीजाने अडक्या अने बहारना अग्र भाग कापी नाखीने ते न देखाय एवा करी दीधा. प्रभुए त्रिपृष्ठना भवमां शय्यापालकना कानमां जे तपावेलुं सीसुं रेडाव्युं हतुं, ते उपार्जन करेलुं कर्म आवी रीते वीरभवने विषे उदयमां आव्युं. ते शय्यापा-लक भव भमीने आज गोवालीओ थयो हतो. त्यांथी प्रभु मध्यमअपापामां गया. त्यां सिद्धार्थ नामे वणि-कने घेर प्रभुने भिक्षा माटे आवेला जोइने खरक नामना वैद्ये प्रभुने शल्य सहित जाण्या. पछी ते वणिके वैद्यनी साथे उद्यानमां जइने ते खीलाओने साणसीथी प्रभुना कानमांथी खेंची कढाव्या. ते काढती वखते वीर प्रभुए एवो अरेराट शब्द कर्यो के जेथी सघलुं उद्यान महा भयंकर थयुं. त्यां लोकोए एक देवालय पण बंधाव्युं. पछी प्रभु संरोहिणी नामनी औषधिथी नीरोगी थया, तथा ते वैद्य अने वणिक बन्ने स्वर्गमां गया तथा ते गोवालीओ सातमी नरके गयो. एवी रीते उपसर्गो गोवालीआथी शरु थया अने गोवालीआथीज पूर्ण थया.

हवे ते उपसर्गोमां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट ए विभाग छे. ते आ प्रमाणे—कटपूतनानो शीतोप-सर्ग जघन्यमां उत्कृष्ट जाणवो, कालचक्रनो मध्यममां उत्कृष्ट जाणवो, तथा कानमांथी खीला खेंच-वानो उत्कृष्टमां उत्कृष्ट जाणवो. ते सघला उपसर्गो वीर प्रभुए सम्यक् प्रकारे सहन कर्या.

त्यारपछी श्रमण भगवान् श्रीमहावीर प्रभु अणगार थया. केवा अणगार थया ते कहे छे. ईर्यासमिति एटले हलनचलनमां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा भाषासमिति एटले बोलवा करवामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा एषणासमिति एटले बेंतालीश दोषोए करीने रहित एवी भिक्षा ग्रहण करवामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति एटले आदान कहेतां


चित्र ४१.
सिद्धार्थ शेठ
औषध लई उभो छे.
भगवान्
खरवैद्य.

उपकरण आदिक ग्रहण करवामां तथा भांडमात्रा कहेतां वस्त्र प्रमुख उपकरणनी जातने अथवा भांड कहेतां वस्त्र आदि तेमज माटीनां वासणने अने मात्र कहेतां पात्रां विगेरेने मूकवामां पण समितियुक्त थया, अर्थात् तेमने बरोबर जोइ प्रमार्जीने उपाडवा तथा मूकवा लाग्या. तथा पारिष्ठापनिकासमिति एटले विष्ठा, मूत्र, थुंक, श्लेष्म, देहनो मेल इत्यादिक नाखवा करवामां पण सावधान थया, अर्थात् तेमने शुद्ध जगो पर नाखवा लाग्या. अहीं छेल्ली बे समितिओ जो के प्रभुने भांड तथा श्लेष्म आदि नहीं होवाथी संभवतीज नथी, तोपण तेओनां नामना अखंडितपणा वास्ते एम कह्युं छे. वली एवी रीते मन, वचन अने कायानी उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा अशुभ परिणामथी पाछ फरनारा होवाथी मन, वचन अने कायानी गुप्तिवाला थया अने तेथी गुप्त तथा गुप्त इंद्रियोवाला, तथा वसती आदि नव वाडोथी शोभता ब्रह्मचर्यने आचरे छे माटे गुप्त ब्रह्मचारी थया, तथा क्रोधरहित मानरहित, मायारहित अने लोभरहित तथा अंतर्वृत्तिथी शांत, बहिर्वृत्तिथी प्रशांत अने बंने वृत्तिथी उपशांत तथा सर्व प्रकारना संतापथी रहित थया, तथा हिंसा आदिक आश्रवद्वारनी विरतिथी पापकर्मनां बंधनोथी रहित थया, तथा ममताए करीने रहित थया, तथा द्रव्य आदिकथी पण रहित थया, तथा छिन्नग्रंथ एटले हिरण्य (सुवर्ण) आदिकनी ग्रंथिथी रहित थया, तथा द्रव्य भावरूप मलना निर्गमनथी निरुपलेप थया, तेमां द्रव्य मल एटले शरीरथी उत्पन्न थतो मल तथा भाव मल एटले कर्मथी उत्पन्न थतो मल, ते बन्नेथी रहित थया. (अहीं निरुपलेपपणुं दृष्टांते करीने दृढ करे छे. कांसानुं पात्र जेम पाणीथी मुक्त होय छे तेम स्नेहथी मुक्त अर्थात् जेम कांसानुं पात्र पाणीथी लेपातुं नथी, तेम भगवान् पण स्नेहथी लेपाता नथी ए अर्थ जाणवो). तथा शंखनी पेठे राग आदिकने विषे नहीं रंगावाथी निरंजन थया, तथा जीवनी पेठे सर्व जगोए स्खलनारहित गमन करनारा, तथा आकाशनी पेठे कोइना पण आधारनी अपेक्षा नहीं करनारा होवाथी निरालंबन, तथा वायुनी पेठे एकज जगोए नहीं रहेनारा होवाथी अप्रतिबद्ध, तथा शरद् ऋतुना पाणीनी पेठे कालुष्ये करीने अकलंकित होवाथी शुद्ध

हृदयवाला थया, तथा कमलपत्रनी पेठे निर्लेप थया, एटले जेम कमलपत्र पर लेप लागतो नथी, तेम प्रभुने पण कर्मोनो लेप लागतो नथी, तथा काचबानी पेठे गुप्त इंद्रियोवाला, तथा गेंडाना शिंगडानी पेठे एकाकी अर्थात् गेंडाने जेम एकज शिंगडुं होय छे, तेम भगवान् पण राग आदिकनी सहाय विनाना, तथा पक्षीनी पेठे परिवारनुं मूकवापणुं होवाथी अने अनियत निवास होवाथी विप्रमुक्त थया, तथा भारंड पक्षीनी पेठे प्रमाद विनाना थया, भारंड पक्षीना जोडलानुं एकज शरीर होय छे; कह्युं छे के भारंड पक्षीओ एक पेटवालां, पृथग् ग्रीवावालां, त्रण पगवालां तथा मर्त्यनी भाषा बोलनारां होय छे अने तेओनुं मृत्यु भिन्न फलनी इच्छाथी थाय छे, वली तेओ अत्यंत अप्रमादी थया थका जीवे छे ए उपमा जाणवी. वली हाथीनी पेठे कर्मोरूपी शत्रुओने हणवाने शूरा, तथा वृषभनी पेठे पोते अंगीकार करेला व्रतभारने उपाडवाने समर्थ होवाथी जातपराक्रम, तथा सिंहनी पेठे परिषहादिकरूप श्वापदथी नहीं जीताय तेवा होवाथी दुर्द्धर्ष, तथा मेरुनी पेठे उपसर्गोरूपी पवनथी चलायमान नहीं थवाथी अप्रकंप, तथा हर्ष तेमज शोकनुं कारण होय तेने विषे पण विकार रहित स्वभावने लीधे समुद्रनी पेठे गंभीर, तथा शांतपणाने लीधे चंद्रनी पेठे सौम्य लेश्यावाला, तथा सूर्यनी पेठे देदीप्यमान तेजवाला, अर्थात् द्रव्यथी शरीरनी कांतिथी अने भावथी ज्ञाने करी कांतिवाला थया, तथा उत्तम सुवर्णनी पेठे थयेलुं छे स्वरूप जेमनुं एवा थया, अर्थात् जेम निश्चे मेल बली जवाथी सोनुं कांतिवालुं थाय छे, तेम भगवाननुं स्वरूप पण कर्मरूपी मेलनो नाश थवाथी अत्यंत दीप्तिवालुं थयेलुं हतुं ए भाव जाणवो. तथा पृथ्वीनी पेठे सर्व स्पर्शने सहन करनारा थया, अर्थात् जेम पृथ्वी टाढ तडको विगेरे समताथी सहन करे छे, तेम भगवान् पण सघलुं सहन करता हवा, तथा सारी रीते घी आदिकथी सिंचायेलो जे अग्नि, तेनी पेठे तेजथी-जाज्वल्यमान थया. वली ते प्रभुने एवो पक्ष नथी के कोइ पण जगोए तेमने प्रतिबंध थाय एटले तेमने कोइ पण जगोए प्रतिबंध नहोतो ए भाव जाणवो. ते प्रतिबंध चार प्रकारनो कहेलो छे. ते आ प्रमाणे— द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. तेमां द्रव्यथी सचित्त, अचित्त अने मिश्र ए त्रण प्रकारे

जाणवो. सचित्त द्रव्य एटले स्त्री आदिक, अचित्त द्रव्य एटले आभूषण आदिक, तथा मिश्र द्रव्य एटले शणगारेली स्त्री आदिक तेने विषे. क्षेत्रथी एटले कोइ गाममां, नगरमां, अरण्यमां, धान्य जेमां उत्पन्न थाय एवा क्षेत्रमां, खल कहेतां धान्यने फोतरांथी जूदा करवाना स्थानकमां, घरमां, अथवा घरना आंगणामां अथवा आकाशमां. कालथी एटले समय जेवा अति सूक्ष्म कालमां के जे काल सेंकडो कमलपत्र विंधवाना अथवा जीर्ण साडी फाडवा आदिना दृष्टांतथी जणाइ आवे छे, तथा आवलि एटले असंख्याता समयवाला कालमां, तथा श्वासोश्वासना प्रमाणवाला कालमां, तथा स्तोक एटले सात उश्वासना प्रमाणवाला कालमां, तथा क्षण एटले घडीना छठा भागना प्रमाणवाला कालमां, तथा लव एटले सात स्तोकना मानवाला कालमां, तथा मुहूर्त्त कहेतां सत्तोतेर लवना मानवाला कालमां, एवी रीते रात्रि दिवस, पक्ष, मास, ऋतु, अयन अथवा वर्ष पर्यंतना कालमां, तथा बीजा पण युगपूर्व, अंगपूर्व आदिक लांबा कालमां. हवे भावथी एटले क्रोधमां, मानमां, मायामां, लोभमां, भयमां, हास्यमां, प्रेममां, द्वेषमां, कलहमां, मिथ्या कलंक देवामां, चाडीमां, परना अपवादमां, मोहनीयना उदयथी थती रति अरतिमां, कपट सहित मृषावादमां, तथा मिथ्यात्वरूपी अनेक दुःखना हेतुरूप एवा शल्यमां. एवी रीते पूर्वोक्त स्वरूपवालां द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावने विषे कोइ पण जगोए प्रभुने प्रतिबंध नहोतो.

हवे ते श्री वीर प्रभु वर्षाकालना चार मास वर्जीने बाकीना ग्रीष्म अने हेमंत ऋतु संबंधी आठ मासमां गाममां एक रात्रि तथा नगरमां पांच रात्रि सुधी रहेता. वली ते प्रभु केवा ? तो के वासी कहेतां सुतारनुं लाकडां छोलवानुं हथियार तथा चंदन, ते बन्नेने विषे तुल्य अध्यवसायवाला, वली ते प्रभु केवा ? तो के तृण, मणि, पाषाण अने कांचनमां पण तुल्य दृष्टिवाला, तथा सुख दुःखमां पण तुल्य स्वभाववाला, तथा आलोक अने परलोकमां पण प्रतिबंध विनाना, अने तेथी करीनेज जीवित अने मरणमां वांछा रहित एवा, तथा संसाररूपी समुद्रना पार प्रत्ये पहोंचेला तथा कर्मोरूपी शत्रुओने मारवा माटे उद्यमवंत थयेला एवा प्रभु आ क्रम प्रमाणे विचरवा लाग्या.

तापना वडे आतापना लेतां थका, जलरहित छठनो तप होते छते, तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रने विषे चंद्रनो योग प्राप्त थये छते, ध्यानना मध्य जागमां वर्त्तते छते, अर्थात् शुक्ल ध्यानना चार जेदो छे, पहेलुं पृथक्त्ववितर्कवालुं सविचार, बीजुं एकत्व वितर्कवालुं अविचार, त्रीजुं सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाति तथा चोथुं उच्छिन्नक्रिय अनिवर्त्ति; तेओमांथी पहेला बे जेदोवालुं ध्यान धरत छते, अनंत एटले अनंत वस्तुनुं जाणपणुं छे जेमां एवां, अनुपम, बाधा रहित, आवरण रहित, संपूर्ण तथा सर्व अवयवे युक्त एवां केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां.

एवी रीते केवलज्ञान उपन्या बाद श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रभु "अर्हन्" थया, अर्थात् अशोक वृक्ष आदिक प्रातिहार्यथी पूजाने योग्य थया. वली केवा ? तो के जिन कहेतां रागद्वेषने जीतनारा थया, तथा केवली, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थया. तथा देव, मनुष्य अने असुर सहित लोकना पर्यायोने जाणनारा तथा जोनारा थया. त्यारे शुं फक्त देव, मनुष्य अने असुरोनाज पर्यायोने जाणनारा थया ? तो के एम नहीं, सर्व लोकने विषे रहेला सर्व जीवोनी जवांतरथी आगति, जवांतरमां गति, स्थिति एटले तद्भव संबंधी आयुष्य अथवा कायस्थिति, च्यवन एटले देवलोकथी तिर्यंच अने मनुष्यने विषे अवतार, उपपात एटले देवलोकमां अथवा नरकमां उत्पत्ति, तथा सर्व जीव संबंधी (जीवोनां) मन, मनमां चिंतन करेलुं, जोजन फलादि, चोरी आदिक कार्य, मैथुन आदि प्रतिसेववुं, प्रगट कार्य तथा छानुं कार्य, ते सघलुं सर्व जीवोनुं जगवान् जाणनारा थया. वली ते प्रभु केवा ? तो के त्रणे जुवनने करामलकनी पेठे जोनार होवाथी नथी रहेल कंइ पण गुप्त जेने एवा, तथा जघन्यपणाथी क्रोम देवो तेमनी सेवा करनारा होवाथी एकांतने नहीं जजनारा एवा ते प्रभु ते ते कालने विषे मन, वचन अने कायाना योगोमां यथायोग्यपणे वर्तता एवा सर्व लोकने विषे सर्व जीवो, तेउना सर्व जावोने जाणता अने जोता थका विचरवा लाग्या. वली "सव्वजी-

वाणं" ए पदमां अकारनो प्रश्लेष होवाथी सर्व अजीव एटले धर्मास्तिकाय आदिकना पण सर्व पर्यायोने जाणता अने जोता थका प्रभु विचरवा लाग्या एवो पण अर्थ जाणवो.

हवे ते अवसरने विषे एकठा मळेला देव असुर प्रत्ये पत्थरवाली जमीन पर पडेला वरसादनी पेठे क्षणवार निष्फल एवी देशना दइने प्रभु अपापापुरीमां महसेन नामे वनमां गया. त्यां यज्ञ करावता एवा सोमिल नामे ब्राह्मणना घरमां घणा ब्राह्मणो एकठा थया हता. तेओमां इन्द्रभूति, अग्निभूति तथा वायुभूति नामे त्रण सगा भाइओ हता. तेओ चौदे विद्यामां प्रवीण हता. अनुक्रमे तेओमां पहेलाने जीवनो, बीजाने कर्मनो तथा त्रीजाने तेज जीव ने तेज शरीरनो संदेह हतो. तथा ते दरेकने पांचसो पांचसो शिष्योनो परिवार हतो. तेवीज रीते व्यक्त अने सुधर्मा नामना बे ब्राह्मणो तेटलाज परिवारवाळा तथा तेवाज विद्वानो हता. अनुक्रमे तेओमांथी पहेलाने पंच भूतो छे के नहीं? एवो संदेह हतो, तथा बीजाने "जे जेवो ते तेवोज" एवो संदेह हतो. वळी तेवाज विद्वान् मंडित अने मौर्यपुत्र नामे बे भाइओ हता. ते दरेकने साडा त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो. अनुक्रमे तेओमांथी पहेलाने बंध मोक्षनो, तथा बीजाने देवना संबंधमां संदेह हतो. तथा अकंपित, अचलभ्राता, मेतार्य अने प्रभास नामे चार ब्राह्मणो हता. ते दरेकने त्रणसो त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो; तथा अनुक्रमे तेओमांथी पहेलाने नारकीनो, बीजाने पुण्यनो, त्रीजाने परलोकनो तथा चोथाने मोक्षनो संदेह हतो. एवी रीते ते अग्यारे विद्वानोने एक एक संदेह हतो, पण पोताना सर्वज्ञपणाना अभिमाननी क्षतिना भयथी तेओ मांहोमांहे कोइने पण पोतपोताना संदेह विषे पूछता नहोता. एवी रीते तेओना परिवारना चुमालीसें ब्राह्मणो, तथा बीजा पण उपाध्याय, शंकर, ईश्वर, शिवजी, जानी, गंगाधर, महीधर, भूधर, लक्ष्मीधर, पंड्या, विष्णु, मुकुंद, गोविंद, पुरुषोत्तम, नारायण, डुवे, श्रीपति, उमापति, गणपति, जयदेव, व्यास, महादेव, शिवदेव, मूलदेव, सुखदेव, गंगापति, गौरीपति, त्रिवाडी, श्रीकंठ, नीलकंठ, हरिहर, रामजी, बालकृष्ण, यदुराम,

णित होय तो गणवालायक छे समस्त गुणो जेना एवा ते थाय (अर्थात् तेना समस्त गुणो गणी शकाय). लोकोए एम कह्ये छते इंद्रभूति विचारवा लाग्यो के निश्चे आ कोइ महा धूर्त छे तथा मायाने रहेवानुं खास घर छे, केमके नहींतर ते समस्त लोकोने विभ्रममां केम पाडी शके? माटे ते सर्वज्ञने हुं कदि क्षणवार पण सहन करी शकीश नहीं; केमके अंधकारना समूहने दूर करवाने सूर्य कंइ वाट जोतो नथी. वली अग्नि हाथना स्पर्शने, सिंह पोतानी केशवालीना खेंचवाने तथा क्षत्रिय पोताना शत्रुथी थता अपमानने कदि सहन करी शकतो नथी; कारण के में वादीना इंद्रोने पण बो-लता बंध करी दीधा छे तो पछी पोताना घरने विषेज शूरवीर एवो आ सर्वज्ञ मारी पासे कोण छे? जे अग्निए मोटा पर्वतोने बाली नाख्या छे तेनी आगल वृक्षो कोण मात्र छे? जेणे हाथीओने उखाडी मूक्या छे एवा वायुनी आगल रुनी पुणीनुं शुं जोर चाले? वली मारा भयथी गौड देशमां जन्मेला पंडितो तो दूर देशमां चाल्या गया छे, तथा गुर्जर पंडितो तो मारा भयथी जर्जरित थइने त्रास पाम्या छे, तथा मालवाना पंडितो मरी गया छे, तथा तिलंग देशमां जन्मेला पंडितो तो मारा भयथी कृश शरीरवाला थया छे. अरे! वली लाट देशमां जन्मेला पंडितो तो माराथी डरीने क्यांए भागी गया छे, तथा द्रविड देशना चतुर पंडितो लज्जातुर थया छे. अरे! ज्यारे हुं वादीओनो इच्छातुर थयो छुं, त्यारे ज-गतमां वादीओनो पण मोटो दुकाल पड्यो छे; तो मारी आगल वली आ कोण वादी छे के जे पोताना सर्वज्ञपणाना मानने धारण करे छे? एम धारीने ज्यारे त्यां प्रभु पासे जवाने ते उत्कंठित थयो, त्यारे अग्निभूतिए तेने आ प्रमाणे कह्युं के हे बंधु! ते एक वादीकीट (दम विनाना वादी) पासे जवाने तमारे प्रयास लेवानी शी जरुर छे? हुं त्यां जाउं छुं, केमके एक कमलने उखेडी नाखवा माटे शुं ऐरावणने लइ जवाय खरो? त्यारे इंद्रभूतिए कह्युं के जो के ते तो मारा शिष्यथी पण जीती शकाय तेवो छे, पण ते प्रवादीनुं नाम सांभलीने माराथी अहीं रही शकातुं नथी. जेम (तल)पीलतां कोइ तलनो दाणो रही जाय, जेम दलतां अनाजनो दाणो रही जाय, जेम उखेडतां कोइ तणखलुं रही जाय, जेम

अगस्तिने (समुद्र) पीतां सरोवर रही जाय तथा खांडतां कोइ पण फोतरुं रहे। जाय तेनी पेठे आ मने थयो छे.तोपण हुं फोकट सर्वज्ञवादीने सहन करी शकतो नथी.ए एक न जीताय तो सर्व पण न जीतायुं थाय. सती स्त्री एक वार पण शीलव्रतथी भ्रष्ट थाय तोपण ते हमेशां असतीज कहेवाय.आश्चर्य छे के त्रण जगतमां हजारो वादीउने में वाद वडे जीत्या छे,पण खीचडीनी हांडलीमां जेम कोइ कांगडुं मग रही जाय तेम आ वादी रही गयो छे.वली आ वादीने जीत्या विना मारो जगतने जीतवाथी उत्पन्न थयेलो यश पण नाश पामशे,केमके शरीरमां रहेलुं अल्प शल्य पण प्राणने तजावे छे.कह्युं छे के वहाणमां एक अल्प छिद्र पडवाथी पण शुं ते समुद्रमां डुबी जतुं नथी? तथा एक इंट खसेडवाथी पण समस्त किल्लो पडी जाय छे. इत्यादि विचार करीने करेल छे बार तिलको जेणे एवो, तथा सोनानी जनोइथी विभूषित थयेलो, तथा उत्तम रीते करेल छे पीलां वस्त्रोनो आडंबर जेणे एवो, तथा हाथमां धारण करेल छे पुस्तको जेउए एवा केटलाक शिष्योथी वींटायेलो,तथा हाथमां पकडेलां छे कमंडलुउ जेउए एवा केटलाक शिष्योथी वींटायेलो, तथा हाथमां राखेल छे दर्भ जेउए एवा केटलाक शिष्योथी वींटायेलो, तथा हे सरस्वती जेना कंठनुं आभूषण छे एवा! हे वादी नी विजयलक्ष्मीने शरण सरखा ! हे वादीउना मदने उतारनारा! हे वादीउनां मुखने भांगनारा! हे वादीउरूपी हाथी प्रत्ये सिंह सरखा! हे वादीउना ईश्वरनो नाश करनार! हे वादीरूपी सिंह प्रत्ये अष्टापद सरखा! हे वादीने जीतवाथी निर्मल थयेला! हे वादीउना समूहना राजा! हे वादीउना शिर प्रत्ये काल सारखा! हे वादी रूपी केल प्रत्ये तलवार सरखा! हे वादीरूपी अंधकार प्रत्ये सूर्य सरखा! हे वादीरूपी घउंने पीसवाने घंटी सरखा! हे वादीना मदनुं–मरडनुं मर्दन करनार! हे वादीरूपी घडाने तोडवाने मुद्गर(मोघर)सरखा! हे वादीरूपी घुवडने सूर्य सरखा! हे वादीरूपी समुद्र प्रत्ये अगस्ति ऋषि सरखा! हे वादीरूपी वृक्षने उखेडी नाखवामां हाथी सरखा! हे वादीरूपी देवोना इंद्र सरखा! हे वादीरूपी गरुड प्रत्ये गोविंद सरखा! हे वादीरूपी माणसोना राजा! हे वादीरूपी कंसने मारवामां कृष्ण सरखा! हे वादीरूपी हरिण प्रत्ये सिंह

सरखा ! हे वादीरूपी ज्वर प्रत्ये धन्वंतरि वैद्य सरखा ! हे वादीरूपी टोलाना मल्ल सरखा ! हे वादीओ-नां हृदय प्रत्ये शल्य सरखा ! हे वादीओना समूहने जीतनारा ! हे वादीओरूपी पतंगीआंओ प्रत्ये दी-पक सरखा ! हे वादीओना समूहना मुगट सरखा ! हे पंडितोमां शिरोमणि सरखा ! हे जीतेल छे अ-नेक वादो जेणे एवा ! हे सरस्वतीथी मलेल छे प्रसाद जेने एवा ! एवी रीते विरुदावलीथी गजावी दीधेल छे दिशाओनो समूह जेणे एवा पांचसो शिष्योथी वींटायेलो इंद्रभूति वीर प्रभु पासे जतो थको विचारवा लाग्यो के अरे ! आ दुष्टे आ शुं कर्युं के मने सर्वज्ञपणाना आटोपथी तेणे गुस्से कर्यो !!! केमके देडको काला सर्पने लातो मारवा तैयार थयो छे ! अथवा तो उंदर पोताना दांतथी बिलाडीना दांत पाडवा तैयार थयो छे ! अथवा बलद पोतानां शिंगडां वडे इंद्रना हाथीने जल्दीथी मारवानी इच्छा करे छे ! अथवा हाथी पोताना दांतथी तुरत पर्वतने पाडी नाखवानो यत्न करे छे ! अथवा शशलो केसरी सिं-हना स्कन्ध उपरनी केशवालीने खेंचवाने इच्छे छे ! के जे मारी दृष्टि आगल लोकमां ए पोतानुं सर्वज्ञपणुं प्रसिद्ध करे छे ? शेषनागना मस्तक उपर रहेला मणिने लेवा माटे तेणे पोतानो हाथ लांबो कर्यो छे; केमके सर्वज्ञना अभिमानथी तेणे मने कोपायमान कर्यो छे. पवननी सन्मुख थइने तेणे दावानल सलगाव्यो छे, अथवा पोताना शरीरनां सुख माटे तेणे कवचनी वेलडी साथे निश्चे आलिंगन कर्युं छे; एम हो, पण तेथी शुं ! हमणांज हुं तेने निरुत्तर करी दइश, केमके ज्यांसुधी सूर्य उगतो नथी त्यांसु-धीज पतंगीउं तथा चंद्र गाजे छे (पोताना जोरमां रहे छे), पण सूर्य उग्या बाद तो तेओ हता नहता थइ जाय छे. वली हे हरिण, हाथी, घोडा विगेरेना समूहो ! तमे जल्दी आ वन थकी दूर जाओ, केमके आटोप सहित कोपथी स्फुरायमान थयेल छे केशवालीनी शोभा जेनी एवो केसरी सिंह अत्रे आ-वे छे. वली मारा भाग्यना समूहथीज आ वादी अहीं आवी पहोंच्यो छे, माटे खरेखर आजे तेनी जीभनी खरज हुं दूर करीश. वली लक्षणशास्त्रमां तो मारुं दक्षपणुं छे, साहित्यशास्त्रमां मारी बुद्धि एकत्र थयेली छे, तर्कशास्त्रमां पण मारुं अत्यंत कठिणपणुं (निपुणपणुं) छे, माटे कया शास्त्रमां में श्रम कर्यो नथी ?

वली यमने मालव देश शुं दूर छे? तथा पंडितने निश्चे अपोषित रस कयो छे? तथा चक्रीने अजेय शुं छे? तथा वज्रने अछेद्य कइ वस्तु छे? तथा महात्माओने शुं असाध्य छे? तथा भूख्याने शुं खाद्य नथी? तथा खलने कहेवा योग्य शुं नथी? तथा कल्पवृक्षने न आपवा योग्य शुं छे? तथा वैरागीने न त्यजाय एवुं शुं छे? तो पछी हुं तेनी पासे जाउं अने तेनुं पराक्रम जोउं.वली त्रणे लोकने जीतनार तथा महा पराक्रमी एवा मने पण अहीं शुं अजेय छे? माटे हवे त्यां जइ तेने हुं जीती लउं.इत्यादि विचार करतो थको प्रभुने जोइ पगथीआं पर रह्यो थको विचारवा लाग्यो के आ ते शुं ब्रह्मा, विष्णु, के सदाशिव शंकर छे? वली शुं आ चंद्र छे? ना, तेम तो नहीं, केमके चंद्र तो कलंक युक्त छे. त्यारे शुं सूर्य छे? ना, तेम पण नहीं, केमके सूर्य तो तीव्र कांतिवालो छे.त्यारे शुं मेरु छे? ना,तेम पण नहीं,केमके मेरु तो घणोज कठिन छे.त्यारे शुं विष्णु छे? ना, तेम पण नहीं, केमके विष्णु तो श्याम रंगना छे. त्यारे शुं ब्रह्मा छे? ना, तेम पण नहीं, केमके ब्रह्मा तो घरडा छे. त्यारे शुं ते कामदेव छे? ना, तेम पण नहीं, केमके ते तो शरीर विनानो छे. हवे मालुम पड्युं के आ तो दोषरहित तथा सर्वगुणसंपन्न एवा छेल्ला तीर्थंकर छे.

एवी रीते सुवर्णना सिंहासन पर बेठेला, इंद्रोथी सेवाता अने जगतने पण पूजनीक एवा श्री वीर प्रभुने जोइने ते इंद्रभूति मनमां विचारवा लाग्यो के अरे! हवे हुं पहेलां उपार्जन करेलुं महत्त्व केम राखी शकीश? वली एक खीलाने माटे आखो महेल भांगवानी कोण इच्छा करे? वली एकने नहीं जीत्याथी मारी मानहानि शी थवानी छे? वली जगतने जीतनारो छुं एवुं नाम हवे केम करीश? वली अरे! में वगर विचार्युं काम कर्युं छे, केमके मंद दुर्बुद्धि एवो जे हुं ते आ जगदीशना अवतारने जीतवा माटे आव्यो छुं. वली हुं तेनी पासे शी रीते बोली शकीश? तथा तेनी पासे पण शी रीते जइ शकीश? माटे हवे तो संकटमां पड्यो छुं, तेथी शिव मारा यशनुं रक्षण करो. वली कदाच मारा भाग्योदयथी अहीं मारो जय थाय, त्यारे तो हुं त्रणे जगतमां पंडितशिरोमणि थाउं. एवी रीते विचार करता इंद्रभूतिने जिनेश्वर प्रभुए तेनां नाम अने गोत्र कहेवापूर्वक अमृत सरखी मीठी वाणीथी बोलाव्यो. हे गौतम इंद्रभूति!

लय पामे छे; एटले ते घटादिक वस्तुओ नाश पाम्ये छते अथवा व्यवाहत हात छते तेना उपयोगपणाए करीने जीव पण नाश पामे छे, अने बीजा उपयोगपणाए करीने पाछो उत्पन्न थाय छे, अथवा सामान्यरूपपणाए करीने ते रहे छे, अने तेथी करीने प्रेत्यसंज्ञा नथी, एटले तेने पहेलांनी घटादिकना उपयोगरूप संज्ञा रहेती नथी; केमके वर्तमान उपयोगपणाथी तेनी घटादिक संज्ञा नाश पामेली छे. वली आ आत्मा ज्ञानमय छे, अने जे दम, दान अने दया ए त्रणे दकार जाणे ते जीव. वली विद्यमान छे भोक्ता जेनो एवुं आ शरीर चावल आदिकनी पेठे भोग्यपणाए करीने छे एटले चावल जेम भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण छे, तेम शरीर भोग्य छे अने तेनो भोक्ता विद्यमान छे इत्यादि अनुमाने करीने पण जीव छे. तेमज वली दूधमां जेम घी, तलमां तेल, काष्ठमां अग्नि, पुष्पमां सुगंध तथा चंद्रकांतमां अमृत रहे छे, तेम आ आत्मा पण शरीरमां रहे छे, अने ते शरीरथी जूदो छे. एवी रीतनां प्रभुनां वचनथी नाश थयेल छे संदेह जेमनो एवा इन्द्रभूतिए पांचसो शिष्योना परिवार सहित प्रभु पासे दीक्षा लीधी, अने तेज वखते "उपन्ने इ वा, विगमे इ वा अने धुवे इ वा" ए त्रिपदी प्रभुना मुखथी पामीने तेणे द्वादशांगीनी रचना करी॥ इति प्रथम गणधर ॥

हवे तेना बीजा भाइ अग्निभूतिए पोताना भाइने दीक्षित थयेलो सांभलीने विचार्युं के अरे ! कदापि पर्वत पीगले, बरफनो समूह सलगी उठे, अग्नि शीतल थाय अने वायु स्थिर थाय ए सर्व संभवे, पण मारो भाइ हारे ए संभवे नहीं, तेटला माटे घणी अश्रद्धावाला तेणे लोकोने पूछ्युं. त्यार पछी तेणे निश्चय जाण्ये छते मनमां विचार कर्यो के त्यां जइने ते धूर्तने जीतीने हुं मारा भाइने पाछो वाली आवुं; एम विचारी ते पण उतावलो प्रभुनी सन्मुख आव्यो; त्यारे प्रभुए तेने पण तेनां गोत्र विगेरे सहित एवा नामथी बोलाव्यो, तथा तेना मनमां रहेला संदेहने प्रगट करीने प्रभुए कह्युं के हे गौतमगोत्री अग्निभूति ! तारा मनमां कर्मनो शो संदेह छे ? अथवा वेदना तत्त्वार्थने तुं प्रगट रीते जाणतो नथी ? ते आ प्रमाणे छे. " पुरुष एवेदं ग्नि सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं इत्यादि"

आ पदनो तारा मनमां एवो अर्थ भासे छे के (अहीं " ह्निं " ए वाक्यना अलंकार माटे छे.) जे अतीत कालमां थयेलुं छे, तथा जे आगामी कालमां थवानुं छे, ते सघलुं "पुरुष एव" आत्माज छे. अहीं एवकार ए कर्म, ईश्वर आदिकना निषेध माटे छे. आ वचनथी जे मनुष्य, देव, तिर्यंच, पर्वत, पृथ्वी आदिक वस्तुओ देखाय छे, ते सघलुं आत्माज छे, अने तेथी कर्मनो निषेध प्रगटज छे. वली अमूर्त एवा आत्माने मूर्त एवां कर्म वडे अनुग्रह अने उपघात शी रीते संभवे ? जेम आकाशने चंदन आदिकथी शोभित करी शकातुं नथी, अथवा तेने तलवार आदिकथी कापी शकातुं पण नथी, माटे कर्म छेज नहीं, ए प्रमाणे तारा मनमां छे, पण हे अग्निभूति ! ए अर्थ युक्त नथी, कारण के वेदनां ते पदो तो पुरुषनी स्तुतिनां छे, केमके वेदनां पदो त्रण प्रकारनां छे; तेमां केटलांक विधि प्रतिपादन करनारां छे, जेमके स्वर्गनी इच्छा करनार प्राणीए अग्निहोत्र करवुं इत्यादि, वली केटलांक पदो अनुवाद सूचवनारां छे, जेमके बार मासनो एक संवत्सर कहेवाय इत्यादि अने केटलांक पदो स्तुतिरूप छे, जेमके आ उपरनुंज तारा संदेहवालुं पद इत्यादि, माटे ए उपर कहेला पदथी पुरुषनो महिमा देखाडी आप्यो छे, परंतु कर्मादिनो अभाव कर्यो नथी. जेमके "जले विष्णुः स्थले विष्णुः, विष्णुः पर्वतमस्तके ॥ सर्वभूतमयो विष्णु,-स्तस्माद्विष्णुमयं जगत् ॥१॥ एटले जलमां विष्णु, स्थलमां विष्णु अने पर्वतना शिखर उपर पण विष्णु छे, विष्णु सर्व भूतमय छे, माटे आ जगतज विष्णुमय छे. आ वाक्यथी विष्णुनो महिमा कहेलो छे, पण अन्य वस्तुउनो अभाव कह्यो नथी. वली अमूर्त एवा आत्माने मूर्तिवंत एवां कर्म वडे अनुग्रह अने उपघात केम थाय? ते कहेवुं पण अयुक्त छे, कारण के मूर्तिवंत एवा मद्यादिकथी अमूर्त एवा ज्ञाननो पण उपघात थाय छे, अने ब्राह्मी आदिक औषधिथी अनुग्रह देखायज छे. वली जो कर्म न होय, तो एक सुखी, बीजो दुःखी, एक शेठ, बीजो चाकर इत्यादि जगतनी प्रत्यक्ष विचित्रता केम संभवे ? प्रभुनां ते वचनो सांभलीने अग्निभूतिनो संशय पण दूर थयो, अने तेणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति द्वितीय गणधर ॥

हवे वायुभूतिए तेउ बन्नेने दीक्षित थयेला सांभलीने विचार्युं के जे प्रभुना इन्द्रभूति अने अग्नि-

ज्रूति पण शिष्यो थया, ते प्रज्ञु तो मारे पण पूजनीकज बे; माटे तेमनी पासे हु पण जाउ अने मारो संशय पूढुं. एम विचारी ते पण प्रज्ञु पासे आव्यो, अने एवी रीते सघलाउ पण आव्या, अने प्रज्ञुए पण सर्वेने प्रतिवोध पमाड्यो. तेनो क्रम आ प्रमाणे बे.

हवे "तज्जीव तहरीर" एटले तेज जीव अने तेज शरीर, तेने विषे संदेहवाला वायुज्रूतिने प्रज्ञुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थ जाणतो नथी ? केमके "विज्ञानघन एवैतेज्यो ज्रूतेज्यः" इत्यादि वेदपदोए करीने पंच ज्रूतथी जीव पृथक् नथी एम प्रतीति थाय बे. तथा "सत्येन लज्यस्तपसा ह्येष ब्रह्मचर्येण नित्यं ज्योतिर्मयो हि शुद्धो यं पश्यंति धीरा यतयः संयतात्मान इत्यादि" हवे ते पदोनो अर्थ आ प्रमाणे बे. आ ज्योतिमय शुद्ध आत्मा सत्य, तप अने ब्रह्मचर्य वडे मेलवाय बे एटले जणाय बे. आ वेदपदोथी ज्रूतो थकी पृथक् एवा आत्मानी प्रतीति थाय बे; माटे तने संदेह बे के जे आ शरीर बे तेज आत्मा बे, के कोइ बीजो बे ? पण ते अयोग्य बे, केमके "विज्ञानघन" इत्यादि पदोथी अमे कहेला प्रकारे करीने आत्मानी सत्ता एटले होवापणुं प्रगटज बे ॥ इति तृतीय गणधर ॥

हवे पंच ज्रूतमां संदेहवाला एवा व्यक्त नामना पंमितने प्रज्ञुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी ? "येन स्वप्नोपमं वै सकलं, इत्येष ब्रह्मविधिरंजसा विज्ञेयः" आ पदनो तारा मनमां एवो अर्थ जासे बे के खरेखर पृथ्वी आदिक आ सघलुं स्वप्न सरखुं एटले असत् बे, अने आ वेदवचनथी पहेलां तो पंच ज्रूतोनो अज्ञाव देखाइ आवे बे; वली "पृथ्वी देवता आपो देवता" इत्यादि पदथी ज्रूतसत्ता एटले ज्रूतोनुं होवापणुं जणाइ आवे बे; माटे ते बाबतनो तारा मनमां संदेह बे, पण ते अयुक्त बे; केमके "स्वप्नोपमं वै सकलं" इत्यादि पदो अध्यात्म संबंधी चिंतवनमां कनक, कामिनी आदिना संयोगने अनित्यपणुं सूचवनारां बे, पण कंइ ते पंच ज्रूतोनो निषेध सूचवनारां नथी ॥ इति चतुर्थ गणधर ॥

[illegible] "जे जेवो ते तेवो" एवी रीतना संदेहवाला सुधर्म नामना पंमितने प्रज्ञुए जेवुं हतुं तेवुं

कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी ? कारण के "पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते, पशवः पशुत्वं" इत्यादि पदो भवांतरनुं सादृश्यपणुं सूचवनारां छे, तथा "शृगालो वै एष जायते यः सपुरीषो दह्यते" इत्यादि पदो तो वली भवांतरनुं वैसदृश्यपणुं देखाडनारां छे. ए तारा मनमां संदेह छे, पण ते सुंदर विचार नथी; केमके "पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते" इत्यादि जे पदो छे, तेनो अर्थ तो एवो छे के कोइक मनुष्य पण मार्दव आदिक गुणोए करीने युक्त थयो थको मनुष्य संबंधी आयुकर्मने बांधीने पाछो पण मनुष्यपणाने पामे एवो अर्थ निरूपण करनारां ते पदो छे, पण मनुष्य ते मनुष्यज थाय एवो निश्चय बतावनारां ते पदो नथी. वली तारा मनमां एक एवी युक्ति पण वसेली छे के मनुष्य केवी रीते पशु थइ शके ? केमके चावलना दाणा वाव्याथी कंइ घउं पेदा नथी, पण ते तारी युक्ति बरोबर नथी; केमके छाण आदिथी वींछी आदिनी उत्पत्ति देखाय छे, तेथी कार्यनुं वैसदृश्यपणुं पण संभवे छे ॥ इति पंचम गणधर ॥

हवे बंध मोक्षना विषयने विषे संदेहवाला मंडित नामना पंडितने प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी ? कारण के "स एष विगुणो विभुर्न बध्यते संसरति वा मुच्यते मोचयति वा." आ पदोनो अर्थ तुं प्रथम एवो करे छे के ते आ कहेवा मांड्यो जीव एटले कोइ जगद्वर्ती जीव छे, ते केवो छे ? तो के विगुण एटले सत्वादि रहित छे अने विभु एटले सर्वव्यापक छे. ते बंधातो नथी एटले पुण्य पापथी जोडातो नथी, संसारमां परिभ्रमण करतो नथी, बंधनो अभाव होवाथी ते कर्म वडे मूकातो नथी तेमज अकर्तापणुं होवाथी बीजाने (कर्मथी) मूकावतो पण नथी, पण आ अर्थ योग्य नथी; परंतु (तेनो अर्थ एवो छे के) ते ए आत्मा केवो छे ? तो के विगुण एटले छद्मस्थ गुण रहित छे. वली केवो छे ? तो के विभु एटले केवलज्ञानस्वरूपे करी विश्वव्यापकपणुं होवाथी केवलज्ञानवालो छे. आवा प्रकारनो आत्मा पुण्य पापथी जोडातो नथी ए ठर्युं ॥ इति षष्ठ गणधर ॥

हवे देवविषयमां संदेहवाला एवा मौर्यपुत्र नामना पंडितने प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण

वेदना अर्थने जाणतो नथी ? कारण के "को जानाति मायोपमान् गीर्वाणान् इन्द्रयमवरुणकुबेरादीन्" ए पदोथी देवोनो निषेध प्रत्यक्ष देखाय छे, अने "स एव यज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गलोके गच्छति" ए पदथी देवसत्ता एटले देवोनुं होवापणुं सिद्ध थाय छे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे, पण ते अयुक्त छे; केमके आ पर्षदामां बेठेला देवोने तो हुं अने तुं बन्ने प्रत्यक्ष रीते जोइए छीए. वली वेदमां जे "मायोपमान्" एवुं देवोनुं विशेषण कह्युं छे, ते तो तेओनुं पण अनित्यपणुं सूचवनारुं छे ॥ इति सप्तम गणधर ॥

हवे नारकीना संबंधमां संदेहवाला एवा पंडितने विषे श्रेष्ठ अकंपित नामना पंडितने प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी ? केमके "नह वै प्रेत्य नरके नारकाः संति" इत्यादि पदोथी नारकीनो अभाव जणाय छे अने "नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति" इत्यादि पदोथी नारकसत्ता एटले नारकीनुं होवापणुं सिद्ध थाय छे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे, पण "नह वै प्रेत्य नरके नारका सन्ति" ए पदनो शो अर्थ छे ? तो के परलोकने विषे केटलाएक नारकीओ मेरु पर्वत आदिनी पेठे शाश्वता नथी, पण जे कोइ पाप आचरे छे ते नारकी थाय छे, अथवा नारकी मरीने फरी नारकीपणे उत्पन्न थता नथी एम "प्रेत्य नारका न सन्ति" ए पद कहेलुं छे ॥ इति अष्टम गणधर ॥

हवे पुण्यना संबंधमां संदेहवाला एवा पंडितने विषे श्रेष्ठ अचलभ्रात नामना पंडितने प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदनो अर्थ जाणतो नथी ? तारा संदेहनुं कारण प्रथम 'पुरुष एवेदं ग्निं सर्वं' इत्यादि पद अग्निभूतिए कहेलुं छे ते छे, माटे तेने जे उत्तर त्यां कह्यो छे ते तारे ते प्रमाणेज जाणवो, तथा 'पुण्यः पुण्येन कर्मणा, पापः पापेन कर्मणा' एटले पुण्य कर्मथी पुण्य थाय छे अने पाप कर्मथी पाप थाय छे. इत्यादि वेदपदोथी पुण्य पापनी सिद्धि थाय छे ॥ इति नवम गणधर ॥

हवे परभवमां संदेहवाला एवा पंडितप्रवर मेतार्य नामना पंडितने प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं

के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी? तने पण इन्द्रभूतिए कहेलां 'विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः' इत्यादि पदो वडे परलोकने विषे संदेह छे, परंतु ए पदोनो अर्थ में कह्यो छे ते प्रमाणे विचार के जेथी तारो संदेह दूर थाय ॥ इति दशम गणधर ॥

पछी मोक्षना विषयमां संदेहवाला प्रभास नामना पंडितने पण प्रभुए जेवुं हतुं तेवुं कह्युं के तुं पण वेदना अर्थने जाणतो नथी? कारण के "जरामर्यं वा यदग्निहोत्रं" आ पदथी करीने मोक्षनो अभाव जणाय छे, केमके जे अग्निहोत्र छे, ते "जरामर्यं" कहेतां हमेशां करवुं, एम कह्युं छे, अने तेथी करीने अग्निहोत्रनुं प्रतिपादन कर्युं; अने ते अग्निहोत्रनी क्रिया तो मोक्षनुं कारण थइ शकती नथी, केमके दोषवाली होवाथी केटलाकने वधनुं कारण थाय छे अने केटलाकने उपकारनुं कारण थाय छे; तेथी मोक्षसाधक एवां अनुष्ठाननी क्रिया करवानो काल कहेलो नथी, माटे मोक्ष छेज नहीं, ए कारणथी मोक्षनो अभाव प्रतीत थाय छे; तेम वली कह्युं छे के "द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये, परमपरं च, तत्र परं सत्यज्ञानं, अनंतरं ब्रह्मेति" इत्यादि पदथी मोक्षसत्तानी प्रतीति थाय छे. एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे, पण ते संदेह अयुक्त छे; केमके "जरामर्यं वा यदग्निहोत्रं" ए पदमां "वा" शब्द "अपिना" अर्थमां छे अने ते भिन्न क्रमवालो छे. तेमज "जरामर्यं यावत् अग्निहोत्रं अपि कुर्यात्" एटले जे कोइ स्वर्गादिकनो अर्थी होय तेणे तो जावजीव सुधी अग्निहोत्र करवुं, अने जे कोइ निर्वाणनो अर्थी होय तेणे तो अग्निहोत्र छोडीने निर्वाणसाधक एवुं अनुष्ठान करवुं; पण नियमथी "अग्निहोत्रज करवुं" एम नहीं एवो अपि शब्दनो अर्थ छे, तेथी करीने निर्वाण संबंधी अनुष्ठाननो पण काल जणाव्यो, माटे निर्वाण तो छेज ॥ इति एकादश गणधर ॥

एवी रीते चार हजार अने चारसें ब्राह्मणोए प्रभु पासे दीक्षा लीधी. तेओमांना मुख्य अगीयारने त्रिपदीना ग्रहणपूर्वक अगीयार अंग तथा चौद पूर्वनी रचना अने गणधरपदनी स्थापना थइ.

त्यां द्वादशांगीनी रचना बाद प्रभु तेउने तेनी अनुज्ञा करता हवा अने इंद्र वज्रमय दिव्य स्थाल दिव्य चूर्णोनो भरी प्रभुनी पासे आव्यो. पछी प्रभुए रत्नमय सिंहासनथी उठीने ते चूर्णनी संपूर्ण मुठी भरी. पछी गौतम प्रमुख अगीयारे गणधरो अनुक्रमे जरा नमीने ऊभा रह्या. ते वखते देवो पण वाजित्रना ध्वनि तथा गीत आदिने निवारीने सांभळवा लाग्या. ते वखते पहेलां प्रभु कहेवा लाग्या के "गौतमने द्रव्य, गुण तथा पर्यायथी तीर्थ प्रत्ये आज्ञा आपुं छुं", एम कही तेना मस्तक पर चूर्ण नाखता हवा. पछी देवो पण तेमना पर चूर्ण, पुष्प अने सुगंधनी वृष्टि करता हवा; अने सुधर्मास्वामीने धुरिपदे स्थापीने प्रभु गण प्रत्ये अनुज्ञा करता हवा. एवी रीते गणधरवाद जाणवो.

हवे ते काल अने ते समयने विषे श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु अस्थिक ग्रामनी निश्राए पहेलुं चोमासुं करता हवा, त्यारपछी चंपा अने पृष्ठचंपानी निश्राए त्रण चोमासां करता हवा, वली एवीज रीते वैशाली नगरी अने वाणिज्यग्रामनी निश्राए बार चोमासां करता हवा, राजगृह नगरनी अने नालंदा पाडानी निश्राए चौद चोमासां करता हवा, अर्थात् त्यां राजगृह नगरनी उत्तर दिशामां नालंदा नामे पाडो एटले शाखापुर छे त्यां चौद चोमासां करता हवा, छ मिथिला नगरीमां करता हवा, वे भद्रिका नगरीमां करता हवा, एक आलंभिका नगरीमां करता हवा, एक चोमासुं श्रावस्ती नगरीमां करता हवा, एक चोमासुं वज्रभूमि नामे अनार्य देशमां करता हवा, अने एक छेल्लुं चोमासुं मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुनोनी जीर्ण एवी एक शालामां करता हवा. पहेलां ते नगरीनुं "अपापा" एवुं नाम हतुं, पण प्रभु त्यां कालधर्म पाम्या, तेथी देवोए तेनुं "पापा नगरी" एवुं नाम आप्युं.

हवे जे छेल्ला चोमासामां प्रभु मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुनोनी शालामां आव्या, ते चोमासामां आ वर्षाकालनो चोथो महिनो, सातमो पक्ष, ते कार्त्तिक मासनो कृष्णपक्ष, ते कार्त्तिकना कृष्णपक्षना पंदरमा दिवसे जे छेल्ली[1] रात्रि हती, ते रात्रिए श्रमण भगवान्

[1] गुजराती आसो मासनी अमासे.

श्री महावीर प्रभु कालधर्मने पाम्या. कायस्थिति अने भवस्थिति थकी कालधर्मने पाम्या. संसारथी पार उतरी गया. रुडे प्रकारे संसारमध्ये फरीने पाछा न आववे करीने ऊर्ध्व प्रदेशमां प्रभु गया. ते प्रभु केवा ? तो के छेदेलां छे जन्म, जरा अने मरणनां बंधनो एटले जन्म, जरा अने मरणनां कारणरूप कर्मो जेणे एवा, तथा साधित कर्यो छे अर्थ जेमणे एवा, तथा तत्त्वना अर्थोना जाणकार, तथा भवोपग्राही कर्मोथी मुक्त थयेला, तथा सर्व दुःखोनो अंत करनारा, सर्व संतापोना अभावथी परिनिर्वृत थयेला, तथा नाश थयेल छे शरीर अने मन संबंधी सर्व दुःखो जेमनां एवा ते प्रभु थया.

हवे भगवंतना निर्वाणवर्ष आदिनां सिद्धांतनां नामो कहे छे. जे वर्षमां प्रभु निर्वाणपदने पाम्या, ते चंद्र नामे बीजो संवत्सर हतो, ते कार्त्तिक मासनुं प्रीतिवर्धन एवुं नाम हतुं, ते पक्षनुं नंदिवर्द्धन एवुं नाम हतुं, ते दिवसनुं अग्निवेश्य एवुं नाम हतुं, तथा तेनुं उपशम एवुं बीजुं नाम पण हतुं, देवानंदा नामे ते अमावास्यानी रात्रिनुं नाम हतुं, अथवा तेनुं बीजुं निरति एवुं नाम पण कहेलुं छे. ते वखते अर्च नामे लव हतो, मुहूर्त्त नामे प्राण हतो, सिद्ध नामे स्तोक हतो, नाग नामे करण हतुं, आ शकुनि आदि चार स्थिर करणोमांनुं त्रीजुं करण हतुं, केमके अमासना उत्तरार्द्धमां तेज करण होय छे. सर्वार्थसिद्ध नामे मुहूर्त्त हतुं तथा ते वखते स्वाति नामना नक्षत्रनी साथे चंद्रनो जोग प्राप्त थये छते प्रभु कालधर्मने पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया.

हवे ते संवत्सर, मास, दिवस, रात्रि तथा मुहूर्त्तनां नाम सूर्यप्रज्ञप्तिमां नीचे प्रमाणे आप्यां छे. एक युगमां पांच संवत्सर होय छे; तेओनां नाम चंद्र, चंद्र, अभिवर्द्धित, चंद्र अने अभिवर्द्धित. तथा अभिनंदन, सुप्रतिष्ठ, विजय, प्रीतिवर्द्धन, श्रेयान्, शिशिर, शोभन, हैमवान्, वसंत, कुसुमसंभव, निदाघ अने वनविरोधी, ए श्रावणादि बार मासनां नाम जाणवां. तथा पूर्वांगसिद्ध, मनोरम, मनोहर, यशोभद्र, यशोधर, सर्वकामसमृद्ध, इंद्र, मूर्द्धाभिषिक्त, सौमनस, धनंजय, अर्थसिद्ध, अभिजित, रत्याशन, शतंजय तथा अग्निवेश्य, ए पंदर दिवसनां नाम जाणवां. तथा भद्रमा, सुन-



भगवान् सुवर्ण कमलें बेठा घणा भव्यजीवोने धर्मोपदेश देता थका निर्वाण पाम्या समाधिस्थ थया.

क्षत्रा, इलापत्या, यशोधरा, सौमनसी, श्रीसंभूता, विजया, विजयंती, वैजयंती, अपराजिता, इच्छा, समाहारा, तेजा, अतितेजा तथा देवानंदा, ए पंदर रात्रिउनां नाम जाणवां. तथा रुद्र, श्रेयान्, मित्र, वायु, सुप्रतीत, अभिचंद्र, माहेंद्र, बलवान्, ब्रह्मा, बहुसत्य, ऐशान, त्वष्टा, भावितात्मा, वैश्रवण, वारुण, आनंद, विजय, विजयसेन, प्राजापत्य, उपशम, गंधर्व, अग्निवेश्य, शतवृषभ, आतपवान्, अर्थवान्, ऋणवान्, भौम, वृषभ, सर्वार्थसिद्ध तथा राक्षस, ए त्रीश मुहूर्त्तनां नाम जाणवां.

जे रात्रिए श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु कालधर्म पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया ते रात्रि स्वर्गथी आवता अने जता एवा बहु देव अने देवीउए करीने प्रकाशवाली थइ.

जे रात्रिए श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु कालधर्म पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया ते रात्रि आवता अने जता एवा बहु देव अने देवीउए करीने जाणे अत्यंत व्याकुल थइ होय तेम अस्पष्ट शब्दथी कोलाहलमयी थइ.

जे रात्रिए श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु कालधर्म पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया ते रात्रिए इंद्रभूति नामना मोटा अने गोत्रथी गौतम अनगार शिष्यने ज्ञातकुलमां जन्मेला श्री महावीर प्रभु उपरथी प्रेमबंधन तुटी गये छते अनंत अने अनुपम एवां यावत् उत्तम केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां. तेनो वृतांत नीचे प्रमाणे जाणवो.

प्रभुए पोताना निर्वाण वखते गौतमने कोइक गाममां देवशर्माने प्रतिबोधवा वास्ते मोकल्या हता. तेने प्रतिबोधीने पाछा वलतां श्री गौतमस्वामी वीर प्रभुनुं निर्वाण सांभलीने जाणे वज्रथी हणाया होय तेम क्षणवार सुधी मौनपणाने धारण करीने रह्या, तथा पछी बोलवा लाग्या के आजे मिथ्यात्वरूपी अंधकार फेलावा मांड्यो छे, तथा कुतीर्थिउरूपी घुवडो गर्जना करवा लाग्या छे, तथा दुकाल, युद्ध, वैर आदिक राक्षसोनो फेलावो थशे. वली हे प्रभु! तमारा विना आजे आ भरतक्षेत्र, राहुथी ग्रस्त थयेलो छे चंद्र जेमां एवा आकाश सरखुं, तथा दीपक विनाना भवन

सरखुं शोभा रहित थयुं छे. हवे हुं कोना चरणोने नमीने वारंवार पदोना अर्थो पूछीश ? तथा हे भगवंत ! एम हवे हुं कोने कहीश ? तथा मने पण हे गोतम ! एम आप्त वाणीथी कही कोण बोलावशे ? हा ! हा ! हा ! वीर ! आ तमे शुं कर्युं ? के आवा अवसरे तमे मने दूर कर्यो !!! शुं आपो मांगीने बालकनी पेठे हुं तमारे छेडे वलगत ? शुं हुं केवलज्ञानमांथी तमारी पासेथी भाग मागत ? अथवा मोक्षमां शुं संकडाश थइ जात ? अथवा शुं आपने कांइ भार पडी जात ? के मने आम तजीने तमे चाल्या गया !!! ए प्रमाणे वीर ! वीर ! एम करतां वीर नाम गोतमना मुखे लागी रह्युं. हा, हवे में जाण्युं के वीतरागो तो निःस्नेही होय छे; आ तो मारोज अपराध छे, केमके में ते वखते श्रुतनो उपयोग दीधो नहीं; आ एक पक्षना स्नेहने धिक्कार छे ! माटे हवे स्नेहथी सर्युं; हुं तो एकलोज छुं; मारो कोइ नथी; एवी रीते सम्यक् प्रकारे सम परिणाम भावतां थकां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं.

मुक्खमग्गपवन्नाणं, सिणेहो वज्जसिंखला ॥ वीरे जीवंतए जाओ, गोअमो जं न केवली ॥ १ ॥

मोक्षमार्गमां प्रवर्तेलाने स्नेह ए वज्रनी सांकल छे, कारण के वीर प्रभु जीवता हता त्यांसुधी गोतम केवली न थया.

पछी प्रभातकाले इंद्र आदिके महोत्सव कर्यो. अहीं कवि कहे छे के श्री गोतम प्रभुने तो सघलुं आश्चर्यकारीज थयुं छे. तेमनो अहंकार तो उलटो बोधने माटे थयो, राग पण गुरुनी भक्ति माटे थयो तथा विषाद केवलज्ञानने माटे थयो !!!

हवे ते श्री गौतमस्वामी बार वर्ष सुधी केवलिपर्याय पालीने अने सुधर्मास्वामीने दीर्घायुष्य-वाला जाणी गण सोंपीने मोक्षे गया. पाछलथी सुधर्मास्वामीने पण केवलज्ञान थयुं, अने ते पण त्यार बाद आठ वर्ष सुधी विहार करी पछी आर्य जंबूस्वामीने पोतानो गण सोंपीने मोक्षे गया.

हवे जे रात्रिए श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी मोक्षे गया यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया,

ते रात्रिए नव मल्लकी जातिना काशी देशना राजाउ तथा नव लेच्छकी जातिना कोशल देशना राजाउ, के जेओ कार्य पड्याथी गणनो मेलावो करता हता, अने जेउ अढारे ते चेटक राजाना सामंतो कहेवाता हता, तेउ ते अमावास्याने दिवसे संसाररूपी समुद्रने पार पहोंचाडनार एवो पौषध-उपवास करता हवा एटले चार प्रकारना आहारना त्याग वडे पौषधरूप उपवास करता हवा. नहींतर दीपक करवानो संभव होइ शकतो नथी अने ते वखते भावउद्योत गयो हतो, तेथी हवे अमे द्रव्यउद्योत करीशुं, एम विचारी तेउए दीपको कर्या; अने त्यारथी मांडीने दीवालीनो महोत्सव पण चालु थयो छे, अने कार्त्तिक सुदि एकमने दहाडे देवोए श्री गौतमस्वामीना केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यो, तेथी ते दिवसे पण माणसोने हर्ष थयो. हवे नंदिवर्धन राजा प्रभुनुं निर्वाण थयेलुं जाणीने शोकथी पीडित थयो, तेथी तेने सुदर्शना नामनी बहेने समजावीने आदर सहित बीजने दहाडे पोताने घेर जमाड्यो. त्यारथी भाइबीजनो तेहेवार पण चालु थयो.

हवे जे रात्रिए श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु निर्वाणपदने पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया ते रात्रिए क्रूर स्वभाववालो भस्मराशि नामे त्रीशमो मोटो ग्रह भगवानना जन्मनक्षत्रमां (उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां) संक्रांत थयो हतो. हवे ते ग्रह केवो हतो? तो के बे हजार वर्षनी स्थितिवालो हतो, केमके एक नक्षत्रमां ते एटला काल सुधी रहे छे. हवे ते ग्रहो अठ्याशी छे, तेमनां नाम नीचे प्रमाणे जाणवां. अंगारक, विकालक, लोहिताक्ष, शनैश्चर, आधुनिक, प्राधुनिक, कण, कणक, कणकणक, कणवितानक, कणसंतानक, सोम, सहित, आश्वासन, कार्योपग, कर्बुरक, अजकरक, दुंदुभक, शंख, शंखनाभ, शंखवर्णाभ, कंस, कंसनाभ, कंसवर्णाभ, नील, नीलावभास, रूपी, रूपावभास, भस्म, भस्मराशि, तिल, तिलपुष्पवर्ण, दक, दकवर्ण, कार्य, वंध्य, इंद्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्ति, माणवक, कामस्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसंधिकल्प, प्रकल्प, जटाल, अरुण, अग्नि, काल, महाकाल, स्वस्तिक, सौवस्तिक, वर्धमान,

प्रलंब, नित्यालोक, नित्योद्योत, स्वयंप्रभ, अवभास, श्रेयस्कर, क्षेमंकर, आभंकर, प्रभंकर, अरजा, विरजा, अशोक, वीतशोक, वितत, विवस्त्र, विशाल, शाल, सुव्रत, अनिवृत्ति, एकजटी, द्विजटी, कर, करक, राजा, अर्गल, पुष्प, भाव तथा केतु ए अठ्याशी ग्रहोनां नाम जाणवां.

हवे ज्यारथी क्रूर एवो बे हजार वर्षनी स्थितिवालो ते भस्मराशि नामनो ग्रह श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभुना जन्मनक्षत्रमां संक्रांत थयो, त्यारथी तपस्वी एवा साधु अने साध्वीओना उत्तरोत्तर वृद्धि पामता पूजा एटले वंदनादिक तथा सत्कार एटले वस्त्रदान आदिनुं बहुमान नहीं थाय, अने तेथीज इंद्रे प्रभुने विनंति करी के हे स्वामिन् ! एक क्षणवार आपनुं आयुष्य वधारो, के जेथी आप जीवता होवाथी आपना जन्मनक्षत्रमां संक्रांत थयेलो आ भस्मराशि ग्रह आपना शासनने पीडा करी शके नहीं. त्यारे प्रभुए कह्युं के हे इंद्र ! एवुं निश्चे पूर्वे कदापि थयुं नथी, के क्षीण थयेलुं आयुष्य जिनेंद्रो पण वधारी शके, माटे तीर्थने थनारी बाधा तो अवश्य थशेज, पण ब्याशी वर्षना आयुष्यवालो कल्किन् नामे दुष्ट राजाने ज्यारे तुं मारीश, अने ते वखते बे हजार वर्ष पूर्ण थये छते मारा जन्मनक्षत्रथी भस्मग्रह पण उतरी जशे, अने तारा स्थापेला एवा कल्किपुत्र धर्मदत्तना राज्यथी मांडीने साधु साध्वीओनो उत्तरोत्तर पूजासत्कार थवा मांडशे. सूत्रकारोए पण तेमज कहेलुं छे के ज्यारे ते क्रूर एवो बे हजार वर्षनी स्थितिवालो भस्मराशि नामनो महाग्रह जेटलामां भगवानना जन्मनक्षत्रथी उतरी जशे त्यारे तपस्वी एवा साधु अने साध्वीओनो उत्तरोत्तर पूजासत्कार थशे.

हवे जे रात्रिए श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी निर्वाण पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया ते रात्रिए नहीं उपडी शके एवा कंथुआओ उत्पन्न थया अने तेओ स्थिर रह्या हता, तेथी करीने ते अणचालता थका छद्मस्थ एवा साधु साध्वीओने जल्दीथी नजरे नहीं देखाता हता, अने जेओ अस्थिर रह्या हता, तेथी करीने चालता हता तेने तुरत छद्मस्थ एवा साधु साध्वीओ जोइ

शकता हता. नहीं उपाडी शकाय एवा कंथुआउने जोइने घणा साधु साध्वीउए ते वखते जातपाणीनां पच्चक्काण कर्यां एटले अनशन कर्युं, ए अर्थ जाणवो. ते जोइ कोइ शिष्ये गुरुने पूछ्युं के हे जगवंत ! आ जातपाणीनां पच्चक्काण करवानुं शुं कारण छे ? त्यारे गुरुए कह्युं के आजथी मांडीने संयम पालवुं बहु डुष्कर थशे, केमके पृथ्वी जीवाकुल थशे, संयमने लायक क्षेत्र मली शकशे नहीं तथा पाखंडीउनो जमाव थशे.

ते कालने विषे अने ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने इंद्रजूति आदि चौद हजार साधुउनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, चंदनबाला आदि छत्रीश हजार साध्वीउनी उत्कृष्ट साध्वी-संपदा थइ, शंख, शतक आदि एक लाख उगणसाठ हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ तथा सुलसा रेवती आदि त्रण लाख अढार हजार श्राविकानी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ. (अहीं जे सुलसा श्राविका छे ते बत्रीश पुत्रनी माता एवी नागजार्या जाणवी अने रेवतीने प्रजुने औषध देनारी जाणवी.) तथा सर्वज्ञ नहीं पण सर्वज्ञनी जेवा, जेउने ज्ञेयतावडे सर्व अक्षरसंयोग जणायेला छे एवा अने प्रज्ञापनामां केवली अने श्रुतकेवलीनुं तुल्यपणुं कहेलुं होवाथी जिननी जेम सत्यने कहेनारा एवा त्रणसो चौदपूर्वीउनी उत्कृष्ट संपदा थइ, अतिशय एटले आमर्ष औषधी आदि लब्धिने प्राप्त थयेला एवा तेरसो अवधिज्ञानीउनी उत्कृष्ट संपदा थइ, संपूर्ण एवां जे श्रेष्ठ ज्ञान अने दर्शन, तेने धारण करनारा सातसो केवलज्ञानीउनी उत्कृष्ट संपदा थइ, देवो नहीं छतां पण देवनी रुद्धिने विकुर्ववाने समर्थ एवा सातसो वैक्रियलब्धिवालानी उत्कृष्ट संपदा थइ तथा अढीद्वीप अने बे समुद्रने विषे पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रियोना मनोगत जावने जाणनारा पांचसो विपुलमतिउनी उत्कृष्ट संपदा थइ. त्यां विपुलमति एने जाणवा के आणे घडो चिंतव्यो, ते सोनानो छे, पाटलिपुत्रमां बनेलो छे, शरद् रुतुमां करेलो छे, नील वर्णनो छे, इत्यादि सर्व जेद सहित चारे बाजुए अढी आंगल वधारे एवा मनुष्यक्षेत्रमां रहेला संज्ञी पंचेंद्रियोना

मनोगत पदार्थने जेउ जाणे छे अने ऋजुमतिउ तो चारे बाजुए संपूर्ण एवा मनुष्यक्षेत्रमां रहेला संज्ञी पंचेंद्रियोना मनोगत घट आदि पदार्थ मात्रने सामान्यपणे जाणे छे. एवो ते वन्नेमां तफावत जाणवो. तथा देव, मनुष्य अने असुरोनी सज्ञामां वादने विषे पराभव नहीं पामता एवा चारसो वादीउनी उत्कृष्ट वादिसंपदा थइ. श्रमण भगवंत श्री महावीरना सातसो शिष्य मुक्ति पाम्या यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया तथा चौदसो साध्वीउ मुक्ति पामी. श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुने गति एटले आगामी मनुष्यगतिमां मोक्षप्राप्तिरूप कल्याण छे जेउने एवा, स्थिति एटले देवभवमां पण प्राये वीतरागपणुं होवाथी कल्याण छे जेउने एवा तथा आगामी भवमां सिद्ध थवाना होवाथी जेउने कल्याण छे एवा आठसो अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थनारा मुनिउनी उत्कृष्ट संपदा थइ.

हवे श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनी बे प्रकारनी अंतकृद्भूमि थइ. अंतकृत् एटले मोक्षगामी, अने तेउनी भूमि एटले काल ते अंतकृद्भूमि. तेना बे प्रकार छे ते देखाडे छे. ते आ प्रमाणेः– पहेली युगांतकृद्भूमि अने बीजी पर्यायांतकृद्भूमि. तेमां युग एटले अनुक्रममां वर्तनारा कालमान विशेष, अने तेना साधर्म्य आदिकमां क्रममां वर्तनारा गुरु, शिष्य, प्रशिष्य आदिरूप जे पुरुषो ते पण युगोज कहेवाय, अने तेउथी परिमाण युक्त थयेली जे अंतकृद्भूमि ते युगांतकृद्भूमि कहेवाय, अने पर्याय एटले प्रभुना केवलीपणाना कालने आश्रित थइने रहेली जे अंतकृद्भूमि ते पर्यायांतकृद्भूमि कहेवाय. तेमां पहेली त्रीजा पुरुषयुग जंबूस्वामी सुधीनी युगांतकृद्भूमि जाणवी, अने ज्ञानप्राप्तिनी अपेक्षाए प्रभुने केवलज्ञान थया बाद चार वर्ष पछी कोइक केवली मोक्षे गया ते बीजी पर्यायांतकृद्भूमि जाणवी. प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थया बाद चार वर्षे मोक्षमार्ग चालु थयो हतो अने ते छेक जंबूस्वामी सुधी चालु रह्यो हतो ए भाव जाणवो.

ते कालने विषे अने ते समयने विषे श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु त्रीश वर्ष गृहस्थावस्थामां रहीने, बार वर्षथी कांइक अधिक वखत सुधी छद्मस्थपर्याय पालीने तथा त्रीश वर्षथी कांइक ओछा

वखत सुधी केवलिपर्याय पालीने, तथा एवी रीते एकंदर बेंतालीश वर्ष चारित्रपर्याय पालीने अने बहोंतर वर्ष पोतानुं सर्व आयुष्य पालीने भवोपग्राही एवां वेदनीय, आयु, नाम अने गोत्र ए चार कर्म क्षय थये छते अने आ अवसर्प्पिणीमां दुषमसुषम नामे चोथो आरो बहु गये छते एटले के ते आरानां त्रण वर्ष अने साडा आठ मास बाकी रह्ये छते मध्यम पापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुनोनी शालामां सहाय न होवाथी एक, अद्वितीय एटले एकलाज पण ऋषभ आदिनी पेठे दश हजार आदि परिवार सहित नहीं एवा (अहीं कवि कहे छे के बीजा जिनो साथे जेम मुनिओ मोक्षे गया तेम तमारी साथे कोइ पण मुनि मुक्तिने पाम्या नहीं, तेणे करीने दुषम आरामां थनारा साधुओनी गुरुने विषे बेदरकारी जणावी छे) जल रहित छठनो तप करीने स्वाति नक्षत्रनी साथे चंदनो योग प्राप्त थये छते चार घडी रात्रि बाकी रही हती ते अवसरे पद्मासने बेठा थका पंचावन अध्ययन कल्याणफलना विपाकवालां, पंचावन अध्ययन पापफलना विपाकवालां अने छत्रीश अपृष्ट व्याकरण एटले उत्तरोने कहीने एक प्रधान नामनुं मरुदेवानुं अध्ययन भावता भावता कालधर्म पाम्या, संसारथी विराम पाम्या, रुडे प्रकारे उपर सिद्ध लोकमां गया, जन्म जरा अने मरणनां बंधन छेदी नाख्यां छे जेणे एवा थया, सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, सर्व कर्मनो नाश करनारा थया, सर्व संताप रहित थया अने सर्व दुःखो क्षय थयां छे जेमनां एवा थया.

हवे भगवंतना निर्वाणकाल अने पुस्तक लखवा विगेरेना काललनुं अंतर कहे छे.

श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु मोक्षे गया तेने नवसें वर्ष व्यतीत थयां अने दशमा सैकानो आ एंशीमो संवत्सर काल जाय छे. जो के आ सूत्रनो बराबर व्यक्त भावार्थ समजातो नथी, तोपण जेम पूर्वटीकाकारोए तेनी व्याख्या करी छे तेम अमे पण करीए छीए. ते आ प्रमाणे– अहीं केटलाक कहे छे के कल्पसूत्रनो पुस्तकमां लखावानो काल जणाववाने माटे आ सूत्र श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणे लखेल छे. तेथी आ अर्थ थाय छे के 'जेम श्रीवीर निर्वाणथी नवसें एंशी

वर्ष व्यतीत थये छते सिद्धांत पुस्तकारूढ थयां त्यारे कल्पसूत्र पण पुस्तकारूढ थयुं.' तेमज कह्युं छे के 'श्री वीर भगवानथी नवसें एंशी वर्षे वल्लभीपुर नगरने विषे देवर्द्धिगणि प्रमुख सकल संघे पुस्तकमां आगम लख्यां.' बीजाओ कहे छे के 'नवसें एंशी वर्षे आनंदपुरमां वीरसेन नामना पुत्रने अर्थे संघ समक्ष महोत्सवपूर्वक पंडितोए वांचवानुं शरु कर्युं.' इत्यादि अंतर्वाच्यना वचनथी श्री वीरनिर्वाणथी नवसें एंशी वर्ष व्यतीत थये छते सभा समक्ष कल्पसूत्रनी वाचना थइ ते जणाववाने माटे आ सूत्र मूक्युं छे, पण तत्त्व तो केवली जाणे. वाचनांतरमां आ नवसें त्राणुंमुं वर्ष जाय छे एम देखाय छे. अहीं केटलाक कहे छे के 'वाचनान्तरे' तेनो शुं अर्थ छे? तो के बीजी प्रतमां 'तेणउए' एटले त्राणुं देखाय छे, तेथी कल्पसूत्रनुं पुस्तकमां लखावुं अथवा पर्षदामां वंचावुं ए नवसें एंशी वर्ष व्यतीत थये छते थयुं एम कोइ पुस्तकमां लखेल छे, तेम बीजा पुस्तकमां नवसें त्राणुं वर्ष व्यतीत थये छते थयुं एम देखाय छे, ए प्रमाणे भाव जाणवो. बीजा वली कहे छे के 'अयं अशीतितमे संवत्सरे' तेनो अर्थ शुं छे? तो के पुस्तकमां कल्पसूत्र लखावाना हेतुभूत श्रीवीरथी दशमा सेंकडाना एंशीमा वर्षरूप आ काल जाय छे. 'वायणंतरे' एनो शुं अर्थ छे? तो के एक पुस्तक लखावारूप वाचनानुं, बीजुं सभामां वंचावारूप जे वाचनांतर, तेना हेतुभूत दशमा सेंकडानुं आ त्राणुंमुं वर्ष छे. तेम वली आ पण अर्थ थाय छे के नवसें एंशीमे वर्षे कल्पसूत्रनुं पुस्तकमां लखावुं थयुं अने नवसें त्राणुंमे वर्षे कल्पसूत्रनी पर्षदामां वाचना थइ. तेज प्रमाणे श्री मुनिसुंदर सूरिए पोते बनावेला स्तोत्ररत्नकोशमां पण कहेलुं छे के 'श्रीवीरथी ९९३मे वर्षे चैत्यथी पवित्र एवा जे आनंदपुरमां ध्रुवसेन राजाए महोत्सवपूर्वक सभामां कल्पसूत्रनी पहेली वाचना करी ते आनंदपुरनी स्तुति कोण नथी करतुं? 'वल्लहीपुरंमि नयरे' इत्यादि वचनथी पुस्तक लखवानो काल तो उपर जे कह्यो छे ते प्रसिद्धज छे, पण तत्त्व केवली जाणे. इति श्रीवीरचरित्रं.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकाना गुजराती भाषांतरमां छठो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु

। श्री जिनाय नमः ।

॥ अथ सप्तमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे जघन्य, मध्यम अवे उत्कृष्ट वाचनाए करीने श्री पार्श्व प्रभुनुं चरित्र कहे छे.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां पांचे कल्याणको विशाखा नामना नक्षत्रमां थयां छे. ते आ प्रमाणे–प्रभु विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी च्यव्या अने च्यवीने माताना गर्भमां उत्पन्न थया. विशाखा नक्षत्रमांज प्रभुनो जन्म थयो. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु मुंड थइने घरथी नीकली साधुपणाने प्राप्त थया अर्थात् दीक्षा ग्रहण करी. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु अनंत, अनुपम, निर्व्याघात, आवरण रहित, समग्र अने परिपूर्ण एवां केवलज्ञान अने केवलदर्शनने पाम्या. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु मोक्षे गया.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभु आ उनालानो पहेलो मास, पहेलो पक्ष, ते चैत्रनो कृष्णपक्ष, ते चैत्र कृष्णपक्षनी चोथने[1] दिवसे, वीश सागरोपमनी स्थितिवाला प्राणत नामना दशमा देवलोकथी अंतररहित च्यवीने आज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामे राजानी वामादेवी नामनी राणीनी कुक्षिने विषे देव संबंधी आहार, देव संबंधी भव अने देव संबंधी शरीरनो त्याग करीने मध्य रात्रिए विशाखा नक्षत्रमां चंद्रनो योग प्राप्त थये छते गर्भपणे आवीने उपन्या. हवे ते पुरुषप्रधान अर्हन् श्रीपार्श्वनाथ प्रभु गर्भमांज त्रण ज्ञानयुक्त हता. ते आ प्रमाणेः–"हुं स्वर्गथी च्यवीश एम प्रभु जाणे, च्यवता न जाणे अने च्यव्या पछी हुं च्यव्यो एम जाणे, ते पूर्वे श्री महावीर प्रभुना च्यवन वखते कहेला पाठ प्रमाणे स्वप्नदर्शन, स्वप्नफल प्रश्न विगेरे सघलुं ज्यांसुधी वामादेवी पोताना घर प्रत्ये आवी अने यावत् सुखे सुखे ते गर्भने पालन करे छे त्यांसुधी कहेवुं.

१ गुजराती फागण वदि चोथने दिवसे.

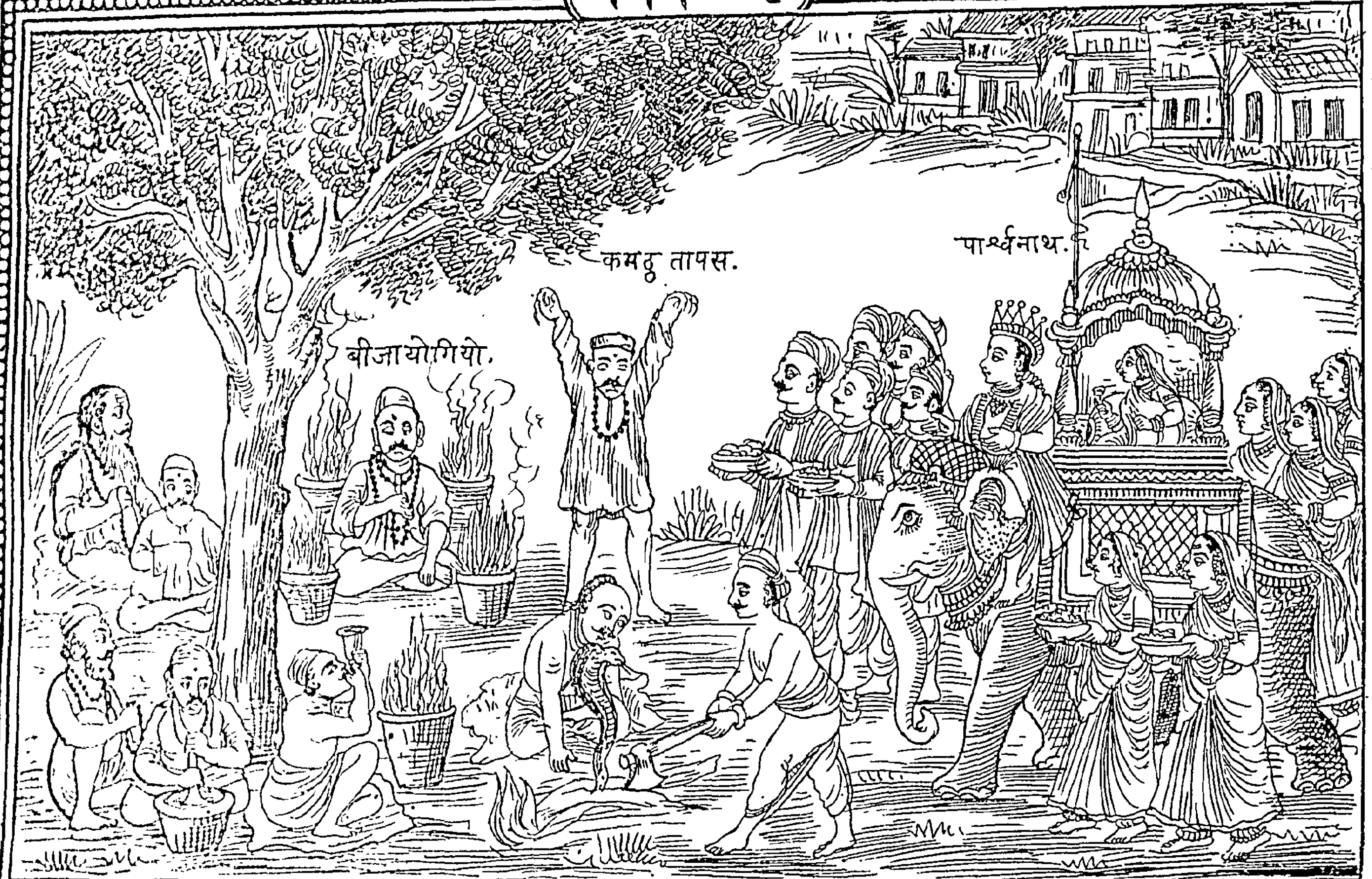
हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभु आ शीयालानो बीजो महीनो, त्रीजुं पखवाडीयुं, ते पोष मासनो कृष्णपक्ष, ते पोष मासना कृष्णपक्षनी दशमने दिवसे नव मास बराबर परिपूर्ण थये छते अने साडा सात दिवस गये छते मध्य रात्रिने विषे विशाखा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते आरोग्य एवा वामादेवीनी कुक्षिए रोगरहित पुत्रपणे उत्पन्न थया.

जे रात्रिने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभु जन्म्या ते रात्रि घणा देव, देवीउंए करीने यावत् घणी आकुल थइ होय तेम अव्यक्त शब्दथी कोलाहलमयी थइ.

बाकीनो प्रभुनो जन्ममहोत्सव विगेरेनो वृत्तांत श्री वीर प्रभुनी पेठे जाणी लेवो, पण ते जन्मोत्सव विगेरेमां श्रीपार्श्वनाथनुं नाम कहेवुं.ते आ कुमारनुं पार्श्व एवुं नाम थाउं त्यांसुधी कहेवुं.प्रभु ज्यारे गर्भमां हता,त्यारे शय्यामां रहेली माताए पोतानी पडखेथी जता कृष्ण सर्पने जोयो हतो, तेथी तेमनुं "पार्श्व" एवुं नाम पाड्युं, अने क्रमे करी ते यौवनने प्राप्त थया. ते आ प्रमाणे–इंद्रे आदिष्ट करेली धात्रीउंथी लालन कराता एवा ते प्रभु नव हाथ प्रमाणना अंगवाला थया थका क्रमे यौवन अवस्थाने पाम्या.

पछी कुशस्थलना राजा प्रसेनजितनी प्रभावती नामनी कन्या साथे मातापिताए आग्रहथी प्रभुनो विवाह कर्यो.

हवे एक दहाडो प्रभु झरुखामां बेठेला छे, ते वखते एक दिशा तरफ पुष्प आदिक पूजानां उपकरणो सहित जता नगरजनोने जोइने तेमणे कोइने पूछ्युं के आ लोको क्यां जाय छे ? त्यारे ते माणसे प्रभुने कह्युं के हे स्वामिन् ! कोइक गामडामां रहेनारो, तथा जेनां मावाप पण मरी गयेलां छे एवो एक कमठ नामनो दरिद्री ब्राह्मणपुत्र हतो अने लोको दया लावी कंइक तेने आपीने तेनी आजीविका चलावता हता. एक दहाडो तेणे रत्नाभरणथी भूषित थयेला नगरना लोकोने जोइने अहो! आ सघली ऋद्धि पूर्व जन्मना तपनुं फल छे एम विचारी ते पंचाग्नि आदि


चित्र ४३.
बीजायोगियो.
कमठ तापस.
पार्श्वनाथ.

महा कष्टनो अर्थी एवो तपस्वी थयो. ते कमठ तापस अहीं नगरीनी बहार आव्या छे, तेने पूजवा माटे लोको जाय छे. ते सांभली प्रभु पण परिवार सहित तेने जोवा माटे गया. त्यां काष्ठनी अंदर बलता एवा एक मोटा सर्पने करुणाना समुद्र एवा प्रभुए पोताना ज्ञानथी जाणीने कहेवा लाग्या के हे मूढ तपस्वी! दया विना फोकट आ कष्ट तुं शामाटे करे छे? केमके दयारूपी नदीना मोटा कांठा पर उगेला तृणना अंकुरा सरखा सर्वे धर्मो छे, माटे जो ते नदी सुकाइ जाय तो ते तृणांकुरो केटली वार सुधी टकी शके? ते सांभलीने क्रोधायमान थयेलो कमठ तापस कहेवा लाग्यो के राजपुत्रो तो हाथी, घोडा आदिकनी क्रीडा करवानुंज जाणी शके, पण धर्मने तो अमे तपोधनज जाणी शकीए छीए. पछी प्रभुए तो अग्निकुंडमांथी बलतुं लाकडुं काढीने अने कुहाडाथी तेना बे कटका करीने तेमांथी तापथी व्याकुल थयेला सर्पने बहार काढ्यो, अने ते सर्प प्रभुना सेवकना मुखथी नवकार मंत्र तथा प्रत्याख्यान सांभलीने तुरतज मृत्यु पामी धरणेंद्र थयो. त्यारे लोकोए प्रभुने "ज्ञानी" एम कहीने स्तुति करी. पछी प्रभु पोताने स्थानके गया, अने कमठ पण तप तपीने मेघकुमारोमां मेघमाली देव थयो.

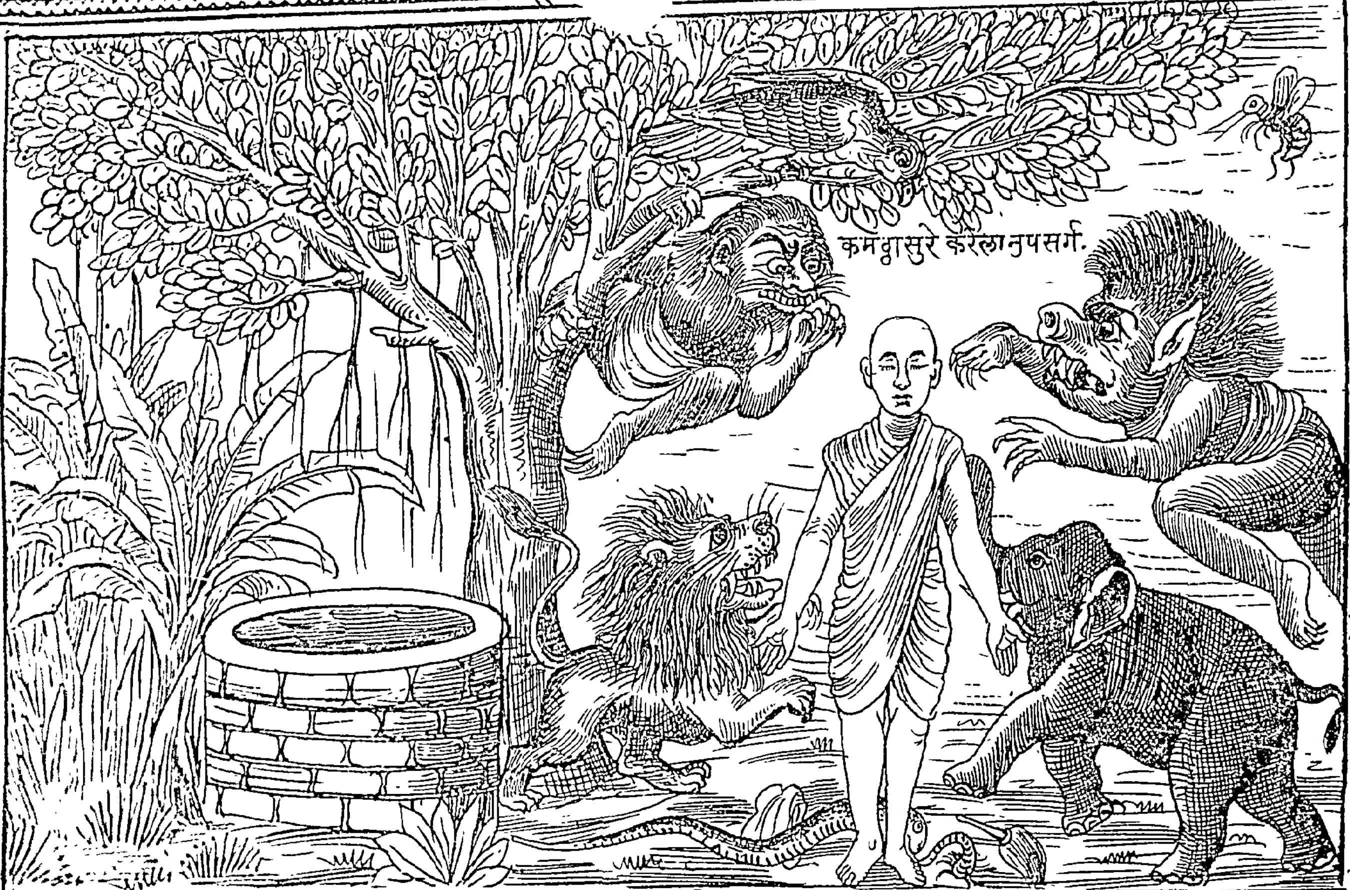
दक्ष (डाह्या), दक्ष प्रतिज्ञावाला, रूपवाला, गुणवाला, सरल परिणामवाला अने विनयवाला एवा पुरुषप्रधान अर्हन् श्रीपार्श्वनाथ प्रभु त्रीश वर्ष सुधी गृहस्थावस्थामां रह्या. एवामां वली जीतकल्पिक एवा लोकांतिक देवोए ते इष्ट एवी वाणी वडे यावत् आ प्रमाणे कह्युं:—हे समृद्धिमन्! तमे जयवंता वर्तो, हे कल्याणवन्! तमे जयवंता वर्तो. यावत् तेओए जय जय शब्द कर्यो.

प्रथम पण पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुने मनुष्यने योग्य एवा गृहस्थधर्मथी अनुपम एवुं उपयोगरूप अवधिज्ञान हतुं, ते पूर्वे कहेलुं (वीर प्रभुनी पेठे) सर्व कहेवुं, यावत् गोत्रीओने धन वहेंची आपीने आ शीयालानो बीजो मास, त्रीजो पक्ष, ते पोष मासनो कृष्णपक्ष, ते पोष मासना कृष्णपक्षनी

अगीयारसने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे विशाला नामनी पालखीमां वेसीने, देव, मनुष्य अने असुरोनी सन्ना जेनी आगल चाली रही छे एवा प्रन्नु इत्यादि सर्व पूर्वनी पेठे (वीर प्रन्नुनी पेठे) कहेवुं, परंतु एटलुं विशेष छे के वाणारसी नगरीना मध्य न्नागथी नीकल्या, अने नीकलीने ज्यां आश्रमपद नामनुं उद्यान छे अने ज्यां अशोक नामनुं वृक्ष छे त्यां आव्या अने आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीने स्थापन करावी अने स्थापन करावीने पालखीथी नीचे उतर्या अने नीचे उतरीने पोतानी मेलेज आन्नरण माला विगेरे अलंकारो उतारी नाख्या अने उतारी नाखीने पोतानी मेलेज पंचमुष्टि लोच कर्यो अने लोच करीने जल रहित अठमनो तप करीने विशाखा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते एक देवदूष्य वस्त्र लइने त्रणसो पुरुषोनी साथे मुंड थइने घरथी नीकली साधुपणाने प्राप्त थया अर्थात् दीक्षा ग्रहण करी.

पुरुषप्रधान अर्हन् श्रीपार्श्वनाथ प्रन्नुए त्र्याशी दिवस सुधी निरंतर कायाने वोसरावीने अने शरीर उपरथी ममता तजी दइने जे कोइ उपसर्गो उत्पन्न थया, ते जेवा के देव, मनुष्य अने तिर्यंचे करेला तेमज अनुकूल अथवा प्रतिकूल ते उत्पन्न थयेला उपसर्गोने रूडी रीते सहन कर्या, वेठ्या, खम्या अने न्नोगव्या. तेमां देवे करेल उपसर्ग कमठ संबंधी छे. ते आ प्रमाणे छेः—

प्रन्नु दीक्षा लइने विचरता थका एक दहाडो तापसना आश्रममां एक कुवानी नजदीक एक वडना वृक्षनी नीचे रात्रिए प्रतिमाथी रह्या हता. ते वखते ते मेघमाली नामनो दुष्ट देव प्रन्नुने उपद्रव करवा आव्यो, अने क्रोधथी अंध थयेला तेणे पोते विकुर्वेलां वाघ, वींछी विगेरेनां रूपोथी प्रन्नुने न्नयरहित जोइने, ते आकाशमां घोर अंधकार सरखां वादलांउ विकुर्वीने कल्पांतकालना मेघनी पेठे मुसलधाराथी वरसवा लाग्यो, अने अति न्नयंकर एवी वीजलीउ सघली दिशाउमां फेलावी तथा ब्रह्मांड पण फुटी जाय एवी गर्जनाउ पण ते वखते करी. क्षणवारमां जल


चित्र ४४.
कमठासुरे करेला उपसर्ग.


चित्र ४५
धरणींद्र
पद्मावती.
अग्रमहिषीर्ं.
कमठ.

छेक प्रभुनी नासिकाना अग्र भाग सुधी आवी पहोंच्युं त्यारे धरणेंद्रनुं आसन कंपवाथी ते पोतानी पट्टराणीओ सहित त्यां आव्यो अने पोतानी फणाओथी प्रभु पर छत्र धर्युं. पछी धरणेंद्रे अवधिज्ञानथी मेघमालीने अमर्षथी वरसतो जाणीने तेने धमकाव्यो, त्यारे ते मेघमाली पण प्रभुनुं शरणुं लइने पोताने स्थानके गयो. धरणेंद्र पण नाटक आदिकथी प्रभुनी पूजा करीने पोताने स्थानके गयो. एवी रीते प्रभु देवादिके करेला उपसर्गोने रुडे प्रकारे सहन करता हवा.

त्यार पछी पार्श्वनाथ प्रभु अणगार थया अने जवा आववामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थइने यावत् आत्मानी भावना भावता त्याशी दिवस वीती गया अने चोराशीमा दिवसने विषे वर्तता, आ उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडीयुं, ते चैत्र मासनो कृष्णपक्ष, ते चैत्र मासना कृष्णपक्षनी[1] चोथने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे धातकी नामना वृक्षनी नीचे जल रहित छठ्ठनो तप करीने विशाखा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते शुक्लध्यानना प्रथम बे भेद ध्याते छते प्रभुने अनंत, अनुपम यावत् श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां, यावत् सर्व भावोने जाणता अने जोता थका विचरवा लाग्या.

पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुने आठ गण अने आठ गणधरो हता. तेमां एक वाचनावाला यतिसमूह ते गण अने ते गणना नायक एटले सूरि ते गणधरो जाणवा. ते श्री पार्श्वनाथने आठ हता, पण आवश्यकमां दश गण अने दश गणधर कहेला छे, अने स्थानांगमां बे अल्पायुषी होवाना कारणे ते बे कहेला नथी एम टिप्पणमां जणाव्युं छे. ते आठनां नाम आ प्रमाणेः—शुभ, आर्यघोष, वशिष्ठ, ब्रह्मचारी, सोम, श्रीधर, वीरभद्र तथा यशस्वी.

पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुने आर्यदिन्न आदि सोल हजार साधुओनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, पुष्पचूला प्रमुख आडत्रीश हजार साध्वीओनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, सुव्रत प्रमुख एक लाख ने चोसठ हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ, सुनंदा प्रमुख त्रण

[1] गुजराती फागण वदि चोथने दिवसे.

लाख अने सत्तावीश हजार श्राविकाउनी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ, केवली नहीं छतां पण केवली सरखा सारा त्रणसो चौदपूर्वीउनी उत्कृष्ट संपदा थइ तथा चौदसो अवधिज्ञानीउनी, एक हजार केवलज्ञानीउनी, अगीयारसो वैक्रियलब्धिवाला मुनिउनी अने छसो मनःपर्यवज्ञानीउनी संपदा थइ तेमज एक हजार साधुउ मोक्षे गया अने वे हजार साध्वीउ मोक्षे गइ. वली आठसो विपुलमतिउनी, छसो वादीउनी तथा बारसो अनुत्तरविमानमां उत्पन्न थनारा मुनिउनी संपदा थइ.

पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुनी वे प्रकारनी मुक्तिमां जनारानी मर्यादा थइ. ते आ प्रमाणेः—पहेली युगांतकृद्भूमि अने वीजी पर्यायांतकृद्भूमि. तेमां श्री पार्श्वनाथ प्रभुथी आरंभीने चार पाट सुधी मोक्षमार्ग चालु रह्यो ते युगांतकृद्भूमि तथा प्रभुने केवलज्ञान थया पछी त्रण वर्षे कोइक मुनि मोक्षे गया, तेथी त्रण वर्षथीज मोक्षमार्ग चालु थयो ते पर्यायांतकृद्भूमि जाणवी.

हवे ते कालने विषे अने ते समयने विषे पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभु त्रीश वर्ष सुधी गृहस्थावस्थामां रहीने, त्र्याशी दिवस सुधी छद्मस्थपर्याय पालीने अने कांइक ऊणा एटले त्र्याशी दिवस उछा सीत्तेर वर्ष सुधी केवलिपर्याय पालीने अने एवी रीते एकंदर परिपूर्ण सीत्तेर वर्ष चारित्रपर्याय पालीने तथा एकसो वर्षनुं सर्व आयुष्य पूर्ण करीने वेदनी, आयु, नाम अने गोत्र कर्मनो क्षय थये छते आज अवसर्प्पिणीमां डुषमसुषम नामनो चोथो आरो घणो वीती गये छते आ चोमासानो पहेलो मास, द्वितीय पक्ष, ते श्रावण मासनो शुक्लपक्ष, ते श्रावण मासना शुक्लपक्षनी आठमने दिवसे समेत नामना पर्वतना शिखर उपर तेत्रीश साधुउनी साथे जलरहित मासक्षपणनो तप करीने विशाखा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते पहेला प्रहरने विषे बन्ने हाथ लांबा करी कायोत्सर्गध्यानमां रह्या थका मोक्षे गया, निर्वृत्ति पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया.

पुरुषप्रधान अर्हन् श्री पार्श्वनाथ प्रभुने निर्वाण पामयाने बारसो वर्ष थइ गयां अने तेरसोमां सैकानुं आ त्रीशमुं वर्ष जाय छे. तेमां श्री पार्श्वनाथ प्रभुना निर्वाणथी अढीसो वर्षे श्री वीर



पा. ८९.

प्रभुनुं निर्वाण थयुं अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्ष व्यतीत थये छते पुस्तकवाचना थइ, तथा तरसामा सैकानुं आ त्रीशमुं वर्ष जाय छे ए युक्त कहेलुं छे. ए प्रमाणे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं चरित्र समाप्त थयुं.

हवे श्री नेमिनाथजीनुं चरित्र जघन्य आदि वाचनाथी कहे छे.

ते काले अने ते समये अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभुनां पांचे कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थयां छे. ते आवी रीतेः— प्रभु चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी च्यव्या अने च्यवीने गर्भमां उत्पन्न थया, चित्रा नक्षत्रमां तेमनो जन्म थयो, चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चित्रा नक्षत्रमां केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां तथा चित्रा नक्षत्रमां प्रभु मोक्ष गया.

ते काले अने ते समये अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभु आ चोमासोनो चोथो मास, सातमो पक्ष, ते कार्त्तिकनो कृष्णपक्ष, ते कार्त्तिकना कृष्णपक्षनी बारसने[1] दिवसे बत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाला अपराजित नामना महा विमानथी अंतररहित च्यवीने आज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां सौर्यपुर नामे नगरमां समुद्रविजय नामना राजानी शिवादेवी नामनी राणीनी कुक्षिए मध्य रात्रिने विषे चित्रा नक्षत्र साथे चंद्रनो योग प्राप्त थये छते गर्भपणे उपन्या.

अहीं माताने थयेल स्वप्नदर्शन तथा व्यंतर देवोए आणेल निधानो आदि ए सर्वेनुं (वीर प्रभुनी पेठे) वर्णन करवुं.

पछी ते काल अने ते समयने विषे अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभु आ वर्षाकालनो पहेलो महिनो, बीजुं पखवाडीयुं, ते श्रावणनो शुक्लपक्ष, ते श्रावणना शुक्लपक्षनी पंचमीने दिवसे नव मास बराबर पूर्ण थये छते यावत् चित्रा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते आरोग्य एवा शिवादेवीए आरोग्य एवा पुत्रने जन्म आप्यो. अहीं जन्मोत्सव समुद्रविजय राजाए कर्यो एम जाणवुं अने ते त्यांसुधी कहेवुं के आ अमारा कुमारनुं नाम अरिष्टनेमि थाओ.

1 गुजराती आसो वदि बारसने दिवसे

प्रभु ज्यारे गर्भमां हता, त्यारे माताए स्वप्नमां अरिष्टरत्नमय एवी नेमि एटले चक्रनी धारा जोइ हती, तेथी प्रभुनुं अरिष्टनेमि एवुं नाम पाड्युं, अने अरिष्टमां अ छे ते अमंगलने त्याग करवा माटे कह्यो छे तेथी अरिष्टनेमि एवुं नाम पाड्युं छे, कारण के रिष्ट शब्द अमंगलवाची छे.

अरिष्टनेमि नहीं परण्या होवाथी कुमार कहेवाय छे. ते नहीं परण्या ते आ प्रमाणे छे. एक दहाडो शिवादेवी माताए प्रभुने युवावावस्थामां आवेला जाणीने कह्युं के हे वत्स ! तुं विवाह करवानुं मान अने अमारा मनोरथो संपूर्ण कर. त्यारे प्रभुए कह्युं के ज्यारे मने योग्य कन्या मलशे त्यारे हुं परणीश.

त्यारपछी वली एक दहाडो कौतुकरहित एवा पण ते नेमिकुमार मित्रोथी प्रेराया थका क्रीडा करता कृष्ण वासुदेवनी आयुधशालामां गया. त्यां कौतुकना उत्सुकी एवा मित्रोनी विनंतिथी तेणे वासुदेवनुं चक्र आंगलीना अग्र भाग उपर कुंभारना चक्रनी पेठे फेरव्युं, तेनुं शार्ङ्ग धनुष्य पण तेणे कमलनालनी पेठे नमाव्युं, कौमुदकी नामनी गदाने एक लाकडीनी पेठे उपाडी तथा तेनो पांचजन्य नामनो शंख मुख पर राखीने पूर्यो—वगाड्यो.

ते वखते श्री नेमिनाथना मुखकमलथी प्रगट थयेल पवन वडे पांचजन्य शंख पूराये छते हाथीओनो समूह पोताना बंधनस्तंभोने उखेडी घरनी पंक्तिने भांगतो थको जवा लाग्यो, तथा वासुदेवना घोडाओ पण तुरत पोतानां बंधनो तोडीने अश्वशालामांथी नाठा थका दोडवा लाग्या, तथा ते वखते समस्त शहेर ते शंखनादथी अकेत अने घणी व्याकुलतानी साथे बधिर बनी गयुं. एवी रीतना ते शब्दने सांभलीने 'कोइ शत्रु उत्पन्न थयो छे' एवा विचारथी व्याकुल चित्त-वाला श्री कृष्ण तुरत आयुधशालामां आव्या. त्यां नेमिनाथ प्रभुने जोइने मनमां आश्चर्य पाम्या थका पोतानी भुजाना बलनी तुलना माटे तेणे प्रभुने कह्युं के आपणे बन्ने आपणा बलनी परीक्षा करीए, एम कहेतां ते प्रभुनी साथे मल्लना अखाडामां आव्या. पछी त्यां प्रभुए श्री कृष्णने कह्युं

चित्र ४७.







नेमीश्वर भगवान् वसंतक्रीडा करवागया तेनुं चित्र.

के हे वांधव ! अहीं तुरत पृथ्वी उपर आलोटवा आदिक युद्ध आपणे करवुं, ते तो अनुचित ठे, माटे बलनी परीक्षा करवा माटे एक बीजानी भुजाउं वालवानुं युद्ध करो, केमके बीजुं युद्ध तो निश्चे घटित नथी. बंनेए ते वात कबुल करी. पठी कृष्णे पोतानो हाथ आगल धर्यो, त्यारे प्रभुए तो तेने नेतरनी लतानी पेठे अथवा कमलना नालनी पेठे तुरत लीला मात्रमां वाली नाख्यो. पठी प्रभुए पोतानो हाथ लंबाव्यो, त्यारे कृष्ण तो वृक्षनी शाखा जेवा प्रभुना हाथने विषे वांदरानी पेठे लटकवा लाग्या, तेथी उत्पन्न थता खेदने लीधे बमणुं कालुं थयुं ठे मुख जेनुं एवा हरिए पोतानुं नाम (हरि एटले वांदरो) यथार्थ कर्युं. पठी कृष्णे बहु बल वापर्युं, तोपण प्रभुनो हाथ वल्यो नहीं, त्यारे विषाद पाम्युं ठे चित्त जेनुं एवा कृष्ण आ नेमिकुमार सुखेथी मारुं राज्य लेइ लेशे, एम चिंतातुर थया थका पोताना मनमां विचारवा लाग्या के स्थूलबुद्धिवाला (मूर्ख) केवल क्लेशना भागी थाय ठे अने फल बुद्धिमान् मेलवे ठे, जुउ, शंकरे समुद्र मथन कर्यो अने रत्नो देवोने मल्यां अथवा स्थूलबुद्धिवाला केवल क्लेशना भागी थाय ठे अने फल बुद्धिमान् मेलवे ठे, जुउ, दांत मुश्केलीथी चूर्ण करे ठे अने जिह्वा क्षणवारमां गली जाय ठे.

पठी तो श्री कृष्ण बलभद्रनी साथे विचार करवा लाग्या के "हवे आपणे शुं करवुं? राज्यनी इच्छावाला नेमिकुमार तो बलवान् ठे." एम तेउ विचार करे ठे एटलामां आकाशवाणी थइ के हे हरे ! पूर्वे नमिनाथ प्रभुए कहेलुं ठे के बावीशमा तीर्थंकर नेमि नामे कुमार थकाज दीक्षा लेशे. ते वाणी सांभलीने श्री कृष्ण निश्चिंत थया, तोपण निश्चय माटे नेमिनाथ प्रभुनी साथे जलक्रीडा करवा माटे ते पोतानी राणीउं सहित तलावमां गया, अने त्यां प्रेमथी नेमिकुमारने हाथे झालीने कृष्ण तुरत तलावमां दाखल थया. पठी त्यां तेणे नेमिनाथ प्रभुने केसरना रंगवालां सुवर्णनी पिचकारीउंमां भरेलां पाणीथी सिंच्या. तथा रुक्मिणी आदि गोपीउंने पण श्री कृष्णे कही राख्युं हतुं के आ नेमि-कुमारने निःशंकपणे क्रीडाए करीने विवाह करवानी इच्छावाला करवा. त्यारपठी ते गोपीउंमांथी

केटलीक प्रभुने केसरना उत्तम पाणीना समूह वडे छंटकाव करवा लागी, केटलीक सुंदर पुष्पोना दडाना समूहथी प्रभुने वक्षःस्थलमां मारवा लागी, केटलीक तीक्ष्ण कटाक्षरूप लाखो बाण मारवा लागी, तथा कामकलाना विलासने विषे कुशल एवी केटलीक मश्करी वडे विस्मय पमाडवा लागी. पछी तो ते सघली सुवर्णनी पिचकारीउने सुगंधी पाणीथी खूब भरीने तेनी मोटी छालको वडे प्रभुने व्याकुल करवा लागी अने क्रीडाथी उल्लसित थयेलां छे मन जेणीनां एवी ते स्त्रीउ सतत परस्पर हसवा लागी एटलामां आकाशमां देववाणी थइ ते सर्वेए सांभली. ते आ प्रमाणेः—हे स्त्रीउ! तमे मुग्ध छो, केमके आ प्रभुने तो बालपणामां पण चोसठ इंद्रोए योजन प्रमाण पहोला मुखवाला हजारो मोटा कलशोथी मेरु पर अभिषेक कर्यो हतो तोपण ते प्रभु जरा पण व्याकुल न थया तो तमाराथी सारो यत्न छतां पण ते केम व्याकुल थइ शकशे? पछी नेमिनाथ प्रभु श्री कृष्ण अने गोपीउने पाणी छांटवा लाग्या, तथा कमलपुष्पना दडा मारवा लाग्या, एवी रीते विस्तारपूर्वक जलक्रीडा करीने सघला तलावने कीनारे आव्या अने त्यां नेमिकुमारने सुवर्णना सिंहासन पर बेसाड्या, तथा सर्वे गोपीउ पण तेमने वींटीने उभी रही. पछी त्यां रुक्मिणीए कह्युं के हे नेमिकुमार! तमे आजीविका चलाववाना भयथी डरीने परणता नथी ते अयुक्त छे, केमके तमारा भाइ छे ते अत्यंत समर्थ छे अने बत्रीश हजार (प्रमाण) स्त्रीउ साथे परण्या प्रसिद्ध छे. पछी सत्यभामाए पण कह्युं के ऋषभदेव आदिक तीर्थंकरोए पण विवाह कर्यो छे, राज्य भोगव्युं छे, विषय भोगव्या छे तथा तेमने बहु पुत्र पण थया छे, अने छेवटे मोक्षे पण गया छे; परंतु तमे तो आज कोइ नवा मोक्षगामी थया छो! माटे हे अरिष्टनेमि! तमे खूब विचार करो. हे देवर! तमे सुंदर गृहस्थपणाने जाणो अने बंधुउनां मनने शांत करो. पछी जांबुवतीए पण उतावलथी कह्युं के हे नेमिकुमार! सांभलो. पहेलां पण हरिवंशमां विभूषण समान एवा मुनिसुव्रत तीर्थंकरे अहीं गृहस्थावासमां रही पुत्र थया पछी मोक्षे गया छे. पछी पद्मावतीए कह्युं के निश्चे स्त्री विना

आ संसारमां पुरुषनी कांइ शोभा नथी तेम स्त्री विनाना पुरुषनो कोइ पण विश्वास करतु नथी केमके स्त्री विनानो पुरुष विट कहेवाय. पछी गांधारीए कह्युं के सज्जनयात्रा एटले घेर सार माणसो आवे तेनी परोणागत, संघ काढवो ते, पर्वनो उत्सव, घेर विवाहनां काम, उजाणी, पोंखणुं अने पर्षदा ए स्त्री विना शोभतां नथी. पछी गौरीए कह्युं के अज्ञानी एवां पक्षीओ पण निश्चे आखो दिवस पृथ्वीने विषे भमीने सांजरे पोताना मालामां जइ सुखेथी पोतानी स्त्री साथे रहे छे, माटे हे देवर ! तेवां पक्षीओथी पण शुं तमे मूढ दृष्टिवाला छो ? पछी लक्ष्मणाए पण कह्युं के स्नान आदि सर्व अंगनी शोभामां विचक्षण, प्रीतिरसे करीने सुंदर, विश्वासनुं पात्र अने दुःखने विषे सहाय करनार एवुं स्त्री विना निश्चे बीजुं कोण थाय छे ? पछी सुसीमा पण कहेवा लागी के स्त्री विना घेर आवेला परोणा तथा मुनिराजोनी पण सेवाभक्ति बीजुं कोण करे ? अने पुरुष शोभा पण शी रीते पामे ? एवी रीतनी बीजी पण गोपीओनी वाणीओनी युक्तिथी तथा यदुओना आग्रहथी मौन रहेला एवा प्रभुने पण जरा हसता मुखवाला जोइने 'निषेध कर्यो नथी माटे मान्युं छे एवा न्यायथी' नेमिकुमारे तो विवाह करवानुं कबुल कर्युं छे ए प्रमाणे ते गोपीओए उंचे स्वरे उद्घोषणा करी. ते प्रमाणे (जादव) जन बोल्या के मान्युं.

पछी नेमिकुमार माटे श्रीकृष्णे उग्रसेन राजानी पुत्री राजीमतीनी मागणी करी, अने क्रोष्टिक नामना निमित्तिआने लग्ननो दिवस पूछ्यो त्यारे तेणे कह्युं के आ वर्षाकालमां बीजां पण शुभ कार्यो कोइ करता नथी त्यारे गृहस्थीओनुं मुख्य कार्य जे विवाह छे तेनी तो वातज शी करवी ? पछी समुद्रविजय राजाए निमित्तिआने कह्युं के आ वखते कालक्षेपनी जरुर नथी, केमके श्री कृष्णे घणी महेनते नेमिकुमारने विवाह माटे हा पडावी छे; माटे विवाहमां विघ्न न थाय एवो जे नजदीकनो दिवस होय ते तुं कहे. त्यारे निमित्तिए पण श्रावण सुदि छठनो दिवस कह्यो.

उत्तम शृंगार युक्त, प्रजाने हर्ष पमाडनारा, रथमां बेठेला, उत्तम छत्र धारण कर्युं छे एवा तथा

समुद्रविजय आदि दश दशार्ह अने केशव, बलभद्र आदि विशिष्ट परिवारवाला तथा शिवादेवी प्रमुख स्त्रीओथी गवातो छे धवल मंगलनां गीतोनो विस्तार जेनो एवा नेमिकुमार परणवा माटे चाल्या.

आगल चालतां तेमणे सारथि तरफ जोइने तेने पूछ्युं के आ मंगलना समूहे भरेलुं धवल मंदिर कोनुं छे ? त्यारे सारथि पण आंगलीना अग्र भागथी बतावतो कहेवा लाग्यो के आ तमारा ससरा उग्रसेन राजानो महेल छे, अने तमारी स्त्री राजीमतीनी आ चंद्रानना तथा मृगलोचना नामनी सखीओ मांहोमांहे वातो करे छे. ते वखते नेमिनाथ प्रभुने जोइ मृगलोचना चंद्राननाने कहेवा लागी के हे चंद्रानना ! स्त्रीवर्गमां एक राजीमतीज वर्णववा लायक छे के जेणीनो हाथ आ आवो भर्तार ग्रहण करशे; त्यारे चंद्रानना पण मृगलोचनाने कहेवा लागी के जो विज्ञानने विषे चतुर एवो विधाता पण आवा अद्भुत रूपथी मनोहर राजीमतीने बनावीने आवा उत्तम वरनी साथे तेनो मेलाप न करावे तो ते शी प्रतिष्ठा पामे ?

पछी वाजित्रनो शब्द सांभलीने राजीमती पण माताना घरमांथी नीकलीने सखीओनी वच्चे आवी अने कहेवा लागी के हे सखीओ ! आडंबर सहित आवता एवा वरराजाने पण तमे एकलीज जुओ छो अने हुं तो जोवा पामती नथी, एम कही बलथी एकदम तेओनी वच्चे ऊभी रहीने नेमिकुमारने जोइने आश्चर्यपूर्वक विचारवा लागी के शुं आ पातालकुमार छे ? अथवा कामदेव पोतेज छे ? अथवा इंद्र छे ? अथवा मारां पुण्योनो समूह आ मूर्तिमान् थइने आव्यो छे ? जे विधाताए आ सौभाग्य प्रमुख गुणराशिवाला वरने बनाव्यो छे, ते विधाताना हाथनुं लुंछणुं हर्षथी हुं करुं छुं.

एटलामां मृगलोचनाए राजीमतीनो अभिप्राय समस्त प्रकारे जाणी लइने प्रीतिपूर्वक हास्यथी चंद्राननाने कह्युं के हे सखि ! चंद्रानना ! आ वर समस्त गुणोए करी जो के संपन्न छे, तोपण तेमां एक दूषण तो छेज, पण वरनी अर्थी एवी राजीमतीना सांभलतां ते कही शकाय नहीं. त्यारे चंद्रा-



नेमीश्वर भगवाननी जान.

नणाए पण कह्युं के हे सखि ! मृगलोचना ! मने पण तेनी खबर छे, पण हमणां तो मौनज रहेवुं. पछी राजीमती पण लज्जाए करीने पोतानुं मध्यस्थपणुं देखाडती कहेवा लागी के हे सखीओ ! भुवनमां अद्भुत भाग्ये करीने धन्य एवी गमे ते कोइ कन्यानो आ भर्तार हो, पण सर्व गुणे करीने सुंदर एवा आ वरमां जे दूषण काढवुं ते तो दूधमांथी पूरा काढवा जेवुं असंभवितज छे. पछी ते बन्ने सखीओए विनोद सहित कह्युं के हे राजीमति! पहेलां तो वर गौर वर्णवालो जोवाय, अने बीजा गुण तो परिचय थया बाद जणाय, अने ते गौरपणुं तो आ वरमां काजल सरखुं देखाय छे.

ते सांभली ईर्ष्या सहित राजीमती सखीओने कहेवा लागी के आज दिन सुधी तमे बन्ने चतुर छो एम मने भ्रम हतो, परंतु हवे ते भ्रम भांगी गयो; केमके सर्वे गुणोनुं कारणरूप एवुं श्यामपणुं भूषण छतां तमोए दूषणरूपे कह्युं छे, पण हवे तमे सावधान थइने सांभलो. श्यामपणामां अने श्याम वस्तुओनो आश्रय करवामां गुण रहेला छे, तथा केवल गौरपणामां तो दोष रहेला छे; केमके पृथ्वी, चित्रावेली, अगर, कस्तुरी, मेघ, आंखनी कीकी, केश, कसोटी, मसी तथा रात्रि ए सर्वे वस्तु श्याम रंगनी पण अमृत फलवाली छे. ए श्यामपणामां गुण कह्या छे. वली कपूरमां अंगारो, चंद्रमां चिह्न, आंखमां कीकी, भोजनमां मरी तथा चित्रमां रेखा एं वस्तु श्याम रंगनी छे तोपण (सफेद वस्तुने) गुणनी हेतुभूत छे. ए श्याम वस्तुओना आश्रयमां गुण कह्या छे. तथा लवण खारुं छे, बरफ दहन करनारो छे, अति सफेद शरीरवालो रोगी होय छे तथा चुनो परवश गुणवालो छे, एवी रीते केवल गौरवर्णमां अवगुण कह्या छे.

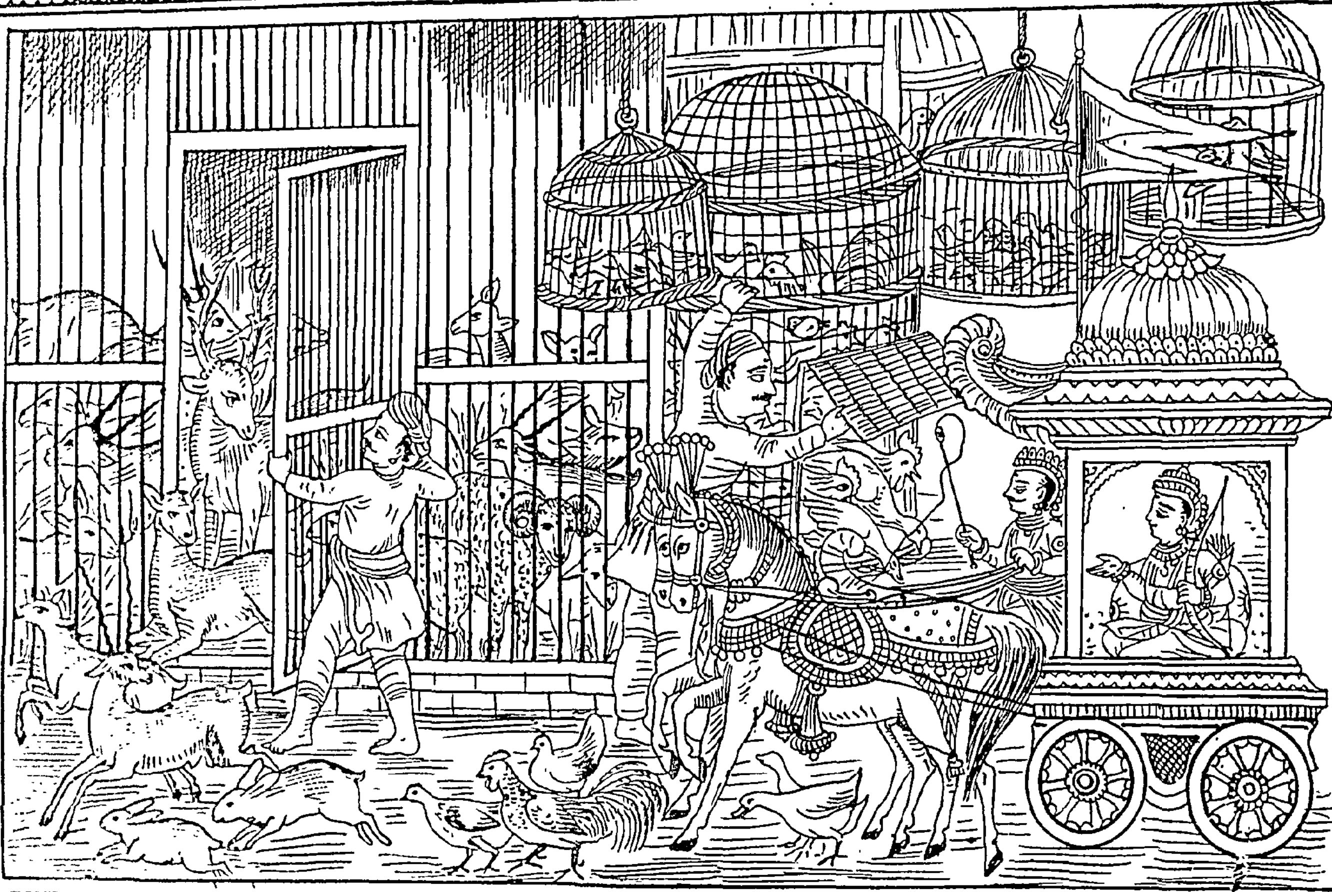
एवी रीते तेओ परस्पर वातो करते छते श्रीमान् नेमिनाथ प्रभु पशुओनो आर्त्त स्वर सांभलीने तिरस्कार सहित बोल्या के हे सारथि ! आ शो दारुण स्वर संभलाय छे ? त्यारे सारथिए कह्युं के तमारा विवाहमां भोजन वास्ते एकठा करेला पशुओनो आ स्वर छे. ए प्रमाणे सारथिए कहे छते प्रभु विचारवा लाग्या के आ विवाहना उत्सवने धिक्कार छे! केमके आ पशुओने तो ते अनुत्सव (शोक) छे.

एटलामां हे सखीओ ! मारी जमणी आंख आ वखते केम फरके छे ? एम बोलती राजीमतीने सखीओए कह्युं के 'तारुं विघ्न नाश पाम्युं छे', एम कहीने थुथुकार करवा लागी.

ते वखते नेमिनाथ प्रभुए सारथिने कह्युं के हे सारथि ! तुं रथ अहींथीज पाछो वाल. आ वखते नेमिनाथ प्रभुने जोइने एक हरिण पोतानी गरदनथी हरिणीनी गरदनने ढांकीने उभो रह्यो. अहीं कवि घटना करे छे के प्रभुने जोइने हरिण कहेवा लाग्यो के आ मारा हृदयने हरण करनारी हरिणीने मारता नहीं,मारता नहीं. हे स्वामिन् ! मारा मरण करतां पण मारी ते प्रियतमानो विरह दुःसह छे. हरिणी नेमिनाथनुं मुख जोइने हरिणने कहेवा लागी के आ तो प्रसन्न वदनवाला त्रण भुवनना स्वामी छे, अकारण बंधु छे, तेटला माटे हे वल्लभ ! सर्व जीवोनुं रक्षण करवाने विज्ञप्ति करो. त्यारे पत्नीए प्रेरेलो हरिण पण नेमिनाथने कहेवा लाग्यो के निझरणानुं पाणी पीनार,अरण्यनां तृणनुं भक्षण करनार अने वनने विषे वास करनार एवा अमारा निरपराधीना जीवितनुं हे प्रभु ! रक्षण करो ! रक्षण करो ! एवी रीते सर्व पशुओए पण स्वामी प्रत्ये विज्ञप्ति करी, त्यारे प्रभुए कह्युं के हे पशुरक्षको ! आ पशुओने छोडी आपो,छोडी आपो. हुं विवाह करीश नहीं.त्यारे ते पशुरक्षकोए पण श्री नेमिनाथ प्रभुना वचनथी पशुओने छोडी दीधां अने सारथिए पण रथ पाछो फेरव्यो.

अहीं कवि कहे छे के जे कुरंग (हरिण) चंद्रमाना कलंकने विषे, राम अने सीताना विरहने विषे तथा नेमिनाथ प्रभुथी राजीमतीना त्यागने विषे हेतुभूत छे, ते कुरंग कहेतां खोटो रंग करनार ए सत्यज छे.

हवे आ वखते समुद्रविजय तथा शिवादेवी प्रमुख स्वजनोए तुरत रथने जतो अटकाव्यो, तथा शिवादेवी माता आंखोमां आंसु लावी कहेवा लाग्या के हे जननीवल्लभ वत्स ! हुं प्रथम प्रार्थनानी विनंति करुं छुं के तुं कोइ रीते विवाह करीने मने वहुनुं मुख देखाड. त्यारे नेमिकुमारे कह्युं के हे माता ! तमे ए आग्रह मूकी दो, मारुं मन हवे मनुष्य संबंधी स्त्रीओने विषे नथी, पण मुक्तिरूपी



भोजन आपवा माटे एकठा करेला चतुष्पद जीवो तथा पांजरामां रहेला पक्षीओ तेमने भगवान् छूटा करी मूके छे.

स्त्रीना संगमने विषे उत्कंठावालुं अने आसक्त थयेलुं छे, केमके जे स्त्रीओ रागीने विषे पण राग रहित छे,
ते स्त्रीओने कोण सेवे? माटे मुक्तिरूपी स्त्री के जे विरागीने विषे रागवाली छे, तेनी हुं इच्छा करुं छुं.

ते वखते राजीमती "हा दैव! आ शुं थयुं?" एम कही मूर्छा पामी. पछी सखीओ वडे चंदनरसथी आश्वासन करायेली ते मुश्केलीथी शुद्धिमां आवी, त्यारे मोटे स्वरेथी रुदवा लागी के हे जादवकुलमां सूर्य समान! तथा हे निरुपमज्ञानवाला! तथा हे जगतना शरणरूप, तथा हे करुणाकर स्वामिन्! मने छोडीने आप क्यां चाल्या? पछी पोताना हृदयने कहेवा लागी के अरे! धृष्ट, निष्टुर, निर्लज्ज हृदय! ज्यारे आपणा स्वामी अन्यत्र रागवाला थया छे त्यारे हजु पण तुं जीवितने शुं धारण करे छे? वली निःश्वास नाखीने पोताना स्वामीने उपालंभ सहित कहेवा लागी के हे धूर्त! जो तमे सर्व सिद्धोए भोगवेली गणिकामां रक्त थया हता, तो आवी रीतना विवाहना आरंभथी तमे मने शामाटे विडंबना करी? त्यारे सखीओए तेणीने रोषथी कह्युं के हे सखि! लोकप्रसिद्ध एक वार्ता सांभल, के जे श्याम होय ते भाग्येज सरल होय छे ने कदापि होय तो विधिए भूली जइने तेम कर्युं होवुं जोइए. आवा प्रीतिरहितने विषे हे प्रिय सखी! शुं प्रीतिभाव करे छे? प्रीतिने विषे तत्पर एवो कोइ बीजो भर्तार तारा माटे शोधी काढीशुं. ते सांभली राजीमती पोताना बन्ने कानने ढांकीने कहेवा लागी के हे सखीओ! तमे मने नहीं संभलाववा लायक एवुं वचन केम संभलावो छो? जो सूर्य कदाच पश्चिम दिशामां उगे, तोपण हुं श्री नेमिकुमारने मूकीने बीजो भर्तार नहीं करुं. वली पण नेमिनाथने कहेवा लागी के हे जगतना अधीश! व्रतनी इच्छावाला तमे घेर आवेला एवा याचकोने तेओनी इच्छा उपरांत आपो छो, पण मागणी करती एवी जे हुं, तेणीए तो हाथ उपर आपनो हाथ पण मेलव्यो नहीं. हवे विरक्त राजीमती कहेवा लागी के हे विभु! जो के आपनो आ हाथ आ लग्नमहोत्सवमां तो मारा हाथ पर नहीं आव्यो, तोपण मारा दीक्षासमयना महोत्सवमां ते हाथ मारा शिर पर होजो.

हवे श्री नेमिकुमारने परिवार सहित समुद्रविजय राजा कहेवा लाग्या के ऋषभदेव आदिक जिनेश्वरो पण विवाह करीने मोक्ष गया छे, माटे हे कुमार ! तमारुं ब्रह्मचारीनुं पद तेनाथी पण उंचुं थशे ?

ते सांभली नेमिनाथे कह्युं के हे तात ! मारां भोगावली कर्मो क्षीण थयां छे, वली जेमां एक स्त्रीनो संग्रह थाय छे, जेमां अनंता जंतुसमूहनो संहार थाय छे तथा जे संसारने दुःखरूप करनार छे एवा विवाह माटे आपनो आ शुं आग्रह छे ?

अहीं कवि उत्प्रेक्षा करे छे के "हुं एम मानुं छुं के स्त्रीओथी विरक्त एवा श्री नेमिनाथ प्रभु परणवाना मिषथी अहीं आवीने पूर्वना प्रेमथी राजीमतीने मोक्ष माटेनो संकेत करी गया."

दक्ष (डाह्या) एवा श्रीनेमिनाथ प्रभु त्रणसो वर्ष सुधी कुमारपणे गृहस्थावस्थामां रह्या एटलामां वली पण लोकांतिक देवोए इत्यादि सर्व प्रथम कहेलुं ते प्रमाणे कहेवुं. लोकांतिक देवो आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के हे कामदेवने जीतनारा तथा समस्त जंतुओने अभयदान देनारा प्रभु ! जयवंता वर्तो अने हमेशांना महोत्सवने माटे आप तीर्थने प्रवर्तावो. एवी रीते प्रभुने कह्युं अने वार्षिक दान दीधा बाद प्रभु त्रणे भुवनोने आनंद पमाडशे ए रीते (कहीने) समुद्रविजय प्रमुखने उत्साह पमाडता हवा. त्यारपछी सघलाओ संतुष्ट थया. पछी ज्यांसुधी गोत्रीओने धन वहेंची आप्युं त्यांसुधी कहेवुं. अहीं संवत्सरी दानविधि श्री वीर प्रभुनी पेठेज जाणी लेवो.

आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडीयुं, श्रावण मासनो शुक्लपक्ष, ते श्रावणना शुक्लपक्षनी छठने दिवसे प्रथम प्रहरने विषे उत्तरकुरा नामनी पालखीमां बेठेला अने देव, मनुष्य तथा असुरोनी पर्षदा जेनी आगल चाली रही छे एवा प्रभु यावत् द्वारवती (द्वारिका) नगरीना मध्य भागमांथी नीकल्या अने नीकलीने ज्यां रैवतक नामनुं उद्यान छे त्यां आव्या अने आवीने अशोक नामना वृक्षनी नीचे पालखी स्थापन करावी अने स्थापन करावीने पालखीमांथी नीचे



चित्र ५९

उतर्या अने नीचे उतरीने पोतानी मेलेज आभरण, माला अने अलंकारोने उतारी नाख्यां, पोतानी मेले पंचमुष्टि लोच कर्यो अने लोच करीने जलपान रहित एवो छठनो तप करीने चित्रा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते एक देवदूष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषनी साथे मुंड थइने घरथी नीकली साधुपणाने प्राप्त थया अर्थात् दीक्षा ग्रहण करी.

अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभु चोपन अहोरात्र सुधी निरंतर कायाने वोसरावीने रह्या हता. अहीं पूर्वे कहेलुं सघलुं कहेवुं ते ज्यांसुधीमां पंचावनमा अहोरात्रनी मध्ये वर्तता एवा तथा आ वर्षाकालनो त्रीजो महीनो, पांचमुं पखवाडीयुं, ते आश्विन मासनो कृष्णपक्ष, ते आश्विन मासनी अमासने[1] दिवसे, दिवसना पाछला पोहोरे, गिरनार पर्वतना शिखर पर, वेतस नामना वृक्षनी नीचे जलरहित अठमनो तप होते छते, तथा चित्रा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते शुक्लध्यानना प्रथम वे भेदनुं ध्यान धरता एवा प्रभुने केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां, यावत् सर्व भावोने जाणता अने जोता थका प्रभु विचरवा लाग्या.

एवी रीते प्रभुने रैवताचल पर्वत पर सहस्राम्रवनमां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं, ते वखते उद्यानपालके श्री कृष्ण पासे जइने तेने वधामणी आपी. त्यारे श्री कृष्ण पण मोटा आडंबरथी प्रभुने वांदवा आव्या; ते वखते राजीमती पण त्यां आव्या. पछी प्रभुनी देशना सांभलीने वरदत्त राजाए बे हजार राजाओनी साथे व्रत लीधुं (दीक्षा लीधी). पछी त्यां श्री कृष्णे राजीमतीना स्नेहनुं कारण पूछ्याथी प्रभुए धनवतीना भवथी मांडीने तेनी साथेना पोतानो नव भवनो संबंध कही संभलाव्यो. ते आ प्रमाणे—पहेला भवने विषे हुं धन नामे राजपुत्र हतो त्यारे ते धनवती नामे मारी पत्नी हती १, त्यारपछी बीजा भवने विषे अमे बंने पहेला देवलोकने विषे देव देवीपणे उत्पन्न थया हतां २, त्यारपछी त्रीजा भवने विषे हुं चित्रगति नामे विद्याधर हतो त्यारे ते रत्नवती नामे मारी स्त्री हती ३,

१ गुजराती भाद्रपद मासनी अमासने दिवसे.



ारनार पर्वत उपर एक गुफामां रहनेमी साधु काउस्सग करे छे. अने तेज गुफामां राजीमतीजी नग्न थई ने पोताना वस्त्र सुकावे छे.

पा. ९४.

नीच छे ? एवी रीतनां राजीमतीनां वाक्योथी प्रतिबोध पामेल रथनेमि मुनि पण श्री नेमिनाथ प्रभु पासे पोताना अतिचारनी आलोयणा लइ तप तपीने मोक्षे गया. राजीमती पण दीक्षा आराधीने अंते मोक्षशय्या पर चढ्या, तथा घणा कालथी प्रार्थित एवा श्री नेमि प्रभुना शाश्वता संयोगने पाम्या. कह्युं छे के केवली राजीमती चारसो वर्ष पर्यंत गृहावासमां रह्या, एक वर्ष छद्मस्थपणामां रह्या अने पांचसो वर्ष केवलिपर्याय पालीने मोक्षे गया.

अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभुने अढार गण अने अढार गणधरो थया, वरदत्त प्रमुख अढार हजार साधुओनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, आर्ययक्षिणी प्रमुख चालीश हजार साध्वीओनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, नंद प्रमुख एक लाख ओगणोतेर हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ, महासुव्रत प्रमुख त्रण लाख छत्रीश हजार श्राविकानी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ, केवली नहीं पण केवली तुल्य एवा चारसो चौदपूर्वधारीओनी, पंदरसो अवधिज्ञानीओनी, पंदरसो केवलज्ञानीओनी, पंदरसो वैक्रियलब्धिवालानी, एक हजार विपुलमतिओनी, आठसो वादीओनी अने सोलसो अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थनारा साधुओनी संपदा थइ, तथा पंदरसो साधु अने त्रण हजार साध्वीओ मोक्षे गयां.

अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभुने बे प्रकारनी अंतकृद्भूमि थइ, ते आ प्रमाणे—एक युगांतकृद्भूमि अने बीजी पर्यायांतकृद्भूमि. प्रभुनी पछी आठ पुरुषयुग एटले पट्टधर सुधी मोक्षमार्ग चाल्यो ते युगांतकृद्भूमि अने प्रभुने केवलज्ञान उपन्या पछी बे वर्षे कोइ पण साधु मोक्षे गया ते पर्यायांतकृद्भूमि जाणवी.

ते काल अने ते समयने विषे अर्हन् श्री नेमिनाथ प्रभु त्रणसो वर्ष कुमारावस्थामां रहीने अने चोपन दिवस छद्मस्थ पर्याय पालीने, कांइक (चोपन दिवस) ओछा एवां सातसो वर्ष केवलिपर्याय पालीने, एकंदर परिपूर्ण एवां सातसो वर्ष चारित्रपर्याय पालीने अने एवी रीते एक हजार

वर्षनुं सर्व आयुष्य पालीने वेदनीय, आयु,नाम अने गोत्रकर्म क्षय थये ठते आज अवसर्पिणीमां डुषमसुषमा नामनो चोथो आरो वहु गये ठते आ ऊष्णकालनो चोथो मास, आठमो पक्ष, ते आषाढ शुक्लपक्ष, ते आषाढ शुक्लपक्षनी आठमने दिवसे गिरनार पर्वतना शिखर उपर पांचसो ठत्रीश साधुर्ठ सहित जलरहित एक महीनानुं अनशन करीने चित्रा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये ठते मध्यरात्रिने विषे (पद्मासने) बेठा थका निर्वाण पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया.

हवे नेमिनिर्वाणथी केटला वखते पुस्तक लखवा विगेरे थयुं ते कहे ठे.

अर्हन् श्री अरिष्टनेमि निर्वाण पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया तेने चोराशी हजार वर्ष गयां अने पंच्याशीमा हजारनां पण नवसो वर्ष गयां ठे अने दशमा सेंकडानुं आ एंशीमुं वर्ष जाय ठे. अर्थात् श्री नेमिनाथना निर्वाण पठी चोराशी हजार वर्षे वीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं अने त्र्याशी हजार सातसो पचास वर्षे श्री पार्श्वनाथनुं निर्वाण थयुं ए पोतानी बुद्धिथी जाणवुं. आ प्रमाणे श्री नेमिचरित्र संपूर्ण थयुं.

हवे ग्रंथविस्तारना जयथी पठीना अनुक्रमे नमिथी शरु करीने अजित सुधीना जिनेश्वरोना अंतर कालनुं प्रमाण कह्युं ठे.

अर्हन् श्री नमिनाथ निर्वाण पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया तेने पांच लाख, चोराशी हजार अने नवसो वर्ष गयां अने दशमा सेंकडानुं आ एंशीमुं वर्ष जाय ठे अर्थात् श्री नमिनाथना निर्वाण पठी पांच लाख वर्षे श्री नेमिनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यार पठी चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. २१

अर्हन् श्री मुनिसुव्रतना निर्वाणथी ठ लाख वर्षे श्री नमिनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपठी पांच लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. २०

अर्हन् श्री मल्लिनाथना निर्वाणथी चोपन लाख वर्षे श्री मुनिसुव्रत निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी अग्यार लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १९

अर्हन् श्री अरनाथना निर्वाणथी कोटिसहस्र वर्षे श्री मल्लिनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १८

अर्हन् श्री कुंथुनाथना निर्वाणथी कोटिसहस्र वर्षे न्यून पल्योपमने चोथे भागे श्री अरनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी सहस्र कोटि पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १७

अर्हन् श्री शांतिनाथना निर्वाणथी अर्ध पल्योपमे श्री कुंथुनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी पल्योपमनो चोथो भाग तथा पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १६

अर्हन् श्री धर्मनाथना निर्वाणथी पोणा पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपमे श्री शांतिनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी पोणुं पल्योपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १५

अर्हन् श्री अनंतनाथना निर्वाणथी चार सागरोपमे श्री धर्मनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी त्रण सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १४

अर्हन् श्री विमलनाथना निर्वाणथी नव सागरोपमे श्री अनंतनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी सात सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १३

अर्हन् श्री वासुपूज्यना निर्वाणथी त्रीश सागरोपमे श्री विमलनाथ निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी सोल सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १२

अर्हन् श्री श्रेयांसनाथना निर्वाणथी चोपन सागरोपमे श्री वासुपूज्य निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी तेंतालीश सागरोपम पांसठ लाख चोराशी हजार नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ११

अर्हन् श्री शीतलनाथना निर्वाणथी एकसो सागरोपम छासठ लाख छवीश हजार वर्षे न्यून

एक कोटि सागरोपमे श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एवा छासठ लाख छवीश हजार वर्षे अधिक एकसो सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १०

अर्हन् श्री सुविधिनाथना निर्वाणथी नव कोटि सागरोपमे श्री शीतलनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास ने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ए

अर्हन् श्री चंद्रप्रभना निर्वाणथी नेवुं कोटि सागरोपमे श्री सुविधिनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ण

अर्हन् श्री सुपार्श्वना निर्वाणथी नवसो कोटि सागरोपमे श्री चंद्रप्रभ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास ने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एकसो कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ७

अर्हन् श्री पद्मप्रभना निर्वाणथी हजार कोटि सागरोपमे श्री सुपार्श्व निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून एक हजार कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ६

अर्हन् श्री सुमतिनाथना निर्वाणथी नेवुं हजार कोटि सागरोपमे पद्मप्रभ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून दश हजार कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ५

अर्हन् श्री अभिनंदनना निर्वाणथी नव लाख कोटि सागरोपमे श्री सुमतिनाथ निर्वाण पाम्या,

त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्ष न्यून एक लाख कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ४

अर्हन् श्री संभवनाथना निर्वाणथी दश लाख कोटि सागरोपमे श्री अभिनंदन निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून दश लाख कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. ३

अर्हन् श्री अजितनाथना निर्वाणथी त्रीश लाख सागरोपमे श्री संभवनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून वीश लाख कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. २

अर्हन् श्री ऋषभदेवना निर्वाणथी पचास लाख कोटि सागरोपमे श्री अजितनाथ निर्वाण पाम्या, त्यारपछी त्रण वर्ष साडा आठ मास अने बेंतालीश हजार वर्षे न्यून पचास लाख कोटि सागरोपमे श्री वीर भगवान् निर्वाण पाम्या अने त्यारपछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकवाचना थइ. १

हवे आ अवसर्पिणीमां (धर्मना) प्रथम प्रवर्तकपणाथी परम उपगारीपणाने लीधे श्री ऋषभदेव प्रभुनुं चरित्र कांइक विस्तारथी कहे छे.

ते काल अने ते समयने विषे अयोध्यामां जन्मेला अर्हन् श्री ऋषभदेव प्रभुनां चार कल्याणक उत्तराषाढा नक्षत्रमां थयेलां छे अने पांचमुं कल्याणक अभिजित् नक्षत्रमां थयेलुं छे. ते आ प्रमाणे- उत्तराषाढामां च्यव्या अने च्यवीने गर्भमां उत्पन्न थया, उत्तराषाढामां जन्म थयो, उत्तराषाढामां दीक्षा लीधी, उत्तराषाढामां केवलज्ञान उपन्युं अने अभिजित् नक्षत्रमां निर्वाण पाम्या.

ते काल अने ते समयने विषे अर्हन् कौशलिक[1] श्री ऋषभदेव प्रभु आ उनालानो चोथो मास, सातमुं पखवाडीयुं, ते आषाढ मासनो कृष्णपक्ष, ते आषाढ मासना कृष्णपक्षनी चोथने दिवसे[2]

१ कोशला ते अयोध्या, त्यां जन्म होवाथी कौशलिक. २ गुजराती जेठ वदि ४.

तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाला सर्वार्थसिद्ध नामना महाविमानथी अंतर रहित च्यवन करीने आज जम्बूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां इक्ष्वाकु भूमिमां नाभि नामना कुलकरनी मरुदेवा नामनी स्त्रीनी कुक्षिने विषे मध्य रात्रिने विषे दिव्य आहारनो त्याग करीने यावत्[1] गर्भपणे उत्पन्न थया.

अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभु (गर्भमां पण) त्रण ज्ञाने करी सहित हता, तेथी हुं च्यवीश एम जाणे[2] त्यांथी (मरुदेवी माताए) स्वप्न जोयां ते जेमके 'गयवसह' इत्यादि गाथा अहीं कहेवी विगेरे सर्व वृत्तांत श्री वीर प्रभुनी पेठे (तेमना चरित्रमांथी) जाणी लेवो, परंतु अहीं एटलुं विशेष छे के मरुदेवा माताए प्रथम वृषभने मुखमां प्रवेश करतो जोयो अने बीजा जिननी माताओए प्रथम हाथीने जोयो छे तथा वीर प्रभुनी माताए सिंहने जोयो छे; अने मरुदेवाए स्वप्ननी हकीकत नाभि कुलकरने कही त्यारे स्वप्नपाठको नहोता, तेथी नाभि कुलकरे पोतेज स्वप्ननुं फल कह्युं छे.

ते काल अने समयने विषे अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभु आ उनालानो पहेलो मास, पहेलुं पखवाडीयुं, ते चैत्र मासनो कृष्णपक्ष, ते चैत्र मासना कृष्णपक्षनी आठमने दिवसे[3] नव मास बरोबर परिपूर्ण थये छते यावत् उत्तराषाढा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते आरोग्य माताए आरोग्य पुत्रने जन्म आप्यो.

त्यारपछीनो सघलो वृत्तांत देव अने देवीओए वसुधारानी वृष्टि करी त्यांसुधी, तेमां बंदिजनने छोडी मूकवानी, मानोन्मानना वर्द्धननी अने दाण मूकी देवा प्रमुख कुलमर्यादानी हकीकत छोडी दइने[4] बाकीनो सर्व पूर्वोक्त प्रकारे श्री महावीर प्रभुना जन्म वखते कह्यो छे ते प्रमाणे कहेवो.

हवे देवलोकथी च्यवेला, अद्‌भुत रूपवाला, अनेक देव देवीओथी परिवृत थयेला, सकल गुणे

---

१ अहीं यावत् शब्दे देवभवनो त्याग करीने, दिव्य शरीरनो त्याग करीने. २ च्यवता न जाणे, च्यव्या पछी हुं च्यव्यो एम जाणे. ३ गुजराती फागण वदि ८. मे ४ केदखानुं नथी अने व्यापारप्रवृति नथी, तेथी आ त्रण बाबत ते वखते करवानी नथी.

करीने ते युगलिक मनुष्योथी अति उत्कृष्ट अने अनुक्रमे वृद्धि पामता एवा श्री ऋषभदेव प्रभु आहारनी इच्छा वखते देवताओए सिंचन करेल अमृतरसे करीने रसवाली आंगली (अंगुष्ठ) मुखमां नाखता हता. एवीज रीते बीजा तीर्थंकरोने माटे पण बाल्य अवस्थामां जाणवुं. बीजा तीर्थंकरोनी बाल्य अवस्था व्यतीत थये छते अग्निथी पकावेला आहारनुं भोजन करता हता, परंतु श्री ऋषभदेवे तो दीक्षा लीधी त्यांसुधी देवोए आणेलां उत्तरकुरुक्षेत्रनां कल्पवृक्षनां फलोनुंज भोजन कर्युं छे.

हवे प्रभुनी उमर एक वर्षथी कांइक ऊंची हती त्यारे "प्रथम जिनना वंशनी स्थापना करवी ए इंद्रनो आचार छे" एम विचारीने अने "खाली हाथे प्रभु पासे केम जाउं" एम विचारीने इंद्र एक मोटो शेरडीनो सांठो लइने नाभि कुलकरना खोलामां बेठेला प्रभुनी पासे आवी ऊभा रह्या. आ वखते शेरडीना सांठाने जोइने हर्षित मुखवाला प्रभुए हाथ लांबो कर्ये छते "आप शेरडी खाशो ?" एम कहीने ते सांठो आपीने "इक्षुना अभिलाषथी प्रभुनो वंश इक्ष्वाकु थाओ, अने तेमना पूर्वजो पण इक्षुना अभिलाषवाला हता, तेथी तेमनुं गोत्र काश्यप थाओ." एम कही इंद्रे प्रभुना वंशनी स्थापना करी.

हवे कोइ युगलने तेमनां मातापिताए तालवृक्षनी नीचे मूक्युं हतुं ते वखते तालनुं फल पडवाथी पुरुष मृत्यु पाम्यो. एवी रीते आ पहेलुं अकाल मृत्यु थयुं. हवे बाकी रहेली ते कन्यानां[1] मातापिता मरण पाम्या बाद ते एकलीज वनमां भटकवा लागी. ते सुंदर स्त्रीने जोइने युगलियाओ तेने नाभि कुलकर पासे लइ गया. त्यारे नाभि कुलकरे पण शिष्ट एवी आ सुनंदा नामे ऋषभदेवनी पत्नी थशे एम लोकने कहीने तेणीने पोतानी पासे राखी. पछी सुनंदा अने सुमंगलानी साथे वृद्धि पामता प्रभु यौवनावस्था पाम्या एटले इंद्रे पण "प्रथम जिननो विवाह करवानो

---

१ प्रभु जन्म्या त्यांसुधी युगलिक प्रवृत्ति होवाथी आ सुमंगलानो जन्म पण प्रभुनी साथेज थयो हतो.

अमारो आचार छे" एम विचारीने क्षोक्षोगमे देव देवीओ सहित त्यां आवीने प्रभुनुं वर संबंधी कार्य पोते कर्युं अने बंने कन्यानुं वधू संबंधी कार्य इंद्राणीओए अने देवीओए कर्युं. त्यारपछी ते बंने स्त्रीओ साथे भोग भोगवता भगवानने छ लाख पूर्व गये छते सुमंगलाए भरत अने ब्राह्मी-रूप युगलने जन्म आप्यो तथा सुनंदाए बाहुबलि अने सुंदरीरूप युगलने जन्म आप्यो. त्यार-पछी सुमंगलाए अनुक्रमे ओगणपचास पुत्रयुगलने जन्म आप्यो.

अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभु काश्यपगोत्रीनां पांच नाम आ प्रमाणे कहेवाय छे. १ ऋषभ, २ प्रथम राजा, ३ प्रथम भिक्षाचर (मुनि), ४ प्रथम जिन (केवली) अने ५ प्रथम तीर्थंकर ए प्रमाणे जाणवां.

(तेमां) प्रथम राजा आ प्रमाणे—कालना प्रभावने लीधे अनुक्रमे वधारे वधारे कषायनो उदय थवाथी परस्पर विवाद करता युगलियाने माटे आ प्रमाणे दंडनीति स्थापेली हती. विमलवाहन अने चक्षुष्मत् कुलकरना वखतमां अल्प अपराधीपणाने लीधे हक्काररूपज दंडनीति हती तथा यशस्वी अने अभिचंद्रना वखतमां अल्प अपराध माटे हक्काररूप अने मोटा अपराध माटे मकाररूप दंडनीति हती. पछी प्रसेनजित्, मरुदेव अने नाभि कुलकरना वखतमां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट अपराध माटे अनुक्रमे हक्कार, मकार अने धिक्काररूप दंडनीति हती. एवी रीतनी नीतिनुं पण उल्लंघन थवाथी भगवानने ज्ञान आदि गुणोए करीने अधिक जाणीने युगलियाओए प्रभुने ते वात निवेदन कर्ये छते प्रभुए कह्युं के "नीति उल्लंघन करनारने राजा सर्व प्रकारनो दंड करे अने ते राजानो अभिषेक थवो जोइए तथा ते प्रधान आदिकथी परिवृत होवो जोइए." प्रभुए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे युगलियाओए कह्युं के "अमारे पण एवो राजा थाओ." त्यारे प्रभुए कह्युं के "तेवा राजा माटेनी मागणी नाभि कुलकर पासे करो." युगलियाओए नाभि कुलकर पासे मागणी करवाथी नाभि कुलकरे कह्युं के "तमारा राजा ऋषभज थाओ." पछी ते युगलियाओ राज्याभिषेकने माटे पाणी लेवा सारु तलावे गया. ते वखते जेनुं आसन कंप्युं छे एवा

इंद्रे पोतानो आचार जाणी त्यां आवीने मुकुट, कुंडल, आभरण आदिनी शोभा करवापूर्वक प्रभुने राज्याभिषेक कर्यो. आ वखते नलिनीना पडियामां पाणी लइ आवेला युगलियाओ प्रभुने अलंकृत थयेला जोइने विस्मय पाम्या अने क्षणवार विचार करीने प्रभुना पग उपर पाणी नाख्युं. ते जोइने तुष्टमान थयेल इंद्र विचारवा लाग्या के "अहो ! आ पुरुषो विनीत छे" एम धारीने तेणे वैश्रमणने आज्ञा करी के "अहीं बार योजन विस्तारवाली अने नव योजन लांबी विनीता नामनी नगरी बनावो." ए प्रमाणे आज्ञा सांभलीने तेणे रत्न अने सुवर्णमय घरोनी पंक्तिवाली अने फरता किल्लाथी शोभिती एवी नगरी बनावी. त्यारपछी प्रभुए पोताना राज्यमां हाथी, घोडा, गाय आदिनो संग्रह करवापूर्वक उग्र, भोग, राजन्य अने क्षत्रियरूप चार कुलो स्थाप्यां. तेमां उग्र दंड करवाने लीधे उग्र कुलवाला ते आरक्षक[1]स्थानीया जाणवा, भोगना योग्यपणाथी भोग कुलवाला ते (वृद्धो) गुरुस्थानीया जाणवा, समान वयवाला होवाथी राजन्य कुलवाला ते मित्रस्थानीया जाणवा अने बाकीना प्रधान आदिक ते क्षत्रिय कुलवाला जाणवा.

हवे कालनी उत्तरोत्तर हानिथी ऋषभ कुलकरना वखतमां कल्पवृक्षनां फलो नहीं मली शकवाथी जेओ इक्ष्वाकु वंशना हता तेओ शेरडी खाता अने बीजाओ प्राये अन्य वृक्षोनां पत्र, पुष्प अने फल आदिक खाता तेमज अग्निना अभावथी काचा चोखा विगेरे औषधीओ (धान्य) खाता; परंतु कालना प्रभावथी ते नहीं पचवाने लीधे तेओ थोडुं थोडुं खावा लाग्या, ते पण नहीं पचवाथी प्रभुना कहेवा प्रमाणे चोखा आदिकने हाथथी मसलीने तेनां फोतरां उतारीने खावा लाग्या. ते पण नहीं पचवाथी प्रभुना उपदेशथी पांदडाना पडियामां पाणीथी भींजावीने चोखा आदिक खावा लाग्या. ए प्रमाणे पण नहीं पचवाथी केटलोक वखत पाणीमां भींजावीने पछी हथेलीमां राखीने इत्यादि बहु प्रकारे तेओ तंडुलादि अन्न खावा लाग्या. एम करतां एक दिवस वृक्षोना

१ पोलीस जेवा.

घसावाथी नवीन उत्पन्न थयेला, पूर्ण बलती ज्वालावाला अने तृणना समूहने ग्रास करी जता अग्निने जोइने "आ कोइ नवीन रत्न छे" एवी बुद्धिथी लांबा हाथ करीने युगलियाउ लेवा लाग्या त्यारे हाथे दाझ्या एटले भयभीत थइने प्रभुने ते वात जणावी. त्यारे प्रभुए अग्निनी उत्पत्ति जाणीने कह्युं के "हे युगलिको ! ए अग्नि उत्पन्न थयो छे, माटे हवे तेमां चोखा आदिक ओषधीउ नाखीने खाउ के जेथी करीने ते सुखेथी पचशे." आ प्रमाणे प्रभुए उपाय कह्यो तोपण (पकाववानो) अभ्यास नहीं होवाथी उपायने बरोबर रीते नहीं जाणता एवा ते युगलियाउए औषधीउने अग्निमां नाखीने कल्पवृक्ष पासेथी फल मागता हता तेम तेनी पासेथी ते मागवा लाग्या, पण अग्निथी तेने तद्दन बली गयेल जोइने "अरे ! आ पापी तो वेतालनी पेठे अतृप्त थइने पोतेज सर्व भक्षण करी जाय छे, अमने कांइ पण पाछुं आपतो नथी माटे तेनो अपराध प्रभुने कहीने तेने शिक्षा करावीशुं." एवी बुद्धिथी तेउ प्रभु पासे जता हता एटलामां मार्गमां प्रभुने हाथी उपर बेसीने सामा आवता जोइने तेउए यथास्थित वात प्रभुने कही, त्यारे प्रभुए कह्युं के वासण आदिना व्यवधानथी तमारे धान्य विगेरे तेमां नाखवानुं करवुं. एम कहीने तेउनी पासेज माटीनो पिंड मगावी तेने हाथीना कुंभस्थल उपर मूकावी मावत पासे तेनुं ठाम बनाव-रावीने प्रभुए पहेली कुंभारनी कला प्रकट करी अने कह्युं के "आवी जातनां वासणो बनावीने तेमां धान्य पकावो." प्रभुए कहेल कलाने बरोबर ध्यानमां लइने ते युगलियाउ ते प्रमाणे करवा लाग्या. एवी रीते पहेली कुंभारनी कला प्रवर्ती. त्यारपछी लुहारनी, चितारानी, वणकरनी अने नापितनी कलारूप चार कला प्रकट करी. आ पांच मूल शिल्पना प्रत्येके वीश भेद थवाथी एकसो प्रकारना शिल्प थया. ते सर्व आचार्यना उपदेशथी थयेला जाणवा.

दक्ष (डाह्या), दक्ष (सत्य) प्रतिज्ञावाला, सुंदर रूपवाला, सर्व गुणे करीने युक्त, सरल परिणामवाला अने विनयवंत एवा अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभु वीश लाख पूर्व सुधी कुमार अव-



...ऊपर बेसीने माटीना वासण बनावीने युगलीयाने आपेछे. तथा युगलीया माटीना पिंड लई आवी भगवानने आपे छे.

प

तथा बाहुबलिने बहली देशने विषे तक्षशिलानु राज्य आप्युं अने बाकीना अठाणुं पुत्रोने जूदा जूदा देशो वहेंची आप्या.

श्री ऋषभदेव प्रभुना सो पुत्रोनां नाम आ प्रमाणे जाणवां—भरत १, बाहुबलि २, शंख ३, विश्वकर्मा ४, विमल ५, सुलक्षण ६, अमल ७, चित्रांग ८, ख्यातकीर्त्ति ९, वरदत्त १०, सागर ११, यशोधर १२, अमर १३, रथवर १४, कामदेव १५, ध्रुव १६, वत्स १७, नंद १८, सूर १९, सुनंद २०, कुरु २१, अंग २२, वंग २३, कोशल २४, वीर २५, कालिंग २६, मागध २७, विदेह २८, संगम २९, दशार्ण ३०, गंभीर ३१, वसुवर्मा ३२, सुवर्मा ३३, राष्ट्र ३४, सुराष्ट्र ३५, बुद्धिकर ३६, विविधकर ३७, सुयशा ३८, यशःकीर्त्ति ३९, यशस्कर ४०, कीर्त्तिकर ४१, सूरण ४२, ब्रह्मसेन ४३, विक्रान्त ४४, नरोत्तम ४५, पुरुषोत्तम ४६, चंद्रसेन ४७, महासेन ४८, नभःसेन ४९, भानु ५०, सुकान्त ५१, पुष्पयुत ५२, श्रीधर ५३, दुर्द्धर्ष ५४, सुसुमार ५५, दुर्जय ५६, अजेयमान ५७, सुधर्मा ५८, धर्मसेन ५९, आनंदन ६०, आनंद ६१, नंद ६२, अपराजित ६३, विश्वसेन ६४, हरिषेण ६५, जय ६६, विजय ६७, विजयन्त ६८, प्रभाकर ६९, अरिदमन ७०, मान ७१, महाबाहु ७२, दीर्घबाहु ७३, मेघ ७४, सुघोष ७५, विश्व ७६, वराह ७७, सुसेन ७८, सेनापति ७९, कपिल ८०, शैलविचारी ८१, अरिंजय ८२, कुंजरबल ८३, जयदेव ८४, नागद ८५, काश्यप ८६, बल ८७, वीर ८८, शुभमति ८९, सुमति ९०, पद्मनाभ ९१, सिंह ९२, सुजाति ९३, संजय ९४, सुनाभ ९५, नरदेव ९६, चित्तहर ९७, सुस्वर ९८, द्दढरथ ९९ अने प्रभंजन १००.

हवे राज्य अथवा देशोनां नाम आ प्रमाणे जाणवां—अंग १, वंग २, कालिंग ३, गौड ४, चौड ५, कर्णाट ६, लाट ७, सौराष्ट्र ८, काश्मीर ९, सौवीर १०, आभीर ११, चीण १२, महाचीण १३, गूर्जर १४, बंगाल १५, श्रीमाल १६, नेपाल १७, जहाल १८, कौशल १९, मालव २०, सिंहल २१, मरुस्थला २२ विगेरे. (वहोले भागे पुत्रनां नाम प्रमाणे देशोनां पण नामो समजवां).

श्रेणिमा गौरेय, गांधार प्रमुख आठ निकायोने तथा रथनूपुरचक्रवाल प्रमुख पचास नगरोने अने उत्तरश्रेणिमां पंडक वंशालय प्रमुख आठ निकायोने तथा गगनवल्लभ प्रमुख साठ नगरोने वसावीने रह्यो. पछी कृतार्थ थयेला ते बंने पोतानां मातापिताने तथा भरतने पोतानो वृत्तांत कहीने दक्षिणश्रेणिमां नमि अने उत्तरश्रेणिमां विनमि जइने रह्या.

हवे अन्नपान आदि देवामां अकुशल एवा समृद्धिवाला लोको प्रभुने वस्त्र, आभरण, कन्या विगेरे आपवा लाग्या, पण योग्य भिक्षा नहीं मलवा छतां क्लेशरहित मनवाला प्रभु कुरुदेशमां हस्तिनागपुर नगर तरफ गया, अने त्यां (आवश्यकवृत्तिने अनुसारे) बाहुबलिना पुत्र सोमप्रभनो[1] पुत्र श्रेयांस युवराज हतो. ते श्रेयांसे ते रात्रिए एवुं स्वप्न दीठुं के "में श्याम वर्णना मेरुने अमृतना कलशोथी सिंचन कर्यो तेथी ते अत्यंत शोभावालो थयो." त्यांना सुबुद्धि नामना नगरशेठे एवुं स्वप्न जोयुं के सूर्यमंडलथी खरी पडेलां हजार किरणोने फरीथी श्रेयांसे त्यां जोडी दीधां तेथी ते सूर्य घणोज शोभवा लाग्यो." त्यांना राजाए (सोमप्रभे) स्वप्नमां एम जोयुं के "एक महा पुरुष शत्रुना लश्करनी साथे लडतो हतो ते श्रेयांसनी सहायथी विजयी थयो." ते त्रणे जणाए सवारमां सभामां एकठा थइने पोतपोतानां स्वप्न परस्पर निवेदन कर्यां. तेथी "श्रेयांसने कोइ पण मोटो लाभ थवानो छे" एम राजाए निर्णय करीने सभाने विसर्जन करी. श्रेयांस पण पोताने घेर जइने झरुखामां बेठो छे तेवामां "प्रभु कांइ पण लेता नथी" एवो लोकोनो कोलाहल सांभलीने अने प्रभुने जोइने "में कोइ पण जगोए पूर्वे आवो वेश जोयो छे" एम इहापोह करतां श्रेयांसने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तेणे जाण्युं के "अहो! हुं तो पूर्व भवमां प्रभुनो सारथि हतो अने प्रभुनी साथे में दीक्षा लीधी हती अने ते वखते वज्रसेन प्रभुए कह्युं हतुं के आ वज्रनाभ भरतक्षेत्रमां पहेला तीर्थंकर थशे, तेज आ प्रभु छे." हवे तेज वखते

१ सोमयशा.



श्रेयांस कुमर भगवानने सेलडीनो रस वहोरावे छे.

पा.१००

कोइ एक माणस उत्तम शेरडीना रसना घडा श्रेयांस कुमारने भेट तरीके आपवा आव्यो, तेमां-थी एक घडो लइने तेणे प्रभुने कह्युं के "आ योग्य भिक्षा आप ग्रहण करो." त्यारे प्रभुए पण पोताना हाथ पसार्या (लांबा कर्या) एटले श्रेयांसे सर्व घडानो रस रेडी दीधो, परंतु एक पण बिंदु नीचे पड्युं नहीं, रसनी शिखा उपर उपर वधवा लागी. कह्युं छे के-"जेना हाथनी अंदर हजारो घडा समाइ जाय अथवा सर्वे समुद्र समाइ जाय एवी जेने लब्धि प्राप्त थाय तेज पाणिप्रति-ग्रही (हस्तपात्री) थाय." अहीं कवि घटना करे छे के-प्रभुए पोताना जमणा हाथने कह्युं के "अरे ! तुं भिक्षा केम लतो नथी ?" त्यारे तेणे कह्युं के "हे प्रभु ! हुं आपनारना हाथनी नीचे शी रीते थाउं ? कारण के पूजा, भोजन, दान, शांतिकर्म, कला, पाणिग्रहण, स्थापना, शुद्धता, प्रेक्षणं[1], हस्तकअर्पणं[2] विगेरे कार्योमां हुं तो वपरातो छुं" एम कहीने जमणो हाथ स्थित थयो त्यारे (प्रभुए डावा हाथने भिक्षा लेवा कह्युं. तेना जवाबमां) डाबा हाथे कह्युं के "हुं रणसंग्राममां सन्मुख थनारो छुं, अंक गणवामां तत्पर छुं अने डाबा पडखे सूवा विगेरेमां सहाय करनारो छुं अने आ जमणो हाथ तो जुगार आदि व्यसनवालो छे." त्यारे जमणा हाथे कह्युं के "हुं पवित्र छुं, तुं पवित्र नथी." त्यारपछी (प्रभुए बंने हाथने समजाव्या के) "तमे राज्यलक्ष्मी उपार्जन करी छे अने अर्थीना समूहने दान देवावडे कृतार्थ करेल छे, वली निरंतर संतुष्ट छो तोपण दान देनारा उपर दया लावीने हवे दान ग्रहण करो." एवी रीते प्रभुए एक वर्ष सुधी बंने हाथने समजावीने श्रेयांस कुमार पासेथी मलेला ताजा शेरडीना रसे करीने तेने पूर्ण कर्या. एवा श्री ऋषभदेव प्रभु तमारुं रक्षण करो.

श्रेयांस कुमारना दानने वखते नेत्रमां हर्षाश्रुनी धारा, वाणीरूपी दुधनी धारा अने शेरडीना रसनी धारा स्पर्धा वडे वधवा लागी अने तेज आशये (तेनाथी सिंचायेलुं) धर्मरूपी वृक्ष वधवा

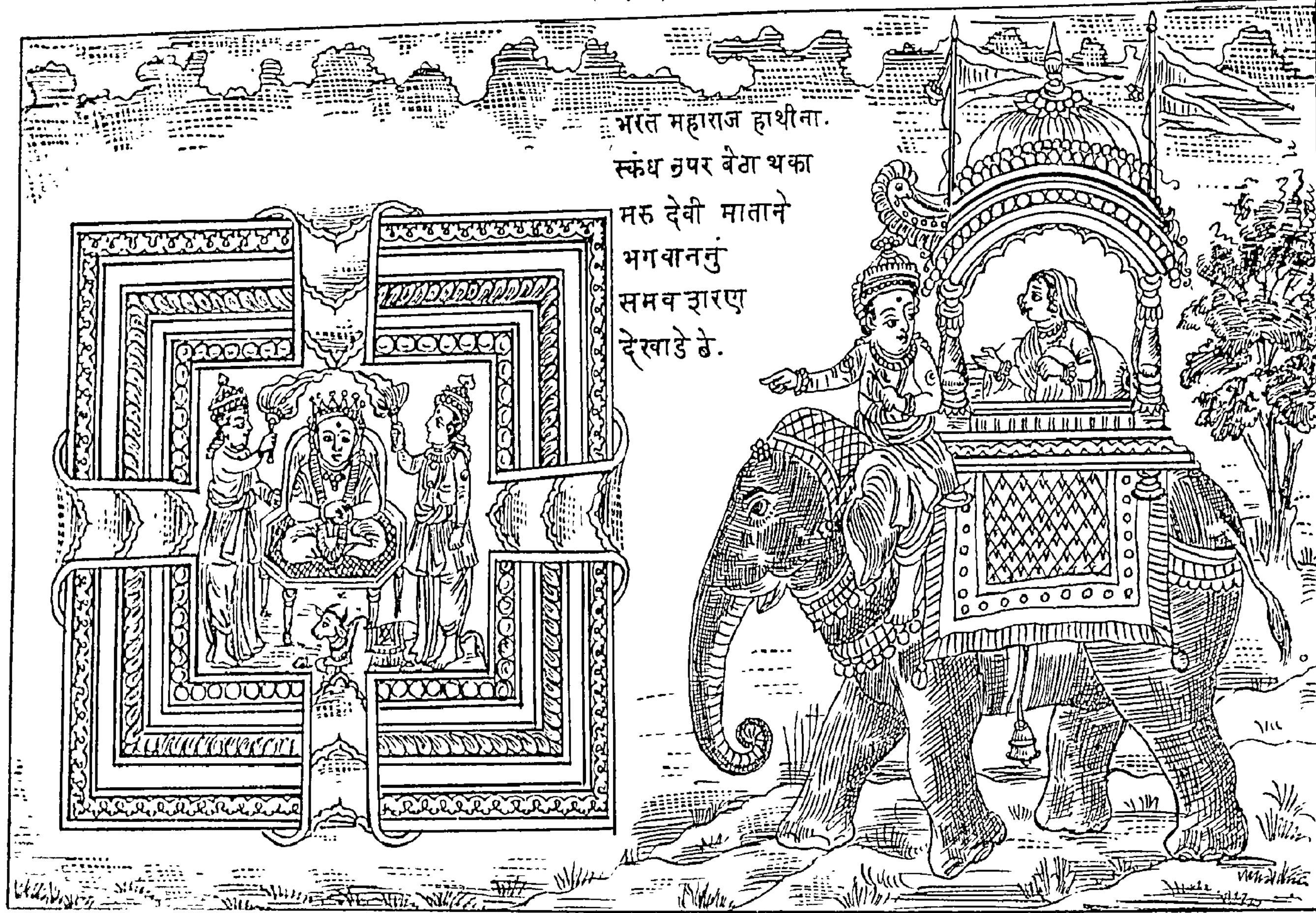
[1] हस्तरेखा बतावबी ते प्रेक्षण. [2] हाथो देवो, कोल आपवो, वचन आपवुं, ए सर्व हस्तकअर्पण समजवुं.

लाग्युं. पछी ते रसथी प्रभुए सांवत्सरिक तपनुं पारणुं कर्युं. ते वखते त्यां वसुधारानी[1] वृष्टि, चेलो-त्क्षेप[2], आकाशमां देवदुंदुभि, गंधोदक पुष्पवृष्टि अने अहो दान अहो दान एवी आकाशमां उद्घोषणा एवी रीतनां पांच दिव्य प्रगट थयां. पछी सर्वे लोको त्यां एकठा थया. श्रेयांस कुमारे तेमने जणाव्युं के "हे लोको ! सद्गति मेलववानी इच्छाथी आ प्रमाणे साधुओने एषणीय[3] आहारनी भिक्षा अपाय छे." एवी रीते आ अवसर्प्पिणीमां श्रेयांस कुमारे वतावेलुं दान प्रथम जाणवुं. "तमे आ बाबत केवी रीते जाणी ?" ए प्रमाणे श्रेयांसने लोकोए पूछ्युं एटले तेणे प्रभुनी साथेनो पोतानो आठ भवनो संबंध कही संभलाव्यो के 'ज्यारे प्रभु ईशान देवलोकमां ललितांग नामे देव हता त्यारे हुं पूर्व भवनी निर्नामिका तेमनी स्वयंप्रभा नामे देवी थइ हती १, त्यारपछी पूर्वविदेहमां पुष्कला-वती विजयने विषे लोहार्गल नामना नगरमां प्रभु वज्रजंघ राजा हता त्यारे हुं श्रीमती नामे तेमनी राणी हती २, त्यांथी उत्तरकुरुमां भगवान् युगलिक हता अने हुं तेमनी युगलिनी हती ३, त्यांथी सौधर्म देवलोकमां अमे बंने मित्रदेव थया हता ४, त्यारपछी प्रभु अपरविदेहमां वैद्यपुत्र हता त्यारे हुं जीर्ण शेठनो पुत्र केशव नामे तेमनो मित्र हतो ५, त्यांथी अच्युत देवलोकमां अमे बंने देव थया हता ६, त्यांथी पुंडरीकिणी नगरीमां प्रभु वज्रनाभ चक्री हता ते वखते हुं तेमनो सारथि हतो ७, त्यांथी सर्वार्थसिद्ध विमानमां अमे बंने देव थया हता ८ अने अहीं हुं प्रभुनो प्रपौत्र थयो छुं.' आ प्रमाणेनी हकीकत सांभलीने सर्वे लोको "ऋषभदेव समान पात्र, शेरडीना रस समान निरवद्य दान अने श्रेयांसना जेवो भाव जो पूर्वनुं भाग्य होय तोज प्राप्त थाय." इत्यादि स्तुति करता पोतपोताने स्थानके गया. एवी रीते दीक्षाना दिवसथी मांडीने एक हजार वर्ष सुधी प्रभुना छद्मस्थपणानो काल जाणवो. तेमां सघलो मली प्रमादकाल एक अहोरात्रनो जाणवो.

एवी रीते आत्माने भावता छता एक हजार वर्ष पूर्ण थयां, त्यारपछी आ शियालानो चोथो मास,

१ द्रव्यनी. २ वस्त्रनी वृष्टि. ३ दोषरहित. ४ मग्गीअं=मार्गितं=मागणुं (भाग्य).

चित्र ५६.



सातमुं पखवाडीयुं; ते फागण मासनो कृष्णपक्ष, ते फागण मासना कृष्णपक्षनी एकादशीना[1] दिवसे[2] सवारना वखते पुरिमताल नामना विनीता नगरीना शाखानगरनी बहार शकटमुख नामना उद्यानमां न्यग्रोध नामना वृक्षनी नीचे जलरहित अष्टमनो तप करीने उत्तराषाढा नक्षत्रमां चंद्रयोग प्राप्त थये छते ध्यानांतर दशामां वर्ततां[3] प्रभुने अनंत केवलज्ञान उत्पन्न थयुं यावत् (सर्व प्राणीओना भावने) जाणता, जोता छता विचरवा लाग्या.

ए प्रमाणे एक हजार वर्ष गया बाद विनीता नगरीना पुरिमताल नामना शाखानगरमां प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं तेज वखते भरत राजाने चक्ररत्न पण उत्पन्न थयुं. ते वखते विषयतृष्णाना विषमपणाने लीधे हुं 'प्रथम पितानी पूजा करुं के चक्रीनी करुं?' एम क्षण वार विचारीने आ लोक अने परलोकमां सुख आपनारा पितानी पूजा कर्याथी मात्र आ लोकमां सुख आपनार चक्रनी पूजा तो थइज चुकी, ए प्रमाणे बराबर विचारीने हमेशां ठपको देता एवा मरुदेवा माताने हाथी उपर बेसाडी आगल करीने सर्व ऋद्धि सहित भरत राजा प्रभुने वांदवा चाल्या. ज्यारे समवसरणनी नजीक आव्या त्यारे 'हे माता! तमारा पुत्रनी ऋद्धि जुओ.' ए प्रमाणे भरत राजाए कह्युं, तेथी हर्षथी रोमांचित अंगवाला थयेला अने आनंदनां अश्रु भरावाने लीधे निर्मल नेत्रवाला थयेलां[4] मरुदेवा माता प्रभुनी छत्र, चामर आदिक प्रातिहार्यनी लक्ष्मी जोइने विचारवा लाग्या के "अहो! मोहथी विह्वल थयेला सर्व प्राणीओने धिक्कार छे! तेओ स्वार्थनेज लीधे स्नेह करे छे, कारण के ऋषभनां दुःखथी रुदन करती एवी जे हुं तेनां तो नेत्र पण हीन तेजवालां थयां, परंतु ऋषभ तो आवी रीते सुर अने असुरथी सेवातो थको अने आवी जातनी समृद्धि भोगवतो छतो पण मने सुखवार्तानो

१ गुजराती माघ वदि ११. २ परुं. ३ शुक्लध्यानना प्रथमना बे भेदनुं ध्यान करी रह्या पछीनी दशा ते ध्यानांतर दशा जाणवी. ते वखते ध्यान होतुं नथी. बाकीना बे पाया भवने अंते ध्यावामां आवे छे. ४ प्रभुना विरहे रुदन करतां आंखमां पडल आवेलां ते आ वखतनां हर्षाश्रुथी धोवाइ गयां तेथी नेत्र निर्मल थयां.

संदेशो पण मोकलतो नथी, माटे आ स्नेहने धिक्कार छे" ! एम भावना भावतां मरुदेवाने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं अने तेज क्षणे आयुष्यनो क्षय थवाथी ते (अंतकृत्केवली थइने) मुक्ति पाम्या.

अहीं कवि घटना करे छे के–'जगतमां युगादीश एटले ऋषभदेव समान पुत्र नथी, कारण के जेमणे एक हजार वर्ष सुधी पृथ्वी उपर भमी भमीने जे केवलज्ञानरूपी उत्तम रत्न उपार्जन कर्युं ते स्नेहथी तुरतज पोतानी माताने आपी दीधुं, तेमज मरुदेवा समान माता पण जगतमां नथी के जे पोताना पुत्रने माटे मुक्तिरूपी कन्याने अने प्रगटपणे शिवमार्गने पण जोवाने माटे प्रथमथी मोक्षे गया.' प्रभुए पण समवसरणमां बेसीने धर्मदेशना आपी. ते वखते त्यां भरतना ऋषभसेन आदि पांचसो पुत्रोए तथा सातसो पौत्रोए दीक्षा लीधी. तेओमांथी प्रभुए ऋषभसेन आदि चोराशी गणधर स्थाप्या. ब्राह्मीए पण दीक्षा लीधी (ते मुख्य साध्वी थइ) अने भरत राजा श्रावक थया (श्रावकधर्मने अंगीकार कर्यो). 'आ स्त्रीरत्न थशे' एम धारीने भरते दीक्षा लेतां अटकावेली सुंदरी श्राविका थइ. एवी रीते चतुर्विध संघनी स्थापना थइ. पछी कछ अने महाकछ सिवायना सघला तापसोए प्रभुनी पासे आवी दीक्षा ग्रहण करी. पछी इंद्रना प्रतिबोधथी मरुदेवा मातानो शोक निवारीने भरत राजा पोताने स्थानके गया.

पछी भरत राजा चक्ररत्ननी पूजा करीने शुभ दिवसे प्रयाण करी साठ हजार वर्षे भरतक्षेत्रना छ खंड साधीने पोताने घेर आव्या, परंतु चक्ररत्न तो आयुधशालानी बहारज रह्युं. ते वखते भरते पोताना अठाणुं भाइओने "मारी आज्ञा मानो" एम दूतना मुखथी कहेवराव्युं. तेथी ते सर्वे एकठा थइने "अमारे भरतनी आज्ञा मानवी के तेनी साथे युद्ध करवुं" ए पूछवा माटे प्रभुनी पासे गया. प्रभुए पण वैतालीय अध्ययननी प्ररुपणा वडे तेमने प्रतिबोध पमाडीने दीक्षा आपी. त्यारपछी भरते बाहुबलि उपर दूत मोकल्यो. ते पण क्रोधथी अंध अने अहंकारथी उद्धुर थया थका पोताना सैन्य सहित सामा आवीने भरत राजानी साथे बार वर्ष सुधी लड्या, पण हार्या

नहीं. त्यारे माणसोनो जबरो संहार थतो जाणीने इंद्रे आवीने दृष्टि, वाग्, मुष्टि अने दंडरूप चार जातनां युद्ध ठरावी आप्यां. तेमां पण भरत चक्रीनो पराजय थयो. त्यारे क्रोधथी आंधला थइने भरते बाहुबलिनी उपर चक्र मूक्युं, पण एक गोत्रीयपणाने लीधे ते चक्रे तेनो कांइ पण पराभव कर्यो नहीं. ते वखते क्रोधना वशथी भरतने हणवानी इच्छावाला मुठी उपाडीने दोडता बाहुबलिए "अरे ! पिता तुल्य मोटा भाइने हणवो ए मने अनुचित छे अने उपाडेली मुठी पण निष्फल केम थाय" एम विचारीने ते मुठीने पोताना मस्तक उपर मूकी केशनो लोच करीने अने सर्वनो त्याग करीने काउस्सग्ग कर्यो. ते जोइने भरत चक्री तेमने नमीने पोतानो अपराध खमावी पोताने स्थानके गया. बाहुबलि पण "दीक्षापर्यायथी मोटा एवा नाना भाइओने केवी रीते नमुं ? तेथी ज्यारे केवलज्ञान उत्पन्न थशे त्यारेज हुं प्रभुनी पासे जइश" एम विचारीने एक वर्ष सुधी काउस्सग्गमांज उभा रह्या. वर्ष पछी प्रभुए मोकलेली पोतानी बहेनोए "हे भाइ ! गजथी उतरो" एम कहीने बाहुबलिने प्रतिबोध पमाड्यो. पछी बाहुबलिए जेवा पग उपाड्या के तरतज तेने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. त्यारपछी प्रभु पासे जइने लांबो वखत विहार करी प्रभुनी साथेज ते मोक्षे गया. भरत चक्री पण लांबा वखत सुधी चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवीने एक दिवस आरीसाभवनमां वींटी विनानी पोतानी आंगलीने जोइ अनित्यपणानी भावना भावता केवलज्ञान मेलवीने दश हजार राजाओनी साथे देवताए आपेला मुनिवेशने ग्रहण करी लांबो वखत विहार करी मोक्षे गया.

अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभुने चोराशी गण अने चोराशी गणधर थया, ऋषभसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुओनी उत्कृष्ट साधुसंपदा थइ, ब्राह्मी, सुंदरी प्रमुख त्रण लाख साध्वीओनी उत्कृष्ट साध्वीसंपदा थइ, श्रेयांस प्रमुख त्रण लाख ने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्ट श्रावकसंपदा थइ, सुभद्रा प्रमुख पांच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओनी उत्कृष्ट श्राविकासंपदा थइ, केवली

नहीं पण केवली तुल्य एवा चार हजार सातसो ने पचास चौदपूर्वधरनी उत्कृष्ट संपदा थइ; नव हजार अवधिज्ञानीओनी, वीश हजार केवलज्ञानीओनी, वीश हजार ने छसो वैक्रियलब्धि-वालानी, अढीद्वीप अने बे समुद्रने विषे पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोना मनोगत भावने जाण-नारा एवा बार हजार छसो ने पचास विपुलमतिओनी अने बार हजार छसो ने पचास वादीओनी उत्कृष्ट संपदा थइ. अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभुना वीश हजार शिष्यो (साधुओ) अने चालीश हजार साध्वीओ मोक्षे गयां. अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभुने अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थनारा अने आगामी मनुष्यगतिमां मोक्षे जनारा बीश हजार अने नवसो मुनिओनी उत्कृष्ट संपदा थइ.

अर्हन् कौशलिक श्रीऋषभदेव प्रभुनी बे प्रकारनी अंतकृद्भूमि थइ. ते आ प्रमाणे—एक युगांत-कृद्भूमि अने बीजी पर्यायांतकृद्भूमि. भगवान् पछी अनुक्रमे असंख्याता पुरुषयुग मोक्षे गया ते युगांतकृद्भूमि जाणवी अने भगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी अंतर्मुहूर्त्ते मरुदेवा माता अंतकृद्केवली थइने मोक्षे गया ते पर्यायांतकृद्भूमि जाणवी.

ते काल अने ते समयने विषे अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभु वीश लाख पूर्व कुमारावस्थामां रहीने अने त्रेसठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रहीने एकंदर त्र्याशी लाख पूर्व गृहस्थावस्थामां रहीने, एक हजार वर्ष छद्मस्थपर्याय पालीने अने एक हजार वर्ष ओछां एक लाख पूर्व सुधी केवलिपर्याय पालीने, एकंदर संपूर्ण एक लाख पूर्व चारित्रपर्याय पालीने—चोराशी लाख पूर्व सुधी सर्व आयुष्य पालीने वेदनीय, आयुः, नाम अने गोत्र ए चार कर्म क्षय थये छते आ अवसर्पिणीमां सुषमदुष्षम नामनो त्रीजो आरो बहु गये छते एटले त्रण वर्ष अने साडा आठ मास बाकी रहे छते अर्थात् त्रीजा आरानां नेव्याशी पखवाडीयां बाकी रहे छते आ शियालानो त्रीजो मास, पांचमो पक्ष, ते माघ मासनो कृष्णपक्ष, ते माघ मासना कृष्णपक्षनी तेरसने दिवसे[1] अष्टापद

[1] गुजराती पोस वदि १३.


चित्र ५७.
पर्वतने फरती खाइमां वहाणो छे.
देवता निर्वाण महोत्सव करे छे.
साधुओनी साथे प्रभु निर्वाण पाम्या.
अष्टापद पर्वत.

पर्वतना शिखर उपर दश हजार साधुउनी साथे जलरहित चौदनक्त एटले ठ उपवासनो तप करीने अन्निजित् नामना नक्षत्रने विषे चंद्रयोग प्राप्त थये ठते सवारने वखते पल्यंकासने बेठा थका निर्वाण पाम्या यावत् सर्व डुःखथी मुक्त थया.

जे वखते श्री ऋषनदेव मोक्ष पाम्या ते वखते जेनुं आसन चलित थयुं ठे एवो इंद्र अवधिज्ञानथी प्रज्ञुना निर्वाणने जाणीने ज्यां प्रज्ञुनुं शरीर हतुं त्यां अग्रमहिषी, लोकपाल आदि सर्व परिवार सहित आवीने त्रण प्रदक्षिणा दइ आनंदरहित अने अश्रुथी जराइ गयेलां नेत्रवालो थयो ठतो नहीं अति नजदीक तेम नहीं अति दूर एम हाथ जोडीने पर्युपासना करवा लाग्यो अर्थात् उन्नो रह्यो. एवी रीते जेउनां आसन कम्पित थयां ठे अने जेउए प्रज्ञुनुं निर्वाण जाण्युं ठे एवा ईशानेंद्र आदि सर्वे इंद्रो पोतपोताना परिवार सहित अष्टापद पर्वत उपर ज्यां प्रज्ञुनुं शरीर हतुं त्यां आवीने विधिपूर्वक पर्युपासना करता उन्ना रह्या. त्यारपठी इंद्रे न्नवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो पासे नंदनवनथी गोशीर्ष चंदननां काष्ठ मंगावीने त्रण चिता करावी. एक तीर्थंकरना शरीर माटे, एक गणधरोनां शरीर माटे अने एक बाकीना मुनिउनां शरीर माटे. पठी आन्नियोगिक देवो पासे क्षीर समुद्रथी पाणी मंगाव्युं. त्यारपठी इंद्रे क्षीर समुद्रना पाणीथी तीर्थंकरना शरीरने न्हवडाव्युं, ताजा गोशीर्षचंदननुं विलेपन कर्युं, हंस लक्षणवालुं[1] वस्त्र उढाड्युं अने सर्व अलंकारोथी विन्नूषित कर्युं. एवी रीते बीजा देवोए गणधरो अने मुनिउनां शरीरोने न्हवराव्यां, चंदननुं विलेपन कर्युं अने सर्व अलंकारथी विन्नूषित कर्यां. पठी इंद्रे विचित्र प्रकारनां चित्रोथी शोन्निती त्रण शिबिका करावी अने आनंदरहित, दीन मनवाला अने अश्रुथी मिश्रित थयेला नेत्रवाला इंद्रे तीर्थंकरना शरीरने शिबिकामां पधराव्युं अने बीजा देवोए गणधरो अने मुनिउनां शरीरोने शिबिकामां पधराव्यां. त्यारपठी इंद्रे तीर्थंकरना शरीरने शिबिकामांथी उता-

१ हंसना चित्रवालुं.

रीने चितामां स्थापन कर्युं अने बीजा देवोए गणधरो अने मुनिओनां शरीरोने चितामां स्थापन कर्यां. त्यारपछी इंद्रना हुकमथी आनंदरहित तथा उत्साहरहित एवा अग्निकुमारोए चितामां अग्नि प्रदीप्त कर्यो, वायुकुमारोए वायु विकुर्व्यो अने बाकीना देवोए ते चिताओमां कालागुरु, चंदन आदि उत्तम काष्ठो नाख्यां तथा मध अने घीना घडाथी ते चिताओने सिंचन करी अने ज्यारे तेओनां शरीरनां अस्थि मात्र बाकी रह्यां त्यारे इंद्रना हुकमथी मेघकुमार देवोए ते चिताओने (जल वडे) ठारी. पछी सौधर्म इंद्रे प्रभुनी उपरनी जमणी दाढा ग्रहण करी, ईशानेंद्रे उपरनी डाबी दाढा ग्रहण करी. चमरेंद्रे नीचेनी जमणी दाढा अने वलींद्रे नीचेनी डाबी दाढा ग्रहण करी अने बीजा देवोए केटलाके जिनभक्तिथी, केटलाके पोतानो आचार समजीने अने केटलाके धर्म समजीने बाकी रहेलां अंगोपांगनां अस्थि ग्रहण कर्यां. पछी इंद्रे एक जिनेश्वर भगवाननो, एक गणधरोनो अने एक बाकीना मुनिओनो एम त्रण रत्नमय स्तूप[1] कराव्या अने तेम करीने शक्र आदि देवो नंदीश्वर आदि द्वीपे जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोतपोतानां विमानमां जइ पोतपोतानी सभामां वज्रमय डाबलामां जिनदाढाने मूकीने गंध, माल्य आदि वडे तेनी पूजा करवा लाग्या.

सर्व दुःखथी मुक्त थयेला अर्हन् कौशलिक श्री ऋषभदेव प्रभुना मुक्त थया पछी त्रण वर्ष अने साडा आठ मास व्यतीत थया. त्यारे बेंतालीश हजार वर्ष तथा त्रण वर्ष अने साडा आठ मास अधिक एटलो काल ओछो एवी एक सागरोपम कोटाकोटी गइ ते समये श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी निर्वाण पाम्या. त्यारपछी नवसो वर्ष गयां अने दशमा सैकडानुं आ एंशीमुं वर्ष जाय छे. (ते समये पुस्तकवाचनाथइ). आ प्रमाणे श्री ऋषभदेव प्रभुनुं चरित्र जाणवुं.

एवी रीते जगद्गुरु भट्टारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्रीकीर्त्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली श्रीकल्पसूत्र सुबोधिका नामनी टीकामां सातमुं व्याख्यान समाप्त थयुं तेमज जिनचरितरूप प्रथम वाच्य व्याख्यान पूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

१ देरीओ अने पगलां.

॥ अथ अष्टमं व्याख्यानं प्रारज्यते ॥

हवे गणधरादि स्थविरावलीरूप बीजी वाचनामां स्थविरावली कहे छे.

ते काल अने ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण अने अगीयार गणधरो थया. हवे शिष्य पूछे छे के हे जगवन् ! ते कया हेतुथी आ प्रमाणे कहो छो के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण अने अगीयार गणधरो थया ? केमके बीजा जिनेश्वरोने तो "जेने जेटला गण तेने तेटला गणधर" ए सूत्रथी गण अने गणधरोनी संख्या सरखी छे. आ प्रमाणे शिष्ये पूछ्ये छते आचार्य कहे छे (उत्तर आपे छे) के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुना गौतम गोत्रवाला मोटा इन्द्रजूति नामे अणगार पांचसो साधुउने वाचना आपता हता[1], गौतम गोत्रवाला वचला अग्निजूति नामे अणगार पांचसो साधुउने वाचना आपता हता, गौतम गोत्रवाला नाना वायुजूति नामे अणगार पांचसो साधुउने वाचना आपता हता, जारद्वाज गोत्रवाला आर्यव्यक्त नामे स्थविर पांचसो साधुउने वाचना आपता हता, अग्निवैश्यायन गोत्रवाला स्थविर आर्यसुधर्मा पांचसो साधुउने वाचना आपता हता, वासिष्ठ गोत्रवाला स्थविर मंकितपुत्र साडा त्रणसो साधुउने वाचना आपता हता, काश्यप गोत्रवाला स्थविर मौर्यपुत्र साडा त्रणसो साधुउने वाचना आपता हता, गौतम गोत्रवाला स्थविर अकम्पित अने हारितायन गोत्रवाला स्थविर अचलजाता ए बंने स्थविर त्रणसो त्रणसो साधुउने वाचना आपता हता तथा कोडिन्य गोत्रवाला स्थविर मेतार्य अने स्थविर प्रजास ए बंने स्थविर त्रणसो त्रणसो साधुउने वाचना आपता हता. ते हेतुथी हे आर्य ! ते एम कहेवाय छे के श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने नव गण अने अगीयार गणधरो हता, केमके अकम्पित अने अचलजातानी एकज वाचना हती तथा मेतार्य अने प्रजासनी

---

१ तेटला तेना मुख्य शिष्यो हता एम बधे समजवुं.

एकज वाचना हती तेथी नव गण अने अगीयार गणधरो हता ए युक्तज कहेल छे. जे कारण माटे एक वाचनावालो यतिसमुदाय तेने गण कहे छे. अहीं मंडित अने मौर्यपुत्रनी माता एक हती, पण ते बंने भाइओनां गोत्र जूदा जूदा बापनी अपेक्षाए भिन्न भिन्न कहेलां छे. तेमां मंडि-तनो पिता धनदेव हतो अने मौर्यपुत्रनो पिता मौर्य हतो. ते देशमां एक पति मरी गया बाद बीजो पति करवानो निषेध नहोतो एम वृद्ध आचार्योनो मत छे.

इन्द्रभूति आदि आ सर्वे श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना अगीयारे गणधरो हता ते केवा हता ? तो के द्वादशांगी एटले आचारांगथी मांडीने दृष्टिवाद पर्यंत बारे अंगने जाणनारा हता; केमके पोतेज तेना रचनार हता. चौद पूर्वना पण जाणनारा हता. द्वादशांगीना ज्ञाता कहेवाथी चौदपूर्विपणुं तेमां आवीज जाय छे तोपण ते अंगोमां चौद पूर्वनुं प्रधानपणुं जणाववा माटे तेने पृथक् ग्रहण करेल छे. ते प्रधानपणुं प्रथम रचवाने लीधे, अनेक विद्या, मंत्र आदिना अर्थमय होवाने लीधे तेमज तेनुं मोटुं प्रमाण होवाने लीधे छे. द्वादशांगिपणुं अने चौदपूर्विपणुं तो मात्र सूत्र-ना ज्ञाता कहेवाथी पण आवी जाय ते दूर करवाने माटे कह्युं छे के समस्त गणिपिटकने धारण करनारा हता एटले जेने गण होय ते गणी एटले भावाचार्य,तेनी जाणे पिटक कहेतां पेटीज होय ते गणिपिटक एटले द्वादशांगी, ते द्वादशांगीने पण स्थूलिभद्रनी पेठे देशथी नहीं, परंतु सर्व अक्षरना संयोग जाणवाने लीधे तेने सूत्रथी अने अर्थथी धारण करनारा हता. ते अगीयारे गणधरो राजगृह नगरमां जलरहित मासभक्तना तपथी एटले एक मास सुधी भोजननुं प्रत्या-ख्यान करीने पादपोपगमन अनशन वडे मोक्ष गया छे यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया छे. श्री महावीर प्रभु मोक्ष पाम्या पछी स्थविर इन्द्रभूति अने स्थविर आर्यसुधर्मा ए बंने स्थविर मोक्ष पाम्या छे, एटले ए अगीयार गणधरोमांथी नव गणधरो तो भगवंतना जीवतांज मोक्ष पाम्या छे अने इन्द्रभूति तथा आर्यसुधर्मा भगवंत निर्वाण पाम्या पछी निर्वाण पाम्या छे. हमणां वर्त्तता जे आ

निर्ग्रंथ साधुओ विहार करे छे ते सर्वे आर्यसुधर्मा अणगारना शिष्यसंतान जाणवा. बाकीना गणधरो शिष्यसंतान रहित छे, केमके पोतपोताना मरणकाले पोतपोताना गण सुधर्मास्वामीने सोंपीने तेओ मोक्षे गया छे. कह्युं छे के–"सर्वे (गणधरो) समस्त लब्धिओथी संपन्न, वज्रऋषभ संघयणवाला अने समचतुरस्र संस्थानवाला एक मासना पादोपगमने मोक्ष पाम्या छे."

श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभु काश्यप गोत्रवाला हता. ते काश्यप गोत्रवाला श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुने अग्निवैश्यायन गोत्रवाला आर्यसुधर्मा स्थविर शिष्य हता. श्री वीर प्रभुनी पाटे श्री सुधर्मास्वामी पांचमा गणधर हता. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे जाणवुं. कुल्लाग सन्निवेशमां धम्मिल नामे ब्राह्मणने भद्दिला नामे स्त्री हती. तेमना पुत्रे (सुधर्मास्वामीए) चौद विद्याना पारंगामी थइने पचास वर्षने अंते दीक्षा लीधी अने त्रीश वर्ष सुधी वीर प्रभुनी सेवा करी. वीर प्रभुना निर्वाण पछी बार वर्षने अंते एटले जन्मथी बाणुं वर्षने अंते तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. त्यारपछी आठ वर्ष सुधी केवलीपणुं पालीने सो वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी पोतानी पाटे जंबूस्वामीने स्थापीने मोक्षे गया.

अग्निवैश्यायन गोत्रवाला स्थविर आर्यसुधर्माने काश्यप गोत्रवाला आर्यजम्बू नामे स्थविर शिष्य थया. ते श्री जंबूस्वामीनुं स्वरूप (चरित्र) आ प्रमाणे जाणवुं. राजगृह नगरमां ऋषभ अने धारिणीना पुत्र पांचमा देवलोकथी च्यवेला जंबू नामे श्री सुधर्मास्वामी पासे धर्म सांभ-ळवापूर्वक शील[1] अने सम्यक्त्व पाम्या छतां पण माता पिताना दृढ आग्रहने वश थइने आठ कन्या परण्या, पण तेओनी स्नेह युक्त वाणीथी ते मोह पाम्या नहीं, कारण के "सम्यक्त्व अने शीलरूप बे तुंबडांओ के जेना वडे भवरूपी समुद्र (सुखे) तराय छे, ते बे तुंबडांने धारण कर-नार जंबू मुनि स्त्रीरूपी नदीमां केवी रीते बूडे ?" लग्ननीज रात्रिए ते स्त्रीओने प्रतिबोध देतां

१ सर्वथी ब्रह्मचर्य उच्चर्या छतां.

चोरी करवाने आवेला चारसो ने नवाणुं चोरना परिवारवाला प्रभवने पण प्रतिबोध पमाड्यो. प्रभाते पांचसो चोर, आठ स्त्री, ते स्त्रीओनां मावाप अने पोतानां मावापनी साथे पोते पांचसो सतावीशमा एवा श्री जंबूस्वामीए नवाणुं करोड सोनैया तजीने दीक्षा लीधी, अनुक्रमे केवली थया अने सोल वर्ष गृहस्थपणामां, वीश वर्ष छद्मस्थपणामां अने चुमालीश वर्ष केवलीपणामां एवी रीते सर्व आयु एंशी वर्षनुं पालीने श्री प्रभवस्वामीने पोतानी पाटे स्थापीने मोक्षे गया. अहीं कवि घटना करे छे के "जंबूस्वामी समान कोइ कोटवाल थयो नथी अने थशे पण नहीं के जेणे चोरोने पण मोक्षमार्ग वाहक साधुओ बनाव्या. प्रभव प्रभु पण जयवंता वर्तो के जेणे चोरीथी धनने हरतां अमूल्य, चोरीथी हराय नहीं एवुं अने अद्भुत एवुं रत्नत्रितय[1] मेलव्युं."

श्री वीर प्रभुना निर्वाण पछी आठ वर्षे गौतमस्वामी, वीश वर्षे सुधर्मास्वामी अने चोसठ वर्षे जंबूस्वामी मोक्षे गया. त्यारपछी दश वस्तुओ विछेद गइ. मनःपर्यवज्ञान १, परमावधि के जेना उत्पन्न थया पछी एक अंतर्मुहूर्त्तनी अंदर केवलज्ञाननी उत्पत्ति थाय छे २, पुलाकलब्धि के जेथी चक्रवर्तीना सैन्यने पण चूर्ण करवाने शक्तिमान थाय ३, आहारक शरीरलब्धि ४, क्षपकश्रेणि ५, उपशमश्रेणि ६, जिनकल्प ७, संजमत्रिक (परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्र) ८, केवलज्ञान ए अने मोक्षमार्ग १०. अहीं पण कवि कहे छे के "महामुनि जंबूस्वामीनुं सौभाग्य लोकोत्तर छे के जे पतिने पामीने मुक्तिरूपी स्त्री (भरतक्षेत्रमांथी) हजु पण बीजा स्वामीने इछती नथी."

काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यजंबूने कात्यायन गोत्रवाला स्थविर आर्यप्रभव शिष्य थया. कात्यायन गोत्रवाला स्थविर आर्यप्रभवने वछ गोत्रवाला मनकपिता स्थविर आर्यशय्यंभव शिष्य थया. एक दिवसे प्रभव प्रभुए पोतानी पाटे स्थापवाने माटे पोताना गणमां अने संघमां उपयोग

[1] ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयी.

दीधो, पण तेवो योग्य कोइ पुरुष नहीं जोवाथी परतीथमां उपयोग दीधे छते राजगृहमां यज्ञ करता शय्यंभव भट्ट जोवामां आव्या. पछी (तेमनी प्रेरणाथी गयेला) बे साधुओए त्यां जइने "अहो कष्टमहो कष्टं तत्त्वं न ज्ञायते परं" एटले अहो आ तो कष्टज छे, कष्टज छे, श्रेष्ठ तत्त्व तो जणातुंज नथी. ए प्रमाणे वचन संभलाव्युं. पछी खड्गथी बीवरावेला तेवा ब्राह्मण गुरुए देखाडेली यज्ञस्तंभनी नीचे रहेली श्री शांतिनाथनी प्रतिमाना दर्शनथी ते प्रतिबोध पाम्या अने (प्रभव स्वामी पासे) दीक्षा लीधी. पछी प्रभव प्रभु श्री शय्यंभवने पोतानी पाटे स्थापीने स्वर्गे गया. ए प्रमाणे प्रभवप्रभुनुं चरित्र जाणवुं.

त्यारपछी श्री शय्यंभवे पण गर्भ सहित तजी दीधेली पोतानी स्त्रीए जन्म आपेल मनक नामना पुत्रना हितने माटे श्री दशवैकालिक रच्युं अने अनुक्रमे श्री यशोभद्रने पोतानी पाटे स्थापीने श्री वीर प्रभुथी अठाणुं वर्षे ते स्वर्गे गया.

वछ गोत्रवाला मनकपिता स्थविर आर्यशय्यंभवने तुंगिकायन गोत्रवाला स्थविर आर्ययशोभद्र शिष्य हता. श्री यशोभद्र सूरि पण श्री भद्रबाहु अने संभूतिविजय नामे बे शिष्यने पोतानी पाटे स्थापीने स्वर्गलोके गया.

हवे अहीं प्रथम संक्षिप्त वाचना वडे स्थविरावली कहे छे. संक्षिप्त वाचना वडे आर्ययशोभद्रथी आगल आ प्रमाणे स्थविरावली कही छे. तुंगिकायन गोत्रवाला स्थविर आर्ययशोभद्रने बे स्थविर शिष्य हता. एक माढर गोत्रवाला स्थविर संभूतिविजय अने बीजा प्राचीन गोत्रवाला स्थविर आर्यभद्रबाहु. श्री यशोभद्रनी पाटे श्री संभूतिविजय अने श्री भद्रबाहु नामे बे पट्टधर थया. तेमां श्री भद्रबाहुनो संबंध आ प्रमाणे छे–प्रतिष्ठानपुरमां वराहमिहिर अने भद्रबाहु नामे बे ब्राह्मणोए दीक्षा लीधी. तेमां भद्रबाहुने आचार्यपद आपवाथी गुस्से थयो थको वराह ब्राह्मणनो वेष ग्रहण करीने वाराहीसंहिता बनावीने निमित्त जोवा वडे. आजीविका चलाववा

लाग्यो अने लोकमां कहेवा लाग्यो के "अरण्यमां कोइक जगोए शिलानी उपर में सिंहलग्न चितर्युं हतुं, सूती वखते ते भूंसी नाख्युं नथी एम याद आव्याथी लग्ननी भक्तिथी त्यां जतां सिंहने तेनी उपर बेठेलो जोइने पण तेनी नीचे हाथ नाखीने लग्न भूंसी नाख्युं, तेथी संतुष्ट थयेलो सिंहलग्ननो अधिपति सूर्य प्रत्यक्ष थइने मने पोताना मंडलमां लइ गयो अने ग्रहनो सर्व चार (चाल) मने देखाड्यो." एक दिवसे वराहे राजानी आगल कह्युं के "आ करेल कुंडालाना मध्य भागमां बावन पलना प्रमाणवालो मत्स्य (आकाशमांथी) पडशे." त्यारे भद्रबाहु स्वामीए कह्युं के "मार्गमां अर्ध पल शोषाइ जवाथी साडी एकावन पलना प्रमाणनो अने कुंडालाने छेडे पडशे." ते प्रमाणे वात मली. वली एक दिवसे राजाने पुत्र आवतां वराहे तेनुं एकसो वर्षनुं आयुष्य कह्युं अने "आ (भद्रबाहु) व्यवहारने जाणनारा नथी के राजाना पुत्रने जोवा पण आव्या नहीं" ए प्रमाणे जैनोनी तेणे निंदा करी त्यारे (भद्रबाहु स्वामीए) सातमे दिवसे बिलाडीथी तेनुं मृत्यु थशे एम कह्युं. (अहीं किरणावलीकारे "सतन्निर्दिनैः" ने बदले सप्त दिनैः ए प्रमाणे आवो प्रयोग मूक्यो छे ते संख्याए करीने समाहार द्विगु थवाथी वैयाकरणीओए विचारवा लायक छे.) राजाए शहेरमांथी सर्व बिलाडीओने काढी मूकावी तोपण सातमे दिवसे धावता बालकनी उपर बिलाडीना आकारना मुखवालो आगलीओ पडवाथी ते बालक मरण पाम्युं. तेथी गुरुनी प्रशंसा थइ अने वराहमिहिरनी सर्वत्र निंदा थइ. त्यारपछी क्रोधथी मरीने ते व्यंतर थयो. मरकी आदिकथी संघने उपद्रव करता ते व्यंतरने उपसर्गहर स्तोत्र करीने गुरुए दूर कर्यो. कह्युं छे के "करुणाने विषे तत्पर एवा जेणे उपसर्गहर स्तोत्र करीने संघनुं कल्याण कर्युं ते भद्रबाहु गुरु जयवंता वर्तो."

माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यसंभूतिविजयने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यस्थूलभद्र शिष्य हता. स्थूलभद्रनो संबंध आ प्रमाणे छे—पाटलीपुरमां शकटाल मंत्रीना पुत्र श्री स्थूलभद्र बार वर्ष कोशा नामे वेश्याने घेर रह्या हता. वररुचि ब्राह्मणना प्रयोगथी तेना पिताजं मृत्यु

थया बाद नंद राजाए तेने बोलावीने मंत्रीपदवी आपवा माटे कह्युं त्यारे पोताना चित्तमां पोताना बापना मरणनुं चिंतवन करीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी अने पछी व्रत लइने गुरुनी आज्ञापूर्वक कोशाना घरमां चोमासुं रह्या. चोमासाने अंते बहु हावभाव करनारी एवी वेश्याने पण प्रतिबोध पमाडीने गुरुनी पासे आव्या त्यारे तेउए "दुष्करदुष्करकारक" ए प्रमाणे संघ समक्ष कह्युं. ते वचनथी सिंहगुफा पासे, सर्पना दर पासे अने कूवाना काष्ठ उपर चोमासुं रहेनार त्रणे मुनिउ खेद पाम्या. तेउमांथी सिंहगुफा पासे रहेनार मुनि गुरुए ना पाड्या छतां पण बीजे चोमासे कोशाने घेर गया. दिव्य रूपवाली ते वेश्याने जोइने ते तरत चलायमान चित्तवाला थया. त्यार-पछी तेणीए नेपाल देशथी मंगावेल रत्नकंबल खालमां फेंकी दइने तेने प्रतिबोध पमाड्यो. त्यारे ते गुरु पासे आवीने कहेवा लाग्या के तमाम साधुउमां स्थूलभद्र ते स्थूलभद्र एकज छे, तेने गुरुए दुष्करदुष्करकारक कहेल छे ते युक्त छे. "पुष्प, फल, दारु, मांस अने महिलाना रसने जाणतां छतां जे तेनाथी विरक्त थया छे ते दुष्करकारकने हुं वांदुं छुं." कोशा पण स्थूलभद्रथी प्रतिबोध पामी हती. तेने त्यां राजानी आज्ञाथी आवेला अने बाणना मूलना भागमां बीजुं बाण नाखीने, तेना मूलमां त्रीजुं बाण नाखीने, एम केटलांक बाणो वडे दूर रहेल आंबानी लुंबने तोडी आणवाथी गर्वित थयेला पोताना कामी रथकारने सर्षवना ढगला उपर राखेल सोयना अग्र भाग उपर रहेल पुष्पना उपर नाच करती छती कहेवा लागी के "आंबानी लुंब तोडवी ते कांइ दुष्कर नथी तेम सर्षव उपर नाचवुं ते पण दुष्कर नथी, पण तेज दुष्कर छे के जे ते महानुभाव मुनिए प्रमदारूपी वनमां मूर्छित न थइने करी बताव्युं छे." अहीं कविउ पण कहे छे के "पर्वतमां, गुफामां अने मनुष्य विनाना वनमां वास करता हजारो मुनिउ इंद्रियोने वश करनारा थया छे, पण अति मनोहर महेलमां स्त्री पासे रहीने इंद्रियोने वश करनार तो एक शकटालनंदन (स्थूलभद्र) ज छे, के जेणे अग्निमां प्रवेश कर्यो तोपण

दाज्या नहीं, तरवारनी धारा उपर चाल्या पण छेद पाम्या नहीं, काला सर्पना दरमां रह्या पण डंखाया नहीं तथा काजलनी कोटडीमां रह्या तोपण डाघ लाग्यो नहीं. वेश्या रागवाली हती, हमेशां तेना कहेवा प्रमाणे चालनारी हती, षड्रस भोजन मलतुं हतुं, सुंदर चित्रशाली हती, मनोहर शरीर हतुं, नव्य वयनो संगम हतो (यौवन वय हती) अने काल पण वादलांथी श्याम (वर्षा ऋतुनो) हतो तोपण जेणे आदरपूर्वक कामने जीत्यो एवा युवतीने प्रतिबोध पमाडवामां कुशल स्थूलभद्र मुनिने हुं वंदन करुं छुं. हे कामदेव ! मनोहर नेत्रवाली स्त्री तो तारुं मुख्य अस्त्र छे, वसंत ऋतु, कोयल, पंचम स्वर तथा चंद्र ए तारा मुख्य योद्धाओ छे अने विष्णु, ब्रह्मा तथा शिव विगेरे तो तारा सेवको छे तोपण अरे हताश ! तुं आ मुनिथी केवी रीते हणायो ? हे मदन ! तें नंदिषेण, रथनेमि अने मुनीश्वर आर्द्रकुमारनी बुद्धिथी आ मुनिने पण जोया ? तें एटलुं पण न जाण्युं के रणसंग्राममां मने मारीने आ मुनि तो नेमिनाथ, जंबूस्वामी अने सुदर्शन शेठनी पछी चोथा थशे ? श्रीनेमिनाथथी पण शकटालसुतनो विचार करतां अमे एने एकनेज वीर पुरुष मानीए छीए, कारण के श्री नेमिनाथजीए तो पर्वत उपर जइने मोहने जीत्यो पण आ मुनिए तो मोहना घरमां दाखल थइने मोहने वश कर्यो."

एक वखते बार वर्षना दुकालने अंते संघना आग्रहथी श्री भद्रबाहु स्वामी पांचसो साधुओने दृष्टिवादनी हमेशां सात वाचना आपता हता. सात वाचनाथी पण अतृप्त रहेता बीजा साधुओ उद्विग्न थयाथी विहार करी गया. श्री स्थूलभद्र एकला रह्या. ते बे वस्तुए ओछां दश पूर्व भण्या. एक वखत वंदनने माटे आवेल यक्षा साध्वी प्रमुख पोतानी बेनोने सिंहनुं रूप देखाडवानी हकीकतथी खेद पामेला श्री भद्रबाहु स्वामीए स्थूलभद्रने कह्युं के "वाचना माटे तमे अयोग्य छो." पछी संघना आग्रहथी "बीजाने तमारे वाचना आपवी नहीं" एम कहीने बाकीनां

चार पूर्वनां सूत्रथी वाचना आपी. कह्युं छे के "जंबूस्वामी छेल्ला केवली थया तथा प्रभव प्रभु शय्यंभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु अने स्थूलभद्र ए छ श्रुतकेवली थया."

गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यस्थूलभद्रने बे स्थविर शिष्य हता. एक एलापत्य गोत्रवाला स्थविर आर्यमहागिरि अने बीजा वासिष्ठ गोत्रवाला स्थविर आर्यसुहस्ति. तेमनो संबंध आ प्रमाणे छे–जिनकल्प विच्छेद गये छते पण आर्यमहागिरिए जिनकल्पनी तुलना करवा मांडी. "जिनकल्प विच्छेद गये छते पण जे धीर पुरुषे जिनकल्पनी तुलना करी ते मुनिओने विषे वृषभ समान अने श्रेष्ठ चारित्रने धारण करनार आर्यमहागिरिने हुं वंदन करुं छुं. जेणे जिनकल्पनी परिकर्मा (तुलना) करी अने जेनी स्तवना श्रेष्ठीना घरमां आर्यसुहस्तिए करी ते आर्यमहागिरिने हुं वंदन करुं छुं. जेने लीधे संप्रति राजा सर्व प्रसिद्ध ऋद्धि अने परम चारित्रने पाम्या ते मुनिप्रवर श्री आर्यसुहस्तिने हुं वंदन करुं छुं". जे आर्यसुहस्ति महाराजाए साधुओनी पासे भिक्षा मागता भिक्षुकने दीक्षा आपी हती ते भिक्षुक मरण पामीने श्रेणिकनो पुत्र कोणिक, तेनो पुत्र उदायी, तेनी पाटे नव नंद, तेनी पाटे चंद्रगुप्त, तेनो पुत्र बिंदुसार, तेनो पुत्र अशोकश्री, तेनो पुत्र कुणाल अने तेनो पुत्र संप्रति नामे थयो. तेने जन्मतांज तेना दादाए राज्य आप्युं. पछी रथयात्रामां प्रवृत्त थयेल श्री आर्यसुहस्तिने जोइने तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तेणे सवा लाख जिनालय, सवा क्रोड नवीन जिनबिंब, छत्रीश हजार जीर्णोद्धार, पंचाणुं हजार पीतलनी प्रतिमा तथा हजारोगमे दानशालाओथी त्रण खंड पृथ्वीने पण विभूषित करी. (अहीं किरणावलीकारे सवा क्रोड जिनभवन एम कहेल छे ते विचारवा जेवुं छे, कारण के अंतर्वाच्य आदिमां 'सपादलक्ष' एटले सवा लाख एम देखाय छे). अनार्य देशोने पण करथी मुक्त करीने प्रथम साधुवेष धारण करनार सेवकोने मोकली साधुओने विहार करवाने योग्य कर्या अने पोताना सेवक राजाओने जैनधर्मने विषे रक्त कर्या. तथा वस्त्र, पात्र, अन्न, दधी आदि प्रासुक वस्तुओ जेओ

वेचता हता तेउने संप्रति राजाए कह्युं के "तमे आवता जता साधुउनी आगल पोतानी वस्तुउ मूकजो अने ते पूज्य जे वस्तु ग्रहण करे ते तेउने आपजो. अमारो खजानची ते वस्तुनुं तमाम मूल्य तथा तमारो इच्छित लाज गुप्त रीते आपशे." तेउ राजानी आज्ञाथी तेम करवा लाग्या अने ते अशुद्ध बतां पण शुद्ध बुद्धिथी साधुउ ग्रहण करवा लाग्या.

वासिष्ठ गोत्रवाला स्थविर आर्यसुहस्तिने व्याघ्रापत्य गोत्रवाला सुस्थित अने सुप्रतिबुद्ध नामना कोटिक अने काकंदिक एवा बे स्थविर शिष्य थया. एक क्रोमवार सूरिमंत्रनो जाप करवाथी सुस्थित मुनि कोटिक कहेवाता हता अने काकंदी नगरीमां जन्मेला होवाथी सुप्रतिबुद्ध मुनि काकंदिक कहेवाता हता. व्याघ्रापत्य गोत्रवाला सुस्थित अने सुप्रतिबुद्ध एवा स्थविर कोटिक अने काकंदिकने कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यइन्द्रदिन्न शिष्य हता. कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यइन्द्रदिन्नने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यदिन्न शिष्य हता. गौतमगोत्रवाला स्थविर आर्यदिन्नने कौशिक गोत्रवाला अने जातिस्मरणज्ञानवाला स्थविर आर्यसिंहगिरि शिष्य हता. कौशिक गोत्रवाला अने जातिस्मरणज्ञानवाला स्थविर आर्यसिंहगिरिने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्र शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रने उत्कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रसेन शिष्य हता. उत्कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रसेनने चार स्थविर शिष्य हता. स्थविर आर्यनागिल, स्थविर आर्यपौमिल, स्थविर आर्यजयन्त अने स्थविर आर्यतापस. स्थविर आर्यनागिलथी आर्यनागिला शाखा नीकली, स्थविर आर्यपौमिलथी आर्यपौमिला शाखा नीकली, स्थविर आर्यजयन्तथी आर्यजयन्ती शाखा नीकली अने स्थविर आर्यतापसथी आर्यतापसी शाखा नीकली.

हवे विस्तारवाली वाचनाथी स्थविरावली कहे छे. आ विस्तर वाचनामां आर्ययशोजद्रथी आ प्रमाणे स्थविरावली जाणवी. तेमां घणा जेदो तो लेखकदोषना हेतुभूत जाणवा. बाकी स्थविरोनी शाखा अने कुलो प्राये करीने एक पण हाल जणातां नथी, ते बीजां नामथी तिरोहित

थयेल हशे एम तेना जाणनारनुं कहेवुं छे. तेमां कुल एटले एक आचार्यनो परिवार समजवो अने गण एटले एक वाचना लेनार मुनिसमुदाय जाणवो. कह्युं छे के "एक आचार्यनी संतति ते कुल जाणवुं अने वे अथवा तेथी वधारे आचार्यना मुनिओ एक बीजाथी सापेक्ष वर्तता होय तो तेनो एक गण जाणवो." शाखा एटले एक आचार्यनी संततिमांज उत्तम पुरुषोना जूदा जूदा अन्वय (वंश) अथवा विवक्षित आद्य पुरुषनी संतति जाणवी. जेम अमारी वइर नामना सूरिथी वइरी शाखा छे. शिष्यना जूदा जूदा अन्वय ते कुल जाणवां. जेम चांद्रकुल, नागेंद्रकुल इत्यादि.

तुंगिकायन गोत्रवाला स्थविर आर्ययशोभद्रने आ बे स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. (जेना उत्पन्न थवाथी पूर्वजो दुर्गतिमां अथवा अयशरूप कादवमां पडता नथी ते अपत्य–पुत्र आदिक अने तेनी सरखा ते यथापत्य–पुत्र समान कहेवाय.) ते आ प्रमाणे–एक प्राचीन गोत्रवाला स्थविर आर्यभद्रबाहु अने बीजा माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यसंभूतिविजय. प्राचीन गोत्रवाला स्थविर आर्यभद्रबाहुने आ चार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे–स्थविर गोदास, स्थविर अग्निदत्त, स्थविर यज्ञदत्त अने स्थविर सोमदत्त. ते चारे काश्यप गोत्रवाला हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर गोदासथी गोदास नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाओ आवी रीते कहेवाय छे. तामलिप्तिका १, कोटिवर्षिक २, पुंड्रवर्धनिका ३ अने दासीखर्बटिका ४. माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यसंभूतिविजयने बार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे–नंदनभद्र १, उपनंद २, तिष्यभद्र ३, यशोभद्र ४, सुमनोभद्र ५, मणिभद्र ६, पूर्णभद्र ७, स्थूलभद्र ८, ऋजुमति ९, जंबू १०, दीर्घभद्र ११ अने पांडुभद्र १२. माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यसंभूतिविजयने सात शिष्या पुत्री समान प्रसिद्ध हती. ते आ प्रमाणे–यक्षा १, यक्षदिन्ना २, भूता ३, भूतदिन्ना ४, सेणा ५, वेणा ६ अने रेणा ७. ए साते स्थूलभद्रनी बहेनो हती. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यस्थूलभद्रने बे स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ

प्रमाणे–एलापत्य गोत्रवाला स्थविर आर्यमहागिरि १ अने वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यसुह-स्ति २. एलापत्य गोत्रवाला स्थविर आर्यमहागिरिने आठ स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे–स्थविर उत्तर १, स्थविर वलिस्सह २, स्थविर धनाढ्य ३, स्थविर श्रीभद्र ४, स्थविर कौडिन्य ५, स्थविर नाग ६, स्थविर नागमित्र ७ अने कौशिक गोत्रवाला स्थविर षडुलूक रोहगुप्त ८. द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय ए छ पदार्थने प्ररूपवाथी षड् अने उलूक गोत्रमां उत्पन्न थवाथी उलूक, ए षड् अने उलूकनो कर्मधारय समास करवाथी षडुलूक. तेनो प्राकृत प्रयोग छडुलूए थाय छे तेथी सूत्रमां तेमने कौशिक गोत्री कहेल छे. उलूक अने कौशिक ए बंने शब्दनो अर्थ एकज होवाथी कहेल छे. कौशिक गोत्रवाला स्थविर छडुलूक रोहगुप्तथी त्रैराशिक नीकल्या. जीव, अजीव अने नोजीव नामे त्रण राशिने प्ररूपनारा तेना शिष्य, प्रशिष्य ते त्रैराशिक कहेवाय छे. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे–श्री वीर प्रभुना निर्वाण पछी पांचसो चुमालीशमे वर्षे अंतरंजिका नामे नगरीमां भूतगृह जेवा व्यंतरना चैत्यमां रहेला श्रीगुप्त आचार्यने वांदवा माटे बीजा गामथी आवता तेना रोहगुप्त नामना शिष्ये वादीए वगडावेला पटहनो ध्वनि सांभलीने ते पटहने स्पर्श कर्यो अने आचार्यने ते वात निवेदन करी. पछी वींछी, सर्प, उंदर, मृगी, वराही, काकी अने शकुनिका ए नामनी परिव्राजकनी विद्याओने उपघात करनारी मयूरी, नकुली, बिडाली, व्याघ्री, सिंही, उलूकी अने श्येनी ए नामनी सात विद्याओ तथा सर्व उपद्रवने शमावनार रजोहरण गुरु पासेथी मेलवीने बलश्री नामे राजानी सभामां आवी पोट्ट-शाल नामना परिव्राजकनी साथे वाद करवा मांड्यो. ते परिव्राजके जीव अजीव, सुख दुःख आदि बे राशिनुं स्थापन कर्युं. त्यारे त्रण देव, त्रण अग्नि, त्रण शक्ति, त्रण स्वर, त्रण लोक, त्रण पद, त्रण पुष्कर, त्रण ब्रह्म, त्रण वर्ण, त्रण गुण, त्रण पुरुष, संध्या आदि त्रण काल, त्रण जातनी संध्या, त्रण वचन अने वली त्रण अर्थ कहेल छे, ए प्रमाणे कहेता रोहगुप्ते जीव, अजीव अने नोजीव

इत्यादि त्रण राशि स्थापी. त्यारपछी तेनी विद्याउने पोतानी विद्याउ वडे जीत्ये छते तेणे मूकेली रासनी विद्याने रजोहरणथी जीतीने महोत्सवपूर्वक गुरु पासे आवी सर्व वृत्तांत कह्यो. त्यारे गुरुए कह्युं के "हे वत्स ! तें तेने जीत्यो ते सारुं कर्युं, पण जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण राशिनी स्थापना करी ते उत्सूत्र छे तेथी त्यां जइने मिथ्या दुष्कृत आप." पछी "तेवी रीते सभामां पोतेज प्ररूपीने तेने केवी रीते हुं अप्रमाण करुं ?" ए प्रमाणे तेने अहंकार उत्पन्न थवाथी तेणे ते प्रमाणे न कर्युं. पछी गुरुए छ मास सुधी राजसभामां तेनी साथे वाद करीने छेवटे कुत्रिका-[1]पणथी नोजीवनी मागणी करी. त्यां ते नहीं मलवाथी चुमालीशसो प्रश्न वडे तेने परास्त कर्यो. ते छतां पण कोइ रीते पोतानो आग्रह न छोडवाथी गुरुए क्रोधथी थुकवाना पात्रमांथी तेना मस्तक पर भस्म नाखवापूर्वक तेने संघ बहार कर्यो. त्यारपछी ते त्रैराशिक छठा निह्नवे अनुक्रमे वैशेषिक दर्शन प्रकट कर्युं. जो के सूत्रमां रोहगुप्तने आर्यमहागिरिनो शिष्य कहेल छे, परंतु उत्त-राध्ययन वृत्ति अने स्थानांगवृत्ति विगेरेमां श्री गुप्ताचार्यनो शिष्य कहेल होवाथी अमोए पण ते प्रमाणेज लखेल छे. तेमां तत्त्व शुं छे ते बहुश्रुतो जाणे.

स्थविर उत्तरबलिस्सहथी उत्तरबलिस्सह नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाउ आ प्रमाणे कहेवाय छे. कौशांबिका १, सौरितिका २, कौटुंबीनी ३, चंदनागरी ४. वासिष्ठ गोत्रवाला स्थविर आर्यसुहस्तीने बार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थविर आर्य-रोहण १, भद्रयश २, मेघ ३, कामर्द्धि ४, सुस्थित ५, सुप्रतिबुद्ध ६, रक्षित ७, रोहगुप्त ८, ऋषि-गुप्त ९, श्रीगुप्त १०, ब्रह्म ११ अने सोम १२. ए प्रमाणे सुहस्तीना गछने धारण करनारा आ बार शिष्यो हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यरोहणथी उद्देह गण नामनो गण नीकल्यो. तेमांथी

[1] कुत्रिक एटले त्रण लोक, तेमांनी तमाम वस्तु मले एवी आपण एटले दुकान ते कुत्रिकापण. आ राजगृहीमां देवाधिष्ठित दुकान हती. त्यां नोजीव न मल्यो.

चार शाखा अने छ कुल नीकल्यां ते आवी रीते कहेवाय छे. ते कइ शाखाओ? शाखाओ आ प्रमाणे कहेवाय छे—उडुंबरिका १, मासपूरिका २, मतिपत्रिका ३, पूर्णपत्रिका ४. आ शाखाओ छे. ते कुलो कयां? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—पहेलुं नागभूत, बीजुं सोमभूत, त्रीजुं उल्लगछ, चोथुं हस्तलिप्त, पांचमुं नंदिज्ज अने छठ्ठुं पारिहासक. आ उद्देह गणनां छ कुल जाणवां. हारित गोत्र-वाला स्थविर श्रीगुप्तथी चारण गण नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाओ अने सात कुल आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते कइ शाखाओ ? तो के शाखाओ आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—हारित-मालागारी १, संकासीका २, गवेधुका ३ अने वज्रनागरी. ते आ शाखाओ छे. ते कुलो कयां ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—पहेलुं वत्सलिज्ज बीजुं प्रीतिधर्मिक, त्रीजुं हालिज्ज, चोथुं पुष्यमित्रिक, पांचमुं मालिज्ज, छठ्ठुं आर्यवेडक अने सातमुं कृष्णसख. आ सात चारण गणनां कुलो छे. भारद्वाज गोत्रवाला स्थविर भद्रयशथी उडुवाटिक गण नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाओ अने त्रण कुल आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते कइ शाखाओ छे ? तो के शाखाओ आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—चंपिज्जिया १, भद्दिज्जिया २, काकंदिका ३ अने मेघहलिज्जिया. ते आ शाखाओ छे. ते कुलो कयां छे ? तो के ते आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—भद्रयशिक १, भद्रगुप्तिक २ अने यशोभद्र ३. ए त्रण उडुवाटिक गणनां कुलो छे. स्थविर कामर्द्धिथी वेसवाटिक गण नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाओ अने चार कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते शाखाओ कइ छे ? तो के शाखाओ आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—श्रावस्तिका १, राज्यपालिका २, अंतरिज्जिया ३ अने क्षेमलिज्जिया ४. ते आ शाखाओ छे. ते कुलो कयां छे ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—गणिक १, मेघिक २, कामर्द्धिक ३ अने इंद्रपुरक ४. आ वेसवाटिक गणनां चार कुलो छे. वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर ऋषिगुप्त काकंदिकथी माणव गण नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाओ अने त्रण कुल आ प्रमाणे कहेवाय छे.

ते शाखाउ कइ छे ? तो के शाखाउं आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—काश्यपिका १, गौतमीका २, वाशिष्टिका ३ अने सौराष्ट्रिका. ते आ शाखाउं छे. ते कुलो कयां छे ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—पहेलुं ऋषिगुप्तिक, बीजुं ऋषिदत्तिक अने त्रीजुं अभिजयंत. ए त्रण कुल माणव गणनां जाणवां. व्याघ्रापत्य गोत्रवाला अने कौटिक तथा काकंदिक उपनामवाला स्थविर सुस्थित अने स्थविर सुप्रतिबुद्धथी कौटिक गण नामनो गण नीकल्यो छे. तेनी चार शाखाउं अने चार कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते शाखाउं कइ छे ? तो के ते शाखाउं आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—उच्चनागरी १, विद्याधरी २, वज्री ३ अने मध्यमिका. ए चार कौटिक गणनी शाखाउं छे. ते कुलो कयां छे ? तो के कुलो आ प्रमाणे कहेवाय छे. ते जेमके—पहेलुं बंभलिज्ज, बीजुं वत्थलिज्ज, त्रीजुं वाणिज्य अने चोथुं प्रश्नवाहनक. व्याघ्रापत्य गोत्रवाला अने कौटिक तथा काकंदिक उपनामवाला स्थविर सुस्थित अने स्थविर सुप्रतिबुद्धना आ पांच स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थविर आर्यइन्द्रदिन्न १, स्थविर प्रियग्रंथ २, काश्यप गोत्रवाला स्थविर विद्याधरगोपाल ३, स्थविर ऋषिदत्त ४ अने स्थविर अर्हद्दत्त ५.

अहीं स्थविर प्रियग्रंथनो संबंध कहे छे. त्रणसो जिनभवन, चारसो लौकिक प्रासाद, अढारसो ब्राह्मणनां घर, छत्रीशसो वणिकनां घर, नवसो बगीचा, सातसो वाव, बसो कूवा अने सातसो दानशालाथी विराजित अने अजमेरनी नजदीकमां आवेल एवा सुभटपाल राजाना हर्षपुर नामना नगरमां एक वखत श्री प्रियग्रंथ सूरि पधार्या. अन्यदा ब्राह्मणोए त्यां यज्ञमां बकराने होमवानो आरंभ कर्यो. त्यारे प्रियग्रंथ सूरिए श्रावकना हाथमां वासक्षेप आपीने ते बकरा उपर नखाववा वडे तेने अंबिकाथी अधिष्ठित कर्यो. एटले ते बकरो आकाशमां रहीने बोलवा लाग्यो के " अरे ब्राह्मणो ! तमे मने बांधीने लाव्या छो अने मारो होम करवा वडे तमे मने मारी नाखवा धारो छे, परंतु जो तमारी पेठे हुं निर्दय थाउं तो हुं तमने बधाने क्षण वारमां मारी

नाखुं. कोप पामेला हनुमाने जेम राक्षसोने माटे लंकाना किल्लामां कर्युं हतुं तेम हुं ऊंचे रह्यो थको जो दया वचमां न आवती होत तो तमारे माटे पण करत. (कृष्णे कह्युं छे के) "हे भारत[1]! पशुनां शरीरने विषे जेटला रोमकूप छे तेटला हजार वर्ष सुधी पशुना घात करनारा (नरकमां) पचे छे. जो कोइ सोनानो मेरु तेमज आखी पृथ्वी दानमां आपे अने बीजो कोइ एकने जीवित आपे तो हे युधिष्टिर ! ते बंने सरखा थइ शकता नथी. अर्थात् जीवित आपनार वधे छे. मोटां एवां दानोनुं फल पण काले करीने क्षीण थाय छे, परंतु भय पामेलाने अभय दान आपनारना पुन्यनो क्षय थतो नथी, विगेरे." पछी लोकोए तुं कोण छो ? तारा आत्माने प्रगट कर, एम कह्युं त्यारे तेणे कह्युं "हुं अग्नि छुं. तमे मारा वाहनरूप आ पशुने फोगट शामाटे मारो छो ? अहीं श्री प्रियग्रंथ सूरींद्र आवेला छे तेमने शुद्ध धर्म पूछो अने मननी शुद्धिपूर्वक तेने आचरो. जेम नरेन्द्रने विषे चक्री अने धनुष्यधारीओमां धनंजय (अर्जुन) छे तेम सत्यवादीओने विषे धोरी ते आचार्य एकज छे." पछी ब्राह्मणोए तेमना कह्या प्रमाणे कर्युं.

स्थविर प्रियग्रंथथी अहीं मध्यमा शाखा नीकली छे. काश्यप गोत्रवाला स्थविर विद्याधरगोपालथी अहीं विद्याधरी शाखा नीकली छे. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यइन्द्रदिन्नने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यदिन्न शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यदिन्नने बे स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—माढर गोत्रवाला आर्यशांतिसेनिक अने जातिस्मरणज्ञानवाला तथा कौशिक गोत्रवाला आर्यसिंहगिरि. माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यशांतिसेनिकथी अहीं उच्चनागरी शाखा नीकली छे. माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यशांतिसेनिकने चार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थविर आर्यसेनिक १, स्थविर आर्यतापस २, स्थविर आर्यकुबेर ३ अने स्थविर आर्यऋषिपालित. स्थविर आर्यसेनिकथी अहीं आर्य-

[1] भारत संबोधन अर्जुन अथवा युधिष्ठिरने माटे छे.

सेनिका शाखा नीकळी छे, स्थविर आर्यतापसथी अहीं आर्यतापसी शाखा नीकळी छे, स्थविर आर्यकुबेरथी अहीं आर्यकुबेरी शाखा नीकळी छे अने स्थविर आर्यऋषिपालितथी आर्यऋषिपालिता शाखा नीकळी छे. जातिस्मरणज्ञानवाळा अने कौशिक गोत्रवाळा आर्यसिंहगिरिने चार स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे–स्थविर धनगिरि १, स्थविर आर्यवज्र २, स्थविर आर्यसमित ३ अने स्थविर अर्हद्दिन्न ४.

अहीं स्थविर आर्यवज्रनो संबंध कहे छे. तुंबवन नामना गाममां सुनंदा नामनी पोतानी स्त्रीने ओधान सहित (गर्भवंती) मूकीने धनगिरिए दीक्षा लीधी. सुनंदाने पुत्र प्रसव्यो. ते पुत्रने पोताना जन्म वखतेज पितानी दीक्षा सांभळीने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी माने उद्वेग आपवा माटे[1] हमेशां रडवा लाग्यो. तेथी तेनी माताए ते छ मासनो थयो त्यारेज धनगिरिने आपी दीधो (वहोरावी दीधो.) तेणे गुरुना हाथमां आप्यो. गुरुए बहु भार होवाने लीधे तेनुं वज्र नाम आप्युं. ते पारणामां रह्यो थको सांभळीने अग्यार अंग भण्यो. पछी ते ज्यारे त्रण वर्षनो थयो त्यारे तेनी माताए राजानी समक्ष विवादमां अनेक सुखडी–रमकडां विगेरेथी तेने लोभाव्यो तोपण तेणे ते न लीधुं अने धनगिरिए आपेलुं रजोहरणज लीधुं. त्यारपछी माताए पण दीक्षा लीधी. वज्रने गुरुए दीक्षा आपी. पछी आठ वर्षनी आखरे एक वखत तेना पूर्व भवना मित्र जृंभक देवोए उज्जयिनीना मार्गमां वरसाद विराम पाम्ये छते कूष्मांडनी[2] भिक्षा देवा मांडी ते वखते तेना अनिमिषपणाथी[3] आ देवपिंड छे तेथी अकल्प्य छे एम धारीने ते ग्रहण नहीं करवाथी संतुष्ट थयेला देवोए तेने वैक्रियलब्धि आपी. तेवीज रीते बीजी वेळाए घेबर नहीं लेवाथी नभोगमन (आकाशगामिनी) विद्या आपी. ते वज्र मुनिए पाटलीपुरमां धन श्रेष्ठीए करोड धन

१ माता उद्वेग पामे तो तेना पर मोह न लावतां दीक्षा लेवा दे ए हेतु हतो. २ साकरकोळानी. ३ आंख मटकुं मारती न होवाथी.

सहित आपवा मांडेली अने साध्वी पासेथी वज्रना गुणोने सांभलीने 'हुं वज्रनेज वरीश' एवो अभिग्रह जेणे लीधो हतो एवी रुक्मिणी नामनी कन्याने प्रतिबोधीने दीक्षा अपावी. अहीं कवि कहे छे के "जे वज्र ऋषिए बाल्यवयमांज लीला मात्रमां मोहरूपी समुद्रने एक घुंटडो करी नाख्यो, तेने स्त्रीरूपी नदीना स्नेहनुं पूर केवी रीते खेंचावी शके ?" ते वज्र स्वामी एक वखत दुकालमां संघने पट उपर बेसाडीने सुकालवाली नगरीमां लइ गया. त्यां बौद्ध राजाए जिनमंदिरोमां पुष्पनो निषेध कर्यो हतो. (अहीं पण किरणावली अने दीपिकामां 'बौद्धराज्ञा' एवो प्रयोग लखेलो छे ते विचारवा योग्य छे.) पछी पर्युषणामां श्रावकोए विज्ञप्ति करवाथी आकाशगामिनी विद्या वडे माहेश्वरी पुरीमां पिताना मित्र एक मालीने पुष्प एकठां करवा माटे कहीने पोते हिमवत् पर्वत उपर लक्ष्मी देवीने घेर गया. त्यांथी लक्ष्मी देवीए आपेलुं महापद्म तथा हुताशन वनमांथी वीश लाख पुष्प सहित जृंभक देवोए विकुर्वेला विमानमां बेसी महोत्सवपूर्वक त्यां आवीने जिनशासननी प्रभावना करी अने राजाने पण श्रावक कर्यो. एक दिवस ते वज्र स्वामीए कफना उपक्रम माटे भोजन पछी खावा सारु कान उपर राखेली सुंठनो प्रमादथी प्रतिक्रमण वखते पात थवाथी पोतानुं मृत्यु नजदीक आवेलुं जाणीने श्री वज्रसेन नामना पोताना शिष्यने कह्युं के "बार वर्षनो दुकाल पडशे अने जे दिवसे लक्ष मूल्यवाला चावलमांथी तने भिक्षा मले ते दिवस पछीना दिवसनी सवारे सुकाल थशे एम जाणजे." एम कहीने तेने बीजी जगोए विहार कराव्यो अने पोते पोतानी साथे रहेला साधुओनी साथे रथावर्त पर्वत उपर जइ अनशन ग्रहण करी देवलोके गया. ते वखते संघयण चतुष्क अने दशमुं पूर्व विछेद गयां. (अहीं किरणावलीकारे 'तुर्यं संहननं व्युछिन्नं' एटले चोथुं संघयण विछेद गयुं एम कहेलुं छे ते विचारवा जेवुं छे, कारण के तंदुल वैचारिक वृत्ति अने दीपालिका कल्प विगेरेमां चतुष्क ए प्रमाणे पाठ कहेलो छे.) त्यारपछी बार

वर्षी डुकाल पड्यो तेनी प्रांते सोपारक नगरमां जिनदत्त श्रावकना घरमां लक्ष मूल्यवालुं अन्न रांधीने तेनी ईश्वरा नामनी स्त्री तेमां विष नाखती हती तेने गुरुनुं वचन कहीने श्री वज्रसेने निवार्युं. बीजे दिवसे सवारमांज वहाण वडे पुष्कल धान्य आववाथी सुकाल थयो, अने जिनदत्ते पोतानी स्त्री तथा नागेंद्र, चंद्र, निर्वृति अने विद्याधर नामना चार पुत्र सहित दीक्षा लीधी. त्यारपछी ते चार शिष्योना नामथी चार शाखा प्रवृत्त थइ.

गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यसमितथी ब्रह्मद्वीपिका नामनी शाखा नीकली छे. तेनो संबंध आ प्रमाणे छे– आभीर देशमां अचलपुरनी नजदीकमां अने कन्ना तथा बेन्ना नदीनी मध्यमां आवेला ब्रह्मद्वीपमां पांचसो तापस रहेता हता. तेउमांनो एक पगे लेप करीने जमीन उपरनी जेम जल पर चाली जलथी पग भींजाया सिवाय बेन्ना नदी उतरीने पारणाने माटे जतो हतो. ते जोइ 'अहो ! आनी तपनी शक्ति केवी छे ? जैनीउमां कोइ पण एवो प्रभावी नथी' ए प्रमाणे सांभलीने श्रावकोए श्री वज्र स्वामीना मामा आर्यसमित सूरिने बोलाव्या त्यारे तेणे कह्युं के 'आ तेनी मात्र अल्प एवी पादलेपशक्तिज छे.' पछी श्रावकोए ते तापसने जमवानुं आमंत्रण आप्युं अने ते जमवा बेठा त्यारे तेना पग अने पादुका (पावडी) धोइ नाखवापूर्वक पोताने घेर जमाड्या. त्यारपछी तेउनी साथेज श्रावको पण नदीए गया अने ते तापस पण धृष्टतानुं आलंबन करीने नदीमां प्रवेश करतांज बुडवा लाग्यो. ते वखते तापसोनी अपभ्राजना थइ. तेज अवसरे आर्यसमित सूरिए त्यां आवीने लोकोने प्रतिबोध आपवा माटे योगचूर्ण नाखीने कह्युं के 'हे बेन्ना ! मारे पेले पार जवुं छे' एम कहेतांज बंने कांठा एकठा थइ गया. लोकोने बहु आश्चर्य थयुं. पछी सूरि महाराजे तापसोना आश्रममां जइने तेउने प्रतिबोधी दीक्षा आपी. त्यारपछी तेउथी ब्रह्मद्वीपिका शाखा नीकली.

आर्यमहागिरि, आर्यसुहस्ती, श्री गुणसुंदर सूरि, श्यामार्य, स्कंदिलाचार्य, रेवतीमित्र सूरीश्वर, श्रीधर्म, जद्रगुप्त, श्रीगुप्त अने वज्र सूरीश्वर ए दश दशपूर्वीउं अने श्रेष्ट युगप्रधानो थया.

गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रथी आर्यवज्री शाखा नीकली ठे. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवज्रने त्रण स्थविर शिष्य पुत्र समान प्रसिद्ध हता. ते आ प्रमाणे—स्थविर आर्यवज्रसेन १, स्थविर आर्यपद्म २ अने स्थविर आर्यरथ ३. स्थविर आर्यवज्रसेनथी आर्यनागिली शाखा नीकली, स्थविर आर्यपद्मथी आर्यपद्मा शाखा नीकली अने स्थविर आर्यरथथी आर्यजयंती शाखा नीकली. वछ गोत्रवाला स्थविर आर्यरथने कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यपुष्पगिरि शिष्य हता. कौशिक गोत्रवाला स्थविर आर्यपुष्पगिरिने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यफल्गुमित्र शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यफल्गुमित्रने वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यधनगिरि शिष्य हता. वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यधनगिरिने कुछ गोत्रवाला स्थविर आर्यशिवजूति शिष्य हता. कुछ गोत्रवाला स्थविर आर्यशिवजूतिने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यजद्र शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यजद्रने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यनक्षत्र शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यनक्षत्रने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यरक्ष शिष्य हता. (अहीं वहुश्रुतनी प्रसिद्धिने पामेला किरणावलीकारने पण अनाजोग विलसित थयुं जणाय ठे, कारण के जे तोसलिपुत्र आचार्यना शिष्य, श्री वज्र स्वामीनी पासे साडा नव पूर्व जणेला अने नामथी श्री आर्यरक्षित हता ते जूदा ठे अने आ श्रीवज्र स्वामीथी शिष्य, प्रशिष्यनी गणनाथी नवमी पाटे थयेल आर्यरक्ष नामे ते पण जूदा ठे. ए प्रमाणे आर्यरक्षित अने आर्यरक्षनो स्फुट जेद जूली जइने आर्यरक्षने ठेकाणे आर्यरक्षितनी हकीकत लखी दीधी ठे.) काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यरक्षने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यनाग शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यनागने वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्यजेहिल शिष्य हता. वासिष्ट गोत्रवाला स्थविर आर्य-

जेहलिने माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यविश्नु शिष्य हता. माढर गोत्रवाला स्थविर आर्यविश्नुने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यकालिक शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यकालिकने गौतम गोत्रवाला आ बे स्थविर शिष्य हता. स्थविर आर्यसंपलित अने स्थविर आर्यभद्र. गौतम गोत्रवाला आ बे स्थविरोने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवृद्ध शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवृद्धने गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यसंघपालित शिष्य हता. गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यसंघपालितने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यहस्ती शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यहस्तीने सुव्रत गोत्रवाला स्थविर आर्यधर्म शिष्य हता. सुव्रत गोत्रवाला स्थविर आर्यधर्मने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यसिंह शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यसिंहने काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यधर्म शिष्य हता. काश्यप गोत्रवाला स्थविर आर्यधर्मने स्थविर आर्यसंडिल शिष्य हता.

(अहींथी 'वंदामि फग्गुमित्तं' इत्यादि चौद गाथाओ छे. तेनो अर्थ घणो खरो उपर कहेवाइ गयो छे, पण तेज हकीकत फरीने पद्यमां संग्रहीत करेली होवाथी तेनो अर्थ पण फरीने लख्यो छे तेथी पुनरुक्तिनी शंका करवी नहीं.) चौद गाथानो शब्दार्थ नीचे प्रमाणे छे.

गौतम गोत्रवाला फल्गुमित्रने, वासिष्ट गोत्रवाला धनगिरिने, कुत्स गोत्रवाला शिवभूतिने तथा कौशिक गोत्रवाला दुर्जय कृष्णने वांदुं छुं. १. तेमने मस्तक वडे वांदीने काश्यप गोत्रवाला भद्रने, काश्यप गोत्रवाला नक्षत्रने अने काश्यप गोत्रवाला रक्षने पण वांदुं छुं. २. गौतम गोत्रवाला आर्यनागने, वासिष्ट गोत्रवाला जेहिलने, माढर गोत्रवाला विश्नुने अने गौतम गोत्रवाला कालिकने वांदुं छुं. ३. गौतम गोत्रवाला कुमार संपलितने तथा आर्यभद्रने वांदुं छुं तेमज गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यवृद्धने वांदुं छुं. ४. तेमने मस्तक वडे वांदीने स्थिर सत्त्व, चारित्र अने ज्ञानथी

उनालानो प्रथम मास एटले फाल्गुन, तेना शुक्लपक्षमां कालगत थया छे एवा काश्यप गोत्रवाला आर्यहस्तीने हुं वांदुं छुं. ६. शीललब्धिथी संपन्न अने जेना दीक्षामहोत्सवमां देवोए जेमना उपर श्रेष्ठ उत्तम छत्र धारण कर्युं हतुं एवा सुव्रत गोत्रवाला आर्यधर्मने वांदुं छुं. ७. काश्यप गोत्रवाला आर्यहस्तीने तथा मोक्ष साधक आर्यधर्मने वांदुं छुं तेमज काश्यप गोत्रवाला आर्यसिंहने तथा काश्यप गोत्रवाला आर्यधर्मने पण वांदुं छुं. ८. तेमने मस्तक वडे वांदीने स्थिर सत्त्व, चारित्र अने ज्ञानथी संपन्न एवा गौतम गोत्रवाला स्थविर आर्यजंबूने वांदुं छुं. ९. मधुर एवा सरलपणाए (मायाना त्यागे) करीने संपन्न[1] तथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रे करीने युक्त एवा काश्यप गोत्रवाला स्थविर नंदितने पण वांदुं छुं. १०. त्यारपछी स्थिर चारित्रवाला अने उत्तम सम्यक्त्व अने सत्त्वथी युक्त एवा माढर गोत्रवाला देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणने वांदुं छुं. ११. त्यारपछी अनुयोगना धारक, धीर, मतिना सागर अने महा सत्त्ववंत एवा वछ गोत्रवाला स्थिरगुप्त क्षमाश्रमणने वांदुं छुं. १२. त्यारपछी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे सुस्थित, गुणथी मोटा अने गुणवंत एवा स्थविर कुमारधर्म गणिने वांदुं छुं. १३. सूत्रार्थरूप रत्नथी भरेला तथा क्षमा, दम[2] अने मार्दव गुणोए करीने संपन्न एवा काश्यप गोत्रवाला देवर्द्धि क्षमाश्रमणने वांदुं छुं. १४.

एवी रीते जगद्गुरु भट्टारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुबोधिका नामनी टीकामां आठमुं व्याख्यान समाप्त थयुं तेमज स्थविरावली नामे आ बीजो अधिकार पण पूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

॥ अथ नवमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे सामाचारीरूप त्रीजी वाचना कहेतां प्रथम पर्युषणा क्यारे करवी ते कहे छे.

१ ते कालने विषे अने ते समयने विषे वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद

१ "मिउमद्दवसंपन्नं" एनो अर्थ टीकाकारे "मृदुना मधुरेण मार्दवेन मायात्यागेन संपन्नम्" एवो कर्यो छे. २ इंद्रियोने दमवी ते.

श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युषणापर्व कर्युं ठे. १. हे पूज्य ! ते शा कारणथी एम कहेवाय ठे के वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युषणापर्व कर्युं ठे ? ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न कर्ये ठते गुरु उत्तर आपवाने सूत्र कहे ठे (उत्तर आपे ठे). जे कारणथी प्राये गृहस्थोनां घर सादमीथी ढांकेलां होय ठे, चूनाथी धोलेलां होय ठे, घास विगेरेथी आठादित करेलां होय ठे, ठाण आदिथी लींपेलां होय ठे, वृत्ति (वाम) करवा विगेरेथी गुप्त करेलां होय ठे, विषम जूमिने खोदीने सरखां करेलां होय ठे, पाषाणना कटकाथी घसीने कोमल (लीसां) करेलां होय ठे, सुगंधी माटे धूपथी वासित करेलां होय ठे, परनालरूप पाणी जवाना मार्गवालां करेलां होय ठे अने खालो खोदावी राखेलां होय ठे; एवी रीते (गृहस्थोए) पोताना माटे घर अचित्त करेलां होय ठे, ते कारणथी हे शिष्य ! एम कहेवाय ठे के वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद श्रमण जगवान् श्री महावीरे चोमासामां पर्युषणापर्व कर्युं ठे. २. तेवीज रीते गणधरोए पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद चोमासामां पर्युषणापर्व कर्युं ठे. ३. जेवी रीते गणधरोए वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं तेवी रीते गणधरना शिष्योए एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं. ४. जेवी रीते गणधरना शिष्योए वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं तेवी रीते स्थविरोए पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं. ५. जेवी रीते स्थविरोए वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद पर्युषणापर्व कर्युं तेवी रीते आर्यपणाए करीने अथवा व्रतस्थविरपणाए करीने वर्तता एवा जे आ (हमणांना) श्रमण निर्ग्रंथो विहार करे ठे ते पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद

[1] एक मास ने वीश दिवस पठी पर्युषणा करवी एटले त्यां चोमासानो बाकीनो काल स्थिति करवानुं कहेवुं, जेथी ते आरंजना निमित्त मुनि न थाय. आ रहस्य ठे.

पर्युषणापर्व करे छे. ६. जेवी रीते हालना समयमां जे आ श्रमण निर्ग्रंथो पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद चोमासामां पर्युषणापर्व करे छे तेवी रीते अमारा पण आचार्यो अने उपाध्यायो पर्युषणापर्व करे छे. ७. जेवी रीते अमारा आचार्यो अने उपाध्यायो पर्युषणापर्व करे छे तेवी रीते अमे पण वर्षाकालना एक मास अने वीश दिवस गया बाद चोमासामां पर्युषणापर्व करीए छीए. तेनी (भादरवा सुदि ५ नी) पहेलां पण पर्युषणापर्व करवुं कल्पे छे, परंतु ते (भादरवा सुदि ५ नी) रात्रि अतिक्रमवी (उल्लंघवी) कल्पे नहीं*. ८.

त्यां परि–सामस्त्येन एटले सर्व प्रकारे अने उषणं–वसनं एटले वसवुं ते पर्युषणा. ते बे प्रकारनी छे. एक गृहिज्ञाता (गृहस्थोए जाणेली) अने बीजी गृह्यज्ञाता (गृहस्थोए नहीं जाणेली). तेमां गृह्यज्ञाता ए छे के जेमां वर्षा (चोमासा)ने योग्य पीठ[1], फलक[2] आदि प्राप्त कर्ये छते कल्पमां[3] कहेल द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावरूप स्थापना करवामां आवे छे, अने ते आषाढ पूर्णिमानी अंदर करवामां आवे छे, परंतु योग्य क्षेत्रना अभावे पांच पांच दिवसनी वृद्धिथी दश पर्वतिथिना क्रमवडे श्रावण वदि अमास सुधीज करवामां आवे छे. गृहिज्ञाता पण बे प्रकारनी छे. एक सांवत्सरिक कृत्यविशिष्टा एटले सांवत्सरिक कृत्योए करीने युक्त अने बीजी गृहिज्ञातमात्रा एटले मात्र गृहस्थोए जाणेली. तेमां सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, लोच, अठमनो तप, सर्व जिनेश्वरोनी भक्तिपूजा अने संघनुं अरस्परस खामवुं ए सांवत्सरिक कृत्यो छे अने ते कृत्योए करीने युक्त एवी पर्युषणा भादरवा सुदि पंचमीने दिवसेज अने कालिकाचार्यना आदेशथी चतुर्थीने दिवसे पण करवामां आवे छे. मात्र गृहस्थोए जाणेली ते ए छे के जे वर्षमां अधिक मास होय ते वर्षमां चोमासाना दिवसथी मांडीने वीश दिवसे मुनि 'अमे अहीं रह्या छीए' एम प्रश्न करनार गृहस्थोनी आगल कहे छे. ते पण जैन टीपणाने अनुसारे

* आ पर्युषणा वार्षिक पर्वरूप समजवी. १ पाटलो. २ पाट. ३ अहीं कल्प शब्दे वृहत् कल्पादि लेवुं.

करेलुं छे. दाखला तरीके 'अन्यदा पर्युषणानो दिवस आव्ये छते आर्यकालक सूरिए शालिवाहनने कह्युं के भादरवा सुदि पंचमीए पर्युषणा छे इत्यादि' पर्युषणाकल्पनी चूर्णिमां छे. वली शालिवाहन राजा जे श्रावक हतो ते कालक सूरिने आवेला सांभलीने सन्मुख जवा नीकल्यो अने श्रमण संघ पण नीकल्यो. महा विभूतिए कालक सूरिए प्रवेश कर्यो अने प्रवेश करीने कह्युं के 'भादरवा सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी.' श्रमण संघे ते कबूल कर्युं. त्यारे राजाए कह्युं के 'ते दिवसे लोकानुवृत्तिए इन्द्रमहोत्सव होवाथी पर्युषणा थइ शकशे नहीं, तो छठने दिवसे पर्युषणा करीए.' आचार्ये कह्युं के '(पंचमी) अतिक्रमवी न जोइए.' त्यारे राजाए कह्युं 'आगल चोथने दिवसे पर्युषणा करीए.' त्यारे आचार्ये कह्युं 'ए प्रमाणे हो.' पछी चोथे पर्युषणा करी. ए प्रमाणे युगप्रधाने कारणे चोथ प्रवर्तावी, अने ते सर्व साधुने मान्य छे. इत्यादि निशीथ चूर्णिना दशमा उद्देशामां कह्युं छे. एवी रीते ज्यां कोइ जगोए पण पर्युषणानुं निरूपण आवे त्यां भाद्रपद संबंधीज जाणवुं, परंतु कोइ पण आगमने विषे 'भद्दवयसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्जइत्ति' एटले भादरवा सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी ए पाठनी माफक 'अभिवड्ढिअवरिसे सावणसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्जइत्ति' एटले अभिवर्द्धित वर्षमां श्रावण सुदि पंचमीए पर्युषणा करवी एवो पाठ उपलब्ध थतो नथी. तेथी कार्त्तिक मासथी प्रतिबद्ध चतुर्मासक कृत्य करवामां जेम अधिक मास प्रमाण नथी तेम भादरवा मासथी प्रतिबद्ध पर्युषणा करवामां अधिक मास प्रमाण नथी, माटे कदाग्रहने छोडी दे. वली अधिक मास शुं कागडो भक्षण करी गयो छे ? अथवा शुं ते मासमां पाप लागतुं नथी के भूख लागती नथी ? इत्यादि उपहास्य करीने तारुं पोतानुं घेलापणुं प्रकट न कर, कारण के तुं पण अधिक मास होते छते एटले तेर मास छते सांवत्सरिक खामणामां 'बारसण्हं मासाणं' इत्यादि बोलतां अधिक मासनो अंगीकार करतो नथी. ए प्रमाणे चतुर्मासिक खामणामां अधिक मास होय तोपण 'चउण्हं मासाणं' इत्यादि अने पाक्षिक खामणामां अधिक

तिथि होय तोपण 'पन्नरसएहं दिवसाणं' ए प्रमाणे तुं बोले छे. तेवीज रीते नव कल्प विहार आदि लोकोत्तर कार्यने विषे पण बोलाय छे. (दश कल्प कहेवाता नथी.) वली 'आसाढे मासे दुपया' इत्यादि, सूर्यचारने विषे पण तेमज कहेवाय छे. लोकमां पण दीवाली, अक्षयतृतीया आदि पर्वने विषे तेमज व्याज गणवा आदिने विषे अधिक मास गणातो नथी, ते पण तुं जाणे छे. वली सर्वे शुभ कार्यो अधिक मास नपुंसक छे तेथी तेमां न करवां एम कहीने ज्योतिःशास्त्रमां तेनो निषेध करेलो छे. वली बीजो मास अधिक होय तेनी वात तो बाजु पर रहो, पण जो भादरवो मास अधिक होय तोपण पहेलो भादरवो अप्रमाणज छे (एटले बीजा भाद्रपदमां संवत्सरीपर्व करवामां आवे छे). जेम चतुर्दशी अधिक होय तो पहेली चतुर्दशीने लेखामां नहीं गणीने बीजी चतुर्दशीए पाक्षिक कृत्य करवामां आवे छे तेम अहीं पण जाणवुं. वली जो एम होय तो 'अप्रमाण (अधिक) मासमां देवपूजा, मुनिदान अने आवश्यक आदि कार्य पण न करवां जोइए' एम कहेवाने तारा अधरोष्ठने चपल न कर; कारण के दिनप्रतिबद्ध देवपूजा, मुनिदान विगेरे कृत्य छे ते तो हमेशां करवांज जोइए अने जे सन्ध्या आदि समयप्रतिबद्ध आवश्यक आदि कृत्य छे ते पण दरेक संध्यासमय पामीने करवांज जोइए अने भाद्रपद आदि मासथी प्रतिबद्ध जे कृत्यो छे ते बे भाद्रपद होय तो कया भाद्रपदमां करवां ? तेना विचारमां प्रथम भाद्रपदने अवगणीने (नहीं गणीने) बीजा भाद्रपदमां ते करवां एम सम्यक् प्रकारे विचार कर. वली जो, अचेत एवी वनस्पतिओ पण अधिक मास अंगीकार करती नथी, जेथी अधिक मासने त्यजीने बीजा मासमां पुष्पित थाय छे. जे माटे आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे के–जइ फुल्ला कणियारा, चूअगणा अहिमासयंमि घुट्ठंमि । तुह न खमं फुल्लेउं, जइ पच्चंता करिंति डमराइं ॥ १ ॥ भावार्थ–हे आम्र वृक्ष!

---

१ व्याज, भाडुं, पगार विगेरेमां हिंदु मासनी गणत्रीए हालमां अधिक मासनुं वधारे लेवा देवामां आवे छे ते नवीन प्रवृत्ति छे तेथीज तेवो करार लखवो पडे छे.

अधिक मासनी उद्घोषणा थये छते कदि कणेरनां फूल तो फूले पण तने फूलवुं घटे नहीं, केमके तेथी तुच्छ जातिनां वृक्षो तारी हांसी करशे. वली कोइ 'अभिवड्ढिअंमि वीसा इयरेसु सवीसइ-मासे' ए वचनबल वडे मास अधिक होय त्यारे वीश दिवसेज लोच आदि कृत्य युक्त पर्युषणा करे छे ते पण अयुक्त छे, कारण के 'अभिवड्ढिअंमि वीसा' ए वचन गृहिज्ञात (पर्युषणा) मात्रनी अपेक्षाए छे. अन्यथा 'आसाढमासिए पज्जोसविंति एस उस्सग्गो, सेसकालं पज्जोसविंताणं अववाउत्ति' एटले आषाढ मासमां पर्युषणा करवी ए उत्सर्ग छे अने बाकीना कालमां पर्युषणा करवी ए अपवाद छे. एवा श्री निशीथ चूर्णिना दशमा उद्देशाना वचनथी आषाढ पूर्णिमाएज लोच आदि कृत्य युक्त पर्युषणा करवी जोइए. (पण ते चतुर्मास रहेवानी अपेक्षानुं वचन छे, कृत्यविशिष्ट पर्युषणा करवा माटे नथी तेथीज तेम करवामां आवतुं नथी.) आ संबंधमां वधारे कहेवाथी सर्युं.

कल्पने विषे कहेली द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावरूप स्थापना आ प्रमाणे छे. द्रव्य स्थापना—तृण, डगल, छार, मल्लक[1] आदिनो परिभोग करवो अने सचित्त आदिनो त्याग करवो. तेमां सचित्त द्रव्य एटले अति श्रद्धावाला राजा अने राजाना प्रधान सिवाय शिष्यने दीक्षा आपवी नहीं[2], अचित्त द्रव्य एटले वस्त्र आदि ग्रहण करवां नहीं अने मिश्र द्रव्य एटले उपधि सहित शिष्य ग्रहण करवो नहीं. क्षेत्रस्थापना—एक योजन अने एक गाउ (पांच गाउ जवुं आववुं कल्पे) अने ग्लानने माटे वैद्य, औषध आदिना कारणे चार अथवा पांच योजन कल्पे. कालस्थापना—चार मास रहेवुं ते अने भावस्थापना—क्रोध आदिनो विवेक (त्याग) अने ईर्यासमिति आदिने विषे उपयोग. ८.

२ चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीओने चारे दिशा अने विदिशामां एक योजन अने एक गाउनो (एटले पांच गाउनो) अवग्रह कल्पे. अवग्रह करीने 'अहालन्दमवि' कह्युं छे तेमां अथ

१ कुंभी विगेरे. २ राजा के प्रधान दीक्षा लेवा इच्छे तो तेने आपवी.

ए अव्यय छे अने लन्द शब्द वडे काल जाणवो. तेमां जेटला वखतमां भीनो हाथ सुकाइ जाय तेटला कालने जघन्य लन्द कहे छे, पांच अहोरात्रिने उत्कृष्ट लन्द कहे छे; अने तेनी वचेना कालने मध्यम लन्द कहे छे. लन्द काल सुधी पण एटले तेटलो वखत पण अवग्रहने विषे रहेवुं कल्पे, पण अवग्रहथी बहार रहेवुं कल्पे नहीं. अपि शब्दथी अलन्दमपि एटले बहु काल सुधी छ मास एक साथे अवग्रहमां रहेवुं कल्पे, पण अवग्रहनी बहार रहेवुं कल्पे नहीं. गजेन्द्रपद आदि पर्वतनी मेखलानां ग्रामोने विषे रहेला साधु साध्वीओने उपाश्रयथी छए दिशामां (जवानो) अढी कोश अने जवा आववानो पांच कोशनो अवग्रह होय छे. अहीं "विदिशामां" एम कहेलुं छे ते व्यावहारिक विदिशानी अपेक्षाए छे, कारण के नैश्चयिक विदिशाओनुं एक प्रदेशपणुं होवाथी त्यां जवानो असंभव छे. अटवी (जंगल), जल आदिथी व्याघात थये छते त्रण दिशानो, बे दिशानो अथवा एक दिशानो अवग्रह जाणवो (समजवो). ए.

३ चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीओने चारे दिशा अने विदिशामां एक योजन अने एक गाउ भिक्षाचर्याए जवुं आववुं कल्पे. १०. ज्यां नदी नित्य पुष्कल पाणीवाली होय अने नित्य वहेती होय त्यां सर्व दिशा अने विदिशामां एक योजन अने एक गाउ भिक्षाचर्याए जवुं आववुं कल्पे नहीं. ११. कुणाला नामनी नगरीने विषे ऐरावती नामनी नदी हमेशां बे गाउ वहेती छे[1], तेवी नदी थोडुं (ऊंडुं) पाणी होवाथी उल्लंघवी कल्पे छे के ज्यां आ प्रमाणे करी शकाय. केवी रीते करी शकाय ? ते कहे छे–एक पग जलमां राखीने अने बीजो पग स्थल उपर राखीने एटले पाणीथी उपर अधर राखीने–आवी रीते जो जइ शकाय तो चारे दिशा अने विदिशामां एक योजन अने एक गाउ (भिक्षा निमित्ते) जवुं आववुं कल्पे. १२. ज्यां पूर्वोक्त रीति प्रमाणे न जइ शकाय त्यां साधुने चारे दिशा अने विदिशामां तेटलुं जवुं आववुं कल्पे नहीं अने ज्यां ए

१ तेटला पहोळा प्रवाहवाली छे.

प्रमाणे न करी शकाय अने पाणी विलोफीने जवुं पडे त्यां जवुं कल्पे नहीं. जंघार्ध सुधी पाणी होय ते दकसंघट्ट कहेवाय, नाभि सुधी पाणी होय ते लेप कहेवाय अने नाभिथी उपर होय तो लेपोपरि कहेवाय. त्यां शेष कालमां त्रण वार दकसंघट्ट थये छते क्षेत्र हणाय नहीं एटले त्यां जवुं कल्पे ए भाव जाणवो. वर्षाकालमां सात वार दकसंघट्ट थाय तोपण क्षेत्र हणाय नहीं. शेष कालमां चोथो अने वर्षाकालमां आठमो दकसंघट्ट थये छते क्षेत्र हणाय छे. लेप तो एक पण होय तो क्षेत्रने हणे छे तेथी नाभि सुधी जल होय तो जवुं कल्पे नहीं तो पछी लेपोपरि एटले नाभिनी उपर जल होय तो तेनी तो वातज शी करवी ? १३.

४ चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए आ प्रमाणे प्रथमथी कही राखेलुं होय के 'हे शिष्य ! ग्लान साधुने अमुक वस्तु लावी आपजे.' त्यारे ते साधुने (ते वस्तु) लावी आपवी कल्पे, पण तेने पोताने ते वापरवी कल्पे नहीं. १४. चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए आ प्रमाणे प्रथमथी कहेलुं होय के 'हे शिष्य ! (अमुक वस्तु) तुं पोते लेजे', त्यारे तेने लेवी कल्पे, पण तेने (बीजाने) आपवी कल्पे नहीं. अर्थात् एम कहेलुं होय के 'तुं पोतेज लेजे, ग्लानने बीजो आपशे'. त्यारे तेने पोताने लेवुं कल्पे, पण आपवुं कल्पे नहीं. १५. चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरुए प्रथमथी कही राखेलुं होय के 'हे शिष्य ! तुं लावी आपजे अने तुं पोते पण लेजे.' त्यारे तेने लावी आपवुं पण कल्पे अने लेवुं पण कल्पे. अर्थात् तुं आपजे अने लेजे एम कही राखेलुं होय तो आपवुं अने लेवुं ए बंने पण कल्पे छे. १६.

५ चोमासुं रहेला (अमुक) साधु अने साध्वीओने (विगय लेवी) कल्पे नहीं. ते साधु साध्वी केवा ? तो के हृष्ट एटले तरुण अवस्थाने लीधे समर्थ, (तरुण पण केटलाक रोगी अने निर्बल शरीरवाला होय छे तेथी कह्युं छे के) आरोग्य अने बलवंत शरीरवाला साधुओने आ हवे पछी कहेवामां आवशे एवी नव रसे करीने प्रधान विकृतिओ (विगइओ) वारंवार खावी कल्पे नहीं. ते विकृतिओ आ प्रमाणे जाणवी—दुध १, दहीं २, माखण ३, घी ४,

तेल ५, गोल ६, मध ७, मद्य ८ अने मांस ए. अजोदणर् . . करवाथी कारण कल्पे छे एम समजवुं अने नवना ग्रहण करवाथी कोइ दिवस पकवान्न पण ग्रहण कराय छे. तेमां विकृतिउ सांचयिका अने असांचयिका ए बे प्रकारनी छे. तेमां दुध, दहीं, पकवान्न ए नामनी बहु काल सुधी राखी शकाय नहीं ते असांचयिका जाणवी. रोगना कारणे, गुरु, बाल आदिने उपग्रह कर-वाने अर्थे अथवा श्रावकना निमंत्रणथी ते लेवी. घी, तेल अने गोल ए नामनी त्रण विकृति सांचयिका जाणवी. ते त्रण विकृति प्रतिलाजता गृहस्थीने कहेवुं के 'हजु घणो वखत रहेवानुं छे तेथी अमे ग्लान आदिने माटे लइशुं.' त्यारे ते गृहस्थी कहे के 'चोमासा सुधी लेजो, ते घणी छे.' त्यारे ते लेवी अने बाल आदिने देवी, पण तरुणने आपवी नहीं. जो के मध, मांस अने माखणनो (मुनिने) जावजीव सुधी त्याग होय छे तोपण अत्यंत अपवाददशामां बाह्य परिजोग विगेरेने माटे कोइ दिवस ग्रहण करवी, पण चोमासामां तो सर्वथा निषेध छे. १७.

६ चोमासुं रहेला साधुउने विषे वैयावच्च करनारा मुनिए गुरुने प्रथमथी एम कही राखेलुं होय के 'हे जगवन्! ग्लानने माटे कांइ वस्तुनो खप छे?' ए प्रमाणे वैयावच्च करनार कोइ मुनिए पूछ्ये छते ते गुरु कहे के 'ग्लानने वस्तु जोइए छीए? जोइती होय तो ग्लानने पूछो के दुध विगेरे केटली विगयनो तमने खप छे?' ते ग्लाने पोताने जोइता प्रमाणमां कह्ये छते ते वैयावच्च करनारे गुरुनी पासे आवीने कहेवुं के 'ग्लानने आटली वस्तुनो खप छे.' त्यारे गुरु कहे के 'जेटलुं प्रमाण ते ग्लान कहे छे तेटला प्रमाणमां ते विगय तारे लेवी.' पछी ते वैयावच्च करनार गृहस्थ पासे मागे अने मागणी करतां वैयावच्च करनार दुध विगेरे ते वस्तु प्राप्त थाय तो पछी ग्लाने कह्या प्रमाण जेटली मले एटले 'राखो, थयुं' एम गृहस्थने कहे. गृहस्थ एम कहे के 'हे जगवन्! 'थयुं' एम केम कहो छो?' त्यारे साधु कहे के 'ग्लानने एटलोज खप छे.' आ प्रमाणे कहेता साधुने कदाच गृहस्थ कहे के

१ ए नवथी जूदी विगय छे.

'हे आर्य साधु ! तमे ग्रहण करो. ग्लाने जोजन कर्या बाद पक्वान्न आदिक जे कांइ वधे ते तमे खाजो, डुध आदिक पीजो.' क्वचित् पाहिसित्तिने बदले दाहिसित्ति जोवामां आवे ठे. त्यारे एम अर्थ करवो के 'ग्लाने जोजन कर्या बाद जे कांइ वधे ते तमे खाजो अने बीजाने आपजो.' एम तेणे (गृहस्थे) कह्ये ठते अधिक लेवुं कल्पे; पण ग्लाननी निश्राए गृद्धिथी पोताने माटे लेवुं कल्पे नहीं. ग्लानने माटे मागी आणेल आहारादि मंमलीमां आणवुं नहीं. १७.

७ चोमासुं रहेला साधुउने ते प्रकारनां अनिंदनीय घरो जेवां के तेउए अथवा बीजाउए श्रावक करेलां होय, प्रत्ययवंत अथवा प्रीति उपजावनारां होय, अथवा दानने विषे स्थिरतावाळां होय, निश्चे अहीं मने मलशे एवो ज्यां विश्वास होय, ज्यां सर्व यतिउनो प्रवेश संमत होय, जेने घणा साधुउ संमत (इष्ट) होय अथवा ज्यां घरनां घणां मनुष्योने साधुउ संमत होय तथा ज्यां दाननी आज्ञा दइ राखी होय अथवा सर्व साधुउ सरखा ठे एम धारीने ज्यां लघु शिष्य पण इष्ट होय, परंतु मुख जोइने टीलुं करातुं न होय तेवां घरने विषे जोइती वस्तु अणदीठे आ प्रमाणे कहेवुं कल्पे नहीं के 'हे आयुष्मन्! आ वस्तु ठे?' एम नहीं जोयेली वस्तुने माटे पूठवुं कल्पे नहीं ए अर्थ जाणवो. 'हे जगवन् ! ते शामाटे ?' ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न करवाथी गुरु कहे ठे के 'श्रद्धावान् गृहस्थ मूल्य वडे लावे अने जो मूल्य वडे न मळे तो घणी श्रद्धाने लीधे चोरी पण करे.' कृपणना घेर वस्तु अणदीठे पण मागवामां दोष नथी. १७.

७ चोमासुं रहेला हमेशां एकासणुं करनार साधुने सूत्र पौरुषी कीधा पठी एक वार गोचरी जवाना काले गृहस्थनुं घर कल्पे ठे एटले जात अने पाणीने अर्थे गृहस्थना घरमांथी नीकळवुं अने प्रवेश करवो कल्पे ठे, पण बीजी वार कल्पे नहीं. अन्यत्र कहेतां आचार्य आदिनी वैयावृत्त्य करनाराउने वर्जीने ए अर्थ ठे; तेउ जो एक वार जोजन करवा वडे वैयावृत्त्य करी न शके तो बे वार पण जोजन करे, कारण के तपथी वैयावृत्त्य श्रेष्ठ ठे. आचार्यनी वैयावृत्त्य करनारा, उपा-

ध्यायनी वैयावृत्य करनारा, तपस्वीनी वैयावृत्य करनारा तेमज ग्लाननी वैयावृत्य करनारा साधुजने वर्जीने बीजा साधु एक वार भोजन करे. ज्यांसुधी व्यंजन कहेतां मूछ, दाढी, बगल आदिना वाल न आव्या होय त्यांसुधी शिष्य अने शिष्याने पण बे वखत भोजन करवामां दोष नथी. अथवा जे वैयावृत्य करनार होय ते वैयावृत्यकर जाणवो. (तेने पण बे वार कल्पे छे.) आचार्यश्च वैयावृत्यश्च आचार्यवैयावृत्यौ. एवी रीते उपाध्याय आदिने विषे पण जाणवुं. तेथी आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, ग्लान अने लघु शिष्यनी वैयावृत्य करनाराने बे वखत भोजन करवामां पण दोष नथी ए अर्थ समजवो. २०.

चोमासुं रहेला एकांतरे उपवास करनार साधुने आ हवे पछी कहीशुं एटलुं विशेष छे. ते सवारमां गोचरी जवा माटे (उपाश्रयथी) नीकलीने पहेलांज शुद्ध प्रासुक आहार (आणी) खाइने, छाश आदिक पीइने, पातरांने निर्लेप करीने–वस्त्रथी लुही नाखीने अने प्रमार्जीने–धोइ नाखीने ते जो चलावी शके तो तेटलाज भोजन वडे ते दिवसे रहेवुं कल्पे छे. जो ते साधु आहार थोडो थवाथी न चलावी शके तो तेने बीजी वार गृहस्थने घेर भात पाणीने माटे नीकलवुं अने पेसवुं कल्पे छे. २१. चोमासुं रहेला नित्य छठ्ठ करनार साधुने गृहस्थने घेर भात पाणीने अर्थे नीकलवा अने पेसवाने बे गोचरीना काल कल्पे छे एटले बे वखत गोचरीए जवुं कल्पे छे. २२. चोमासुं रहेला नित्य अठ्ठम करनार साधुने गृहस्थने घेर भात पाणीने अर्थे नीकलवा अने पेसवाने त्रण गोचरीना काल कल्पे छे एटले त्रण वार गोचरीए जवुं कल्पे छे. २३. चोमासुं रहेला नित्य अठ्ठम उपरांत तप करनार साधुने गृहस्थने घेर भात पाणीने अर्थे नीकलवा अने पेसवाने सर्वे गोचरीना काल कल्पे छे एटले चार, पांच विगेरे वखत गोचरीए जवुं कल्पे छे. ज्यारे इच्छा थाय त्यारे गोचरी लावे, पण सवारमां लावेली राखी शके नहीं, कारण के तेथी संयम, जीव-

संसक्ति, सर्पाघ्राण[1] आदि दोषोनो संभव थाय छे. २४. ए प्रमाणे आहारविधि कहीने हवे पीवाना पदार्थोनी विधि कहे छे.

ए चोमासुं रहेला नित्य एकासणुं करनार साधुने सर्व प्रकारनां पाणी कल्पे छे. ते सर्व एटले आचारांगमां कहेलां एकवीश प्रकारनां अथवा अहीं जे कहेवामां आवशे ते नव प्रकारनां पाणी समजवां. तेमां आचारांगमां कहेलां पाणी आ प्रमाणे छे–उत्स्वेदिम १, संस्वेदिम २, तंदुलोदक ३, तुषोदक ४, तिलोदक ५, जवोदक ६, आयाम ७, सोवीर ८, शुद्धविकट ९, अंबय १०, अंबाडक ११, कविठ्ठ (कपित्थ) १२, मउलिंग (मातुलिंग) १३, दक्ख (द्राक्ष) १४, दाडिम १५, खर्जूर १६, नालिकेर १७, कयर १८, बोरजल १९, आमलग २० अने चिंचानां पाणी २१ प्रथम अंग (आचारांग)ने विषे कहेलां छे. तेमांथी प्रथमनां नव तो अहीं पण कहेलां छे. चोमासुं रहेला एकांतरे उपवास करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ते आ प्रमाणे–उत्स्वेदिम एटले आटा विगेरेथी खरडायेला हाथ आदिना धोणनुं पाणी १, संस्वेदिम एटले पांदडां आदि उकालीने ठंडा पाणी वडे जे पाणी सिंचन कराय ते २ अने चोखाना धोणनुं पाणी ३. चोमासुं रहेला नित्य छठ्ठ करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ते आ प्रमाणे–तलना धोणनुं पाणी १, व्रीहि (डांगर) आदि तुषना धोणनुं पाणी २ अने जवना धोणनुं पाणी ३. चोमासुं रहेला नित्य अठ्ठम करनार साधुने त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ते आ प्रमाणे–आयामक एटले उसामण १, सोवीर एटले कांजीनुं पाणी २ अने शुद्धविकट एटले उनुं पाणी ३. चोमासुं रहेला अठ्ठम उपरांत तप करनार साधुने एक उनुं पाणी लेवुंज कल्पे छे. ते पण सिक्थु[2] रहित होय तो कल्पे, पण सिक्थु सहित होय तो न कल्पे. चोमासुं रहेला अनशन करनार साधुने एक उनुं पाणी लेवुं कल्पे छे, ते पण सिक्थु रहित पण सिक्थु सहित नहीं, ते पण गळेलुं

१ सर्प सुंघी जाय तेथी तेनुं विष संक्रमे. २ कोइ पण प्रकारनो दाणो.

कल्पे पण तृण आदि लागवाथी अणगल न कल्पे, ते पण परिमित कल्पे पण अपरिमित नहीं, ते पण कांइक थोडुं लेवुं, पण बहु थोडुं लेवुं नहीं, केमके तेथी तृष्णा उपशम पामती नथी. २५.

१० चोमासुं रहेला दत्तिनी संख्या (अभिग्रह) करनारा साधुने भोजननी पांच दत्ति अने पाणीनी पांच दत्ति, अथवा भोजननी चार दत्ति अने पाणीनी पांच दत्ति, अथवा भोजननी पांच दत्ति अने पाणीनी चार दत्ति लेवी कल्पे छे. त्यां थोडुं अथवा घणुं जे एक वार आपवामां आवे छे ते दत्ति कहेवाय छे. तेमां लवणास्वादन[1] प्रमाणमां पण भोजन आदि ग्रहण करतां एक दत्ति थाय, कारण के लवण थोडुं आपवामां आवे छे अने तेटलाज प्रमाणमां भात पाणी जो ते ग्रहण करे तो ते पण दत्ति गणाय छे. पांच ए उपलक्षण छे तेथी चार, त्रण, बे, एक, छ अथवा सात—जेटलो अभिग्रह कर्यो होय ते प्रमाणे कहेवी. आखा सूत्रनो आ भाव छे के जेटली दत्ति भात पाणीनी राखेली होय तेटलीज तेने कल्पे छे, पण परस्पर समावेश करवो कल्पे नहीं तेमज दत्तिथी वधारे लेवुं पण कल्पे नहीं. ते दिवसे तेटलाज भोजन वडे रहेवानुं तेने कल्पे छे, पण गृहस्थना घेर भात पाणीने अर्थे बीजी वार जवुं अने पेसवुं कल्पे नहीं. २६.

११ चोमासुं रहेला साधु साध्वीओने आ (हवे कहेशे ते) जग्याए भिक्षा माटे जवुं कल्पे नहीं. एटले एक शय्यातरगृह कहेतां उपाश्रयना मालेकनुं घर अने बीजां छ घर तजवां जोइए, कारण के तेओ नजीक होवाथी साधुना गुणानुरागी थवा वडे उद्गमादि दोषनो संभव रहे. कोने जवुं न कल्पे ? निषिद्ध घरथी पाछा फरनारा साधुने न कल्पे. एटले निषिद्ध करेलां घरथी तेओने बीजी जगाए जवुं कल्पे ए भाव छे. अहीं भिक्षाने माटे जवामां बहुवचनने बदले एकवचन वापरेल छे, पण बहुपणुं आ प्रमाणे देखाडे छे. सात घरमां माणसोथी भरपूर जमणवार एटले संखडी होय त्यारे जवुं कल्पे नहीं. अहीं अर्थमां सूत्रकारना जूदा जूदा मतो छे. एक वली

[1] लूणनी चपटी जेटलुं.

नहीं. ए प्रमाणे बाकीनी बंने हकीकत जाणवी. ३३. तेना घेर ते साधुना आववा पहेलां मसूर आदि दाल प्रथम रांधवा मांडी होय अने तंडुल आदि पाछलथी रांधवा मांडेल होय तो तेने मसूर आदि दाल लेवी कल्पे, पण तंडुल आदि लेवुं कल्पे नहीं. ३४. तेने घेर ते साधुना आववा पहेलां जो बंने वस्तु रांधवा मांडेल होय तो बंने लेवी कल्पे अने तेना आववा पछी जो बंने वस्तु रांधवा मांडी होय तो बंने वस्तु लेवी कल्पे नहीं. जे चीज तेना आववा पहेलां रांधवा मांडी होय ते तेने लेवी कल्पे अने जे चीज तेना आववा पछी रांधवा मांडी होय ते लेवी कल्पे नहीं. ३५. चोमासुं रहेल साधु साध्वी गृहस्थने घेर भिक्षा लेवा दाखल थयेल होय तेने जो रही रहीने वरसाद पडे तो आरामनी नीचे यावत् झाडना मूले जवुं कल्पे छे, पण पहेलां ग्रहण करेल भात पाणी सहित भोजनवेला अतिक्रमवी कल्पे नहीं. त्यारे जो वरसाद बंध न रहे तो आराम आदिने विषे रहेल साधुने शुं करवुं? ते कहे छे. प्रथम उद्गम आदिथी शुद्ध आहार खाइने, पीइने, पात्र निर्लेप करीने अने धोइ नाखीने एक बाजुए पात्रादि उपकरणने राखीने (शरीरनी साथे वींटा-लीने) वर्षता वरसादमां सूर्य अस्त थयां पहेलां ज्यां उपाश्रय होय त्यां जवुं कल्पे छे, पण गृहस्थने घेरज ते रात्री अतिक्रमवी (रहेवी) तेने कल्पे नहीं, कारण के एकला बहार वसता साधुने 'स्वपरसमुत्था' एटले पोता थकी अने पर थकी उत्पन्न थता घणा दोषोनो संभव छे तेमज उपाश्रयमां रहेला साधुओ पण अधृति (चिंता) करे (ते पण कारण छे). ३६. चोमासुं रहेला साधु साध्वी गृहस्थने घेर भिक्षा लेवा दाखल थयेल होय तेने जो रही रहीने वरसाद पडे तो आरामनी नीचे यावत् झाडना मूले जवुं कल्पे छे. ३७. हवे रही रहीने वरसाद पडतो होय तो जो आराम आदिने विषे साधु उभा रहे तो ते कइ विधिए (उभा रहे) ते कहे छे. विकटगृह, वृक्षमूल आदिने विषे रहेल साधु होय तेने अने एक साध्वीने साथे रहेवुं कल्पे नहीं, एक साधु अने बे साध्वीओने साथे रहेवुं कल्पे नहीं, बे साधु अने एक साध्वीने साथे रहेवुं कल्पे नहीं, बे साधु

अने बे साध्वीओने साथे रहेवुं कल्पे नहीं; जो त्यां कोइ पांचमो क्षुल्लक (नानो चेलो) अथवा चेली होय अथवा ते स्थान बीजानो दृष्टिविषय होय एटले बीजा जोइ शके तेम होय अथवा बहु द्वार सहित ते स्थान होय तो साथे रहेवुं कल्पे. तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे—एक साधुने एक साध्वी साथे रहेवुं कल्पे नहीं, एक साधुने बे साध्वी साथे रहेवुं कल्पे नहीं, बे साधुने एक साध्वी साथे रहेवुं कल्पे नहीं तेमज बे साधुने बे साध्वी साथे रहेवुं कल्पे नहीं. जो अहीं कोइ पण लघु चेलो अथवा चेली (पांचमुं) साक्षी होय तो (रहेवुं) कल्पे छे. अथवा वरसाद पडते छते पोतानुं काम नहीं मूकनारा एवा लुहार आदिनी दृष्टिए अथवा ते घरना कोइ पण बारणे आ प्रमाणे पांचमा विना पण रहेवुं कल्पे छे. ३८. चोमासुं रहेला साधुने गृहस्थने घेर भिक्षा लेवा माटे यावत् (हवे कहेशे ते रीते) रहेवुं कल्पे नहीं. त्यां एक साधु अने एक श्राविकाने साथे रहेवुं कल्पे नहीं. ए प्रमाणे चार भांगा छे. जो अहीं कोइ पण पांचमो स्थविर अथवा स्थविरा साक्षी होय तो रहेवुं कल्पे छे अथवा बीजा जोइ शके तेवुं ते स्थान होय अथवा बहु द्वार सहित ते स्थान होय तो साथे रहेवुं कल्पे छे. एवी रीते साध्वी अने गृहस्थनी पण चतुर्भंगी जाणवी. अहीं साधुनुं एकाकीपणुं कह्युं छे ते कारणसर साधुने एकला जवुं पडे तेने माटे समजवुं. सांघाटिकने विषे, बीजा कोइ साधुने उपवास होय अथवा असुख होवाथी कारणे तेम थाय छे. नहीं तो उत्सर्ग मार्गे साधु पोताना सहित बीजो एटले बे जणा अने साध्वी त्रण जणी विचरे एटले साथे जाय एम समजवुं. ३९.

१४ चोमासुं रहेला साधु साध्वीओने "मारा माटे तुं लावजे" ए प्रमाणे जेने नहीं कह्युं होय एवा साधुए "तारा योग्य हुं लावीश" एम जेने जणाव्युं नथी एवा साधुने निमित्ते अशन आदि आहार लाववो कल्पे नहीं. ४०. "हे भगवन् ! ते शामाटे ?" एम शिष्ये प्रश्न कर्ये छते गुरु कहे छे के "जेने

१ आ सूत्र पण वहोरवा गया होय अने वरसादना कारणथी ऊभा रहेवुं पडे तेने माटे समजवुं.

ां कहेलां छे. कालाथी धोला वर्ण सुधी. वृक्षना समान वर्णवालां ते सूक्ष्म पुष्पो प्रसिद्ध छे. जे छद्मस्थ साधु साध्वीए जाणवानां, जोवानां अने प्रतिलेखवानां छे. ते सूक्ष्म पुष्पो जाणवां. हवे ते सूक्ष्म इंडां कयां छे ? एम शिष्ये पूछयाथी गुरु कहे छे के–सूक्ष्म इंडां पांच प्रकारनां कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–मधमाखी, माकड विगेरनुं इंडुं ते उद्दंशांड १, लूता जे लोकमां 'कुलातरां' ना नामे प्रसिद्ध छे तेनुं इंडुं ते उत्कलिकांड २, पिलीपिका एटले कीडी, तेनुं इंडुं ते पिपीलिकांड ३, हलिका एटले घरोली अथवा ब्राह्मणी, तेनुं इंडुं ते हलिकांड ४ अने हल्लोहलिआ एटले अहिलोडी, सरटी जे लोकमां 'काकिडी' कहेवाय छे तेनुं इंडुं ते हल्लोहलिकांड ५. जे साधु साध्वीए जाणवानां, जोवानां अने प्रतिलेखवानां छे. ते सूक्ष्म इंडां जाणवां. हवे लयन एटले जीवोनो आश्रय, ज्यां कीडी आदि अनेक सूक्ष्म जीवो थाय छे ते लयन अर्थात् सूक्ष्म बिलो ते कयां छे ? एम शिष्ये पूछ्याथी गुरु कहे छे बिल पांच प्रकारनां कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–उत्तिंगा एटले गर्दभना आकारना जीवो, [illegible]ल–भूमि उपर बांधेल घर ते उत्तिंगलयन १, भृगु एटले सुकायेल जमीननी रेखा–पाणी सुकाइ गया पछी पाणीना क्यारा आदिने विषे वे भाग (फाट) पडे ते भृगुलयन २, सरल एटले सीधुं बील ते सरललयन ३, ताल वृक्षना मूलना आकारनुं नीचे पहोळुं अने उपर सूक्ष्म बिल ते तालमूल ४ अने शंबुकावर्त्त एटले भमरानुं घर ५. आ पांचे छद्मस्थ साधु साध्वीए जाणवानां, जोवानां अने प्रतिलेखवानां छे. ते सूक्ष्म बिल जाणवां. हवे ते सूक्ष्म स्नेह (अप्काय) कया छे ? एम शिष्ये पूछ्याथी गुरु कहे छे के–सूक्ष्म स्नेह पांच प्रकारना कहेला छे. ते आ प्रमाणे–अवश्याय एटले ओस जे आकाशमांथी (रात्रे) पडे छे ते पाणी १, हिम प्रसिद्ध छे २, महिका एटले धूमरी ३, करका–करा प्रसिद्ध छे ४ अने लीली जमीनमांथी उगी नीकलेल तृणना अग्र भाग

पर विंदुरूप जल जे थवना अंकुरा आदिने विषे देखाय छे ते ५. जे छद्मस्थ साधुए जाणवाना, जोवाना अने प्रतिलेखवाना छे. ते सूक्ष्म स्नेह जाणवा. ४५.

१७ चोमासुं रहेल साधु गृहस्थने घेर ज्ञात पाणी माटे नीकलवा पेसवा इछे तो तेने पूछ्या सिवाय (नीकलवुं पेसवुं) कल्पे नहीं. कोने पूछ्या सिवाय ते कहे छे. सूत्रार्थना देनारा आचार्यने १, सूत्र नणावनार उपाध्यायने २, ज्ञान आदिने विषे सीदताने स्थिर करनार अने उद्यमवालाने उत्तेजन आपनार स्थविरने ३, ज्ञान आदिने विषे प्रवर्त्तावनार प्रवर्त्तकने ४, जेनी पासे आचार्यो सूत्र आदिनो अभ्यास करे छे ते गणिने ५, तीर्थंकरना शिष्य गणधरने ६, जे साधुओने लइने वहार अन्य क्षेत्रमां रहे छे, गछने माटे क्षेत्र, उपधिनी मार्गणा आदिमां प्रधावन विगेरेना करनार छे एटले उपधि विगेरे लावी आपनार छे अने सूत्र तथा अर्थ ए बंनेने जाणनार छे ते गणावछेदकने ७, अथवा अन्य (सामान्य) साधु जे वय अने पर्याये करीने लघु होय पण जेने गुरुपणाए अंगीकार करीने विचरे छे तेने. ते साधुने आचार्य यावत् जेने गुरुपणाए मुकरर करीने विचरे छे तेने पूछीने (नीकलवुं पेसवुं) कल्पे छे. हवे केवी रीते पूछवुं ते कहे छे. 'हे पूज्य ! जो आपनी आज्ञा होय तो हुं गृहस्थने घेर ज्ञात पाणीने माटे नीकलवा पेसवा इछुं छुं.' जो आचार्य आदि ते साधुने आज्ञा आपे तो तेने गृहस्थने घेर ज्ञात पाणी माटे नीकलवुं पेसवुं कल्पे छे. जो आचार्य आदि ते साधुने आज्ञा न आपे तो गृहस्थने घेर ज्ञात पाणी माटे नीकलवुं पेसवुं कल्पे नहीं. 'हे पूज्य ! ते शा हेतुथी ?' एम शिष्ये प्रश्न कर्याथी गुरु कहे छे के 'आचार्य आदि विघ्नना परिहारने जाणे छे.' ४६.

एवीज रीते विहार एटले जिनचैत्य, तेने विषे जवुं, विचारभूमि एटले शरीर चिंता आदिने माटे जवुं अथवा उछ्वास आदि वर्जीने लीपवुं, सीववुं, लखवुं आदिक जे कांइ काम होय ते सर्व पूछीने करवुं ए तत्त्व छे. एवीज रीते भिक्षा आदि माटे अथवा ग्लान आदिने कारणे एक गामथी बीजे गाम जवुं होय तो पूछीने जवुं, नहीं तो वर्षाऋतुमां एक गामथी बीजे गाम जवुं ए अनुचितज छे. ४७.

चोमासुं रहेल साधु जो बीजी कोइ विगय खावाने इच्छे तो आचार्य यावत् जेने गुरुपणाए कबुल करीने विचरे छे तेने पूछ्या सिवाय (विगय खावी) कल्पे नहीं. आचार्य यावत् जेने गुरुपणाए करीने विचरे छे तेने पूछीने (विगय खावी) कल्पे छे. केवी रीते पूछवुं ते कहे छे–'हे पूज्य! आपनी आज्ञा होय तो अनेरी विगय आटला प्रमाणमां अने आटला वखत खावाने इच्छुं छुं.' ते आचार्य आदि जो तेने आज्ञा आपे तो तेने अनेरी विगय खावी कल्पे छे. ते आचार्य आदि जो तेने आज्ञा न आपे तो अनेरी विगय खावी कल्पे नहीं. 'हे पूज्य! ते शामाटे ?' एम शिष्ये प्रश्न कर्याथी गुरु कहे छे के आचार्यो लाभालाभ जाणे छे. ४८.

चोमासुं रहेल साधु वात, पित्त, श्लेष्म अने सन्निपात संबंधी रोगोनी कोइ प्रकारनी चिकित्सा कराववाने इच्छे तो (आचार्य इत्यादिने पूछीने करवी विगेरे) अगाउ जणाव्या मुजब सर्व अहीं कहेवुं. ते चिकित्सा आतुर, वैद्य, प्रतिचारक अने भैषज्यरूप चार प्रकारनी छे. कह्युं छे के 'भिषक् (वैद्य), द्रव्यो, उपस्थाता (नोकर) अने रोगी ए चार प्रकार चिकित्सितना छे.' ते प्रत्येकना चार चार प्रकार कह्या छे. दक्ष, शास्त्रना अर्थ जाण्या छे एवो, दृष्टकर्मा अने शुचि ए चार प्रकार भिषक्ना छे. बहुकल्प, बहुगुण, संपन्न अने योग्य ए चार प्रकार औषधना छे. अनुरक्त, शुचि, दक्ष अने बुद्धिमान् ए चार प्रकार प्रतिचारकना छे तथा आढ्य (धनवान), रोगी, भिषक्ने वश अने ज्ञायक एटले सत्त्ववान् ए चार प्रकार रोगीना छे. ४९.

चोमासुं रहेल साधु जो कोइ प्रशस्त, कल्याणकारी, उपद्रवने हरनार, धन्य करवावाळुं, मंगल करनार, शोभा आपनारुं अने महा प्रभाववाळुं एवी जातनुं कोइ तपःकर्म अंगीकार करीने विचरवाने इच्छे तो गुरुने पूछीने विचरवुं (करवुं) कल्पे इत्यादि अगाउनी माफक सर्व कहेवुं. ५०.

चोमासुं रहेल साधु जे इच्छे, ते केवा साधु ? तो के अपश्चिम एटले चरम (छेल्लुं) मरण ते अपश्चिम मरण, पण प्रतिक्षणे आयुष्यना दलिक अनुभववारूप आवीचि मरण नहीं. अपश्चिम मरण

तेज अंत छे जेने विषे अने तेने विषे थयेल ते अपश्चिम मरणांतिकी एवी; शरीर, कषाय आदि जेथी कृश कराय छे तेवी संलेखना द्रव्य भाव भेदे करीने भिन्न (भेदवाली) छे. 'चत्तारि विचित्ताइं' इत्यादि. तेनुं जोषण एटले सेवन—ते संलेखनानी सेवा, तेनाथी क्षय करी नाख्युं छे शरीर जेणे, एटले अपश्चिम मरणांतिकी संलेखनानी सेवाथी (सेवनथी) क्षय करी नाख्युं छे शरीर जेणे एवा, अने तेथी करीने भात पाणीनुं प्रत्याख्यान कर्युं छे जेणे एवा, अने तेथी करीने पादपोगमन (अनशन) कर्युं छे जेणे एवा, अने तेथी करीने काल एटले जीवितकालने नहीं इच्छता एवा—साधु विचरवाने (ते प्रमाणे करवाने) इच्छता छता गृहस्थना घरमां नीकलवा पेसवाने, अशन आदिकनो आहार करवाने, मल मूत्र परठववाने, स्वाध्याय करवाने तथा धर्मजागरिका जागवाने एटले आज्ञा, अपाय, विपाक अने संस्थानविचय ए चार भेदरूप धर्मध्याननना विधान आदि वडे जागवाने इच्छे तो (गुरुने) पूछ्या सिवाय तेने कांइ पण करवुं कल्पे नहीं. ते सर्व अगाउनी माफक अहीं पण जाणवुं. आ सर्व गुरुनी आज्ञा वडेज करवुं कल्पे छे. ५१.

१० चोमासुं रहेल साधु वस्त्र, पात्र, कंबल (धाबली), पादप्रोंछन एटले रजोहरण तेमज अन्य उपधि तपाववाने एटले एक वार तडकामां मूकवाने अने नहीं तपवाथी कुत्सापनक आदि दोषनी[1] उत्पत्तिनो संभव होवाथी फरी फरी तपाववाने इच्छे त्यारे एक साधु अथवा अनेक साधुने जणाव्या—कह्या सिवाय तेने गृहस्थने घेर भात पाणीने माटे नीकलवुं पेसवुं, अशन आदिनो आहार करवो, जिनचैत्ये जवुं, शरीरचिंता आदिने माटे जवुं, स्वाध्याय करवो, कायोत्सर्ग करवो तेमज एक स्थाने आसन करीने रहेवुं कल्पे नहीं. जो अहीं कोइ पण नजीकमां रहेल एक अथवा अनेक साधु होय तो तेने आ प्रमाणे कहेवुं जोइए. 'हे आर्य ! ज्यांसुधी हुं गृहस्थने घेर जाउं आवुं यावत् कायोत्सर्ग करुं अथवा वीरासन आदि करीने एक स्थाने रहुं त्यांसुधी आ उपधिने तमे

[1] कुंथुवा परूवा, पनक एटले फुगी वलवी इत्यादि.

संभालजो.' ते जो वस्त्रने संभालवानुं अंगीकार करे तो तेने गृहस्थने घेर गोचरी आदिए जवुं, अशन आदिनो आहार करवो, जिनचैत्ये जवुं अथवा शरीरनी चिंता आदिने माटे जवुं, स्वाध्याय अथवा कायोत्सर्ग करवो तेमज वीरासन आदि करी एक स्थाने रहेवुं कल्पे, ए सर्व कहेवुं. ते जो अंगीकार न करे तो गृहस्थना घेर जवुं यावत् एक स्थाने रहेवुं कल्पे नहीं. ५२.

१९ चोमासामां रहेल साधु साध्वीने कल्पे नहीं. (शुं न कल्पे ते कहे छे.) जेणे शय्या अने आसन ग्रहण करेल नथी ते 'अनभिगृहीतशय्यासनः' कहेवाय; अने अनभिगृहीतशय्यासन तेज अनभिगृहीतशय्यासनिकः, अहीं 'इक' प्रत्यय स्वार्थे छे. तेवा प्रकारना एटले जेणे शय्या अने आसन ग्रहण करेल नथी एवी रीते साधुए रहेवुं कल्पे नहीं. एटले वर्षाकालमां उपाश्रयमां पीठ (पाटलो), फलक (पाटीयुं) आदि ग्रहण करवां ए भाव जाणवो. नहीं तो शीतल भूमिने विषे सूवा बेसवामां कुंथुवा आदिनी विराधना थवाने लीधे कर्मनुं तेमज दोषनुं आदान एटले उपादान कारण थाय छे. आ अनभिगृहीतशय्यासनिकत्व जाणवुं. तेनेज दृढ करे छे. जेणे शय्या आसन ग्रहण करेल नथी तेने, एक हाथ सुधी उंची के जेथी कीडी आदिनो वध अने सर्प आदिनो दंश न थाय तेमज 'अकुचा कुच परिस्पन्दे' ए वचनथी परिस्पन्द रहित एटले निश्चल एवी जातनी चारे बाजु काठीवाली शय्या जेने न होय ते अनुच्चाकुचिकः कहेवाय तेने, प्रयोजन वगर बांधनारने, (एक वार उपरांत प्रयोजन वगर बे, त्रण, चार वार कंबा (काठी) उपर बंध बांधे अने चारनी उपर घणा अड्डुक (आडीआ) बांधे तथा वली स्वाध्यायने विषे विघ्न पलिमंथादि दोषो थाय तेथी बंधन आदिना तेमज पलिमंथना परिहार माटे जो एक आखुं चंपा आदिनुं पाटीयुं मले तो तेज ग्रहण करवुं) जेने आसन नक्की करी राख्युं नथी तेने, (कारण के वारंवार एक स्थानथी बीजे स्थाने जवाथी जीवनो वध थाय) अनेक आसन सेवनारने, संथारो, पात्र आदिने तडकामां नहीं मूकनारने, ईर्या आदि समितिने विषे अनुपयुक्तने, जेने पडिलेहण करवानी टेव नथी एटले दृष्टि वडे रजोहरण

लवानुं अंगीकार करे तो तेने गृहस्थने घेर गोचरी आदिए जवुं, अशन आदिना आहार करवो, जिनचैत्ये जवुं अथवा शरीरनी चिंता आदिने माटे जवुं, स्वाध्याय अथवा कायोत्सर्ग करवो तेमज वीरासन आदि करी एक स्थाने रहेवुं कल्पे, ए सर्व कहेवुं. ते जो अंगीकार न करे तो गृहस्थना घेर जवुं यावत् एक स्थाने रहेवुं कल्पे नहीं. ५२.

१ए चोमासामां रहेल साधु साध्वीने कल्पे नहीं. (शुं न कल्पे ते कहे छे.) जेणे शय्या अने आसन ग्रहण करेल नथी ते 'अनभिगृहीतशय्यासनः' कहेवाय; अने अनभिगृहीतशय्यासन तेज अनभिगृहीतशय्यासनिकः, अहीं 'इक' प्रत्यय स्वार्थे छे. तेवा प्रकारना एटले जेणे शय्या अने आसन ग्रहण करेल नथी एवी रीते साधुए रहेवुं कल्पे नहीं. एटले वर्षाकालमां उपाश्रयमां पीठ (पाटलो), फलक (पाटीयुं) आदि ग्रहण करवां ए भाव जाणवो. नहीं तो शीतल भूमिने विषे सूवा बेसवामां कुंथुवा आदिनी विराधना थवाने लीधे कर्मनुं तेमज दोषनुं आदान एटले उपादान कारण थाय छे. आ अनभिगृहीतशय्यासनिकत्व जाणवुं. तेनेज दृढ करे छे. जेणे शय्या आसन ग्रहण करेल नथी तेने, एक हाथ सुधी उंची के जेथी कीडी आदिनो वध अने सर्प आदिनो दंश न थाय तेमज 'अकुचा कुच परिस्पन्दे' ए वचनथी परिस्पन्द रहित एटले निश्चल एवी जातनी चारे बाजु काठीवाली शय्या जेने न होय ते अनुच्चाकुचिकः कहेवाय तेने, प्रयोजन वगर बांधनारने, (एक वार उपरांत प्रयोजन वगर बे, त्रण, चार वार कंबा (काठी) उपर बंध बांधे अने चारनी उपर घणा अड्डुक (आडीआ) बांधे तथा वली स्वाध्यायने विषे विघ्न पलिमंथादि दोषो थाय तेथी बंधन आदिना तेमज पलिमंथना परिहार माटे जो एक आखुं चंपा आदिनुं पाटीयुं मले तो तेज ग्रहण करवुं) जेने आसन नक्की करी राख्युं नथी तेने, (कारण के वारंवार एक स्थानथी बीजे स्थाने जवाथी जीवनो वध थाय) अनेक आसन सेवनारने, संथारो, पात्र आदिने तडकामां नहीं मूकनारने, ईर्या आदि समितिने विषे अनुपयुक्तने, जेने पडिलेहण करवानी टेव नथी एटले दृष्टि वडे रजोहरण

आदिथी प्रमार्जन करवानी टव नथी तेने—एटले तेवा प्रकारना स्वरूपवाला (आचरणवाला) साधुने संयम मुश्केलीथी आराधन थाय तेवुं थाय छे. ५३.

आदान कहीने हवे अनादान कहे छे. शय्या, आसननुं ग्रहण करवुं, एक हाथ उंची अने निश्चल शय्या राखवी तेमज पक्षमां एक वार सप्रयोजन शय्यानी काठी उपर बंध बांधवा तेथी कर्मनुं तेमज दोषनुं अनादान एटले तेवा कारणनो अभाव छे. ते हवे प्रकट करी देखाडे छे. जेणे आसन अने शय्या ग्रहण करेल छे तेने, जेने एक हाथ उंची अने निश्चल शय्या छे तेने, प्रयोजनपूर्वक काठी उपर बंध बांधे छे तेने, जेने मित एटले नक्की करेलुं छे आसन तेने, वस्त्र आदिने जे तडकामां मूके छे तेने, ईर्या आदि समितिने विषे उपयोगवालाने तेमज वारंवार पडिलेहण करवानी एटले प्रमार्जवानी जेने टेव छे तेने एटले आवा प्रकारना साधुने ते ते प्रकारे संयम सुखे करीने आराधन थाय तेवुं थाय छे. ५४.

२० चोमासुं रहेल साधु साध्वीओने छल्ला, मात्रानी त्रण जग्या कल्पे छे. जे कांइ पण सहन करी शके नहीं (वेग रोकी शके नहीं) तेने त्रण जग्या अंदर राखवी, जे सहन करी शके तेने त्रण जग्या बहार राखवी. दूर जवामां अरूचण आवे तो मध्य भूमि राखवी, तेमां पण अरूचण आवे तो नजीकनी भूमि राखवी. ए प्रमाणे आसन्न, मध्य अने दूर ए त्रण प्रकारनी भूमि छे तेने पडिलेहवी. 'जे प्रमाणे चोमासामां करवामां आवे छे ते प्रमाणे शियाला अने उनालामां करवामां आवतुं नथी तेनुं कारण हे पूज्य! शुं छे?' ए प्रमाणे शिष्ये प्रश्न कर्ये छते गुरु कहे छे के 'चोमासामां प्राये करीने जीव जेवा के शंखनक, इन्द्रगोप, कृमि आदि, तृण (ए प्रसिद्ध छे), बीज जेवां के ते ते वनस्पतिना नवा उत्पन्न थयेला अंकुर, पनक एटले फुलण तेमज बीजमांथी उत्पन्न थयेल हरित ए सर्वे पुष्कल थाय छे. (तेथी चोमासा माटे खास कहेवामां आवेल छे.) ५५.

२१ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने त्रण मात्रां (पात्र) लेवां कल्पे छे. ते आ प्रमाणे—एक छल्लानुं, बीजुं

मूत्रनुं अने त्रीजुं श्लेष्मनुं. मात्रुं (पात्र) न होवाथी वखत वीती जवाने लीधे उतावल करतां आत्मविराधना थाय तथा वरसाद वरसतो होय तो वहार जवामां संयमविराधना थाय. ५६.

३२ 'धुवा लोअं ब जिणाणं, निच्चं थेराण वासावासासु' एटले जिनकल्पीने निरंतर अने स्थविरकल्पीने चतुर्मासमां नित्य लोच कराववो ए वचनथी चोमासुं रहेल साधु साध्वीने असाड चतुर्मास पछी लांबा केश तो दूर रहो, परंतु गायना रुंवा सरखा पण केश राखवा कल्पे नहीं; तेथी ते रात्रि एटले भाद्रपद सुदि पांचमनी रात्रि अने हाल सुदि चोथनी रात्रि उल्लंघवी जोइए नहीं. ते पहेलांज लोच कराववो जोइए. तेनो आ भाव छे. जो समर्थ होय तो चोमासामां हमेशां लोच कराववो. जो असमर्थ होय तो ते रात्रि (भाद्रपद सुदि ४ नी रात्रि) उल्लंघवी जोइए नहीं. पर्युषणा पर्वमां लोच विना अवश्ये करीने प्रतिक्रमण करवुं कल्पे नहीं, कारण के केश राखवाथी अप्कायनी विराधना थाय छे अने तेना संसर्गथी जुअनी उत्पत्ति थाय छे अने केश खणतां थका ते जुअनो वध थाय छे अथवा माथामां नख वागे छे. जो अस्त्राथी अथवा कातरथी मुंडन करावे तो आज्ञाभंग आदि दोषो थाय छे, संयम अने आत्मानी विराधना थाय छे, जुअनो वध थाय छे, हजाम पश्चात्कर्म[1] करे छे अने शासननी अपभ्राजना थाय छे तेथी लोचन श्रेष्ठ छे. जो कोइ लोच सहन न करी शके, अथवा लोच करवाथी कोइने ताव आदि आवी जवा संभव होय, अथवा बालक होवाथी रडे अथवा तेथी धर्म त्यजी दे तो तेणे लोच करवो नहीं. साधुए उत्सर्गथी लोच करवो जोइए अने अपवादथी बाल, ग्लान आदिए मुंडन कराववुं जोइए. तेमां प्रासुक जल वडे माथाने धोइने प्रासुक पाणीथी नापित (हजाम) ना हाथ पण धोवराववा. जे अस्त्राथी (मुंडन) कराववाने असमर्थ होय अथवा जेना माथामां गुंबडां आदि थयेल होय तेना केश कातरवा कल्पे. (पंदर पंदर दिवसे शय्याना बंध छुटा करवा अने प्रतिलेखवा जोइए अथवा सर्व काल पंदर पंदर दिवसे

१ हजाम हजामत कर्या पछी हाथ, वस्त्र, शस्त्रादि धोवे घसे ते पश्चात्कर्म.

आरोपणा प्रायश्चित्त लेवुं जोइए. चोमासामां विशेषे करीने लेवुं जोइए[1].) जे सहन न करी शके तेणे महीने महीने मुंडन कराववुं. जो कातर वडे केश कतरावे तो पंदर पंदर दिवसे गुप्त रीते कतराववा. मुंडन कराववानुं अने कतराववानुं प्रायश्चित्त निशीथमां कहेल यथासंख्य लघु गुरु मासरूप जाणवुं[2]. लोच छ मासे करवो, पण स्थविरकल्पी साधुओमां स्थविर एटले वृद्ध होय तेणे घडपणथी जर्जरित थवाने लीधे तथा आंखनुं रक्षण करवाने माटे एक वर्षे लोच कराववो अने तरुणे चार मासे लोच कराववो. ५७.

२३ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने आगल एटले पर्युषणा पर्व पछी क्लेश उपजावे तेवुं वचन बोलवुं कल्पे नहीं. जे साधु अथवा साध्वी क्लेश करावे एवुं वचन बोले तेने आ प्रमाणे कहेवुं जोइए. 'हे आर्य ! तमे आचार विना बोलो छो, कारण के पर्युषणाना दिवस पहेलां अथवा तेज दिवसे जे क्लेशकारी वचन उत्पन्न थयेल (बोलेल) ते तो पर्युषणामां खमाव्युं अने हवे जे पर्युषणा पछी क्लेशकारी वचन बोलो छो ते आ अनाचार छे.' ए भाव जाणवो. आ प्रमाणे निवार्या छतां जे साधु अथवा साध्वी पर्युषणा पछी क्लेशकारी वचन बोले तेने तंबोलीना पानना दृष्टांतथी संघ बहार करवा. जेम तंबोली सडेला पानने बीजां पान नाश करवाना भयथी काढी नाखे छे तेवी रीते अनंतानुबंधी क्रोधवालो साधु पण विनष्टज छे एम धारीने तेने दूर करवो. ए भाव जाणवो. वली बीजो पण ब्राह्मणनो दृष्टांत छे. खेट नगरनो वासी रुद्र नामे ब्राह्मण वर्षाकाले खेतरो खेडवा माटे हल लइने खेतरे गयो. हलने वहन करतां तेनो गलीओ बलद बेसी गयो. परोणाथी मारतां छतां पण ज्यारे ते उठ्यो नहीं त्यारे त्रण क्यारानां माटीनां ढेफांथी मारतां मारतां ते माटीनां ढेफां वडे तेनुं मुख ढंकाइ गयुं अने श्वास रुंधाइ जवाथी ते मरण पाम्यो.

---

१ आटली शय्या संबंधी हकीकत केशलोचना विषयमां वच्चे केम आवी ते समजातुं नथी. २ क्षुरमुंडने लघु मास ने कतरावनारने गुरु मास.

पछी ते ब्राह्मण पश्चात्ताप करतो करतो महास्थाने जइने त्यां पोतानो वृत्तांत कहेतां (बीजा) ब्राह्मणोए पूछ्युं के 'तुं हजु उपशांत थयो के नहीं ?' त्यारे 'हजु पण मने उपशांति थइ नथी' एम कहेतां तेने ब्राह्मणोए पंक्ति (ज्ञाति) बहार कर्यो. एवी रीते वार्षिक पर्वमां कोप उपशांत नहीं थवाने लीधे जे साधु आदिए खमतखामणां न कर्यां होय तेने संघ बहार करवा. उपशांतमां उपस्थित थयो होय तेने मूल प्रायश्चित्त आपवुं. ५७.

२४ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने आजेज एटले पर्युषणाने दिवसेज उंचा शब्दवालो तथा करूवाश भरेलो एटले जकार मकार आदिरूप कलह थाय तो नानो मोटाने खमावे. जो के मोटाए अपराध कर्यो होय तोपण व्यवहारथी नानो मोटाने खमावे. हवे जो धर्म नहीं परिणमवाथी नानो मोटाने न खमावे तो शुं करवुं ? ते कहे छे–मोटो पण नानाने खमावे, पोते खमे अने बीजाने खमावे, पोते उपशांत थाय अने बीजाने उपशांत करे. सुमतिपूर्वक (राग द्वेषना अभावपूर्वक) सूत्र अने अर्थ संबंधी संपृछना अथवा समाधिप्रश्न पुष्कल थवा जोइएं.[1] जेनी साथे करूवाश भरेलो कलह थयेलो होय तेनी साथे निर्मल मनथी वातचीत आदि करवुं जोइए ए भाव छे. हवे बेमां जो एक खमावे अने बीजो न खमावे तो कयो रस्तो लेवो ते कहे छे. जे उपशमे छे तेनी आराधना थाय छे.जे उपशमतो नथी तेनी आराधना थती नथी,तेथी पोतेज उपशमित थवुं. 'हे पूज्य ! ते शा कारणथी ?' ए प्रमाणे शिष्ये पूछ्ये छते गुरु कहे छे के 'श्रमणपणुं–साधुपणुं छे ते उपशम-प्रधान छे.' अहीं दृष्टांत कहे छे के–सिंधु सौवीर देशनो अधिपति अने दश मुकुटवद्ध राजाओथी सेवातो उदयन नामे राजा विद्युन्माली देवताए आपेली एवी श्रीवीर प्रभुनी प्रतिमानी पूजाथी नीरोगी थयेला गंधार श्रावके आपेली गोलीना भक्षण करवाथी जेनुं रूप अद्भुत थइ गयुं छे एवी सुवर्ण-गुलिका नामे दासीने देवाधिदेवनी प्रतिमा सहित हरण करनार अने चौद राजाओथी सेवाता

[1] शांति थाय तेवी अनेक शास्त्रादिनी वातो करवी जोइए.

मालव देशना चंद्रप्रद्योत नामे राजाने देवाधिदेवनी प्रतिमा पाछी लाववा माटे उत्पन्न थयेला संग्राममां बांधीने पाछा आवतां दशपुर नगरमां चोमासुं रह्यो. वार्षिक पर्वने दिवसे राजाए पोते उपवास कर्यो. राजाए हुकम करेला रसोयाए भोजन माटे चंद्रप्रद्योतने पूछ्युं. त्यारे विषनी बीकथी "हुं श्रावक छुं तेथी मने पण आजे उपवास छे" एम कह्ये छते "आ धूर्त्त साधर्मिकने पण खमाव्या वगर मारुं प्रतिक्रमण शुद्ध थशे नहीं" एम उदयन राजाए धारीने तेनुं सर्वस्व पाछुं आपीने अने तेना कपाल उपर लखावेला 'मारी दासीनो पति' ए अक्षरो आछादन करवा माटे पोतानो मुकुटपट्ट आपीने श्री उदयन राजाए चंद्रप्रद्योतने खमाव्यो. अहीं श्री उदयन राजानुं तेना उपशांतपणाथी आराधकपणुं जाणवुं.

कोइ वखते बंनेनुं आराधकपणुं होय छे. ते आ प्रमाणे—एक वखत कौशाम्बी नगरीने विषे सूर्य अने चंद्र पोतानां विमान वडे श्री वीर प्रभुने वांदवाने आव्या. चंदना साध्वी दक्षपणाने लीधे अस्तसमय जाणीने पोताने स्थाने गया अने मृगावती सूर्य चंद्रना जवाथी अंधकार फेलाये छते रात्रि जाणीने बीती थकी उपाश्रये आवी अने ईर्यापथिकी प्रतिक्रमीने सूतेला एवा चंदना साध्वीने 'मारो अपराध क्षमा करो' एम कहेवा लागी. त्यारे चंदनाए पण 'हे भद्रे ! तारा जेवी कुलीनने आम करवुं ते युक्त नथी' ए प्रमाणे कह्युं. तेणे वली कह्युं के 'फरीथी आम करीश नहीं' एम कहीने पगे पडी. एटलामां चंदना साध्वीने उंघ आवी गइ अने मृगावतीने ते प्रकारे खमावतां केवलज्ञान प्राप्त थयुं. पछी कोइ सर्प नजीक आववाथी चंदनानो हाथ उंचो लेवाना बनावथी चंदना साध्वी जागी गया अने केवी रीते सर्प जाण्यो एम पूछतां चंदनाए मृगावतीने केवलज्ञान थयेलुं जाणीने तेणीने खमावतां पोते पण केवलज्ञान मेलव्युं; तेथी आवी रीते मिथ्या दुष्कृत देवुं जोइए, पण कुंभार अने क्षुल्लकना दृष्टांते देवुं न जोइए. ते कुंभार अने क्षुल्लकनो दृष्टांत आ प्रमाणे छे— (कुंभारनां) हांल्लां काणां करता कोइ एक क्षुल्लक (चेला)ने कुंभार ज्यारे निवारतो

त्यारे ते मिथ्या दुष्कृत देतो, पण ते हांफलां काणां करतो अटकतो नहीं, तेथी कांकरा वमे चेलाना कान मरमतां (मसलता) कुंजारे पण 'हुं दुःख पामुं छुं' एम ते चेले वारंवार कह्यु छते पण फोगट मिथ्या दुष्कृत आप्युं. ५९.

२५ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने त्रण उपाश्रय ग्रहण करवा कल्पे छे. ते आ प्रमाणे—जंतु-संसक्ति आदिना जयथी ते त्रण उपाश्रयमां वे उपाश्रयने वारंवार प्रतिलेखवा (जोवा) जोइए. साइज्ज धातु आस्वादनना अर्थमां वपराय छे तेथी जे उपाश्रय उपजोगमां आवतो होय ते संबंधी प्रमार्जना करवी जोइए. एटले जे उपाश्रयमां साधुउ रहे छे तेने प्रातःकाले प्रमार्जे छे, फरी ज्यारे साधुउ वहोरवा जाय त्यारे प्रमार्जे छे अने फरी त्रीजा पहोरने अंते प्रमार्जे छे. एम त्रण वार प्रमार्जे छे. ऋतुबद्ध एटले चोमासा सिवाय वे वार प्रमार्जे छे. ज्यारे (उपाश्रय जीवथी) असंसक्त होय तेनो आ विधि छे अने संसक्त होय तो वारंवार प्रमार्जे छे. वाकीना वे उपाश्रयने हमेशां नजरथी जोवे छे, पण तेमां ममत्व करता नथी अने त्रीजे दिवसे पादप्रोंछनथी प्रमार्जे छे तेथी 'वेउव्विया पडिलेहा' एम कहेलुं छे. ६०.

२६ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने अन्यतर दिशा एटले पूर्व आदि दिशानो अने अनुदिशा एटले अग्नि आदि विदिशानो अवग्रह करीने अमुक दिशा अथवा विदिशामां हुं जाउं छुं एम वीजा साधुउने कहीने जात पाणी वहोरवा जवुं कल्पे छे. 'हे पूज्य ! ते शा हेतुथी ?' एम शिष्ये पूछये छते गुरु कहे छे के 'चोमासामां प्राये करीने साधु जगवंत तपयुक्त रहे छे तेमज प्रायश्चित्त वहन करवाने अर्थे के संयमने अर्थे छठ आदि तप करनारा होय छे. ते तपस्वीउ तपने लीधे दुर्वल तथा कृश अंगवाला होय छे तेथी थाक लाग्याथी कदाचित् मूर्छा आवे अथवा पडी जाय तो तेज दिशा अथवा अनुदिशामां उपाश्रयमां रहेल साधु जगवंत सार करे (शोध करे). जे कह्या विना गयेल होय तेनी क्यां शोध करे ?' ६१.

२७ चोमासुं रहेल साधु साध्वीने वर्षाकल्पमां औषध माटे, वैद्यने माटे अथवा ग्लाननी सार करवा माटे चार पांच योजन जइने पण पाछुं आववुं कल्पे छे, पण त्यां रहेवुं कल्पे नहीं. जो पोताने स्थाने आवी शके तेम न होय तो तेनी वच्चे पण आवीने रहेवुं कल्पे, पण ते जग्याए रहेवुं न कल्पे, कारण के त्यांथी नीकली जवाथी वीर्याचारनुं आराधन थाय छे. ज्यां जवाथी जे दिवसे वर्षा कल्प आदि मली गयेल होय ते दिवसनी रात्रि त्यां रहेवुं न कल्पे, नीकली जवुं कल्पे, ते रात्रि उल्लंघवी कल्पे नहीं. कार्य थये छते तुरतज बहार नीकलीने रहेवुं ए भाव जाणवो. ६२.

२८ ए प्रमाणे पूर्वे कहेल सांवत्सरिक चोमासा संबंधी स्थविरकल्पने यथासूत्र (एटले सूत्रमां जे प्रमाणे कहेल छे ते प्रमाणे करवो, पण सूत्र विरुद्ध करवो नहीं) अने यथाकल्प (एटले अहीं जे प्रमाणे कहेल छे ते प्रमाणे करवो ते कल्प अने तेथी बीजी रीते करवो ते अकल्प) करता (आचरता) ज्ञानादि त्रयरूप मार्ग ते यथामार्गने यथातथ्य एटले सत्य वचनानुसारे अने सम्यक् प्रकारे मन, वचन अने कायाए करीने स्पर्शीने एटले सेवीने, पालीने एटले अतिचारथी रक्षण करीने, विधिपूर्वक करवा वडे शोभावीने, यावज्जीव आराधीने, बीजाने उपदेश करीने, यथोक्त करणपूर्वक आराधीने, आज्ञाए एटले जिनेश्वरे उपदेश कर्या मुजब जेम पूर्वे पाल्यो तेम पछी पण पालीने केटलाएक श्रमण निर्ग्रंथो तेनी अति उत्तम पालना वडे तेज भवे सिद्ध (कृतार्थ) थाय छे, केवलज्ञाने करीने बोध पामे छे, कर्मरूपी पांजराथी मुक्त थाय छे, कर्मकृत सर्व तापना उपशमनथी शीतल थाय छे अने शरीर तथा मन संबंधी सर्व दुःखनो अंत करे छे. केटलाएक तेनी उत्तम पालना वडे बीजे भवे सिद्ध थाय छे यावत् शरीर तथा मन संबंधी सर्व दुःखनो अंत करे छे. केटलाएक तेनी मध्यम पालना वडे त्रीजे भवे यावत् शरीर तथा मन संबंधी सर्व दुःखनो अंत करे छे. (केटलाएक) जघन्य आराधना वडे पण सात आठ भव तो अतिक्रमेज नहीं एटले सात आठ भवे तो अवश्य मोक्षे जाय ए भाव जाणवो. ६३.

ते काले एटले चोथा आराने छेडे अने ते समये एटले श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु राजगृह नगरने विषे समवसर्या ते अवसरे गुणशैल नामना चैत्यने विषे घणा साधु, घणी साध्वी, घणा श्रावक, घणी श्राविका, घणा देवो अने घणी देवीओनी मध्ये रह्या (बेठा) थका (पण प्रछन्नपणे खुणामां रहीने नहीं ए भाव जाणवो) आ प्रमाणे कह्युं, आ प्रमाणे वचनयोग वडे भाख्युं, आ प्रमाणे फल कहेवा वडे करीने जणाव्युं, आ प्रमाणे प्ररूप्युं एटले दर्पणनी जेम श्रोताना हृदयमां संक्रमाव्युं अने पर्युषणाकल्प नामे अध्ययनने अर्थ एटले प्रयोजन सहित (पण प्रयोजन विना नहीं), हेतु सहित (हेतु एटले निमित्त ते जेमके गुरुने पूछीने सर्व करवुं ते शा हेतुथी ? कारण के आचार्यो प्रत्यपाय जाणे छे इत्यादि हेतु छे ते सहित), कारण सहित (कारण एटले अपवाद ते जेमके 'अंतराविसे कप्पइ' अरूचणे तेने कल्पे इत्यादि कारण सहित), सूत्र सहित, अर्थ सहित, बंने (सूत्र अने अर्थ) सहित, व्याकरण सहित (एटले पूछेला अर्थने कहेवा सहित) वारंवार उपदेश्युं. ए प्रमाणे हुं कहुं छुं एम श्री भद्रबाहु स्वामी पोताना शिष्यो प्रत्ये कहेता हवा. ए प्रमाणे श्री पर्युषणा कल्प नामे दशाश्रुतस्कंधनुं आठमुं अध्ययन संपूर्ण थयुं.

ए प्रमाणे जगद्गुरु भट्टारक श्री हीरविजय सूरीश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली कल्पसुबोधिकाने विषे सामाचारी व्याख्यान संपूर्ण थयुं अने सामाचारी व्याख्यान नामे आ त्रीजो अधिकार पण समाप्त थयो. शुभं भवतु !



॥ अथ प्रशस्तिः ॥

श्री वीर जिनेंद्रनी पट्टपरंपराने विषे कल्पद्रुम समान, सर्व इच्छितने आपनार, सुगंधीए करीने खेंचेल छे पंक्तिरूपी भमराने जेणे एवा, शाखना उत्कर्षथी सुंदर, स्फुरायमान थती अने विशाल छे कांति जेनी एवा, फलने आपनारा, देदीप्यमान मूलगुण छे जेना एवा, हमेशां अति सारा मनवाला, श्रीमान् अने देवोथी पूजित श्रीहीर सूरीश्वर थया. १. जेणे दर वर्षे छ मास सुधी समग्र पृथ्वीने विषे जीवने अभयदान आपवारूप पटहना मिषथी पोतानो यशरूपी पटह वगडाव्यो हतो अने जेना मुखथी शुभ धर्मोपदेश सांभलीने अधर्मरसिक, म्लेछोनो अग्रेसर अने निर्मल मतिवालो अकबर बादशाह धर्मने पाम्यो हतो. २. तेनी पाटरूपी उंचा उदयाचल पर्वतना शिखर पर स्फुरायमान किरणवाला सूर्य समान तथा भव्य लोकोने इच्छित वस्तु आपवाने चिंतामणि समान श्रीविजयसेन सूरि थया. जेना शुभ्र गुणोथीज जाणे होय तेम स्वछ मेघथी वींटायेलो पृथ्वीनो गोलो जेनी कीर्त्तिरूपी स्त्रीने रमवा माटे दडो होय तेम शोभतो हतो. ३. जे अकबर बादशाहनी सभामां वाणीना वैभव वडे वादीओने जीतीने शौर्यथी आश्चर्य पमाडेली अने लक्ष्मीथी परिवृत थयेली जयश्री कन्याने वर्या हता, तेटलामाटे हे मित्र ! मनोहर तेजवाला आ (श्री विजयसेन सूरि)नी वृद्ध एवी कीर्त्तिरूपी सती स्त्री पतिना अपमानथी शंकित मनवाली थइने अहींथी दिगन्त सुधी चाली गइ तेमां आश्चर्य शुं छे ? ४. तेनी पाटे बहु सूरिओथी स्तुत्य, मुनिओना नेता अने स्वछ चित्तवाला श्री विजयतिलक सूरि थया. शिवनुं हास्य, बरफ, हंस अने हारना जेवी उज्ज्वल शोभा छे जेनी एवी तथा स्फूर्त्तिवाली जेनी कीर्त्ति त्रण जगतमां वर्तती हती. ५. तेनी पाटे राजाओना समूह वडे जेनां चरणकमल स्तुति करायेलां छे एवा, दुःखनो समूह नाश कर्यो छे जेणे एवा तथा मुनिओने विषे समर्थ एवा विजयानंद सूरि जयवंता वर्तता हता अने जे उज्ज्वल

मोटा गुणो वडे गणिने विषे श्रेष्ठ एवा श्री गौतम स्वामीनी साथे स्पर्द्धा करता हता, जे लब्धिना समुद्र हता, दहींना जेवो उज्ज्वल जेनो यश हतो अने जे शास्त्ररूपी समुद्रना पारने पहोंचेला हता. ६. वली खेद रहित किंनरना समूहोए गायन करातुं अने जन्म, जरा तथा मरणने नाश करनारुं ते गुरुनुं चारित्र सांभलीने जगतना जीवो युगलियानी जेम वांछानी पूर्णताने पामे छे. तेथी करीने ते जगतना जीवो श्रेष्ठ गुणगणे करीने सुंदर आत्मावाला गुणरागीनी हजार इछानी व्यग्रताने पामता हता. ७.

वली श्रीहीरविजय सूरिने बृहस्पतिने जेम सूर्य चंद्र हता तेम शांत एवा सोमविजय वाचकेन्द्र अने सत्कीर्त्तिवाला कीर्त्तिविजय ए नामे वे प्रधान अने शुभ शिष्य हता. ८. जे (कीर्त्तिविजय) क्षमावानना सौभाग्य अने निर्मल भाग्यने जाणवाने कोण समर्थ छे ? अने जगतने विषे जेनुं अद्भुत चारित्र कोना मनने आश्चर्य पमाडतुं नथी ? जेनी हस्तसिद्धिए मूर्खशिरोमणिउने पंडितशिरोमणि कर्या छे अने जेना पादप्रसादे हमेशां चिंतामणि रत्ने करीने भेदने शिथिल करी नाख्यो छे, जे बालपणथीज प्रसिद्ध महिमावाला हता, वैरागीउने विषे अग्रणी हता, वैयाकरणीउने विषे जे श्रेष्ठ हता, सामा पक्षना तार्किकोथी जे जीताय नहीं एवा हता, जे सिद्धांतरूपी समुद्रने मथन करवाने मंदराचल समान हता, जे कविनी कला कौशल्यनी कीर्त्तिनी उत्पत्तिवाला हता, जे निरंतर सर्वना उपर उपकार करवामां रसिक हता, जे संवेग (वैराग्य) ना समुद्र हता, जे विचाररत्नाकर नामे प्रश्नोत्तर ग्रंथ आदि अद्भुत शास्त्रोना बनावनार हता, जे अनेक शास्त्ररूपी समुद्रनुं शोधन करनारा हता अने जे हमेशां अप्रमत्त रहेता हता ते स्फुरायमान थती विशाल कीर्त्तिवाला पूज्य कीर्त्तिविजय वाचकना विनयविजय नामना शिष्ये कल्पसूत्रने विषे सुबोधिका (नामनी टीका) रची. ९–१०–११–१२. वली आ सुबोधिकाने पंडित, संविग्न तथा सहृदय महात्माउने विषे मुकुट समान श्री विमलहर्ष वाचकना वंशमां मुक्तामणि

समान, जीतेली छे बृहस्पतिनी बुद्धि जेणे एवा, सर्वत्र जेनी कीर्तिरूप कर्पूर प्रसार पामेलो छे एवा तथा शास्त्ररूपी कंचननी परीक्षामां कसोटी समान श्री भावविजय वाचकेंद्रे संशोधन करेली छे. १३–१४. संवत् १६९६ मा वर्षे ज्येष्ठ मासना शुक्ल पक्षनी द्वितीयाने दिवसे गुरुवारना रोज पुष्य नक्षत्रमां आ यत्न सफल (पूर्ण) थयो छे. १५. आ विवृत्ति (सुबोधिका) करवामां श्री राम-विजय पंडितना शिष्य श्री विजयविबुध प्रमुखनी अभ्यर्थना पण हेतुभूत जाणवी. १६. ज्यांसुधी पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोना समूहरूपी श्रीफल वडे पूर्ण गर्भ, चलायमान थता झाडना समूह-रूपी दर्भवाला, निषधगिरिरूपी कुंकुमथी अद्भुत तथा हिमगिरिथी शोभता एवा जंबूद्वीप ना-मना मंगल स्थालने धारण करे छे त्यांसुधी पंडितोने परिचित थयेली कल्पसूत्रनी सुबोधा नामे वृत्ति वृद्धि पामो. १७. ज्यांसुधी जलना एकठा थता कल्लोलनी श्रेणीथी आकुल थयेली आकाश-गंगा अने दिग्हस्तीए उछालेल कमलने विषे रहेल पाणीना कणीयाथी नाश पाम्यो छे श्रम जेनो एवुं ज्योतिश्चक्र अनुक्रमे आकाश अने पृथ्वी उपर कायम भ्रमण करे छे त्यांसुधी विद्वानोए आश्रित करेली आ कल्पसूत्रनी विवृत्ति वृद्धि पामो. १८.



॥ सुबोधिका नामक कल्पसूत्रनी टीकानुं गुजराती भाषांतर समाप्त ॥

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

...d by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Sackgalli, Mandvi, Bombay.